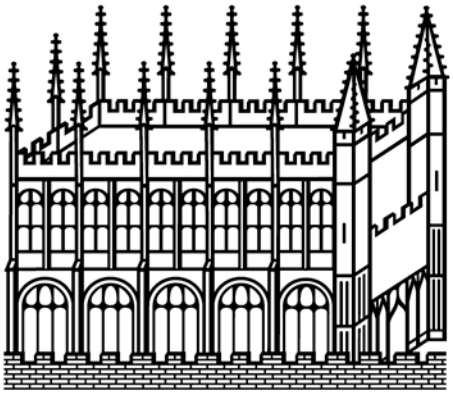


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks




This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Pul. 4

13.D.41.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.



Kavikāvali.

Kulitanuly Nagree



# कवित्तावली सटीक

کبتاولی سٹیک

श्री महाराज गोस्वामि तुलसी दास विरचित

## जिसमें

श्री महाराज राज राजेन्द्र रामचन्द्र का समस्त जीवन चरित्र सात काराडों में अत्युत्तम कवित्तों में वर्णित है

## जिसका

श्री रामोपासक भक्तानन्य ज़िला बारहबङ्की मौज़ा मानपुर निवासि बैजनाथ कुरमी ने अति कठिन जान श्री रामानन्य भक्तों के आनन्दार्थ अत्युत्तम नागरिक भाषा में अत्यन्त सरल पदों से भूषित तिलक किया

## वही

आर्य्यावर्त्त निवासि भक्तजनों के उपकारार्थ

स्थान लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छापी गई
अक्तूबर सन् १८८२ई०

## विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अक्तूबर सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत कि-फ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जि-नको व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालि-क के नाम ख़त भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें॥

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|---|
| भाषा इतिहास | श्रम वासिकपर्व्व व मौशल पर्व्व व बारा प्रस्थानस्व-र्गारोहन पर्व्व हरि वंश पर्व्व महाभारत पर्व्व अ-लेहदा भी हैं<br>१- आदिपर्व्व<br>२- सभा पर्व्व<br>३- बन पर्व्व<br>४- विराट पर्व्व<br>५- उद्योग पर्व्व<br>६- भीष्म पर्व्व<br>७- द्रोण पर्व्व<br>८- कर्ण पर्व्व<br>९- शल्यपर्व्व व गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व राजधर्म आपद धर्म मोक्ष धर्म<br>१०- शान्ति पर्व्व राजधर्म मोक्षध-र्म व दान धर्म<br>११- अश्वमेध आश्रम वासिक मु-शल पर्व्व नहा प्रस्थान स्वर्गारो हन<br>१२- हरिवंश प-र्व्व | महाभारत<br>१- पहिले हिस्सा में आदि पर्व्व सभा प-र्व्व बन पर्व्व<br>२- दूसरे हिस्सा में विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व भीष्म द्रोण पर्व्व<br>३- तीसरे हिस्सा में कर्ण पर्व्व शल्य प-र्व्व गदा पर्व्व सौप्ति-क पर्व्व योषिक प-र्व्व विशोक पर्व्व स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व में राजधर्म आपद धर्म मोक्ष धर्म<br>४- चौथे हिस्से में शान्ति पर्व्व दान ध-र्म अश्वमेध आ- | सातों काण्ड<br>१- बालकाण्ड<br>२- अयोध्याकांड<br>३- आरण्यकांड<br>४- किष्किंधाकांड<br>५- सुन्दरकांड<br>६- लंकाकांड<br>७- उत्तरकांड<br>रामायण शब्दार्थको-रामायण का इतिहास<br>रामायण मानसदी-पिका<br>रामायण कवितावली<br>रामायण गीतावली<br>सटीक<br>भुवनेश भूषण<br>विनयपत्रिका बा-भो-<br>विनयपत्रिका बा-श्री-<br>विष्णु पुराण भाषा<br>लिंग पुराण |
| | रामायण रामविलास<br>रामायण तुलसीकृ-<br>रामायण सटीक मय<br>मानसदीपिका कोष<br>रामायण तुलसीकृ-<br>तटीका सुखदेव कृत<br>रामा- मोटे अक्षरों<br>की मयत सदी खस्से<br>पक<br>रामायण तुलसीकृत | | |

श्रीगणेशायनमः ॥

# कवित्तावली रामायण ॥

## वन्दना ॥

श्रीषेंदिव्यकिरीटमच्छममलंगंडस्थलेकुंडलं। श्यामाभाम-
रविंदकोमलतनंपीतांवरालंकृतं॥पाणौकार्मुकशायकंकटि
तटेतूणीरभारान्वितं।कीर्तिंपापभयापहंसुखकरंतंजानकी
शंभजे १ नगाग्न्यंकचन्द्रेसितेषाढमासे चिदग्न्यंरवौरोहि-
णीमध्यकाले विदेहात्मजानाथपादाब्जयाहं कवित्तावली
रत्नदीपंकरोमि २॥ दोहा ॥ श्रीजानकिजानकिरमण गुरु
पदकरौंप्रणाम ॥ जिनकीकृपाकटाक्षते सबपूरणमनकाम ३
गुरुसियबल्लभशरणकहि बैजनाथपितुधाम ॥ रसिकलता
सियकल्पतरु सेवितआठौयाम ४ कीरतिसुयशप्रतापगुण
प्रभुकेवेदसुगाव॥सबकेरूपउदाहरण बरणौंसहितसुभाव ५
कीरतियथा ॥ होतजुअस्तुतिदानतेकीरति ताहिबखान॥
दीननजीतेदान दैगुरुजनकरिसनमान ६॥ यशयथा॥धर्मनी-
तिबलबाहुते प्रगटतयशकोधोक ॥ वाणनते जीतेबली सत्या
ननसोलोक ७ ॥ प्रतापयथा॥ शत्रुडरैसुनिकीर्तियशताको
नामप्रताप॥ खगमृगकंठखरबालिसुनि डरेनिशाचरआप ८
गुणयथा॥ चाहतव्यापकब्रह्मकरन जगप्रशंसगुणसोइ विभु
प्रेरकमोहनशरणपालशीलनिधिहोइ ९ तीनिभांतिलीला
सगुणगायकचारिविधान ॥ मागधबंदीसूतअरु अर्थीचौथ
प्रमान १० प्रकृतिमयीमाधुर्यहै साम्यस्त्रीऐश्वर्य ॥ मिश्रित
लीलातीसरीमिलिऐश्वर्यमधुर्य ११ मागधमधुरीकीर्तिको
ऐश्वर्यबंदि प्रताप॥ पौराणिकमिश्रितयशै सबगुणखारधि

आपु १२ चैलीलाकीरति सुयशगुणगण सहितप्रताप॥ सब कोवर्णन जासुमें रामचरित त्यहिथाप १३ अथवार्तिक ॥

पौराणिक भावकरि गोसाईंजो रामचरित मानस प्रथमवर्णनकस्यो पौराणिकभावयथा ॥ कहौंरामकीकथा सुहाई। सारदसुनकुं सुजनमनलाई॥ तहां श्रेष्ठवक्ताअधिकारीकरेयथा॥ रामचरितसुनिबर्यबखानी। सुनीमहेशपरमहितमानी ॥ पुनः ॥ भरद्वाजसुनि प्रष्णकिययाज्ञवल्क्य सुनिपाइ। याज्ञवल्क्यजोकथासुहाई। भरद्वाजसुनिवरप्रतिगाई॥ पुनः॥ सुनुशुभकथाभवानि रामचरितमानसबिमल। कहाभुशुण्डिबखानि सुनाबिहंगनायकगरुड़॥लीलायथा॥ गुरुगृहगयेपढ़नरघुराई॥ इतिमाधुर्य ॥ जाकीसहजरवास स्रुतिचारी ॥ इतिऐश्वर्य ॥सोप्रभुपढ़यहकौतुकभारी॥इतिमिश्रत॥ निजनिजरुचिसबलेहिंबुलाई। सहितसनेहजाहिंह्वौभाई ॥ इतिमाधुर्य ॥ निमिषमाहमहंभुवननिकाया रचैजासुअनुशासनमाया ॥ इतिऐश्वर्य ॥ भक्तिहेतुसोइदीनदयाला । चितवतचकितधनुषमखशाला ॥ इतिमिश्रित ॥ स्तुतितेकीरतियथा गुरुआगमनसुनतरघुनाथा । अरु रामकसनअसकहकुतुम इति ॥ दानतेकीरतियथा । सुनिदुर्लभजोपरमगतितोहिं दीनभगवान॥इतियशयथा॥ रिपुरणजीतिसुयशसुरगावत । इतिप्रतापयथा ॥ जबतेरामप्रतापखगेशा॥ अरु ॥ जीतकुमनहिंसुनीअस रामचन्द्रकेराज । इतिगुणयथा ॥ जहंतहंनररघुपतिगुणगावहिं । अरु भजकुप्रणतपतिपालकरामहिं । शोभाशीलज्ञानगुणधामहिं॥इति। अरु सिद्धांतयहहै नामरूपलीलाधाम परात्परहै ताप्रभुकी भक्तिबिना जीवको कल्याणनहीं नामयथा ॥ राकारजनीभक्ति तवरामनामसोईसोम । अपरनाम उडगणविमल बसकुभक्तउरव्योम । इतिरूपयथा ॥ शंभुबिरंचिविष्णुभगवाना।उपजहिंजासुअंशतेनाना। इतिलीलायथा॥ विधिहरिशंभुनचावनहारा। तेउनहिं जानहिंमरमतुम्हारा॥ इतिधामयथा॥ अवधसरिसप्रियमोहिंनसोऊ ।

इतिभक्तियथा ॥ भक्तिहीनविरंचिकिनहोई । इतिमानस रामायणरोजनामा रामचरितकोहै ताकेखाताविनयपत्रिका गीतावली कवितावलीहैं तहां कुन्दनसे जिनके मन निर्मल प्रेमापराभक्ति में प्रौढ़तिनके अनुराग युतमाधुरी अवलोकन हेतु रूपकी माधुरी माधुर्यलीला माधुर्यगुण मधुरकीरति मंगलीक मागध गायक भावकरि गोसाईंजी गीतावली गानकरैहैं तहां श्रेष्ठगायक अधिकारीहैं शृंगाररसहै गायकभावयथा ॥ तुलसिदासप्रभुसोहिलोगावत उमंगिउमंगिअनुराग ॥ इतिश्रेष्ठगायकअधिकारीयथा ॥ गावतविबुधबिमलवरबानी । इतिरूपकीमाधुरीयथा ॥ रहे थकटकनरनारिजनकपुर लागतपलक कलपबितयेरी । अरु निरखऊ तजिपलकसफलजीवनलेखैरी । माधुर्यलीलायथा ॥ माधुरीविलासहास गावतयशतुलसिदास । इतिमधुरगुण यथा ॥ याशिशुकेगुणनामबड़ाई औरूपशीलगुणधामराम ॥ इतिमधुरकीरतियथा ॥ कलकीरतिगावततुलसिदास ॥ इति शृंगाररसयथा ॥ ललितलताजालहरतिछविताननकी अरु मधुकरपिकवरहिमुखर इतिविभाव निजकर राजिव नयन पल्लव दलरचनसैन इतिअनुभाव । सियाअंगलिखै धातुराग सुमननभूषणविभाग ॥ इतिसंचरी ॥ प्यासपरस्पर पियूषप्रेमपानकी ॥ इतिअस्थाई ॥ प्रभुके अनूपरूपकीमाधुरी को अवलोकन सिद्धांतहै यथा ॥ सखिरघुनाथमुखछबिदेखु । सखिरघुनाथरूपनिहारु ॥ इतिगीतावली ॥ अथविनय ॥ मध्या भक्तनकी आशपूर्ण करिबेको अरु कलियुग की भय निवारण अर्थस्वारथी भावकरि गोसाईंजी गुणनको गानयुत बिनतीकरैहैं तामेंश्रेष्ठ स्वारथी अधिकारी करैहैं वात्सल्य अरु शांतरसकी अधिकारताहै नवधाभक्ति शरणागतहेतुहै स्वारथीभावयथा ॥ कबहुंककर कृपालरघुनायक धरिहौ नाथशीशपरमेरे ॥ इतिअधिकारीयथा ॥ जाकेचरणविरंचि सेइसिधिपाईशंकरहू ॥ इतिकलियुगकोभययथा ॥ कोपि तेहिकलिकालकायरमोहिंघालतघाउ । इतिदादिपाइबो

यथा॥ दई दीनहिं दादिसो सुनिसुजनसदनबधाइ इति इहांसातभूमिका में बिनयकीन्हो यथा॥ दीनता १ केहि विधि देउंनाथ हिखोरि। इतिमानमर्षता२काहेतेहरिमोहिं बिसारे। इतिभयदर्श३ रामकहतचला इतिभर्त्स४ ऐसीमूढ़ता यामनकी। इतिआश्वासन ५ ऐसेरामदीनहितकारी। इतिमनोराज ६कवहुंकहौंयहिरहनिरहौंगे॥ इतिविचारना ७ केशवकहिनजाइकाकहिये। इति। अथगुणउदार॥ ऐसोकोउदारजगमाहीं।सौहर्द।जानतप्रीतिरीतिरघुराई। दया। देवदूसरोको दीनकोदयाल। प्रीति। पुनीतपरिहरि प्रावरणपरप्रीति। सौशील। सुनिसीतापति शीलसुभाऊ। इतिनवधायथा॥ श्रवणकथा मुखसामहृदैहरि शिरप्रणाम सेवाकरु अनुसरु। इतिहेतुयथा॥ कसमनमूढ़रामबिसराये। वात्सल्यरसयथा॥ सुतकीप्रीति प्रतीतिमिचकी। इतिशांत रसयथा। जोनिजमनपरिहरैविकार। इतिसिद्धांतयथा॥ हरिहिहरितावि धिहि विधितारिशिवहि शिवितानेहिं दई। सोजानकीवरमधुरमूरति। इतिविनयपत्रिका। अथ कवित्तावली तहां मुग्धाभक्तनको मनदृढ़ताहेतु नामप्रताप रूप प्रतापगुणनको प्रतापभक्तिकोप्रताप ऐश्वर्यलीलामें वंदीभावकरि कवित्तावलीमें कहे तहां उत्तमकवि अधिकारी कहेवीररसको अधिकारहै वंदीभावयथा॥ जयजय जयजानकिरमण। जैजैकारवंदीजनकीसंप्रदायहै आशीर्वादयथा॥ रंकके निवाज रघुराजराजाराजनिके उमिरिहराजमहाराजतेरीचाहिये। इतिकविअधिकारीयथा॥ वाणीविधिगौरिहरशेषछगणेशकही सहीभरीलोमसभुशुंडि बज्रवारषी। दशचारिभुवन निहारिनरनारिदेखेनारदको प्रदाननारदसोपारषी। तिनकहेउजगमें जगमगातजोड़ी एकदूजीकोकहैया कोसुनैयापखचारषी। कहेउरमारमण सुजानहनुमानकही सियासीनतियानि पुरुषरामसारषी। इतिशोभाको प्रताप ऐश्वर्ययथा॥ रामविरोधनराखिसकैं तुलसीविधिश्रीपतिशंकरसौरे। इतिनामको प्रतापयथा॥

रामनामरावरो दामचामकीचलाईहै। अरुस्वारथकोपर-मारथको कलिरामकोनामप्रतापवलीहै।इतिरूपकोप्रताप यथा॥लायकहैंभृगुनायकसे धनुषायकसोंपिसुभायसिधाये। इतिगुणनको प्रतापयथा ॥ मतिभारतिपंगुभईजोनिहारि विचारिफिरीउपमानफवै । यहीकवित्तमेंगुणनको प्रताप कहव तातें इहां उदाहरण नाहीं लिखे भक्तिको प्रताप यथा ॥ जनकोप्रणरामनराखे कहा । इतिवीररसयथा ॥ युद्धवीरयथा रामशरासनतेचलेतीर। इतिदानवीरयथा॥ सोसमाजमहाराजजीकेएकदिनदानभो । इतित्यागवीर यथा ॥ राजिवलोचनरामचलेतजिबापकोराज बटाऊकी नाईं । इतिदयावीरयथा ॥ तौलोनदापदल्यो दशकंधरजौ लौंविभीषणलातनमारे।इतिहेतुयथा॥जोपैजानकीनाथसों प्रीतिनलाई। अरु गरीबनिवाजनदूसर ऐसो। औ क्षपालन दूजोसिद्धांतयथा॥ मनसोंप्रणरोपिकहैतुलसीरघुनाथबिना दुखकौनहरै। अथ चारिउ ग्रंथन कों प्रयोजन गोसाईंजी को मानसकोयथा ॥ मोसमदीननदीनहितुमसमानरघु-बीर। असजियजानिकृपानिधिहरहुविषमभवपीर। गीता-वलीयथा ॥ तुलसिदासजियजानिसुअवसर भक्तिदानतव मांगिलियो । विनययथा ॥ सुदितमाधनावतबनीतुलसी अनाथकीपरीरघुनाथसहीहै। कवित्तावलीयथा ॥ तुलसी निहारिकरिदियेसरखतहै ॥ इतिश्रीरसिकलताश्रित कल्पद्रुमसियवल्लभशरणागतवैजनाथकृत कवित्तावलीरत्न दीपिकाटीकायां भूमिकासमाप्ता ॥

दशस्यंदनांकेस्थितानंदधाम स्फुरन्नीरगाचेतड़िद्दाभ वासः ॥ किरीटप्रभारत्नकेयूरहारप्रशरण्योदयागाररराम प्रसीद १ कवित्त ॥ धूमउड़िअगरअंबीरश्यामभानुभां-पिगेबिमानन सवारडरडारिभे । अमरमुनीशनागमनुज सुजानसाधुअनलअनिलव्योमभूमिमोदवारिभे । अघउन पातकर्मतामसअनीतिद्वैतमिटिगै असाधुता मलिनदैत धारिभे । धूमधामवैजनाथआजुकौशलेशद्वार सुघरीसुवा-

रमेंकुमारसुनिचारिभे २ इहां वस्तु निर्देशात्मक मंगला चरणहै याग्रंथमें प्रताप ऐश्वर्यलीलाको अधिकार ताते बाललीला पंचवर्ष छांड़ि कुमार अवस्था सों वर्णन करे कविकी उक्तिते सरस्वतीजीगईं अर्थात् सखी प्रति सखी की उक्ति ॥

अवधेशकेद्वारसकारगई सुतगोदकैभूपतिलैनिकसे ।
अवलोकिहौंशोचबिमोचनको ठगिसीरहिजेनठगेधिकसे ।
तुलसीमनरंजनरंजितअंजननयनसुखंजनजातकसे । स-
जनीशशिमेंसमशीलउभयनवनीलसरोरुहसेबिकसे १ ॥

हे सखी मैं प्रभात गई आजु महाराज कुमार के द्वार दरशावन की शुभ मुहूर्त्त है ताको जानि प्रभातही अवधेश महाराज के द्वारपर गई ताही समय भूपति श्री चक्रवर्त्ती जी श्रीरघुनन्दनको गोद लै मंदिरते निकसे शोच बिमोचनहारे श्रीरघुनन्दनकी छबि देखतही ठगीसी रहिगई अर्थात जेन कहे जिन रघुनंदन ने मोहिनीचितवनि चितै दृगन सों ठगे कैसेहैं नेच तुलसीके मनरंजनकहे मनको आनंददायक अंजन करिकै रंजित कहे बिराजमानहैं यथा खंजनके बालक पक्षिनके बालक शोभायमान नहीं होत ताते नवीनअवस्था के खंजन ऐसे अथवा हेसजनी सम शीलकेभरे दोऊनयन मुखचन्द्रमें कैसे शोभितहोत यथा नीलकमल नवीन कहे प्रभातकाल के ऐसे लहलहे प्रफुल्लित से यामें अवधेश शब्द प्रथम कहि ऐश्वर्य प्रतापको दर्शाये यथा ॥ अयोध्यामाहात्म्ये ॥ अय-तेमद्दिमातस्याः मनोदत्वाचपार्वती ॥ अकारोवासुदेवः स्याद्यकारस्तुप्रजापतिः १ उकारोरुद्ररूपस्तु तान्ध्यायंति मुनीश्वरः सर्वोपपातकैर्युक्तैर्ब्रह्महत्यादिपातकैः २ नयोऽ ध्यासर्वतोयस्मा तामयोध्यांततोविदुः ॥ ऐसी जो अयोध्या ताके ईश कहि प्रताप सूचितकरे सो प्रताप यश कीर्त्ति

ते होत यथा ॥ होतजु अस्तुतिदानते कीरतिकहियेसोइ ॥ होतबाहुबलते सुयश धर्मनीतिसहहोइ १ कीरतिसौंअरु सुयशसौं होतशचुउरताप ॥ जगडरातसबआपही कहिये ताहिप्रताप २ द्वारआयेते प्रतापवान प्रसिद्ध सबकोदेखि परे पिताकी गोदकहिबो दासभाव उपासि कनको ध्यान की संप्रदायहै ॥यथा सनत्कुमार संहितायां ॥ पितुरंकग-तंराम मिन्द्रनीलमणिप्रभं । इहां मन चित्तादिकी वासना सोई शोच ताको सौंदर्यता बलते प्रभु छुंड़ाइदियो अरु नेचनकी चितवनि ठगौरीडारि मनको ठगिलियो ताते शोचविमोचनको अवलोकत ठगीसी रहिगई जे ना ठगे जे या रूपमें मनको न लगाये ते धिक्कारयोग्य अभागी हैं इहां जीवनपर दयाकरि शोच शचुको बिमोचनकरे यहि बलते सुयशभयो तुलसीमनरंजन तुलसीके मनको आनंद दान देबेते कीरतिभई सुखकी उपमा न शशि याते कहे कि चन्द्रमा शीतलहै सम शील कहे शचु मित्र दोऊ पै शीलमान यथा निर्वाणदायक क्रोधजाकर भक्तिबश अव सहकरी यह सौशील ताते स्तुति सूचित करि कीर्त्ति भई इत्यादि कीर्त्ति यशसुनि शरणागत जीवनकेशचुकाम क्रोधादि आपही दबिजाइ याते प्रताप वर्णनभयो अंजन अंजित नयन खंजन जातकसे नयन उपमेय खंजनउपमा नसे बाचक याते धर्म लुप्तोपमालंकारहै सुखको शशि केवल उपमा न कहे याते अतिशयोक्ति रूपकालंकारहै उभय नवनील सरोरुहसे बिकसे सरोरुह उपमान से बाचक नव नील बिकसे धर्म याते उपमेय लुप्तोपमालंकार है प्रथम खंजनसे नेच कहि पीछे कमलसे कहे है उपमा यातेदिये कि यशमें बलचाहिये ताकेहेत खंजनकी उपमादिये भाव नख चोंच पक्षनकरि समर्थहै कीर्त्ति में दान सुशीलता चाहिये ता हेतु मकरंद सुगंधदायक कोमल कमल की उपमादिये याही हेतु प्रथम अवधेश फिरि भूपति भाव अयोध्या पातकादि जीतिबेमें प्रबल ताकेईश यहबलीनाम

सुयशहेतु पृथ्वी सब पदार्थकीदानि क्षमावान ताते भूपति नाम कीर्त्ति हेतु कहे या कवित्तविषे नाम रूपलीलाधाम चारिहू प्रतापवान कहे तहां अवधेशनाम रघुनाथहू जीकोहै सेा सुनतहीमें प्रतापवानहै धाममें मुख्यद्वार कहि धाम प्रतापवान कहे शोचविमोचन यह लीला प्रतापवान कहे सूर्य प्रतापवान ते प्रभु के नेचहैं ताते नेचकहि रूपको प्रतापवानकरि बर्णनकरे यामें रूपमाधुरीगुणहै १॥

पगनूपुरओपहुंचीकरकंजनिमंजुबनीमणिमालहिये। नवनीलकलेवरपीतझँगाझलकैंपुलकैंनृपगोदलिये। अरविन्दसेाआननरूपमरन्दअनन्दितलोचनभृङ्गपिये । मन मेानबस्योअसबालकजेातुलसीजगमेंफलकौनजिये २ ॥

कविकीउक्तिहै पगनमेंसुंदरिमणिन जांड़तपौटाकरकमलसे कोमलअरुण तिनमें मनोहर पङ्क्ति मंजुमणि कहे गजमुक्तन की मालहियेपर कैसीबनीहै जोचितचोरलेत अरतारी कोरकिरिणी साहत पीतरंगकी झँगुलीमें नव कहेकोमल श्यामल शरीर मेघदामिनीसे झलकिरहोहै प्रेमते पुलकांगसहित गोदमेंलिहे श्रीरघुनंदनके मुखकमलको रूपजो मकरंदकहे रस ताको नेचभंगनसों कहे आनंदसों पानकरत भावनेचरूपमें आशक्त है गोसाईंजी कहत कि ऐसोमनोहर बालरूप श्रीरघुनंदनजाके मनमें नबस्योताको जीवनजन्म मिथ्याहै भाव जगतफल असार दुखदाईहै इहांकरकंजमें नेचकंजमें रूपमकरंद उपमान उपमेयतेरूपकहै मुखउपमेय कंजउपमानसों बाचकयह धर्म लुप्तोपमालंकारहै इहां सर्बांगसुभग सुठौरबर्णनते सौंदर्यगुणबर्णनहै २ ॥

तनकीद्युतिश्यामसरोरुहलोचनकंजकीमंजुलताईहरैं। अतिसुन्दरसेाहतधूरिभरे छबिभूरिअनङ्गकीदूरिकरैं ।

दमकदंतियांद्युतिदामिनिज्योंकिलकैंकलबालविनोदकरैं।
अवधेशकेबालकचारिसदातुलसीमनमन्दिरमेंविहरैं ३ ॥

कविकीउक्ति कोमल सचिक्कनसौगंधितश्याम कमलसी द्युति श्यामशरीरकीहै अरुनेचआपनी शोभाकेआगे कमल की सुंदराईको हरतहैं अथवाअंतमें चारिउ बालकहैं ताते श्रीरघुनाथजी औ भरतजीके तनकीद्युति श्यामकमलसीहै अरु लक्ष्मणजी शत्रुहनजीके तनकीद्युति श्वेत कमलकी सुन्दराईकोहरतहै अरुनेचकमलसे चारिछभादूनकेहैं बालककेलिते देहधूरिसोंभरीहै ताछपरकामकी समूहछबिको दूरिधरतभावधूरिकरिकै शोभामूंदतीनहीं काहेते अतिसुन्दरहैं तातेधूरिछ भरे शोभितहैं बालक्रीड़ामें आनंदितहै जब किलकतहैं तब मुखते दंतियनकी ज्योति दामिनिसी दमकिजात ऐसेअवधेश महाराजके चारौबालक तुलसीकेमन रूपमंदिरमें सदा बिहारकरौ तनउपमेय श्याम धर्मसरोरुह उपमानबाचक लुप्तोपमाहै नेचउपमेयते कंजउपमानको निरादर औशोभाते कामकी शोभाकोनिरादर यातेतीसरो प्रतीपालंकारहै दंतियाउपमेय दामिनिउपमान द्युतिधर्म ज्यों बाचकते पूर्णोपमालंकारहै कांतिगुणहै ३ ॥

कबहूंशशिमांगतआरिकरैं कबहूंप्रतिबिंबनिहारिडरैं।
कबहूंकरतालबजाइकैनाचत मातुसबैमनमोदभरैं । कबहूंरिसियाइकहैंहठिकै पुनिलेतसोईजेहिलागिअरैं । अवधेशकेबालकचारिसदा तुलसीमनमंदिरमेंबिहरैं ४ ॥

कविकीउक्ति कबहूंखेलबेहेतु शशिमांगत हठिकरिकै मचलातभावकि जाकोमैंचाहत ताकोछांड़तनहीं कबहूं परछाहींदेखि डरतयाको भाउकि यथापरछाहीं तैसे जो कोऊसदा मेरेसमीपरहत ताकोमैं याहीभांति डरत हौं

कबहूंहाथनसौंतारीबजाइ नाचततब सबमातनके मनमों आनंदनहीं अमातहै यामेंभक्तवत्सलता देखावत कि जो मेरोसेवकहोत ताकेमैंसदा आधीनहौं जोकहैसोईकरौं यथाभगवद्वाक्य दुर्वासाप्रति। अहंभक्तपराधीनोह्यस्वतंत्र इवद्विज। साधुभिर्ग्रस्तहृदयोभक्तैर्भक्तजनप्रिय॥ कबहूंरिसाइहठिकरिकैजोमांगतसोमचलाइकै लैलेतहैं एकसमय बांदरकोबच्चामांगे तब महराजजीने बज्रतबच्चा मंगाइ दिये सोनालिये सोतब बशिष्ठजी बतायेकी अंजनीपुत्र को मांगतहैं तब हनुमान्जीको मंगाइदिये तब प्रसन्नभये यह पद्मरामायणमें प्रसिद्धहैयामें सत्यप्रतिज्ञागुणहै जोकहैं सोईकरैं ऐसे चारौबालक अवधेश के तुलसीके मनरूपी मंदिरमें सदा बिहारकरैं वा गोस्वांजी कहत कि अवधेश के चारौबालक मणिमयमंदिरमें सदाबिहरतहैं ४॥

बरदंतकीपंगतिकुंदकली अधराधरपल्लवखोलनकी। चपलाचमकैघनबीचजगै छबिमोतिनमालअमोलनकी। घुंघुरारिलटैलटकैंमुखऊपर कुंडललोलकपोलनकी। निवछावरिप्राणकरैंतुलसीबलिजाउंललाइनबोलनकी ५॥

अरुणकोमल मधुरदोऊ अधरनबीन पल्लवसे ताकेबीच समशोभायमान सचिक्कन चमकदार दंतनकीपांति यथा कुंदकलीनिसरीहैगोलआबदार अमोलगजमुक्तनकोमाल बिशालमनोहर उरश्यामपै कैसीछबिजागत यथा सजल घनमें चपलाचमकत अरु चटकीली चमकीली रसीली श्यामली घुंघुवारीलटुरियां शोभा प्रकाशमान मुखचंद्रपै लटकि रहींहैं अरु रूपपानिके भरेमैन आरसीसे चमकदार अमोलगोल कपोलनपै प्रकाशमान मकराकृतकुंडल चंचलह्वै चमकतहैं अधरदंतउरमोतिनमाल मुखलटुरिया कुंडलकपोल इत्यादि चारिअंगनकीछबि सहित श्रीराम ललाकी तोतरी बोलनपर तुलसीबलिजाइकै प्राणनिछा-

वरि करतहै तहां प्राणपांचहैं प्राण अपान उदान समान व्यान ताते पांचप्रकारकी छविपै वारनकहे वाक्षानेन्द्रिय पांचौवा कर्मेन्द्रिय पांचौदूनको विषयरौंकि पांच अगह परलगाये तब प्राण वारनभये वा पंचभूतात्मा सहितप्राण वारे बलिजाउंयामें देहवारे निछावरि प्राणकरेयामेंरूपकअलंकार तीनिहैं ५ ॥

पदकंजनिमंजुबनीपनहींधनुहींशरपङ्कजपाणिलिये । लरिकासँगखेलतडोलतहैंसरयूतटचौहटहाटहिये । तुलसीअसबालकसोनहिंनेहकहाजपयोगसमाधिकिये । नर वैखरशूकरश्वानसमानकहौजगमेंफलकौनजिये ६ ॥

अब पौगंडअवस्था वर्णन ताते पगमें पनहीं आदि कहे यथा लहलहे ललित चटकीले चमकदार चीकनेबट गुलाबके कोमल आबदार दलसे अमल कमलसे सुन्दरपायनमें पनहीं मंजु बनी कहे रेशमी मखमलपर सलमा सितारा कलाबत्तू तार गुखरू डंकेबीजन जुतकारचो पीत दाऊ कामतें बेलिबूटेन के बीच रंग रंगकीमणी जटित ऐसी बनी मनोहर पनहीं पायनमें शोभित हैं तैसे ललित ललाम काम तरुवार अमल करकमलनमें जगमग विचित्र रंगदार बज्ररंगयुत रोदाचढ़ा गोसनमें किरणि मोतिनकेगुच्छा सहित ऐसी धनुहींकहे अवस्था अनुहारि छोटा धनुष अरु शुद्ध चढ़ाउतार विचित्ररंगदार मनोहर पच्छचार गजदंत फोकवार तीखीफर चमकदार ऐसे मनोहर बाण धनुष लिहे शीश पै दिव्य मनोहर चौतनी भाल ऊर्ध्वपै गोरोचन को तिलक कानन में प्रकाशमान कुण्डल अमल कपोलनपै श्यामली रसीली अलकैं झलकिरहीं सुधरकंबु कंठमें मोतिनकी माला जरकसी जामा कटिमेंपटुका सुन्दर तरकसकसे शोभित तैसे समवय के सलोने काम कैसे छौने सिंहठवने गजगवने डारत से टोनेसजे बसन मणिहारन धनुबाण कर धारन ऐसे खबंश

राजकुमारनको साथ लीन्हे तीनिउबंधु युत श्रीरघुनंदन सरयूतटमें बजार चौहटमें विविधि खेल खेलतफिरत हैं जे सुन्दर सुहायक दरशजीवन फलदायक भुक्तिमुक्तिद सबलायक ऐसे रघुनायक नृपबालक खलघालक जनपालकमें जिनने नेह नहींकरे अरु जप योग समाधि में मन लगाये तौ का प्रयोजनभयो गोसाईंजी कहत कि तेनर कैसेहैं खर शूकर श्वानके समान अपावन जीवन मिथ्या है यथाजप कहे ऋणी धनी सिद्धि साध्य सुसिद्धि अरि बिचारि कूर्मचक्रते भूमिशोधि आसन शुभमुहूर्त्त में छिन्नरुद्र शक्तिहीनादि निवारणार्थ जननजीवन ताड़नादि संस्कार करि जितेन्द्रियह्वै पुरश्चरण करनेवाले कर्मकांडी श्रीरघुनाथजीमें बिना स्नेहकरे खरकीतुल्यहै भावचिगुणात्मक बासना रसीमें बांधे संसारभार वाहक बिनाभक्ति अपावन है योग कहे यम नेम आसन प्राणायाम प्रत्याहारध्यान धारणा समाधि इति अष्टांगयोगकरि चित्तकीवृत्ति रोंकि सातौ प्रज्ञनको त्यागि अपने निरूपाधिक स्वरूपमें स्थित इत्यादि योगके प्रत्याहार करनेवाले बिना रघुनंदनके स्नेह शूकरसमहैं भाव आपनी कर्त्तव्यता अभिमान मल भक्षण देहसिद्धिकरना पुष्टांगयोग बिगरे तलफायके रोग मारत तथा शूकरभी मारेजात समाधि कहे वैराग्य बिबेक मुमुक्षुता शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधानादि साधनकरि शांतचित्त जितेन्द्रिय श्रद्धावानह्वै व्यष्टि असारको त्यागि समष्टिसारको ग्रहण करि ब्रह्म सत्य और सब असत्यमानि मायाको आवरणत्यागि ब्रह्ममें लीनहोना समाधिहै ऐसे जो ज्ञानीहैं बिना रघुनाथजीमें स्नेह श्वान समहैं भाव मतवाद करि अकारण भूकना ज्ञान बल मुख ते बरजोर देवादिकनको निरादर जीव हिंसक सबासिक्कहोतही टूक्यर्थ घरघर मायाके ठोकरखाना विषयभोग में परेतो ऐसा फँसे जो ज्ञानकीरति प्रसिद्धहै विषय ते छूटना मुसकिलहै ई ॥

सरयूबरतीरहितीरफिरैंरघुबीरसखाअरुबीरसबै । धनुहींकरतीरनिषङ्गकसेकटिपीतदुकूलनवीनफबै । तुलसीत्यहिऔसरलावनितादृशचारिनौतो निइकीससबै । मतिभारतिपंगुभईजोनिहारिबिचारिफिरीउपमानफबै ७ ॥

सरयू इति यामें किशोर अवस्था वर्णन तहां सखा चारिभांति यथा अधिकवयस के सुहृद सखा समवयस के प्रियसखा कछु न्यूनवयस के मधुर सखा कमवयसके नर्म सखा बीर यथा दयाबीर त्यागबीर दानबीर युद्ध बीर ऐसे बीरन को अरु सब भांति के सखा साथलीन्हे बिज्जुछटा सों चमकदार नवीन पीतांबर अरु मनोहर जरीकोतरकस कटिमेंशोभित करकमलनमें शोभायमान धनुबाण धारण रण जनधीर धीर बीर श्रीरघुबीरश्रेष्ठ सरयूके तीरतीर घूमिरहे यामें प्रतापवान निशंकता दर्शाये गोसाईंजी कहत कि ता समय रूपकीलावण्यता सर्बांगगुणनकी अपारहैदश यथारूप जो बिना भूषणै भूषित है १ लावण्यता यथा मोतीको पानी २ सौंदर्यसर्बांग सुठौर ३ माधुर्य देखनहार चित्त न छोड़ ४ सौकुमार्य सुकुमारता ५ नौयोवन ६ सौगंधित अंग ७ सौबेष ८ भाग्यवान ९ स्वच्छता नैर्मल्यता शुद्धता सुषमा दीप्ति प्रसन्नता इति षड़ांग औ जलत्व उज्ज्वलता १० इति दशगुण । माधुरी के चारियथा ॥ ऐश्वर्यवान् १ बीर्यवान् २ तेजवान् ३ बलवान् ४ इति चारिगुण प्रतापके ॥ नौयथा ॥ आदिअनंत १ नियतात्मा प्रेरक २ वशीकरण ३ बाग्मीसहज परावाणी जाकी ४ सर्बज्ञ ५ संहनन अजीत ६ स्थैर्यधिरता ७ धैर्य ८ वदान्य सत्यबचन ९ इति नौगुण ॥ ऐश्वर्यके तीनियथा ॥ सौम्य समिता १ रमन सबमें २ व्यापक ३ इति तीनिगुण ॥ सहज इक्कीसयथा ॥ सौशील्य शीलवान १ वात्सल्य २ सौलभ्य सरल ३ गांभीर्य अगाध ४ क्षमा ५ दया ६ करुणाजन दुखमें दुखी ७ आर्द्रवजन दुख देखि द्रवैउठै ८ उदार ९

आर्जव सर्व पूजनीय १० शरण्यत्व शरणपाल ११ सौहार्द मित्रको अधिकमानना १२ चातुर्य १३ प्रीतिपालक १४ कृतज्ञ सलूकमानिबो १५ ज्ञान १६ नीति १७ लोक प्रसिद्ध १८ कुलीन १९ अनुराग २० निर्वहण लोकविजयी २१ इति इक्कीसगुण यश कीर्त्ति के इत्यादि दशगुण माधुरीके चारिगुण प्रतापके नौगुण ऐश्वर्य के तीनिगुण सहज के इक्कीसगुण यश कीर्त्ति के इत्यादि सबगुणनकेभरे श्री रघुनंदन को निहारि समान उपमादेबे योगबिचार में न आयो तब शारदा की मति भोरीभई ताते फिरि गई गुणनको प्रमाण शिवसंहितायां ॥ तच्चेतुस्त्वदीयंतु रूपंसौंदर्य्यमुत्तमम् ॥ माधुर्य्यंयौवनारंभः सौगंध्यंसुकुमारता १ लावण्यंपरमाकांतिः सौशील्यं खलसौहृदं। सौलभ्यंपरवात्सल्यंप्रसन्नतंस्वभावतः २ शक्तिर्नानाविधाम्बर कलाप्रावीण्यमाश्रमं ॥ अन्येपितेस्युःकल्याण गुणाःसर्वत्रपूजिताः ३ पुनः बाल्मीकौ ॥ इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामोनाम जनैःश्रुतः ॥ नियतात्मामहावीर्यो द्युतिमान्धृतिमान्वशी १ बुद्धिमान्नीतिमान्वाग्मीश्रीमाञ्छत्रुनिवर्हणः ॥ विपुलांशोमहाबाहुः कम्बुग्रीवोमहाहनुः २ महोरस्कोमहेष्वासो गूढजंचुररिंदमः ॥ आजानबाहुसुशिराः सुललाटः सुविक्रमः ३ समःसमविभक्तांगः स्निग्धवर्णःप्रतापवान् ॥ पीनवक्षाविशालाक्षो लक्ष्मीवांश्चुभलक्षणः ४ धर्मज्ञःसत्य संधश्चप्रजानांचहितेरतः ॥ यशस्वीज्ञानसंपन्नःशुचिर्वश्यः समाधिमान् ५ प्रजापतिसमःश्रीमान्धातारिपुनिषूदनः॥ रक्षिताजीवलोकस्य धर्मस्यपरिरक्षितः ६ रक्षितास्वस्य धर्मस्य स्वजनस्यचरक्षिता ॥ वेदवेदांगतत्वज्ञो धनुर्वेदेच निष्ठितः ७ सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञः स्मृतिमान्प्रतिभानवान्॥ सर्वलोकप्रियःसाधुरदीनात्माविचक्षणः ८ सर्वदाभिगतः सद्भिः समुद्रइवसिंधुभिः ॥ आर्यःसर्वसमश्चैव सदैवप्रियदर्शनः ९ सचसर्वगुणोपेतः कौशल्यानंदवर्द्धनः ॥ समुद्रइव गांभीर्ये धैर्येनहिमवानिव १० विष्णुनासदृशोवीर्येसोम

वत्प्रियदर्शनः ॥ कालाग्निसदृशःक्रोधे क्षमयाप्रथिवीसमः ११ धनदेनसमस्त्यागे सत्यधर्मइवापरः ॥ त्वमेवगुणसंपन्नं रामंसत्यपराक्रमं १२ इतिबालकांडपूर्वार्द्ध ७ ॥

क्षोणीमेंकेक्षोणीपतिछाजैजिन्हैंछत्रछाया क्षोणीक्षोणीछायेक्षितिआयेनिमिराजके। प्रबलप्रचण्डबरिबण्डबरवेषबपु बरबेकोबोलेवैदेहीबरकाजके। बोलेबन्दीबिरद बजाइबरबाजनेऊ बाजेबाजेबीरबाहुधुनतसमाजके। तुलसीमुदितमनपुरनरनारिजेते बारबारहेरैंमुखओधमृगराजके ८ ॥

क्षोणी कहे भूमिमें के जे भूपतिहैं जिनपे सदैव छचकी छाया शोभित ते सबआइके निमिराज की जो है क्षोणी श्रीजनकपुरी ताके चारोंतरफ अक्षौहिणी २ सेनालिहे वाक्षाणक्षोणीकहे ठौरठौर छायरहे हैं ते कैसे कैसे राजा हैं प्रबलकहे बलवान हैं प्रचंडकहे प्रतापवान हैं बरिबंड कहे तेजमानहैं ते बरवेषबपु कहेदेहौं ते सर्वांग सुठौर उत्तम अरु निजजाति के वेद धर्म अनुकूल वेषौ उत्तम कीन्हे अथवा देहमें बरवेष कहे दूलह वेषकिहे आये हैं काहेते उत्तम जो काजहै वैदेही को बिवाहब ताकेहेतु बुलाये आयेहैं ताते बरवेषसजे आये ता समाजमें बंदीजन जो हैं ते राजनकी वा विदेहजीकी विरदावली उच्चारण करिरहे हैं अरु उत्तम बाजा जो हैं दुन्दुभी आदि ते बाजिरहे समाज में बाजे बाजे बीर बड़धुनत अर्थात् ताल ठोंकिरहेहैं इत्यादि समाज को विभव कोऊनहीं देखत गोसाईंजी कहत कि पुरके जे हैं नर नारी ते श्रीलषण लालयुत श्रीरघुनाथ के मुखको बारबार सब हेरत भाव प्रतापवान रूपवान सबते ज्यादा हैं वा जानकी योग्य वेईहैं ८ ॥

सीयकेस्वयम्बरसमाज़जहँराजनको राजनकेराजाम-
हाराजाजानैनामको । पवनपुरन्दरकृशानुभानुधनदसे
गुणकेनिधानरूपधामशोभाकामको । बाणबलवानयातु-
धानपैसरीखेशूर जिनकेगुमानसदासालिमसंग्रामको ।
तहँदशरत्थकेसमर्त्थनाथतुलसीके चपरिचढ़ायोचापचन्द्र-
माललामको ६ ॥

श्रीजानकीजी के स्वयंबर में जहां राजनकी समाज में राजनके राजा अरु महाराजा जुरेहैं राजा एक मंडलके मालिक ऐसे चालिस पचास राजन के ऊपर जाको अमल ते राजन के राजा जिनको अनेगिन राजन पर अमल ते महाराजा इत्यादि अनेगि जुरे तिनके नाम को जानै जे पवन से बलवान इंद्रसम ऐश्वर्यवान अग्निसूर्य से प्रतापवाब चन्द्रमा सों गुणमान रूपधाम ऐसे जिनके आगे कामदेव कौनहै बाणासुर ऐसो बलवान यातुधानप रावण ऐसो शूर जाके सालिमकहे कठिन संग्राम करिबेको गुमान है भावहमते युद्धकरि कोऊ पार ना जाइगो ऐसेऐसे बीरनकी समाजमें कोऊ न धनुष टारि सक्यो गोसाईंजी कहत कि ता समाज ते चपरिकहे बिलगायकै चन्द्रमा भूषण जो शिव तिनको पिनाक दशरथ के लाड़िले समर्थ श्री रघुनाथजी सहजही में चढ़ाइलिये यामें अद्वितीय बल देखाये ६ ॥

मैनमहनपुरदहनगहनजानि आनिकैसबैकोसारधनुष
गढ़ायोहै। जनकसदसिजेतेभलेभलेभूमिपालकियोबलही-
नबलआपनोबढ़ायोहै। कुलिशकठोरकूर्मपीठितेकठिनअति
हठिनपिनाककाहूचपरिचढ़ायोहै। तुलसीसोरामकेसरोज
पाणिपरसतही टूटोमानोबारेतेपुरारिहीपढ़ायोहै १० ॥

मैनके मथन कहे नाशक शिवजीने पुर जो त्रिपुरासुर ताको नाशकरिबो गहनकहे महा कठिनजानि ताके हेतु जगतमें यावत कठोर वस्तु रही तिनसबको सारांश आनिकै पिनाकधनुष को गढ़ायोहै काहेते श्रीजनकपुर रंगभूमि स्वयंबर सभा में भले भले कहे बलवान प्रतापवान तेजवान दिग्विजयी जेते राजारहे तिनसबनको बलकरि हीन करिदियो धनुष ने आपनोबल ऐसो बढ़ायो कि सब हारिगयो कैसोहै धनुष जो टूटबेमें बज्रते कठोर अरु चढ़ाइबे में कूर्म जो कच्छप ताकी पीठिते अति कठिन ताको हठिकरिकै काहूने चपरि कहे समाज ते निकसि शीघ्रता ते चढ़ाइ न सक्यो गोसाईंजी कहत सोई कठोर धनुष श्रीरघुनाथजीके कोमल कर कमल न सों छुवतही कैसो टूटिगयो मानो शिवजीने बालपनहीं ते पढ़ायराख्यो कि श्रीरघुनाथजीके छुवतही टूटिजायो बालकोपढ़ापुष्ट रहत सरोजपाणिमें रूपक अलंकार कठोर धनुष कर कमलते छुवतही टूटिबेमें अत्यंत प्रतापवान वर्णनकरे १० ॥

छप्पै ॥ डिगतिउर्वि अतिगुर्वि सर्बपर्व्वैसमुद्रसर । ब्यालबधिरत्यहिकाल बिकलदिग्पालचराचर । दिग्गयन्दलरखरतपरतदशकन्धमुखरभर । सुरविमानहिम भानु भानुसङ्घटितपरस्पर । चौंकेविरञ्चिशङ्करसहित कोलकमठअहिकलमल्यो । ब्रह्माण्डखण्डकियोचण्डधुनि जबहिंरामशिवधनुदल्यो ११ ॥

जेहिसमय शिवजीकोधनुष श्रीरघुनाथजी तोरयो ताको कठोर घोर धुनि दशहू दिशामें ब्रह्मांड को फोरिगई ताते अतिगुर्विकहे गरुई उर्वि जो पृथ्वी तापै यावतपर्व्वै जो पर्वत समुद्र सर इत्यादि सब डिगतकहे डोलिउठे पाताल में सर्प बधिरभये चर जे चलत अचरजे नहींचलत अरु आ-

ठहू दिग्गन के दिग्पाल सबबिकल ह्वैगये दिग्गयंद जो दिग्गज ते लरखराइपरे दशकंध जो रावण सोऊ मुछभरा भूमिमें गिरा व्योममें देवनके बिमानहिम भानुकहे चंद्रमा भानुसूर्य तिनके बिमान परस्पर संघटतकहे ठोकर खाइरहे हैं ऊपर ब्रह्मलोक में ब्रह्मा चौंके भूमिपै कैलास में शंकर चौंके पाताल में कोलकहे बाराह जी कमठकहे कच्छपजी अहिशेषजी इत्यादि सब बिकलह्वै कलमलाइ उठे यातिधनुभंगकी प्रचंडधुनि ब्रह्मांड कोखंडनकहे फोरि गई यामें ब्रह्मांडभरे में प्रतापवान श्रीरघुनाथजीको यश भरिपूरि रह्यो सब जयजय कारकरतहैं ११ ॥

लोचनाभिरामघनश्यामराम रूपशिशुसखीकहैसखी सोतूप्रेमपयपालीरी । बालकनृपालजीकेख्यालहीपिनाक तोर्योमंडलीकमंडलीप्रतापदापदालीरी । जनककोसियाकोहमारोतेरोतुलसीको सबकोभावतोह्वैहै मैंजोकह्यो कालीरी । कौशलाकीकोखिपरतोषितनवारियेरी रायदशरथकीबलैयालीजैआलीरी १२ ॥

बात्सल्यरसवाली सखिनके वचनहैं नेचनके अभिरामकहे आनंददाता घनसदृशश्यामजो श्रीरघुनंदन को रूपसोई शिशुकहे बालभाव करिकै हे सखी प्रेमरूपी पयकहे दूध पानकराइ पालनकरौ जो कठोरधनुष टूटबेको बड़ाशोच रहै तापिनाकको चक्रवर्तीजीके बालक जो श्रीरघुनाथजी सो ख्यालहीकहे कौतुकमाचहीमें तोरिडारे यावतभूमिमंडली ताके जेते मंडलीक राजारहे तिनको प्रताप अरु दापकहे अहंकार ताको दलिडारे मैंजो कह्योंरहै कि सबको मनभावतोह्वैहै सो भयो अर्थात् विदेहजीको जामातह्वैबो जानकीजीको पतिहोबो हमारोतेरो नेचनसों सुखदेखिबो तुलसीको युगुलउपासना पूरणह्वैबो अब कौशल्याजीकी कोखिपर अपनपौ ते संतोषकरि तनको

निछावरिकीजै दासीहूजिये औ श्रीदशरथजीकी बलाय अर्थात् रोगदोष आपने शिरलीजै जामें अरोगहै बहुत कालजीवैं १२ ॥

दूबदधिरोचनकनकथारभरिभरि आरतीसँवारिबर नारिचलींगावतीं । लीन्हेजयमालकरकंजसोहैंजानकीके पहिरावोराघोजीकोसखियासिखावतीं । तुलसीमुदितमन जनकनगरजन झांकतीझरोखेलागीशोभारानीपावतीं । मनहुंचकोरीचारुबैठीनिजनिजनीड चंदकीकिरिणिपीवैं पलकौनलावतीं १३ ॥

बरनारीकहे स्वरूपवान युवावस्था सौभागिनीजाति अनुकूल वस्त्र भूषण धारणकिहे प्रसन्न मन कंचनथारनमें दूब दही हरदी फूल फल अच्छत मानिक दीपधरे ऐसी आरतीसंवारि अंड नारी मंगल गानकरत चलतीभईं जयमालकहे मज्जवाकेफूल दूब पाटकेडोरामें गुहा यथा रघुवंशेइंदुमती स्वयंवरे ॥ एवंतयोक्तेतमवेक्ष्यकिंचिद्विस्रंसिदूर्वांकमधूकमाला ॥ ऐसो जयमाला करकमलनमेंलीन्हे तनतड़ित छटाधारी हंसगतिवारी सुकुमारी श्रीजनकुमारी सखिनकेमध्यशोभित तिनसों सखीकहतीं कि श्रीराघवेंद्रजीको जयमाल पहिरावो गोसाईंजी कहत ता शोभाकोदेखि पुरवासी परमानंदमें मगनहैं सोई शोभा अवलोकनहेतु सुनयनादिरानी झरोखनते झांकत कैसी सोहत झरोखामानों खोढ़रहैं तामें रानीमानों सुंदरी चकोरीबैठीहैं श्रीरघुनंदनके मुखचंद्रकी शोभा रूप किरिणिको पानकरतमें पलकनहीं लावत यामें उत्प्रेक्षाअलंकारहै करकमलमें रूपक १३ ॥

नगरनिशानबरबाजैंव्योमदुन्दुभी बिमानचढ़िगानकै कैसुरनारिनाचहीं । जयतिजयतिहूंपुरजयमालरामउर

बरषैंसुमनसुर रूरेरूपराचहीं। जनककोप्रणजयोसबको भावतोभयो तुलसीमुदितरोमरोममोदमाचहीं । साँवरो किशोरगोरीशोभापरतृणतोरीजोरीजियो युगयुगयुवती जनजाँचहीं १४ ॥

जनकनगरमें निशान जो विविधिप्रकारके बाजाहैं बर कहे श्रेष्ठ उत्सवकेभरे गड्डगहे बाजिरहेहैं अरु व्योमजो आकाश तामें बिमाननपर सवार देवता दुन्दुभी बजावत अरु देवांगना कल स्वरते मंगलगानकरि आनंद वशते नृत्य करिरहीहैं जा समय जयमाल श्रीरघुनाथजीके उरमें जानकीजी पहिरायो त्यहि सुखको देखि पाताल भूमि स्वर्ग तीनिहूंपुरमें जयजयकार शब्द ह्वैरह्योहै फूलनकी बर्षा करि देवता रूरे कही सुन्दरे श्रीरघुनाथजी के रूप में राचही कहे मनलगाय आनंदमें मग्न यकटक निहारिरहेहैं गोसाईंजी कहत कि श्रीविदेहजीकी जो प्रतिज्ञा धनुतोरिबे की रही ताने जयपाई तातें जिनको चाह रही तिन सबके मनभावतो भयो तातें सब हर्षित ह्वै रोमरोममें आनंद मचिरहाहै तासों भरिपूरि प्रेमते पुलकांग ह्वै सब आशीर्वाद देत कि कामछवि लजावनहारो नीलकञ्ज मेघवारो सुकुमारो अवधेशको दुलारो जगउजियारो ऐसोजो साँवरो किशोरहै अरु सुन्दरिसुकुमारी बयथोरी हेमतड़ित बर्ण गोरी ऐसी जो जनककिशोरी अवधेश किशोर ऐसी जो मनोहर जोरी की शोभा पै नजरि निवारण हेत तृण तोरि युवतीजन आपने दूटन सों यांचती कि यह जोरी युगयुग जीवै १४ ॥

भलेभूपकहतभलेभदेसभूपनिसों लोकलखिबोलिये पुनीतरीतिमारषी । जगदम्बाजानकीजगत्पितुरामभद्र जानिजियजोहोजौन लागैमुहकारषी । देखेहैंअनेकब्याह

सुनेहैंपुराणवेद बूझेहैंसुजानसाधुनरनारिपारषी । ऐसे समसमधीसमाजनाविराजमानरामसेनबरदुलहीनसीय सारषी १५ ॥

भदेसकहे खल जो राजाहैं तिनसों भलेराजा जो साधु हैं ते भलेवचन कहत कि लोककोलखिकै बोलियेअर्थात् जगतमें जे प्रतिष्ठित पुरुषहैं तिनकी रीति देखिकै औ पुनीतिरीति मारषी कहे आरषी अर्थात् ऋषिप्रोक्तस्मृत्यादि इत्यादि रीति बिचारिकै बोलिये काहेते जगत की माता श्रीजानकीजीहैं जगतके पिता श्रीरघुनाथजी भद्र कहे कल्याणरूप ऐसाजानिकै पापदृष्टि छांड़िकै पवित्र दृष्टिते देखौ जाते सुखमें स्याही न लागै हम अनेगिनव्याह देखेहैं अरु प्राचीन प्रतिष्ठित जननके व्याह वेद पुराणनमें सुनेहैं अरु सुजान जो सुन्दरी पदार्थके जानने वाले साधुनते बूझेहैं अरु पारषी जे बिचारिकै जानिलेते हैं ऐसे नरनारिन ते बूझेहैं सो ऐसे सम समधी सहित समाज धर्मात्मा औ सुकृती ऐसो दूसरो नहींहै प्रथम दशरथजीकी धर्मधुरीणता प्रमाणरघुबंशे॥दशरथःप्रशस्यासमहारथो यमवतामवतांचधुरिस्थितः ॥ सुकृति प्रमाण वशिष्ठ संहितायां ॥ रामादीनांकुमाराणां वात्सल्यानन्द उत्तमाः ॥ यादृशोभुज्यराज्ञा श्रीमद्दशरथेनच १ कौशल्याप्रमुखाभिश्च तथायोध्यानिवासिभिः ॥ कुचचित्तादृशो नास्ति नभूतोनभविष्यति २ ऐसे सहित समाज दशरथ से समधीपुनः मिथिलेशजी धर्मात्मा ॥ प्रमाणवाल्मीकीये ॥ सोभिवाद्यशतानंदज्जनकंचातिधार्मिकं॥ सुकृतिकीप्रमाण हरिवंशपुराणे॥विशेषतोजनकोनामनामतः। जानकीयच्चचोत्पन्नानिमिबंशप्रकाशिनी॥ यस्यभक्तिप्रभावेन रामोदाशरथिःप्रभुः । यामादृत्वंसमापन्नोलोकोत्तरफलप्रदः॥ ऐसे मिथिलेशजी समधीतैसेही श्रीअयोध्या मिथिलापुर निवासी नित्यपार्षद॥प्रमाणहरिवंशपुराणे।अयो

ध्याकायथानित्यःसर्वमंगलरूपिणः ॥ तथैवमिथिलायांवैसर्व मंगलविग्रहः १ नित्यानंदरसास्वादरूपिणोरामपार्षदाः ॥ श्रीरामराधकानांचनिवासार्थंविशेषतः २ तातै सहितसमाज सम समधी ऐसे दूसरो कहूं नहीं शोभितभयो जो श्रीरघुनाथजी ऐसे वरजातिमें रघुबंशकुल उत्तम स्वरूपवान यश कीर्तिमान प्रतापवान बलवान सत्य शौचतपादि धर्मवान सरलसुशील दयाकरुणा क्षमादि अनेक गुणभरे अवतारणके अवतारी ऐसे श्रीरघुनाथजी सौं वर ब्रह्मांड भरेमें दूसरो नहींहै दुलही जानकीजी पतिअनुकूल सरल चित्त क्षमावान अत्यंत स्वरूपवान सुकुमारी वय थोरी शक्ति शिरोमणि आह्लादिनीशक्ति ऐसी श्रीजानकीजीसी दुलही दूसरी काहूलोक में नहींहै यामें सब समाज को प्रताप वर्णनकरें १५ ॥

**बाणीबिधिगौरिहरशेषहूगणेशकही सहीभरीलोमस भुशुण्डिबहुबारिषो । चारिदशभुवननिहारिनरनारिसब नारदकोपरदाननारदसोपारिषो । तिनकहीजगमेंजगमगातजोड़ीएकदूजीकोकहैयाकोसुनैयाचषचारिषो । रमा रमारमणसुजानहनुमानकही सीयसीनतीयनपुरुषराम सारिषो १६ ॥**

यशप्रताप कीर्ति गुणरूप नाम सीताराम समान आन नहींहै ऐसे वचनबाणीप्रथमहींकहे जो विद्यानिधिहै ब्रह्मा कहे ते पंडितनमें अग्रणीहैं पार्वती हरिचरित्रकी श्रोता शिवजी भक्तयोगि शिरोमणि शेष कविनमें अग्रणी गणेश बुद्धिसदन सर्वपूजनीय इत्यादिके बचनन पर लोमस वाग-भुशुण्ड बड़ कालीन सर्वज्ञसाक्षीहैं अरु नारदजी ऐसो न कोऊ पारषीहै नकहूं उनको परदाहै ते चौदहौ भुवन में नरनारिनको निहारि नीकी भांति देखे तिनहूंकही कि जगतमें श्रीरामजानकीकी एकजोड़ी प्रकाशमानहै और

दूसरी नहींहै दूसरीको कहनेवाला अरु सुननेवाला अरु चषचारीकहे नेचन सौं देखनेवाला दूसरा कौनहै शक्तिन में श्रेष्ठ लक्ष्मीकहेसामर्थ सर्वज्ञविष्णुजीकहे भक्तशिरोमणि तत्वज्ञाता परमसुजान हनुमान्जीकहे कि श्रीरघुनाथजी सम और पुरुषनहीं श्रीजानकीजी सम औरनारीनहीं इहां उत्तम कविनके मुखते नामरूप को प्रताप सर्वोपरि वर्णनहै इहां रामनाम दूलहरूप सीय नाम दुलहीरूप द्युतिलावण्यता शोभा रमणीकता कांतिमधुरी कोमलता सुकुमारता इत्यादिते रूपप्रकाशमान अरु शीलादिगुणनते यश कीर्ति प्रतापादिते नामको प्रकाश इत्यादि प्रतापको प्रमाण वेदपुराण संहिता रामायणादिकनमेंवर्णनहै यथा प्रथम वाणी को वचन ॥ प्रमाण कालिका पुराणे ॥ सर्वा सामेवशक्तीनां कारणंतमसःपरं । श्रीरामसर्वेसशौख्यदशरनार्थिना १ पुनः ब्रह्मा के वचन को प्रमाण अथर्वण वेदेउत्तराङ्गे ॥यस्यांशेनैव ब्रह्मा विष्णु महेश्वरापिजातामहाविष्णुर्यस्यदिव्यगुणाश्चसएवकार्यकारणयोः परःपरम पुरुषोरामोदाशरथिर्बभूव २ पुनः पार्वतीके वचन प्रमाण शक्तिरहस्ये ॥ रामेतिब्रुवतोनिशंभुविजनस्येतावतासंचयं । पापानामतिशोधकंखलपुनर्नान्यत्कृतंचिन्तनं ॥ मार्तंडोदयकालमेवतमसोनास्तिच्छतिस्यात्छमं । किंकार्यंपुरुषैः प्रदीपकरणेवार्थानभिज्ञैर्हृथा ३ शिवजी के वचनन को प्रमाणशदाशिवसंहितायां ॥ सपथंकरोमितेवत्सपादयोश्च प्रभोर्मम: ॥ रामादन्यंनसंवेद्मिपरंदेवंसदीश्वरं ४ शेषजीके वचननको प्रमाणसदाशिवसंहितायां ॥ महाविष्णुसहस्राणंमहाशंभुशतस्यच ॥ सृष्टिस्थितिलयानांचकर्ताश्रीरघुनंदनः ५ गणेशजी के वचननको प्रमाण गणेशपुराणे॥ राम नामपरंध्येयंज्ञेयंपेयमहर्निशं । सर्वदारुद्विरुत्युक्तपूर्वमां जगदीश्वरैःईलोमसकेवचननकों प्रमाणलोमससंहितायां॥ नाशोस्तिप्रत्ययोलोकेयश्चश्रीरामनामतः॥ भिन्नंप्रतीयते विप्र सत्यंसत्यंवदाम्यहं ७ भुशुण्डिकेवचननको प्रमाण

भुशुंडीरामायणे॥असंख्यकोटिलोकानामुपादानंपरात्परं ॥ तथैवसर्ववेदानांकारणंरामउच्यते ८ नारदजीकेवचननको प्रमाणभविष्योत्तरपुराणे ॥ यत्प्रभावान्मयानित्यं परानंदात्मकापरं ॥ रूपंपरमयंदिव्यंदृष्टंश्रीजानकीपते ९ लक्ष्मी विष्णुकेवचननको प्रमाणभविष्योत्तरपुराणे ॥ भजस्वकमले नित्यं रामसर्वैसपूजितं ॥ रामेतिमधुरंसाक्षात्मयाशंकीर्तयेहृदि १० हनुमानजीके वचननको प्रमाणशिवसंहितायां॥ रामादन्यंपरंश्रेष्ठंयोऽवैपांडित्यमाचतः॥ संतप्तहृदयस्तस्यजिह्वांछिंद्यामहंमुने ११ इहां हनुमान्जी को सुजानयतो कहे जो श्रीरामजानकी के अंगअंगकी शोभा आठ हू यामदेखते हैं अपरको क्षणमाच दुर्लभहै बाल्मीक सुन्दरकांडमें श्रीकिशोरीजीने प्रश्नकरी कि जो तुम प्राणप्रियाजीके निकटनिवासीहौ तौ गुप्तप्रगट गुणकहौ ऐसी वाणी सुनि केशरी किशोरबोले कि हे श्रीस्वामिनीजी श्रीरघुनंदनजीके नैन मैन मद्दमन कंजमीन मृगखंजन मद्दलनहारेहैं कजरारे अरुणारे शीलसागरहैं अरु रूप यौवनादि संपन्नहैं उच्चअनूपस्कंधहैं अजानुभुजभक्त भय हारीहैं त्रिरेखा संपन्न कंबुतेकजितकंठहै कोटिनकलाधरकी कमनीकताको कतलकरनहारो विशदवदनसुखमासदनहैंगूढ़जंचुहै परमपावन श्रीरामऐसो नामहै इत्यादि सर्वांग बाल्मीकिमें प्रसिद्धहै यथा ॥ रामःकमलपत्राक्षःसर्वसत्वमनोहरः॥रूपयौवनसंपन्नःप्रसूतोजनकात्मजे१६॥

दूलहश्रीरघुवीरबने दुलहीसियसुंदरमंदिरमाहीं । गावतिगीतसबैमिलिसुंदरि वेदयुवाजुरिबिप्रपढ़ाहीं । रामकोरूपनिहारतजानकी कंकणकेनगकीपरछाहीं । यातेसबैसुधिभूलिगई करटेकिरहीपलटारतनाहीं १७॥

दूलहश्रीरघुवीरबने अर्थात पगनमें जावक पीतांबरी धोती कटिमें पटकाजरीको जामा मणिनकी माला कंठा

करमें कंकण पहुंची मुद्रिका कड़ा काननमें कुंडल झुमका नेचनमें अंजन शीशपर जरकसीपाग तामें कंचनमणिन को मौर उपन्नादि धारण ऐसो श्याम मनोहररूप श्री रघुनाथजी दूलहहैं तैसही दुलही कहे पगनमें बिछिया नूपुर जेहरि महाउर रसना चन्द्रहार पदिकहार नागमणीहार मणिमोतिनके हार पंचदाम पंचमणी चंपकली कंठी बाजू बाँक अंगद भुजवलय पहुंचवलय मणिवलय कंगन पहुंची चूरी आरसी आँगुरताना पोरियां बाँक मुद्रिका श्रवणफूल ताटंक पट्टिका बेंदा बेंदी मांगफूल चूड़ामणि माँगमोती सिंदूर अर्द्धचन्द्र बसनसारी आदि धारण दुलहिनिरूप श्रीजानकीजी सुन्दर मणिनजटित प्रकाश मान मंदिर के मध्यमें सुंदरी सौभागिनी स्त्री मंगलगान करत अरु ब्राह्मण वेदध्वनि करत में दुलहा दुलहिनि को कोहबरकोलाहू लहकवरि खवाहू जुवाखेलाय रही हैं तासमय कंकणके नगनमें श्रीरघुनाथजी के रूपकी परछाहीं देखिपरत ताको श्रीजानकीजी सप्रेम निहारतमें मन मोहितभयो लज्जादि देहकी सुधि भूलिगई तातें हस्तचलावनो थकिगयो नेच यकटक भयो पलकचलिबो भूलिगई यह आलंबन बिभावहै विभ्रमहावहै १७ ॥

भूपमगडलीप्रचगडचगडीशकोदगडखगड्यो चगडबाहु दगडजाकोताहीसोंकहतुहौं । कठिनकुठारधारधरिबेकी धीरताहिवीरताविदिततताकीदेखियेचहतुहौं । तुलसीसमाजराजतजिसोविराजैआजुगाज्योमृगराजगजराजज्यों गहतुहौं । क्षोणीमेंनछांड्योछिप्योक्षोणिपकोछौनाछोटो क्षोणिपछपनबाँको विरुदबहतुहौं १८ ॥

ताहीसमय शिवधनु भंगको हाल सुनि परशुरामजी आइबोले कि प्रचगड जो तेजस्वी राजनकी मंडली में

चंडीश जो हैं शिवजी तिनको धनुष जाने खंडन करोहै ऐसे प्रचंड भुजदंडहैं जाके ताहीसों मैंकहतहौं कि हमारे कठिनकुठार की जो पैनी धारहै ताके सहिबे को वा राजाको धीर्यधरिबोपरी जो समाजते बढ़िकै धनुषतोरे की बीरता वाकी विदितहै सो हम देखाचाहतेहैं ताते राजनकी समाजते बिलगछै आजुविराजै अर्थात् कुठार की घोरधार सहिबेको धीरज करिकै समाज ते बिलगाइ कै आपनीबीरता हमकोदेखावै यथा मृगराज गर्जिकै गजराजको गहत तैसेमैं वाको पछारिहौं काहेते क्षत्रिन पै मैं ऐसो निर्दयीहौं कि क्षोणिप जो राजा ताको छोटहू बालक भूमिपै लुकानेहूंको नहीं छांड्यों काहेते क्षोणिप जो राजा तिनके छपनकहे नाशकरन ऐसोबाँकोविरद जो बाना ताको बहुतकहे धारणकिहेहौं यह वाल्मीकिको मतहै १८॥

निपटिनिदरिबोलेवचनकुठारपाणि मानित्रासऔनि पनमानौमौनतागही। रोषेमाषेलषणअकनिअनखोहीबा तें तुलसीविनीतवाणीविहँसिऐसीकही। सुयशतिहारेभरेभुवननिभृगुनाथ प्रगटप्रतापआपुकह्योसोसबैसही। टूट्योसोनजुरैगोशरासनमहेशजीको रावरोपिनाकमेंसरीकताकहाँरही १९॥

कुठारपाणि जो परशुरामजीते निपटिकै निरादर के बचन ऐसे कठोरबोले कि जाको सुनि अवनिप जेते राजा रहेते ऐसे चासकछे डरमानिकै चुपभये किमानौ मौनता बर्त्तमानछै जिह्वाको पकरिलई जो बोलिबेकी इच्छाभये हूपर बोलनहीं कढ़िसकतहै गोसाईंजी कहतकि अनख की भरी बाणी सुनि अपिमान अकनि कहे बिचारिकै लषणलाल साषे तब वचन उरमें लागिगये ताते रिसाइ कै हँसिदियेमें परशुरामको निरादर करिदिये श्रीरघु-

नाथजीकी कानिमानिनम्बवाणी ऐसीबोले किहे भृगुनाथ आपुको सुयश भुवनमें भरिपूर रहाहै औ प्रताप प्रकट ही देखियत कि आपके सामने सबराजा सहितगयेतातें जो आपु कह्यो सोसब साँचीहै परंतु शिवजीको धनुष टूटो सो ना जुरिसकैगो क्योंकि जो धनुष शिवजी के पास रहि गयो तामें तुमारी शरीकता है सो तो टूटो नहीं या धनुषको शिवजीने मिथिलेशजी को दैदियो तब आपुकी शरीकता कहां रहिगई १९ ॥

गर्भकेअर्भककाटनकोपटु धारकुठारकरालहैजाको । सोईहौंबूझतराजसभाधनुकैदलिहैदलिहौंबलताको । लघुआननउत्तरदेतबड़ेलरिहैमरिहैकरिहैकछुशाको । गोरो गरूरगुमानभरोकहुकौशिकछोटोसोढोटोहैकाको २० ॥

गर्भके अर्भकके बालकनको काटिबेको पटु कहेचतुर है धारजाकी ऐसो करालकहे भयानक फरसाजाकेहै सोई मैं परशुरामहौं सो बूझतहौं कि धनुषको काने तोस्योहै ताके बलको मैं दलौंगो हेबालक तू छोटेमुख ते उत्तर बड़ो देतहै लरिहै युद्धमें आरूढ़ह्वै हम पै शस्त्रास्त्र प्रहारकरि शाकोकहे प्रभाव प्रकटकरैगो हे विश्वामित्र यह गरूरगुमान भरो गोरो छोटो सो बालक काको है इहां लक्ष्मणजी कहेकि जो गुरूकेपास पदार्थहै तामें सब शिष्योंको साझाहै अरु जब कोई पदार्थ गुरु काहूशिष्य को दैदियो तब औरशिष्यनको दावा नहींरहा तैसे या धनुषको शिवजीने मिथिलेशजीको दैदियो यामें तुम्हारो दावा नहींहै यातें क्रोध छंडाहै यहियुक्तितें बे दाये करनो यह बड़ोभारी उत्तरहै अवस्थाघोरी तें बदनछोटो २० ॥

मखराखिबेकाजराजामेरेसंगदये दलेयातुधानजेजितैयाबिबुधेशके । गौतमकीतीयतारीमेटेअघभूरिभारीला

चनअतिथिभयेजनकजनेशके । चण्डबाहुदण्डबलचण्डी-
शकोदण्डखण्ड्योब्याहीजानकीजीतेनरेशदेशदेशके । सौं-
वरेगोरेशरीरधीरमहावीरदोऊनाम रामलषणकुमारकोश
लेशके २१ ॥

विश्वामित्रजीके बचनहैं कि श्याम गौर शरीर रणमें धीर्यमान सबलशचु मर्दनमें महाधीर श्रीराम लषणऐसो नाम एदोऊ महाराज कौशलेश के कुमारहैं सो हमारी यज्ञकी रक्षाकरिबेके काजको महाराज दशरथजीने मेरे साथ करिदिये सो रक्षाकरतमें जो योधा इन्द्रको जीतन हार यातुधान मारीच सुबाहु तिनको नाश करि दिये यामें युद्ध बीरता देखाये अरु परपति रतिको जो बड़ा भारी पाप ताको मेटे गौतमकी तिय अहल्याको पगधूरि दै उद्धारकरे यामें ईश्वरता देखाये अरु राजाजनक ऐसे वैराग्यमान तिनके नेचनके अतिथिकहे प्रिय पूज्य पाहुन भये अर्थात ब्रह्म सुख त्यागि इनकेरूपकी माधुरी अवलो-कनिमें प्रेमवश नेच आयकहे इनके प्रीतिरंगमें रँगिगये यामें परब्रह्मरूप सूचितकिये अरु प्रचंडहै जिनमें बलऐसे भुजदंडन सो चंडीश जो शिवजी तिनकोदंड जो धनुषजो काहू को उठायो न उठो ताको खंडनकरि सबदेशनके राजन को जीति श्रीमिथिलेश नंदिनी को बिबाहे यामें बली प्रतापवान देखाये २१ ॥

कालकरालनृपालनकेधनुभंगसुनेफरसालियधाये ।
लक्ष्मणरामबिलोकिसप्रेम महारिसिहाफिरिआँखिदिखा
ये । धीरशिरोमणिबीरबड़े विनयीविजयीरघुनाथसुहाये ।
लायकहैंभृगुनायकसेधनुसायकसौंपिसुभायसिधाये २२॥

इतिश्रीकवित्तरामायणेबालकांडःसमाप्तः॥ १ ॥

शिवजी धनुषको भंगकहे टूटिबो सुनि कृपालजो राजा

तिनके करालकाल जो तुरतही जीवघात करनेवाले परशु राम करमें फरसालिये शीघ्र आवतभये श्रीलक्ष्मणजी श्री रघुनाथजीको रूप सप्रेम विलोके अर्थात् देखतही मोहि-तह्वै पुलकांगभये पर रिसिहाकहे अत्यन्तक्रोधीहैं ताते कठोरबचन कहि टेढ़ी भौंह करि आँखि दिखाये पुनः धीर्यमाननमें शिरोमणि बीरन में बड़े वीर विनयी कहे नम्रतायुत शीलवान् सुभाव विजयी सबके जीतनेवाले प्र-तापवान् ऐसेजो श्रीरघुनाथजी तिनकोदेखि परशुरामजीके मन भावतभये परशुरामजीके डाटेपर मुखकी प्रसन्नता न गई याते धीर शिरोमणि जाने राक्षसबध सुनि बड़ेबीर जाने प्रियबचन सुनि विनयीजाने त्रिलोक विजयीधनुष तोरेते विजयीजामे इत्यादि गुणनते परब्रह्मरूपजानि मन भाये ताते परशुरामसे लायकबीर तेऊ धनुषबाण फरसादै विनतीकरि सहजहीमें चलेगये २२॥

सवैया॥ माणिकमूर्द्धतःमुकुटाद्भुतदीप्तप्रभाशतभानु समः॥ चन्द्रमुखात्मृगाचलकुंडलगंडतलंकचतुल्यतमः॥ सीपजस्यामकलेवरमेंपटपीतयथातड़िताभ्रगमः॥ मामक-मानसंनिहितो चरणांबुजजानकिनाथनमः॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदरज शरणागतबैजनाथकृतकवित्तावलीरत्नदीपि-का टीका बालकाण्डसमाप्तः॥ १॥

## अयोध्याकाण्ड ॥

कीरकेकागरज्योंनृपचीरविभूषणउप्पमअंगनिपाई ।
अवधतजीमगवासकेरूखज्योंपंथकेसाथज्योंलोगलुगाई ।
संगसुबंधुपुनीतप्रियामनुधर्मक्रियाधरिदेहसुहाई। राजि-
वलोचनरामचलेतजिबापकोराजबटाऊकीनाई १ ॥

बंदेविदेहतनुजापतिपादपद्मं ब्रह्माहरीशवरुणेन्द्र सुरौघ सेव्यं ॥ योगीन्द्रवृन्दमनशालिमकरंदलुब्धं मोहाब्धितारण प्लवंशरणंशरण्यं १ नृप चीर कहेजरकसो पाग जरीकोजामा दुशाला उरमाल पटुकाधोतीआदि नृपचीर कैसे रहे यथा कीरकीरको कागरअर्थात्केचुलित्यागे यथाकीराकी देहनिर्मलदेखात अथवाकीर सुवाको पिँजरासे अंगकी शोभा ढकीअरु बन्धन ते मन उदासीन जब बसन उतारिडारे तब अंगकी शोभा प्रसिद्ध देखिपरी औराजबंधन ते छूटि मनप्रसन्न भयोअरु विभूषण जोहैं किरीट कुंडल कंठा माला केयूरपहुंची कड़ा मुद्रिका क्षुद्र घंटिकादि ते उतारे ते सौभाविक अंग विभूषित सीउपमा पाईभाव अलिकसे कचसचिक्कन चमकिरहे अर्द्धचन्द्रसे उच्चभाल शोभित काम धनुषसी भृकुटी कंज मीन खंजन से नयन तिलफूलसी नासिका आदरस से कपोल बिंबसे अधर शरद पूर्णचन्द्रसे बदन कंबुसी ग्रीव गजसुंडसे भुजकंज से कर चलदलसों उदर भमरसी नाभी तरंगसी त्रिवली सिंहसे कटिरंभसे जंघ कंजसेपद इत्यादि सर्वांग बिना भूषणै भूषित ताते अत्यंत रूपवान्हैं यथा ॥ बिनभूषण भूषित युतन रूप अनूपमसोइ अरु श्रीआयोध्याजी कैसे तजेयथामार्गमें बासको रूख रूख कहिबेको यह भाव कि बिनाफल फूल को वृक्ष अरु अयोध्या बासी नर नारिन को कैसे छोड़े यथापंथके संगी को छोड़िबेमें कछु शोक नहीं होत संगमें सुबंधु अर्थात् सेवक धर्म अरु सखाधर्म

अरु बंधु धर्म तीनिहूं में प्रवीण श्रीलक्ष्मणजी हैं सेवक धर्म यथा सिद्धांत सुक्तावल्यां ॥सर्वेश्वर सर्व ज्ञप्रभु अतिशय कृपानिधान॥इत्यादिक गुणआश्रयणसोआलंबनजान १ आठोअंगप्रणामकैपादप्रक्षालनपान ॥ कृपादृष्टिकीवांछनित सोउद्दीपनजान २ आज्ञाशिरधारे सदा सेवनचतुर अमान ॥ ढीठवचनबोलैनहीं यहअनुभाववखान ३ पूर्वकहेतेप्रणययुतअष्टसात्वकाजान ॥ तनमनको जोक्षोभहोताहि सात्विकामान ४ हर्षगर्वचिंतास्मृतीमतिधृतिअरुनिरवेद॥ तर्कशंकपुनिदीनतासबसंचारिसुवेद ५ जियप्रभुताको ज्ञानपुनि संभ्रमआदरदान ॥ स्वामिभावकरिप्रीतियह थाइभावजियजान ६ प्रथमहितेसियरामको दर्शनहींसंयोग ॥ दर्शनपुनिअंतरपरैताकहंजानिवियोग ७ विद्युत प्रभुतइयोगयहदशदशरसाबखानि॥कृशताजड़ताजागरण अनालंबधृतिहानि ८ ज्वरतापादिकव्याधिपुनि जरनिअंगसोजान ॥ बाढ़ैचितउन्मत्तमूर्छामरणनिदान ॥ ९ इतिसेवक अयसखागुण यथा ॥ सरसुलोनेनेहनिधि रघुबर बड़ेसुजान ॥इत्यादिकगुणआश्रयणसोआलंबनजान १ चपलतुरंगनफेरनीमृगतकिमारनबान ॥ करिप्रणलक्षणबेधनी सबउद्दीपनजान २ धरिगलभुजवतलाबनीदृकसंगभोजन शयन ॥ अनुभावयहसख्यकेसबविधिसुखकोअयन ३ पूर्व कहेतेसात्विकारोमांचादिकअच ॥ हर्षगर्वआदिकसकल संचारिजुजोतच ४ सखरसकीअथाइपुनि प्रणयप्रेमअरुनेह ॥ अनुरागअसजानियेमनोएकइ देह ५ इतिसख्यगुण अरु सुबंधुकोगुण बाल्मीकीमें लक्ष्मणजीके वचनहैं अहंतवन्महाराजे प्रियत्वंनोपलक्ष्मे ॥ भ्राताभर्ताचबंधुरचपिता माताचराघव: ॥ ऐसेसुबंधु श्रीलक्ष्मणजी अरु सबविधिअनुकूलपतिव्रतनमें शिरोमणि ऐसी पुनीत प्रिया श्रीजानकी जो तिनको साथ लिहे मानो धर्म अरु क्रिया मूर्तिमान् संगमें शोभित हैं धर्म यथा सत्य शौचत पदान् सत्यकहे मन वचन कर्म ते सत्य कर्तव्यता शौचकहे त्रिकाल स्नान

करिये रजवीर्यमलिन पटस्त्रीम्लेच्छशूद्र पतितक्लीव स्पर्श न करिये रजस्वला कपालीमृतक मशानना दर्शिये तप करे इन्द्रीनको विषयजीतना प्रथममूल फल भोजन करितपस्या करि स्थूलशरीर जाग्रत अवस्था दशोइंद्रिन को विषय जीतना पुनः बारिअहारकरि लिंगशरीर की षट्ऊर्मी षट्विकार कों विषय स्वप्न अवस्था को जीतै पुनः पौन अहारकरि कारण शरीरकी सुषुप्तिअवस्थामें सातौ धातुन को विषय जीतै पुनः ब्रह्मानन्द द्वै अद्वैत रूप की तुरीय अवस्था में दशौ इन्द्रिन की सूक्ष्म वासना की बिषयताको जीतै दान करे देशकाल सुपात्रविचारि श्रद्धा आदर युत निरबाञ्छिक दानदेना इति धर्मक्रिया करे अपने वर्णाश्रम के कर्मकरना यथा ब्राह्मणके सम दम तप शौच शांति दया ज्ञान विज्ञान पुनः क्षत्रीके शूरता तेजवान धीर्यशास्त्र में दक्षयुद्धमें अचलदान में उदार पुनः वैश्यके कृषी वाणिज्य गोरक्षा पुनः शूद्रद्विवर्ण सेवा पुनः ब्रह्मचारीके विद्या धेनु गुरुसेवा भिक्षाभोजन पुनः गृहस्थके दान स्वनारी रत हरि अर्चा पंचग्रास दान अतिथि सेवा पुनः वानप्रस्थ स्त्री युत तपस्याकरि इन्द्रीजीतै पुनः संन्यासीके विषयत्याग दक्षतर वास भिक्षाभोजन इत्यादिक्रिया औ धर्म मूर्तिमान् मानों संगलै कमलनैन श्रीरघुनाथजी पिताकी राजतजि बटाऊ राहगीर समचले यामें त्यागवीरता देखाये १ ॥

कागरकीरज्योंभूषणचीर शरीरलख्योतजिनीरज्यों-
काई । मातुपिताप्रियलोगसबै सनमानिसुभाइसनेहस-
गाई । संगसुभामिनिभाइभलेदिनद्वैजनुओधहुतेपहुनाई।
राजिवलोचनरामचले तजिवापकोराजबटाऊकिनाई २ ॥

राजसी भूषण बसन कैसे त्यागे यथा पिंजरा को सुवा तजत इहां सुवा की उपमा याते दिये कि अपर पक्षी पालेते संमोहितहोत अरु सुवा ऐसा निर्मोही होत कि

जो जन्मभरि पालेरहिये तहूं जब दांवकरिपायो तब पिं-
जरातोरि भागिजातहै तथा भूषण चीर तजेपर देह कैसी
शोभितभई यथा काईतजि नीरनिर्मल देखात भूषण दूषण
मानितजे यह वैराग्य दशाहै वसनकाई से तजे तनजल
सों निर्मल देखानो यह रूप की अधिकारताहै माताकौ-
शल्यादै पिता श्रीदशरथ महाराज अपर जे प्रिया लोग
सनेह के संबन्धी रहे तिनको मोहतजि सहज सुभाव
सनमान करि छांड़संग सुभामिनि पतिव्रतमें प्रवीण श्री
जानकीजी अरु अमानी आज्ञाकारी सबविधिते भलेभाई
श्रीलक्ष्मणजी साथलिये मानों द्वै दिन श्रीअयोध्याजी में
पञ्चनाई करिकै भावपाञ्चन को एकदिन रहिबो उचित
है सो दुइदिनरहि आसूदाह्वै कैकमल नयन श्रीरघुनाथ
जी बापको राज तजि राही से चले गये याते बिषयते
बिरक्त हैं २ ॥

शिथिलसनेहकहैंकौशिलासुमित्राजीसों मैंनलखीसौं तिसखीभगिनीज्योंसेईहै । कहैंमोहिंमैयाकहौंमैंनमैया भरतकी बलैयालैहौंभैयातेरीमैयाकैकेईहै। तुलसीसरल भायरघुरायमायमानी कायमनवानीहूनजानिकैमतेईहै । वामविधिमेरोसुखसिरससुमनसम ताकाछलछुरीकोहकु-लिशलैटेईहै ३॥

श्रीरघुनन्दन के सनेहते शिथिल कहे थकित ह्वै श्री कौशल्याजी सुमित्राजी सों कहतीहैं कि हे सखी कैकेयी को मैं सवतिकरिकै कबहूं नहीं देखी सदा बहिनि सम पालनकरी है जब रघुनंदनभोको मैयाकहैं तब कहैंकी तुम्हारी मैया मैं नहींहौं। बलैयालियो मैं भरतकी मैया हौं हे भैया तेरी मैया कैकेयी है ऐसे वचन सुनिसरल है सु-भाव जिनको ऐसे श्रीरघुनन्दन कैकेयी को माताकरिमानी मनवचकर्महू करिमतेई कहे दूसरी माता करि नहीं

जानी मतेई पश्चिमदेश की बोलीहैं सिरसके फूल सम कोमल हमारो सुख अर्थात् क्षत्रीजाति तामें रघुबंश युद्ध में अचल ताके शिरोमणि धर्मधुरीण विषय ते विरक्त ऐसे रघुबीरकी माता ताको सुख पुत्र सदा संयोग कहा पुष्ट है दूसरे पतिको जीवन रामदर्श आधीन सोऊ पुष्टनाहीं ऐसो कोमल हमारो सुख ताके काटिबे हेतु बामबिधाता ने कैकेयी के छल रूप छूरीको क्रोध रूप बज्रमें पैनाई भाववज्र क्रोध कैकेयी करिदियो जाते छल ऐसो पैनभयोजो काहूके कहे गोठिल न भयो ३ ॥

कीजैकहाजीजीजूसुमित्रापरिपाँयकहैं तुलसीसहावै विधिसोईसहियतुहै । रावरोसुभायरामजन्महीतेजानियत भरतकीमातुकोकीवेशोचियतुहै । जाईराजघरब्याहि आईराजघर महाराजपूतपायेहूनसुखलहियतुहै । देह सुधागेहतेऊमृगहूमलीनकियो ताहूपरबाहुबिनराहुगहियतुहै ४ ॥

पांयनपरि सुमित्राजी कहतीहैं कि हे जीजीजू जो बिधाता सहावै सोई सहिबेको है तामें काहकीजिये आपुको तौ सुभाव रीति रहस्य श्रीरघुनंदन के जन्महीं ते जानियतहै भाव जब अनेकन कल्पसत्कर्म करिबाहर भीतरशुद्ध होत तब श्री रघुनाथजी में प्रीति भक्ति होत यथा महारामायणे॥जेकल्पकोटिसततंजपहोमयोगैर्ध्यानैःसमाधिभिरहोरतब्रह्मज्ञानात् । तेदेविधन्यमनुजाहृदिवाक्षशुद्धः भक्तिस्तदाभवतितेषुचरामपादौ ॥ ताते तुमजो ऐसीनहोतू तौ श्रीरघुनंदन पुत्रकैसेहोते हम भरतकीमाताको शोचकरियतहै कि राजाकोपुत्रीभई फिरि रघुबंशकुलमें चक्रवर्तीके संगब्याहभयो अयोध्यामहा उत्तम राजपायो धर्मधुरीण भक्तशिरोमणि भरतसे पुत्रपायो ताहूपर सुख न

प्राप्तभयो यथा चन्द्रमा देहतौ सुधाको घरताको वाहन मृगानेप्रकाशमें मलीनता करिदई ताहूपर बिनाबाज़नको राज़ ग्रहणकरिसब शोभा लोपकरिदेत इहाँ चन्द्रमासे कैकेयीतामें हरिविमुखता कलंक मृगासे यश मलीनकियो ताहूमें विधवापन राज़समग्र शोभालोप करिदियो सो-ऊबिनाकरकोहै ४ ॥

नामअजामिलसेखलकोटि अपारनदीभवबूड़तकाढ़े। जोसुमिरैरजमेरुशिलाकण होतअजाखुरवारिदबाढ़े। तुलसीजिनकेपदपंकजते प्रगटीतटनीजुहरैअघगाढ़े। तेप्रभुयासरितातरिबेकहँ माँगतनावकरारेहवैठाढ़े ५ ॥

अपारजो भवनदीहै तामें बूड़त अजामिल ऐसे करोरिनखल पातकिनको राम ऐसोनाम काढ़िलियो जन्म मरणादिदुःख छुड़ाइ मुक्तकरिदियो अरु जे रजसम रहे यमन बालमीकादिजो कर्म वायुबशते नमालूमकहांकहां उड़तेफिरते तेऊनामलैकै सुमेरुसम अचल परमधामके अधिकारीभये अरु तिनके जो पापरहे शिलाकहे पर्वतसेगरू तेनामलेतही कणसमह्वैउड़िगये यथा निषाद कोलभिल्ल अरु समुद्रसों अपारदुःख जिनकोरहा यथा सुग्रीवादिते प्रभुछपाते छागकेखुर समपारभये गोसाईंजी कहतकिजिन के पदकमलनते तटनी श्रीगंगाजी उत्पन्नभईं जो कठिन पापनको हरि लेतीहैं तेई प्रभुभक्तनके आधीनह्वै प्रसिद्ध गंगाजीके पारजाबेहेतु करारपर ठाढ़िह्वैकै केवटते नाव माँगतहैं ऐसे भक्तवत्सल कृपालुहैं ५ ॥

यहिघाटतेथोरिकदूरिअहै कटिलौंजलथाहदेखाइहौं जू। परसैपगधूरितरैतरणी घरणीघरकोसमुझाइहौंजू। तुलसीअवलंबनऔरकछू लरिकाक्यहिभाँतिजिआइहौं

जू । बरु मारियेमोहिं बिनापगधोये हौंनाथननाउचढ़ाइ हौंजू' ६ ॥

जब श्रीरघुनाथजी नावमाँगे तब केवटकहे कि हे महाराज यहिघाटते थोरीदूरिपर सरिताथाह कटितक जलहै सोमैं देखाइदेहौं तहां उतरिजाइये भावउतारिदेवेमें मोको इनकारनहींहै काहेते आपुके पगकीधूरिलागे अहल्या सम मेरीनाउ तरिजाइ तौ घरमेंजाइ घरणीको कैसेसमुझाइहौं भावनारिनको जड़ता सुभाव होत ताहू में नीच जातिकी नारी महाप्रबल दूसरे और अवलंब जीविका की मेरे कछुनहींहै तौ लरिका कौन भाँति जिवाइहौं ताते बरु कु मोको मारिये सो अंगीकारहै कि सब परिवार तौ नामरैगो ताते यह सांचीबात मैंकहतहौं बिनापगधोये नावपर नचढ़ाइहौं परिवार जीवनमुक्त करोचाहत ताते व्याजस्तुतिहैं ६ ॥

रावरेदोषनपायनको पगधूरिकोभूरिप्रभावमहाहै । पाहनतेबनबाहनकाठको कोमलहैजलखाइरहाहै । पावनपांवपखारिकैनाउ चढ़ाइहौंआयसुहोतकहाहै । तुलसी सुनिकेवटकेबरबैन हँसेप्रभुजानकीओरहहाहै ७ ॥

केवट कहत कि हे महाराज आपुके पदकमलन को दोषनहींहै जाते नाउपर नचढ़ावौं भावपदकी प्राप्तीतौ सुकृतिनको अधिकारहै ताते पगकीधूरिहीको महाभारी प्रभावहमसे पातकीपतित तारिबेकोहै जोकहौ अहल्या तौ पाषाणरही ताको कहतकि बनकहे जलताको बाहन नाउकाठकी सो पाहनते कोमलहै ताहूमें जलखाइ रहा भीजेते अतिकोमलहै ताते पबित्र पांवपखारिकहे धोइकै नाव पर चढ़ाइहौं हे नाथ तामें आपु की का आज्ञा है तहां बरबैनकहे देशकाल समय सुहावने कही थोरे

वर्ण अर्थ बड़ो विलक्षण चातुरीहास्य युक्त श्रवण रोचक गूढ़आशय सनेह वर्द्धक ऐसेबचननको आशयविचार श्री रघुनाथजी जानकीजीकी ओर हेरि ठठायकैहँसे हँसिबे को यहभाव कि श्रीजानकीजी आह्लादिनी शक्तिहैं बद्धमुक्त जीवकी व्यवस्थाकी अधिकारीहैं बिना इनकी आज्ञा भव तरन दुर्लभहै सो वर्त्तमान बरजोरीकरि केवट परिवार सहित भवसागर पार जातहै याते हँसे वा जनकपुर में तुमहूं रजको भयमानि पदस्पर्श नहीं करतीरहौ वा तुम्हारीसेवा बरबश केवट लेतहै ७ ॥

पातभारीसहरिसकलसुतवारेवारे केवटकीजातिकछू वेदनपढ़ाइहौं । सबपरिवारमेरोयाहीलागिराजाजीहौं दीनबित्तहीनकैसेदूसरीगढ़ाइहौं । गौतमकीघरणीज्योंतरणीतरेगीमेरी प्रभुसोंनिषादह्वेकैबादनबढ़ाइहौं । तुलसीकेईशरामरावरेसोसाँचीकहौं बिनापगधोयेनाथनाव नाचढ़ाइहौं ८ ॥

हेहरि श्रीरघुनंदनजी पाँति भारीसहितहौं भाव परिवार भारी मेरेहै तामें सबलरिका छोटेछोटे कछु मँजूरी करिबेलायक नहींहैं अरु वेदपढ़ाइ नसकौंगो जोजामें बैठे जीविकाहोइ काहेते केवट नीचजातिहौं हेमहाराज मेरे सब परिवारकी जीविका यही नाउ की उतराई है अरु ग़रीब द्रव्यहीनहौं ताते दूसरीनाउ न बनवा सकौंगो जोगौतमकी नारी सम मेरी नाउ तरिजाइतौ मैं क्या करौंगो जो आपु बनवाइ देबेको योग्यहौ तौ मैं निषाद ह्वैकै बाद ना बढ़ाइहौं कि मोंको आपु बनवायदीजै ताते महाराज आपु ते मैं यह साँची बात कहतहौं हे नाथ बिनापग धोये नाउपर न चढ़ाइहौं इति वाच्यार्थ अथ व्यंग्यार्थ पातनामहै दोषको शीघ्र बोधमें प्रसिद्धहै हेहरि

प्रात जो दोष सो हमारे भारीहै अरु सकल सुतवारेकहे बाल बुद्धी अज्ञानहैं अरु केवट नीचजाति वेदपढ़ाइनहीं सकत जो अर्चादि सुधर्म करिसकैं ताते सब परिवार मेरोपदरज के आसरे में लागिहै जो कहौ आजु चूकि जाउं तौ सुकृति रूपीद्रव्यते हीन दीनहैं दूसरी कैसे गढ़ाइ हौं भाव ऐसो संयोग फिरिना मेरो बनायो बनैगो ज्यों गौतम की घरणी तरी है तैसे पदरज पायमेरी तरणी भव सागरमें तरैगी प्रभुसो भाव आपुके पारकिहे भवसागर पारहोंउंगो सो आपु भवसागरके तारकस्वामी सोमैं तुच्छ निषाद ह्वै बादन बढ़ाइहौं भाव बज्रतबातैं ना करौं गो सांची बात एक आपुते कहतहौं बिना पगधोये भाव बिना भवसागर पार भये नाथ जी आपुको नाव पर न चढ़ाइ हौं इति विज्ञार्थ अथलक्ष्यार्थ केवट की जाति कछु वेद न पढ़ाइ हौं भाव हिंसै तो करेंगे तामें बालकअज्ञानी बेप्रयोजनके जीवबद्ध करतेहैं ताहूमेंभारी कुटुम्बते अधिकपाप वृद्धिहोइगी अरु सबपरिवार मेरेया-हीलागि भाव हिंसा कर्मकरि जीविकाहै जो कहौ की हिंसाकी क्रियान करौ ताको कहतकी दूसरी निरहिंस कीक्रिया कैसे कराइसकौं भाव बित्तहीन दीन जो हिंसा न करैतौ खांइका तातेयथा गौतमकी चियातरी तैसे पदरज पाइमेरी तरणी भवसागरमें तरैगी अरु निषादकहे पतितजीव ह्वैकै मैं प्रभु जो ईश्वरताते बाद न बढ़ाइहौं भाव ज्ञानमार्ग अहंब्रह्म न कहौंगो हेमहाराज आपुते सांची एक बात कहतहौं भाव निःछल शुद्ध शरणागत में मेरो कल्याणहै ताते हेनाथ बिनापगधोये भाव बिनाचरणोदक लिहे नावपर न चढ़ाइहौं भाव पार न उतारिहौं यामें यह अभिप्राय कि प्रथम मैं पावन ह्वैकै तब आपु की सेवाको अधिकारी होउंगो ८ ॥

जिनकोपुनीतवारिशिरशिवहैपुरारि त्रिपथगामिनी

यशवेदकहैगाइकै । जिनकोयोगीन्द्रमुनिवृन्ददेवदेहद-
मिकरतबिविधियोगजपमनलाइकै । तुलसीजिनकीधू-
रिपरसिअहल्यातरीगौतमसिधारेगृहगौनोसोलेवाइकै ।
तेईपांइपाइकै चढ़ायनावधोयेबिनुख्यैहौंनापठावनीकैह्वै
हौंनहँसाइकै ९ ॥

पुरारिकहे महादेव तिनके सिरसिकहे शीशपर बहत है जा पावन को पावनवारि अर्थात गंगाजी त्रिपथ कहे स्वर्ग मृत्यु पाताल तिनको पवित्र करिबेहेतु तिह्रंपुरको त्रिधाराह्वै गई तातें त्रिपथगा नामकहि जिनकोयश वेद गावतहैं पुनः जिनपावनकी प्राप्ती हेतु शिवकर भजनादि योगीन्द्र सनकादि नारद अगस्त्य वाल्मीकादि मुनिवृन्द इन्द्र वरुण अग्नि रवि यमादि देवता ते देह अर्थात् इंद्रि नकी विषयजीतबे हेतु तपस्यादिकर देहको दमन कहे दंडदै विविधिभांति अष्टांगादियोग अरु विधिपूर्वक जप पुरश्चरणादि मनलगाइकै करतहैं अरु जा पदकी धूरि परसि अहल्या पवित्रह्वै दिव्यदेहभई ताको गौतमऋषि गौनो सो अर्थात् नवीन पवित्रसी मानि लेवाइकै अपने धामको सिधारे अर्थात् जिनते त्रिलोकपावनी गंगाप्रगटीं जिनके मिलिबेको योगीन्द्रादि युक्तिकरत जिनते अहल्या भई पावन तेई लोकपावन पावनको पाइ बिना धोये पादो-दकलै कृतार्थभये आपुको नावपर चढ़ाइ पारपठै ताकी पठावनी कहे मजूरी खाइ न देहौं अरु अपनी हानिकरि हंसीकरैहौं न ऐसे वचन साहित काव्य में का कुवैसिष्ट व्यंग्य कहावतें हैं अरु हानि हँसी लोकप्रवाद तें लोकोक्ति अलंकारहै ९ ॥

प्रभुरुखपाइकैबोलाइबालघरनिके बन्दिकैचरणचहूं
दिशिबैठेघेरिघेरि । छोटोसोकठौताभरि आनिपानीगंगा

जीको धोइपाँइपीवत पुनीतबारिफेरिफेरि। तुलसीसराहै ताकोभागसानुरागसुरबर्षैं सुमनजयजयकहैटेरिटेरि । बिबुधसनेहसानी बाणीअसयानीसुनि। हँसेरामजानकी लषणतनहेरिहेरि १० ॥

श्रीरघुनाथकी आज्ञाको रुखपाइ केवट अपने बालकन को बुलाये ते आइकै श्रीरघुनाथजी के पद कमलन को बंदनाकरि चारिहू दिशि घेरिघेरि समीप बैठे सुन्दरे छोटे कठौता में गंगाजलसै प्रभुके पदकमल धोइ तापवित्र जलको बारबार सब पानकरत गोस्वाईंजी कहत कि ता निषादकी भाग्यकेसहित अनुराग देवता सराहनाकरिकै फूलवर्षि जोरजोर सों टेरिकै जयजयकार करत भाव अधम उधाररूप श्रीरघुनाथजी सम और दूसरोरूप नहींहै ऐसी सनेहसानी असयानी कहे छल चतुराई रहित सांची बाणी देवतनकीसुनि श्रीरघुनाथ श्रीजनकनंदिनी लषण लालकी दिशिहेरिहेरि हँसे भाव तुम्हारीसेवामें निषाद साक्षीभयो वा देवनके उच्चस्वर तें जयकार सुनि प्रेम वश जानिकै वा भक्तवत्सलताकी प्रशंसासुनिहंसे यामें हास्य रस यथा अटपटे बैन केवटके औ कठौतामें पांवधोवत में घेरि बैठनो देवनके विह्वल वचनादि विभाव मुख अधर दृगादिको विकार अनुभाव हर्ष चपलतादि संचारी हंसी आइबो अखाई ताते हास्यरस सांग पर्णहै औ भक्तवत्सलता सौहर्दता गुणहै निदर्शनालंकारहै १० ॥

पुरतेनिकसीरघुवीरबधू धरिधीरदयेमगमेंडगद्वै । झलकीभरिभालकनीजलकी पटसूखिगयेमधुराधरवै । फिरिबूझतिहैचलनोवकितो पियपर्णकुटीकरिहौकितह्वै । तियकीलखि आतुरतापियकी अखियांअति चारुचलीं जलच्वै ११ ॥

सुरसरि उतरि स्नानकरि तटपर काहूग्रामके निकट वृक्षतर पूजादि करत में दुपहर ह्वै गये चैत मासताते घाम निर्मल भूमि तप्तमें चले पुरते निकसतही श्रीजानकीजी अत्यन्त सुकुमार तातेडरीं परंतु श्रीरघुवीर की बधू अपना को मानि भाववीर की अर्द्धाङ्गी तातेधीर्यधरि मार्ग में डगकहेपग ह्वैकछिबो लोकप्रवाद अर्थात् थोरिहीदूरि में भाल कहे माथभरेमें जल पसीनाकी कनीनिसरि झल कनलगीं वै जे मधुरअधर दोऊ पट ओटते सूखिगये ललित अरुणाई लोनाई मधुराईपै रुखाई दरशिआई इत्यादि बिवरणदशा ह्वै गई ताहूपर धीर्य धरे फिरि बूझतीहैं कि अब केतनो चलनोहै हे प्राणप्रिय कहांताईं चलिह्वै कै पर्णकुटी करिहौ तिय जो श्रीजानकीजी तिनके मन की आतुरता अर्थात् पर्णकुटीथलताईं पहुंचबेकी शीघ्रता अरु तनकी सुकुमारतामें श्रमकी बिवरणताहेखिपिय जो श्रीरघुनाथजी तिनकी अत्यन्त जो सुन्दरी अखियांहैं तिनमें जल च्वैचले भाव अति सनेहते करुणाबढ़ि तनमें नअंबाइ सकी ताते आसुनकी प्रवाहधार बहिचली यामें अनुकूलत्व दरशाइबेते निदर्शना अलंकारहै ११॥

जलकोगयेलक्ष्मणहैंलरिका परिखोपियछांहघरीकह्वैठाढ़े । पोंछिपसेउबयारिकरौं अरुपाँइपखारिहौं भूभुरिडाढ़े । तुलसीरघुवीरप्रियाश्रमजानिकै बैठिबिलम्बसोकंटककाढ़े । जानकीनाहकोनेहलख्यौ पुलको तनबारिबिलोचनबढ़े १२॥

श्रीजानकीजी रघुनाथजीसों कहतीहैं कि लषणलाल अबहीं लरिकाहैं ते अकेले जललेबे हेतुगयेहैं ताते हेप्राणपति एकघरीभरि वृक्षकी छायामें ठाढ़े ह्वै कै देखि लेऊ भाव लषणलालको तकेरहौ यामें भक्तवत्सलताहै अरु आपुके पसेऊकहे श्रमजल मुखपै आयो ताको पोंछिकै बया

रिकरिदेउं जामें तन सीरोह्वैजाइ अरु भूभुरिकहे तप्त रजतामें चलेते आपुके कोमलचरणडाढ़े भाव तप्त ह्वैगये तिनको पखारि कहे धोइडारौं जामें पदसीरे ह्वैजाइं गोसाईंजी कहतकि श्रीरघुनाथजी प्रिया जो श्रीजानकी जी तिनको श्रमित जानिकै बिलम्बकहे देरतक बैठिकै कंटक पगकेकांटानिकासे अथवा कंटककहे चलबेकोश्रम गरमी थका छयामें सहताइकै निकासिडारे याते श्रीजानकीजी नाह जो श्रीरघुनाथजी तिनको नेह अपनापै बिचारि भाव हमको थकितजानि श्रीरघुनाथजी देरतक थंभे यह विचारि श्रीजानकीजी को तन प्रेमते पुलकि भरिकै न अंबानो ताते आंसू नेचन में भरिआयो यामें परस्परप्रीतिकी अतिसय ताते स्वाधीनपतिका अरु अनुकूल नायकतुहै अरु करुणागुणहै १२॥

ठाढ़ेहैंनौद्रुमडारगहेधनु काँधधरेकरशायकलै। विकटीभृकुटीबड़रीअखियां अनमोलकपोलनकीछविहै। तुलसीअसमूरतिआनिहिये जड़डारुधौंप्राणनिछावरिकै। श्रमसीकरसामरिदेहलसै मनुराशिमहातमतारकमै १३॥

नौद्रुम नवीनपल्लव करि सघनहै छांह जामें ऐसे वृक्ष तर मार्गकोश्रम निवारणहेतु डारगहे श्रीरघुनाथजो ठाढ़ेहैं तासमय कैसीशोभाहै कि विकटीकहे टेढ़ी काम धनुषसी भृकुटी मृगशावसे बड़ेबड़े नेच अरु अमल कपोलनकी छबि अमोलरत्ना दर्श समहै नीलमणि सजलमेघसी सांवरीदेहमें श्रमसीकरकहे पसीनाकी कनैनिकसि कैसी शोभादैरहीहै मानो महातम राशि भादोअमावस कीरैनिको समूह अंधकार सो तारककहे नक्षत्रमयीहै सघन नक्षत्र उदयहैं गोसाईंजी कहतकी ऐसीजोश्रीरघुनाथजीकीमूर्त्ति आरत हरणहारी ताको हियेमेलाउ हेजड़

मन प्राणनको निवछावरि करिडारु भाव आत्मसमर्पण शुद्ध शरणागतमें तेरो कल्याणहै ऐसोरूप आरत भक्तको ध्यानहै सामरीदेह अमसीकर पउमेयमें तमराशि नक्षनकी संभावना ताते वस्तु उत्प्रेक्षालंकारहै १३ ॥

जलजनयनजलजाननजटाहैशिर योवनउमंगअंग उदितउदारहैं । साँवरगोरेकेबीचभामिनीसदामिनीसी मुनिपटधरेउरफूलनकेहारहै । करनिशरासनशिलीमुखनिषंगकटि अतिहीअनूपकाहूभूपकेकुमारहैं । तुलसीविलोकिकैत्रिलोककेतिलकतीनि रहैंनरनारिज्योंचिते रेचित्रसारहैं १४ ॥

मार्गमें प्रभुके दर्शनपायेते अपने ग्राममें अपरलोगनते कहत कि जलज कहे कमलकेसमनेत्र कमलसम मुख शीश में जटाजूट धारण देंहनमें यौवनकी उमंग करिकैशोभा की उदारता अंगअंगमें उदित नाम प्रकाशितहै श्याम मेघ सम सांवरोकुंवर श्वेतमेघ सम गौर कुंवर ताकेबीच में भामिनी सुन्दरि दामिनीसी शोभित मुनिपट वलकलादि बसन धारणकरे उर में फूलनके माल पहिरे कर कमलनमेंसुन्दरधनुषबाण धारणकिहे सिंहसेकटि मनोहर तरकस शोभितयहिविषतेयह सूचित होत कि काहू महाराजके कुमारहै परंतु शोभाके सुकुमारता लावण्यतादिरूपकी उपमा योग्य रूप दूसरो त्रिलोकमेंनहीं है याते यह सूचितहोत कियेमनुष्य नहींहैं तौहैंकौन ताको कहतकी तीनिउ लोकके तिलक तीनौंरूपहैं भाव लोकन के भूषण हैं अर्थात् गोलोक निवासी ताते स्वर्गलोक के भूषण श्रीरघुनाथजी अथवा अयोध्यापुरी भगवत को शीशहै पद्मपुराणे ॥ विष्णुपादअवंतिकागुणवती मध्येच कांचीपुरी नाभौद्वारवतीतथाचहृदयंमायापुरीपुण्यदां ॥ ग्रीवामूलसुदाहरंतिमथुरा नाभाग्रवाराणसी एतद्ब्रह्मपदं

बदंतिमुनयोयोध्यापुरीमस्तके १ सेा शीश तनमें ऊर्द्ध रहत ता अयोध्या भूषण ताते श्रीरघुनाथजी स्वर्गके भूषण हैं अरु भूषण उत्पन्नहै लोकभूषितकरी ताते मृत्युलोक के भूषण श्रीजानकीजी अरु शेषावतारते पाताललोकके भूषण लक्ष्मणजी तहां तिलकमें तीनिरेखाहोत सो आगे श्रीरघुनाथजी पीछे लषणलाल ते किनारेके रेखाहैं श्री स्थाने बीच में जानकीजी शोभित गोसाईंजी कहत की त्रिलोकके तिलक जो तीनौंरूप तिनको देखि नरनारी मनते मोहितहै प्रेमते पुलकि देह थकित यकटक नेचहै कैसेरहिजात यथा चित्रसारके चितेरे चित्र कैसे प्रतिमा भामिनी दामिनीसी यामें धर्म लुप्तोपमालंकारहै माधुरी गुणहै १४ ॥

आगेसोहैसाँवरोकुवँरगोरोपाछेआछे काछेमुनिवेष धरेलाजतअनंगहैं । बाणविशिषासनबसनबनहींकेकटि कसेहैंबनाइनीकेराजतनिषंगहैं । साथनिशिनाथमुखी पाथनाथनन्दिनीसी तुलसीविलोकेचितलाइलेतसंगहैं । आनँदउमंगमनयौवनउमंगतन । रूपकीउमँगउमगत अंगअंगहैं १५ ॥

सांवरो कुंवर आगे श्रीरघुनाथजी गोरोकुमार पीछे श्री लक्ष्मणजी मार्गमें शोभित आछे काछे अच्छी ठाट बनाये ऐसे रूपमान शोभामयहैं जो मुनिनहूं को ऐसो वेष धरे ताहूपर जिनकी शोभा देखि कामदेव लाजतहै विशिषा सन जो धनुष सुन्दर बाण कर कमलनमें लिहे बनही के बल्कलादि बसन अच्छीभांति बनायकै कटिमें कसे सुन्दर तरकस शोभितहै निशिनाथ चन्द्रमा ऐसो मुखहै जाको ऐसी स्त्री साथलिहे सो कैसो मनोहरपंथ जलताकोनाथ समुद्र ता की नंदिनी लक्ष्मी ऐसी अर्थात् मोहनशक्ति

लक्ष्मीके नामहीमेंहै ताते लक्ष्मीसीकहे गोसाईंजी कहत कि दयादृष्टि जाकीदिशि हेरत वा सप्रेम जो कोऊ उनकी दिशिहेरत ताको चित्त अपनेसाथ लगाइलेत ते कैसेहैं आनंदकी उमंग जिनके मनमेंहै भाव मन सदा प्रसन्नरहत यौवन की उमंग तनमें भाव देहै दीप्तिमानहै रूपकी उमंग ते सब अंगनमें उमंगत है भाव बिना भूषणै सर्बांग भूषित से मनमोहन करत १५ ॥

सुंदरबदनसरसीरुहसुहायेनैन मंजुलप्रसूनमाथेमुकुटजटानिके । अंशनिशरासनलसतशुचिकरशरतूणकटि मुनिपटलूटकपटानिके।नारिसुकुमारिसंगजाकेअंगउबटि कै विधिविरच्योवरूथविद्युच्छटानिके।गोरेकोवरणदेखेसो नोनसलोनोलागै साँवरेविलोकेगर्बघटतघटानिके १६॥

शरद पूर्णचन्द्र सम सुन्दर बदन नवीन अरुण कमल सम सुहावनैनेच माथनपै जटाके मुकुट ताकेबीच मंजुल कहे खेतरंग के फूलनके गुच्छा शोभित अंश कंधा तिन में शरासनकहे धनुष लसतकहे शोभित करकमलनमें सुन्दर बाणलिहे कटिमें तरकस संयुत मुनिन के बस्त्र शोभित यह अद्भुतरूप पटको लूट कहे भाव परदा रहितहै सब स्त्री पुरुष देखतहैं वा पटकहे पलकको परिबो लूटत देखनहारको यकटक करत वा मुनिपट कैसे शोभित होत जो पीतांबर जरी आदि पटनकी शोभाके लूटनहार हैं भाव जाअंगनको पाय वस्त्र शोभितरहे ता अंगनकोछीनि आपु शोभितभये संगविषे नारि सुकुमारि कैसी शोभायमानहै जाके अंगको उबटनकरि मैल लैकै ब्रह्मा ने अनेक बिजुलिनके वृन्द रच्योहै गोरेकुमारके तनको बर्ण देखते सोना कांति रहित देखात सांवरे कुंवर को बर्ण देखि घट जो श्याम सजलमेघ ताको गर्ब टूटिजात यामें

उपमान निरादर ते प्रतीपालंकार नैनकमलमें वाचक धर्मलुप्तोपमा कांति अरु लावण्यता गुणहै १६ ॥

बल्कलवसनधनुबाणपाणितूणकटि रूपकेनिधानघ-
नदामिनीवरणहैं। तुलसीसुतीयसंगसहजसोहायेअंगन-
वलकमलहूतेकोमलचरणहैं। औरैसोबसन्तऔरैरतिऔरै
रतिपति मूरतिविलोकेतनमनकेहरणहैं। तापसवेषैबनाय
पथिकपथैसहाय चलेलोकलोचननिसुफलकरणहैं १७ ॥

बल्कल कहे मुनिकेसे बसन धारण किहे कर कमलन में धनुषबाण कटिमें तूण कहे तरकस शोभित दोऊ कुमार श्याम गौर ते रूपकेनिधान कहे स्थानहैं गोसाईंजी कहत कि सुन्दरि स्त्री संगमें श्रीमहाराज कुमारी जिन के सर्बांग सहजहीमें सुहावनेहैं जिनके चरण नवीनकमलहू ते कोमलहैं इत्यादिरूप उपमेयकी संभावना करत औरै सो कहे दूजो गौर राजकुमार रूप धारणकिहे बसंतहै पुनः औरै राजकुमारीरूप धारणकिहे रतिहै पुनः औरै श्याम राजकुमाररूप धारणकिहे कामदेवहै जिनकीमूर्त्तिदेखेते यहसाबित होतकि मनतनके हरणहारहैं तनके कर्णादि इन्द्रिनकी विषय शब्दस्पर्शरूप रसगंधादि अरु मनादिकी वासना छोड़ाइ अपने रूपमें लगाइलेत तेई मनोहर तीनौंरूप तापस कैसो वेष बनाय पथिक ह्वै पथमें शोभायमान लोकके नेचनको सफलकरिबेहेतु चलेहैं इहां तीनौंरूप उपमेय में बसंतादिकी संभावनाकरे अरु जानो मानो आदिबाचक नहीं तातै गम्योत्प्रेक्षाहै १७ ॥

बनितावनिश्यामलगौरकेबीच बिलोकहुरीसखिमो
हिसीह्वै। मगजोगनकोमलक्योंचलिहै सकुचातमही
पदपंकजछ्वै। तुलसीसुनिग्रामबधूबिथकी पुलकीतनओ

चलेलोचनच्वै । सबभाँतिमनोहरमोहनरूप अनूपहैंभूपके बालकद्वै १८ ॥

परस्पर ग्रामबधुनकी बातीहै श्रीरामजानकी लक्ष्मण जी को अनूप रूप देखि मोहितह्वै कहत कि श्यामगौर दोऊराजकुमारनके बीच कंचनवरण चंद्रबदनी बनिता कैसीबनीहै हेरीसखी मोहिसी ह्वै देखुतौ भावमोहि गई सीह्वै मनलगाय नेच आयक्षह्वै कै वामेरी ऐसी दशा ह्वैकै देखु युगकुल उजियारी राजकुमारी परम सुकुमारी कठोरमारग चलिबे योगनहींहै सो कैसेचलिहै जाके कमलहूते कोमल चरणकी सुकुमारता स्पर्सभये भूमि सकुचाइजात गोसाईंजी कहतकि ताकी बाणी सुनिग्राम बधू थकितह्वै प्रेमतेदेह पुलकित नेचनमें आंसूवहिचले अनुरागवशह्वै सबकहती हैं कि सबभांति मनोहर जहां जैसोचाही तहां तैसही अंगबनोहै जा अंगकोदेखिये तहैं मनमोहिजात ताते मनको हरणहारे मोहनरूप भूपके दोऊ बालक अनूपहैं यामें सुकुमारता अरु सौंदर्यता गुणहै १८ ॥

साँवरेगोरेसलोनेसुभायमनोहरताजितमैनलियोहै । बानकमाननिषंगकसेशिरसोहैजटामुनिवेषकियोहै । संगलियेविधुबैनीबधूरतिकोजिनरंचकरूपदियोहै । पांयनतौपनहींनपयादेहिक्योंचलिहैसकुचातहियोहै १९ ॥

श्यामगौर दोऊ राजकुमार सुभायकहे सहजही में सलोने अर्थात् लावण्यतातेभरिपूर्णहैं जिनअपनीमनोहरता ते कामको जीतिलियोहै वा काम की शोभा वरबश जीतिकै आपुलैलियोहै काहेते बाणधनुष करकमलनमें शोभित कटिमें तरकस कसे शीशपै जटाके मुकुट शोभित मुनिकैसो वेष वल्कल वसन धारण किहे ते शांतरसमय

वीरहै अरु कामदेव शृंगाररस मयवोरहै तहां शांतरसते शृंगाररसको जीतिबो उचितहै तहां कामके संग दिव्य स्त्रीहै ताकेहेत कहत कि संगमें चंद्रवदनी तिया कैसी शोभायमान जाने अपने रूपसिंधुते बुंदमात्र रूपरतिको दियोहै भावजाके रूपराशिकेआगे रतिको रूपरतीमात्रहै हे सखी मेरेउरमें यह सकोच आवत कि सुंदर सुकुमार राजकुमारन के पांयनमें पनहिंउं नहींहै कठोरभूमि मार्गमें पयादे कैसेचलिहैं यामें लावण्यता सुकुमारता स्वरूपताहै १९॥

रानीमैंजानीअयानीमहापबि पाहनहूतेकठोरहियोहै।
राजहुकाजअकाजनजान्योकह्योतियकोजेहिकानकियोहै।
ऐसीमनोहरमूरतिये बिछुरेकैसेप्रीतमलोगजियोहै । आं-
खिनमेंसखिराखिबेयोगइन्हैंकिमिकैबनबासदियोहै २०॥

हे सखी रानी कैकेयीको सुभाव मैं जानिलई कि महाअयानीकहे अज्ञानी है भावक्रोध लोभमोह फंदमें बंधीहै पुत्र राजपाइबो लोभ फंदहै सपत्नि ईर्षाक्रोधफंदहै हरिसों बिमुखता मोहफंदहै यहीमहा अज्ञान बशते बज्रहू पाषाणतेकठोरहियोह्वैगयोअरु दशरथमहाराजहू काजमें अकाज ह्वैजाबो न जानेकाहेते वोऊ कामफन्द में बँधे तौतौ राजाने ऐसी अज्ञानरानीकेवचनसुनि मानि लियो जाते ऐसीमनको हरनहारी इनतीनौं मुर्त्तिनको बनदिये वे प्रीतम लोगइनके प्रिय सम्बन्धी कैसे कठोर हृदयके हैं जो इनके वियोग भयेपर जियत रहिगयेसखी जो जप तप योग वैराग ज्ञानादि करि ये मूर्त्ति प्राप्त होइ तौ आँखिनकहे ध्यानमें राखिबे योग्यहै भाव ध्यान में प्राप्ती दुर्लभ है तिन्हैं किमिकै कौन कर्त्तव्य करि आपनी बशि करिलिये यौबन कठोर में वास दिये यामें रमनीकता माधुरी गुणहै २० ॥

शीशजटाउरबाहुविशाल बिलोचनलालतिरीछीसि भौंहैं । तूणशरासनबाणधरे तुलसीबनमारगमेंसुठिसोहैं । सादरबारहिबारसुभाय चितैतुमत्योहमरोमनमोहैं । पूछतिग्रामबधूसियसों कहुसांवरसोसखिरावरोकोहैं २१॥

बन मार्ग गमन जानकी रमणजी को रूप यौबनादि अनूप संपन्न परम पियूष रसमय विहार बल्लभ जी को मनोहर रूप देखि काम शरमारी प्रेमाशक्त वारी ग्राम नारी श्रीजनक कुमारीजी सों पूछती हैं कि हे राजकुमारी जाके जटाके मुकुट भाल उर भुज विशाल मीनमृग खंजन मदगंजन अरुण कंजन सम नयन मन रंजन पै मनोहर तिरछीभृकुटी हैं तरकस कटितट मुनिपट धनुबाण कंज पाणि दृग सुखदानि बन मार्ग में सुन्दर शोभित हैं भाव भूषण पोशाक सवारी रहित मन मोहनहैं ते राज कुमार आदर सहित बारंबार सुभायकहे सहजमें पवित्र दृष्टि चितै तुमत्यो भाव तुम्हारो ऐसो है हमारोमन मोहित होत ऐसी बातैं कहि ग्राम बधू श्रीजानकी जी सों पूछती हैं कि हे सखी कहौ सांवरे राजकुमार तुम्हारे को हैं ये निःछल वचन सनेह बर्द्धन हेत हैं जानकीजी सों अरु रघुनाथजी सों स्वयं दूतत्व करि वचन विदग्धहै २१ ॥

सुनिसुन्दरबैनसुधारससानेसयानिहैजानकीजानभली । तिरछेकरिनयनदैशैनतिन्हैं समुझायकछूमुसक्याइ चली । तुलसीत्यहिऔसरसोहैंसबै अवलोकतलोचनलाहुअली । अनुरागतड़ागमेंभानुउदै विकशीमनोमंजुलकंज कली २२॥

सुन्दर बैनकहे देशकाल समय सुहावने थोरे वर्णअर्थ

बड़ो विलक्षण चातुरी हास्य युक्त श्रवण रोचक गूढ़ाशय स्नेह बढ़ुक यातें सुन्दर सुधा रस साने शृंगार रस साने अर्थात् जानकीजीसों कहतीं अरु श्रीरघुनाथजीसों गूढ़ोक्ति विदग्ध वचन चातुरी है ताको श्रीजानकी जी भली भांति ते जानिलई कि ये सब ग्रामबधू क्रिया वचनविदग्ध में परम चातुरीहैं यहजानि श्रीजानकीजी क्रियाविदग्ध करि बोध करतीहैं श्रीरघुनाथजीकी दिशिको तिरछेनेच करि सैन बुझाय दियो भाव ये हमारे पतिहैं या भांति सबनको समुझाइ मुसक्यायकैचलीं मुसक्याबेको यहभाव कि जो तुम हमारे प्राणप्यारेको देखि कामाशक्तभईं ताते वचन चातुरी करि विदग्धा ह्वन चाहतीहौ भाव अपनी प्रीतिजनाय इहां विश्राम कराय मिला चाहतीहौ तौ जो हमारे प्राणप्यारे तुमको अंगीकार करैंतौहम ईर्षा नहीं करैंगी क्योंकि तुम्हारी बचन चातुरी तौ लोक हेतु है हमते तौ तुम निरछल अपनी आशक्ती कहिदई कि तुम्हारे मनसम हमारोमन मोहिगयो यह तुम्हारीसांची बात सुनि हमतौ प्रसन्न हैं परंतु हमारे प्राणप्यारे की रीति रहस्य तौ बिचारिये एतौ एक पत्नीव्रत अनुकूल नायकहैं ऐसी क्रिया समुझि श्रीजानकीजी को स्वाधीन पतिका जानि अनुराग करती भईं ताते खसुख की बासना त्यागि तत्सुख पर आरूढ़भईं श्रीजानकीजीकी प्रसन्नता हेतु अनुराग करतीभईं तब निश्चिन्तह्वै लोचन को लाभ लेनलगीं भाव रूपकी माधुरीको अवलोकन सोई नेचनको लाभ मानि श्रीरघुनाथजी को यकटक ह्वै ग्रामबधू देखिन लगीं गोसाईंजी कहत कि ता अवसर में सब समाज कैसे सोहत मानों रूप भानु उदय देखि अनुराग तड़ाग में शोभा श्वेत कमलकलीने विकाशकियो श्रीरामरूप भानु ग्राम बधुनको अनुराग तड़ागमें श्रीजानकीजीको मुख श्वेत कंज मुसक्यानि विकाश है यामेंउत्प्रेक्षाके अंतर रूपक अलंकारहै २२॥

धरिधीरकहैंचलुदेखियजायजहाँसजनीरजनीरहिहैं।
कहिहैजगपोचनशोचकछू फललोचनआपनतौलहिहैं ।
सुखपाइहैंकानसुनेबतियाँ कलआपुसमेंकछुपैकहिहैं। तु-
लसीअतिप्रेमलगीपलकैंपुलकीलखिरामहियेमहिहैं २३

जब प्रेमबिवश ग्रामबधू श्रीरघुनंदनको निरखन लगीं ताही समय श्रीरघुनाथजी आगेको चले ता बियोगते बिवरणभईं पुनः धीर्यकरी अथवा लोकलाज भय ते धीर्य करि कहत कि हेसखी येराजकुमार जहां बास रात्रीको करिहैं तहां चलौ जाइकै देखा यामें जो लोक पोच कहीं जगकेलोग बुराई करिहैं ताको शोच कछू नहीं है हमारेनेच अपने फलतौ पैहैं अर्थात् आंखिनभरि राजकुमारको देखब तौ अरु सुन्दरीबातैं परस्पर करिबैकरि हैं तिनको सुनिकै हमारे कान तौ सुख पैहैं गोसाईंजी कहत किप्रेमावेशते पुलकांगह्वै देहभरिआई अरु श्रीरघुनाथजीको रूप उरमें आइगयो ताते नेचनकी पलकैंबंद करि ध्यानमें मग्नभईं यामें रमणीकता गुणहै २३ ॥

पदकोमलश्यामलगौरकलेवर राजतकोटिमनोजलजाये। करबाणशरासनशीशजटा सरसीरुहलोचनसोन सोहाये। जिनदेखेसखीसतभावहुते तुलसीतिनतौमनफेरिनपाये। यहिमारगआजुकिशोरबधू बिधुबैनीसमेतसुभायसिधाये २४॥

पदकमलसम कोमल हैं देखनहारी औरनते कहतींकि श्याम गौर कलेवरकहे देहै कैसी शोभायमान राजत जाको देखि कामदेव लजातहै कर कमलन में धनुष बाण धारण शीश में जटाके मुकुट सरसीरुह कहेकमलसम लोचन सोन कहे अरुण शोभायमान ऐसे जोश्याम गौर राजकुमार

तनको जो सहजहू सुभावते देखे अर्थात् प्रीति पूर्वक नहीं तिनहूं अपनो मनफेरि नहीं पाये अर्थात् इनहीं के संगमनपठाये हेसखीआजु यहिमार्ग में दै राजकुमार बिधु बैनीकहे चन्द्रबदनी संगमें लिहे सौभाय सहजही अर्थात् इहां काहूतेकछु काजनहीं न मालुम कहांको चलेगये बिधु बदनी को बिधुबैनी प्राकृतमें भयो यथा दीपकको दियालक्ष्मणको लखण लक्ष्मीको लच्छ भानूको भानगोविंदको गुविंद लोचनको लोयन इहां ग्रामचर्चातेग्रामीन पदभूषणहै२४॥

मुखपंकजकंजबिलोचनमंजु मनोजशरासनसीबनि भौंहैं। कमनीयकलेवरकोमलश्यामल गौरकिशोरजटा शिरसोहैं। तुलसीकटितूणधरेधनुबाण अचानकदृष्टिपरी तिरछोहै। क्यहिभांतिकहौंसजनीत्वहिंसोंमृदुमूरतिद्वै निवसीमनमोहैं २५॥

अब ग्रामबधू अपनी व्यवस्था कहतीहैं मुख अरु नेच सुन्दर कमल से भृकुटी टेढ़ी कैसीशोभायमान बनी यथा मनोजको शरासन कहे धनुष कमनीय कहे सुन्दर कोमल श्यामल गौर कलेवर कहे देह दोऊ राजकुमार किशोर अवस्था शीशपै जटाके मुकुट सोहत कटिमें तरकस कसे करकमलनमें सुन्दर धनुषबाण धारणकिहे तिनको लोकलाजते संमुख देखि न सकीं ताते तिरछी दृष्टि मेरी अचानक उनपै परिगई ता अवसरते जो मेरीदशा भई सेा हेसखी तोसों कौनभांतिकहौं कामाशक्ती कहत नहीं बनत ता अवसरते दोऊ राजकुमारनकी कोमल मूर्ती सो मेरे मनमें निवासकिहेहै यामें रमणीकता गुण है कामाशक्ती ते है न मूर्ती कहे आठसगण अंतगुरु पचीस वर्ण माधवी सवैया है २५॥

प्रेमसोंपोछेतिरीछेप्रियाहि चितैचितुदैचलेलैचितचोरै।

श्यामशरीरपसेऊलसैहुलसैतुलसीलखिसोमनमोरै। लो
चनलोलचलैंभृकुटी कलकामकमानहुसोतृणतोरै। राज-
तरामकुरंगकेसंग निषंगकसेधनुसोंशरजोरै २६॥

यह चित्रकूट को चरित्रहै आश्रममें श्रीजानकीजी वि-
राजमानरहीं श्रीरघुनाथजीमृगयाको चले अतिप्रेमते पीछे
घूमितिरछीदृष्टितेप्रियाश्रीजानकीजीकोचितै मोहितह्वै
अपनोचित्त दैकै चलेसोई तिरछी कटाक्ष देखि प्रियाजी
मोहितभईं तातेप्रियाकोचित्त चोराइलियो यह परस्पर
उपकारते अन्योन्यालंकारहै मार्ग गमनश्रम करि पसीना
निकसिश्यामतनपै शोभा दैरहाहै ताकोदेखि तुलसीको
मनझलसत कहे आनंद उमंगतहै मृगनको ताकत में नेच
लोलकहे चंचलहैं तातेभृकुटी चलायमान कैसी सोहत
जो कामधनुषकी शोभा तृणसम तोरतहैं कटिमें निषंग
कसे करकमलन सों धनुषबाणजोरे मृगकेसंग श्रीरघुनाथ
जी बिराजमानहैं २६॥

शरचारिकचारुबनाइकसे कटिपाणिशरासनशायक
लै। बनखेलतरामफिरैंमृगया तुलसीछबिसोवरणैंकिमि
कै। अवलोकिअलौकिकरूपमृगी मृगचौंकिचकैचितवै
चितदै। नडगैनभगैजियजानिशिली मुखपंचधरेरतिना-
यकहै २७॥

चारि बाण सुन्दर बनाइकै अर्थात् फूलन सों वेष्टित
करि कटिमेंकसे अरु फूलनसों वेष्टितकरि धनुषमें एक
बाण जोरि करकमलनमें लिये श्रीरघुनाथजी मृगया खेलत
बनमें फिरत ता समय की छबि तुलसी कौन बिधि सों
वर्णनकरै अलौकिक जैसा लोकमें नहीं ऐसा अद्भुतरूप
औंचकदेखि मृग मृगी चौंकत पुनः चितलगाय जब चित-
वत तब मन मोहितह्वै चकिजात ताते न डोलै न भागै

फूलवेष्टित धनुष पंचबाण धरे ते जाने कि कामदेवहै यह जानि निर्भयह्वै मोहिगये २७ ॥

बिंध्यकेबासीउदासीतपोव्रतधारीमहाबिननानिदुखारे। गौतमतीयतरीतुलसी सोकथासुनिभेमुरिवृंदसुखारे। ह्वै हैंशिलासबचन्द्रमुखी परसेपदमंजुलकंजतिहारे। कीन्ही भलीरघुनायकजी करुणाकरिकाननकोपगुधारे २८ ॥

इतिश्रीकवित्तावलीरामायणेअयोध्याकाण्डःसमाप्तः ॥२॥

कवि की उक्ति हास्य युत पदरज को महात्म वर्णनहै जो विन्ध्याचल पै बास करि उदासी कहे शत्रु मित्रभाव रहित तपस्या करत में महा व्रतधारी कहे ब्रह्मचर्य्य आश्रम में रहे सोव्रत पूर्ण भये पर जब गृहस्थाश्रम को समय आयो तब स्त्री चाहिये ताते बिना स्त्री दुखारी रहे गोसाईं जी कहत कि गौतम तिया अहल्यातरी सो कथा सुनिवोई मुनिवृन्द सुखीभये जेगृहस्थाश्रमहेतु बिनानारि दुःखित रहे ते कहत कि हे महाराज आपुके सुन्दर पद कमल स्पर्श भयेते यावत्शिला हैं ते सब चन्द्रमुखी दिव्य स्त्री ह्वै जांइगी तौ हमारा गृहस्थाश्रम बिना परिश्रमही सिद्ध होइगा यते स्त्री रघुनायक जी अपु भली करी जो हमपै करुणा करिकै कानन कहे बनमें आवे यामें चित्रकूट को बास वर्णन करे वा जबते चित्र कूटको चले तब को वर्णन है २८ सवैया ॥ सिखरेद्भुतजूटकलापजटाच्छसरोजमुखासितवक्त्रयुतौ । कुसुमाद्भुतभूषणविभ्रतभानुमयूखसितातडिताभिमुतौ करमाणनकार्मुकतूणकटिंबरवालकवालकदुष्टनुतौ । नितमासकमानससन्निहितोमिथिलाधिपजावधनाघसुतौ २८ ॥

इतिश्री रसिकसताश्रित कल्पद्रुम सियवल्लभ पद शरणामत बैजनाथ कृते कवित्तावली रत्नदीपिका टीकायां अयोध्याकांडः समाप्तः ॥ २ ॥

## आरण्य काण्ड ॥

पंचबटीवरपर्णकुटीतरबैठेहैं रामसुभायसुहाये । सोह प्रियाप्रियबंधुलसै तुलसीसबअंगघनेछबिछाये ॥ देखि मृगामृगनैनीकहै प्रियबैनतेप्रीतमकेमनभाये । हेमकुरंग केसंगशरासनशायकलैरघुनायकधाये १ ॥

इतिश्रीकवित्तावलीरामायणे आरण्यकाण्डःसमाप्तः॥३॥

अमलकमलनेत्रौपूर्णचन्द्राभवक्त्रौ तडितजलदगात्रौ नीलपीताभवासौ ॥ अमितगुणसमुद्रौरूज्झनानन्ददात्रौ नमितवैक्रियोरौजानकीरामचन्द्रौ १ सब गुण जटी जो पंचबटी तामें सुन्दर जो पचन की कुटी ताके तर सहजही में जो शोभायमान ऐसे जो श्रीरघुनाथजी ते आनन्द सों बैठे हैं प्रिया श्री जानकीजी प्रिय बंधु लक्ष्मण जी तिन के रूप कैसे लसत कहे सजत हैं जिनके अंगन में समूह छबि छाइ रही है ऐसी श्री जानकीजी अरु लक्ष्मण जी श्रीरघुनाथ जी के साथ सोहत हैं ताही समय कंचन को मृग आयो ताको देखि मृगनैनी श्री जानकी जी बोलीं कि हे प्राणनाथ या मृगको चर्मबहुत विचित्रहै याको बध करिलावो ऐसेबैन प्रियाजीके कहे वा मधुर वा हेवकार्य को प्रारम्भ ऐसे प्रिय बचन सुनि प्रीतम जो श्रीरघुनाथ जी तिनके मनमें भाये ताते करमें धनुषबाण लैकै श्रीरघुनाथजी कंचन मृगकेसाथधाये १ ॥

सवैया ॥ सिखरेद्भुतजूटजटाप्रटलीछबिदिप्तप्रभाविच मस्यधरं। कटिविभ्रततूननिचोलत्वचाकरकंजशरासनसोभ शरं । मृगहैमदर्शतपंचबटीमृगयार्थबनेरुचिरंविचरं । ममभानसमानससन्निहितोकलहंससदाकुलहंसवरं ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिद्धवल्लभपदशरणागत बेजनाथविरचितायांकवित्तावली रत्नदीपिका टीकायां आरण्यकाण्डः समाप्तः ३ ॥

## किष्किन्धा काण्ड ॥

---

जबअंगदादिनकी मतिगतिमंदभई पवनकेपूतकोन कूदिबेकोपलुगो । सहसीह्वैशैलपरसहसास केलिआइ चितवतचहूंओरऔरनकोकलुगो । तुलसीरसातलकोनिकसिसलिलआयो कोलकलमल्योअहिकमठकोबलुगो । चारिहूचरणकेचपेटचापेचिपिटिगो उचकिउचकिचारि अंगुलअचलुगो १ ॥

इतिश्रीकवितावलीरामायणेकिष्किंधा काण्डःसमाप्तः ॥ ४ ॥

बंदेहंजानकीरामौभक्तानामभयप्रदौ॥मंगलानंदकर्तारौ शरणागतवत्सलौ १ जब अंगद आदि कपिन की मति गति मन्दभई भाव बुद्धि बल शोकुकरि थकित भये तब जामवन्त के प्रचारे पवनपूत जो श्रीहनुमानजी तिनको फांदि समुद्र पारजावेको पलक मात्र बिलंब नहींलगी साहसीकहे महाबलीह्वै भाव हनुमान्जीको अपनाबल भूला रहत जबजामवानजी सुधिदेवाये तातें बलीह्वै कै सिंधुतट केउच्च पर्वत पर सहसा कहे ग्रीवही सहित केलि आये ऐसी बेग ताको हाहाकार भयो ताकी भय करिकै चारहू दिशिके देखनहारन को कल कहे सुख सब को जातरह्यो गोसांईं जी कहत कि कूदिबेको उचका लागेते पर्वत भूमिमें दब्यो तातें रसातलको जल ऊपर निकसि आयो अरुअंग दबिगयेते ब्याकुल ह्वै बाराह कलमल्यो कहे सब अंग चलिभये अरु शेष कच्छप को बल जातरह्या श्रीहनुमान्जीके चारहू पांवन को चपेटा लागे ते भूमि रसातल तक दबिकै चिपटि गई पर्वत जो अचल रहा

सो उचकि उचकि अर्थात् भूमि दलकि गई ताते चारि अंगुल पीछेको चलिगयो १ ॥ सवैया ॥ नीलकलेवरनीरद भात्त सरोजशुभाननअमृतधाम । चण्डशरासनशायकतीव करेकटितूणसुविभ्रतवाम । शोकभवार्णवतारकलौअघतूल विध्वंसनपावकनाम । नाथदयालयपालयदीनअहं शरणं शरणंतवराम १ ॥

इतिश्री रसिकलताश्रितकल्पद्रुम सियवल्लभपदशरण बैजनाथविरचिते कवित्त रामायण रत्नदीपिका टीकायांकिष्किन्धाकाण्डस्समाप्ता ॥

## सुन्दरकाण्ड ॥

---

बासवबरुणविधिबनतेसोहावनो दशाननकोकानन बसंतकोसिंगारसो। समयपुरानेपातपरतडरतबातपालत लालतरतिमारकोबिहारसो। देखेवरवापिकातड़ागबाग कोबनावरागवशभोविरागीपवनकुमारसो। सीयकीदशा बिलोकिबिटपअशोकतरतुलसीबिलोक्योसोति लोकशोकसारसो १ ॥

नीलारविन्दात्मसरोरुहाक्षं वामांगसीताश्रितहाटकाभं अंभोजपाणौशरचारुचापंराजाधिराजंचनमामिरामं १ देवलोक में इन्द्र को बन श्रेष्ठ पाताल में बरुणको ब्रह्म लोक में ब्रह्मा को तिनहूं ते श्रेष्ठ शोभायमान दशानन को कानन अशोक बाटिका है अरु जो सब बननको शृंगार बसंत ताहूको शृंगार अशोक बाटिका है भाव बसंत में प्रथम सबन के पत्ता पवन गिराय उजारि देत यावनमें समय आये पर पुराने पत्ता गिरावत पवन डरत जब नवीन पल्लव ह्वैआवत तापीछे पुराने पत्ता आपते गिरत याते बसंत में उजार नहीं होत ताते बसंत को शृंगार कहे पालत कहे सींचत भौरत लालत दुलारत भाव काहूको धक्का नहीं लागत ताते ऐसाशोभायमान लागत यथा रति कामके बिहार की बाटिका सम जाके देखे कामोद्दीपन होत बर वापिका चिच विचिचबावली तड़ाग मणिन सों घाट निर्मल जलरंग रंग कमल प्रफुल्लित जलपक्षी क्रीड़ाकरत ऐसो मनोहर तड़ाग बाग के मध्य में चारहू ओर चमन में रंग रंगके फूल फल बेलि बितानादि बाग की शोभा देखि पवनतनयऐसे बिरागी सोऊ रागवश भयो परंतु अशोकवृक्ष तर श्रीजानकी जीको देखे दुर्बल तन बसन मन मलिन

नसजल नेच नमितखल सक्रोध दुर्बचनाग्नि सोदग्ध ऐसी दशादेखि तब अस जाने कि यह बन तीनिहूं लोक के शोक को बास स्थान है १ ॥

मालीमेघमालबनपालबिकरालभटनीकेसबकालसींचैंसुधासारनीरको । मेघनादतेदुलारोप्राणतेपियारोबाग अतिअनुरागजियया तुधानधीरको । तुलसीसोजानिसुनि सीयकोदरशपाइ पैठोबाटिकाबजायबलरघुवीरको । बिद्यामानदेखतदशाननकोकाननसोतहशनहश कियोसहसीसमीरको २ ॥

जौने बनमें मेघनकीमाला तेई मालीहैं जे सुधासारकहे अमीमय मधुरशीतल निर्मल मिष्ठजलसोंनीकीभांति जहां जैसो चाही तैसो सदासींचतहैं जहां विशेष कराल योधा ते सदा रक्षाकरतहैं यातुधान धीरजो रावण ताको अत्यंत अनुरागहै जा बाग पर जो मेघनाद ते दुलारो प्राणनते अधिक प्यारोहै गोसाईंजी कहत कि श्रीजानकीजी के दरशपाइ तिनते हालसुनि रावणको प्यारो बाग जानि श्रीरघुवीरको बलबजाइ हांकदैकै बाटिकामें पैठि सहसी बली पवनकुमार अशोकबाटिकाको तहश नहश करि दिये भाव उजार करदिये २ ॥

बसनबटोरिबोरिबोरितेलतमीचर खोरिखोरिधाइआइ बाँधतलँगूरहैं । तैसोकपिकौतुकीडरातढीलोगातकैकै लातकेअघातसहैजीमेंकहैकूरहैं । बालकिलकारीकैकैतारीदैदैगारीदेत पाछेलागेबाजतनिशानढोलतूरहैं । बालधीबढ़नलागीठौरठौरदीन्हीआगि विन्धकीदवारिकैधौंकोटि शतसूरहैं ३ ॥

मेघनाद करि बंधनभये परपूछ फूंकबेकी आज्ञा रावण दियो सोसुनि खोरिकइ गलीगली ते राक्षस दौरिआये बसन बटोरि तेल में बोरि लंगूर में बांधनलगे जैसे निशाचर प्रबल परे तैसे कपि कौतुकी कइ तमाशाकरने वाले जे अनेक कर्तब करनेवालेहैं तथा हनुमान्जी दृथा डरमानि तन ढील करि कांपतहैं अरु लातनको प्रहार सहत जामें निशाचर जानैं कि कपि कूर कादरहै वा हनुमान्जी अपनेमनमें जानत कि ये सब निशाचर कूरहैं भाव पकरिकै मारना कादरको कामहै यह कौतुकदेखि बालक किलकारी मारिहंसिकै तारीबजावत पीछेपीछे नगारा तुरही ठोल बाजतहैं हनुमान्जी की प्रेरणाते बालधी जो पूंछ सो बढ़नलागी ताते लंका में ठौरठौर आगि लगाइदीन्ही ताकी उपमा देत किधौं बिन्ध्याचल पर दावानल लगीहै कि धौं सौकरोरि सूर्यहैं ३ ॥

लाइलाइआगिभागेबालजातजहाँतहाँ लघुह्वैनिबुकिगिरिमेरुतेविशालभो। कौतुकीकपीशकूदिकनककँगूरा चढ्यो रावणभवनचढ़िठाढ़ोत्यहिकालभो। तुलसीविराज्योव्योमबालधीपसारिभारी देखेहहरातभटकालसोंकरालभो। तेजकोनिधानमानोंकोटिककृशानुभानु नखविकरालमुखतैसोरिसलालभो ४ ॥

आगिलगाइ सबमंदिर ज्वलितकरिदिये ताको देखि बालकनके वृन्द डराइभागे तब हनुमान्जी लघुरूपह्वै निबुकि पीछेभारीरूप सुमेरुगिरि सो भयो कौतुकी हनुमान्जी कूदि कनक कंगूराउच्चपर चढ्यो तापरते कूदि रावणके भवनपर चढ़िठाढ़भयो ताकालको रूप वर्णन करत बालधी जो पूछभारी आकाशमें पसारे विशेष करालनख तैसो रिसकरिकै मुखलालह्वैगयो ताते कालहूते कराल बिराजमानभयो जाके देखेते निशाचर भटहहरात भाव

सभीतभये हनुमान्जीको प्रताप सो मानों कोटिनरूप अग्निहै वा अनेकरूप सूर्यहै अथवा कोटिनज्वाला अग्निलंका में मानों अनेकरूप सूर्यहै ४ ॥

बालधीविशालबिकरालज्वालजालमानौं लंकलीलि बेकोकालरसनापसारीहै । कैधौंब्योमबीथिकाभरेहैंभूरि धूमकेतुवीररसवीरतरबारिसीउघारीहै । तुलसीसुरेश चापकैधौंदामिनीकलाप कैधौंचलीमेरुतेकृशानुसरिभारी है । देखेंयातुधानयातुधानीअकुलानीकहैंकाननउजारेउ अबनगरप्रजारीहै ५ ॥

बालधी जो पूछ विशालहै तामें विशेष कराल जो अग्नि के समूह ज्वालाहै ताकी उत्प्रेक्षा मानों लंका को लीलिबेहेतु काल ने जिह्वा पसारीहै पुनः संदेह कैधौं पूछ ब्योम बीथिका कहे शिशुमारचक्रमें अग्निज्वाल किधौं समूह धूमकेतु भरेहैं धूमकेतु तारा जहां एक उदय होत ता देशमें दुर्भिक्ष महामारीको करनेवालाहै यथा मयूर चिचे ॥ कपालाख्योधूमशिखो दृष्टःसर्वजलाग्रहःप्राग्व्योमार्द्धविहारीस्यात्तथाचोन्मृत्युकारकः ॥ इहां समूह भरेहैं ते लंकाको नाशैकरैंगे अथवा सज्वलित पूछसो वीररस जो वीरहै ताकी उघारी तरवारसी है वीररस यथा सबल शत्रु समर विभाव बदन लाल अंग प्रफुल्लित अनुभावहै गर्व उग्रता असूया संचारी है लंकविध्वंस की उत्साह अस्थायी यह वीररस प्रसिद्ध रूपधारी महावीरहै सज्वलित पुच्छ कृपाणहै गोसाईंजी कहत कि पुच्छ किधौं इन्द्रको धनुष उदयभयो किधौं समूह दामिनी है किधौं हनुमान्रूप सुमेरु ते अग्निरूप सरिताबहीहै यथा ॥ बर्षा घोरनिशाचररारी।सुरकुलशालिसुमंगलकारी॥ताते इन्द्र धनु दामिनी सरिताकहि सोई घोरबर्षा को सूक्ष्म रूप कहे इत्यादि देखि राक्षस राक्षसी अकुलानी कहतहैं कि

प्रथम बन उजास्यो अब नगरभस्म करैगो इहां हनुमान् जी में वीररस कहे ताकी प्रतिकूल निशाचरनमें भयानक रसकहे करालरूप हनुमान्जीको देखिबो बिभावहै कंप रोमांच प्रस्वेद अनुभाव मोह मूर्छा दीनता संचारी भय अस्थायी यातें निशाचरनमें भयानक रसहै ५॥

जहाँतहाँबुबुकविलोकिबुबुकारीदेत जरतनिकेतधाओ धाओलागीआगिरे। कहाँतातमातभ्रातभगिनीभामिनी भाभी ढोटाछोटेछोहराअभागेभोरेभागिरे। हाथीछोरो घोराछोरोमहिषवृषभछोरो छेरीछोरोसोवैसोजगावोजागिजागिरे। तुलसीबिलोकिअकुलानीयातुधानीकहै बार बारकह्योपियकपिसेनलागिरे ६॥

जहांतहां अग्निकै बुबुकारीदेखि बुबकारीदैकै रोवत कहत कि धाओधाओरे आगिलागी घर जराजातहै तात कहां माता कहां भाईकहां स्त्रीकहां भाउज कहां ढोटा कहां छोट छोहरा अरे अभागे बौरहौ भागौ भागौ हाथी छोरौ घोड़ाछोरौ महिष वृषभ छेरी छोरौ सोवनहार कौ जगावौ जागौ जागौरे इत्यादि संभ्रमशब्द अनेक सुनाते हैं गोसाईंजी कहतकि यातुधानी मंदोदरी आदि रानी अकुलानी कहत कि मैं बारबार समुझाइ कह्यों कि हेपिय दशकन्ध मतिअंध यहिबानर से न लागो ई॥

देखिज्वालाजालहाहाकारदशकन्धसुनि कह्योधरो धरोधायेवीरबलवानहैं। लियेशूलशेलपाशुपरिघप्रचण्ड दण्ड भाजनसनीरधीरधरेधनुबाणहैं। तुलसीसमिधसौ-जलंकयज्ञकुंडलखि यातुधानपूंगीफलयवतिलधानहैं। श्रुवासोलँगूलबलमूलप्रतिकूलहबि स्वाहामहाहाँकिहाँ-किहुनेहनुमानहैं ७॥

अग्नि ज्वालन के जाल देखि हाहाकार सुनि रावण कह्यो कि कपिको धरो पकरो यहसुनि बलवान् जे वीर ते धावतभये कोऊत्रिशूल कोऊसांग फांसी परिघ अपर अच प्रचंड दंड लोहयुक्त लाठी जलसहित घट लिहे धैर्य मान् वीर धनुबाण लिहे इत्यादि सब सौज जो सामग्री सो सब समिध कहे यज्ञ की लकड़ीहैं लंक यज्ञकुंड सो बरत में परे अधिक प्रचंडपरो तहां शाकल्य सम देखि राक्षस सामान्य तेई सुपारी तिल यव धान अर्थात् चाउरअरु बलमूल प्रतिमूल कहे बली जे अचुहैं ते हवि कहे जाउरिहैं जाउरि जरिबे में देर तथा बली मरिबे में देर जाउरि स्रुवामें लसिबेते गिरतदेर तथा बलीको बहावत में देर लंगूर स्रुवाहै महाहांक युद्धकीललकार सोईखाहा करिकरि श्रीहनुमान् जी ऊने आहुति दिये भाव जे सामुहेपाये तिनको अग्निमें डारे ७ ॥

गाज्योकपिगाजज्योंविराज्योज्वालजालयुत भाज्यो वीरधीरअकुलाइउठ्योरावनो । धावोधावोधरोसुनिधाये यातुधानधारि बारिधाराउलदैजलदजौनशावनो। लपट झपटझहरानेहहरानेबातभहरानेभटपरेउप्रबलपरावनो। ढकनिढकेलिपेलिसचिवचलेलैठेलि नाथनचलैगोबलअनलभयावनो ८ ॥

अग्निज्वालनके जालसहित भयानक रूप हनुमान जी गाज्यो कहे बज्रपात सम तड़पे सो सुनि करालरूप देखि धीर्यमान जे वीररहे ते सब भागे ताते रावणहूं अकुलाइ उठो पुनः कहत कि धावोधावो वीरो कपिको धरो यह सुनि यातुधान जे राक्षसधारि सेना धाये ते जलकी धारा उलचत यथा सावनमें मेघ बर्षत अग्निकी लपटन की जो झपटैं ताके झहरानेशब्द अरु बातकहे बयारिके हहराने ते भयमानि निशाचर वीर भहराने बेसुधि गिरत भागे

प्रबल कहे कठिन परावन कहे सडरभागि निर्भय स्थान लुकिरहना जो निशाचरभागत सो पुनः लौटि नहींआवत यह जानि सचिवसब धक्कनसों ढकेलि ठेलि पेलि बरबश रावणको टारिलेचले कि नाथ अग्नि महा भयंकरहै यामें बल न चलैगा ८ ॥

बड़ोविकरालवेषदेखिसुनिसिंहनाद उठ्योमेघनादस विषादकहैरावनो। वेगजीतोमारुतप्रतापमारतण्डकोटि कालऊकरालताबड़ाईजीतोबावनो। तुलसीसयानेयातुधानेपछितानेकहैं जाकोऐसोदूतसोतौसाहेबअबैआवनो। काहेकीकुशलरोषेरामबामदेवहूकी विषमबलीसोबादि बैरकोबढ़ावनो ९ ॥

वेषकहे तनकी बनक अर्थात् लालमुख पिंगनेचकराल भृकुटी दशन रसना नख सज्वलित लंगूर ऐसो महाभयंकर वेष हनुमानजी को देखि सिंहसम घोर शब्द सुनि धीरमान् मेघनाद सोऊ अकुलाइउठो अरु उरमें विषाद सहित रावण कहत कि वेगताकरि हनुमानने पवनको जीत्यो भाव काहूके पकरे नहींथमत अरु प्रतापकरि कोटिनसूर्यन को जीत्यो भाव सन्मुख होतही भस्महोत अरु करालता करि कालकोजीते भाव जाको देखे धीर्यमानहूं सभीतहोत बड़ाईकरि बावनको जीते भाव प्रथम लघुरूप पुनः भारीरूप भयो गोसाईंजी कहत कि जे चतुरराक्षस रहे ते बिचारकरि पछिताइकै कहत कि जाको हनुमान ऐसो दूत सो तो साहब अबहीं आवनहारहै भाव विरोध की जर श्रीजानकीजी तो अबहीं इहांहींहैं ताते श्रीरघुनाथजी आयेपर जब क्रोधकरेंगे तब बामदेव जो शिवजी तिनकी कीन्ही जो कुशल सो काहेकी कुशलहै भावकुशल नहींहै निशाचर सब नाश होइंगे ताते महाबली ते बैर बढ़ावनो बादिहै भाव वाको रक्षक कोऊ नहींहै ९ ॥

पानीपानीपानीसबरानीअकुलानीकहैं जातिहैपरानी गतिजानीगजचालिहै । बसनबिसारैंमणिभूषणसँभारत न आननसुखानेकहैंक्योंहूकोऊपालिहै । तुलसीमदोवै मींजिहाथधुनिमाथकहै काहूकानकियोनमैंकह्योंकेतौकालिहै । बापुरोबिभीषणपुकारिबारबारकह्योबानरबड़ीबलायघनेघरघालिहै १० ॥

कविकी उक्ति है जिनकीगति सबकी जानाहै कि गज सम मंदचाल चलतींरही तेई भयातुर अकुलानी बिभ्रम ह्वै पानी पानी पानी कहती अनेकन रानी भागीजातीहैं देहमें वस्त्रनकी सुर्तिनहीं कि कौन छूटा कौन पहिरे हैं मणि भूषणन को सँभारनहीं छूटि टूटि गिरत जात मुख सूखे अधीरह्वै कहतीं कि काहूभांति कोऊ हमारी रक्षा करिहै हाथमींजि माथधुनि बिलापकरि मंदोदरी कहति कि मैं काल्हि कैतौ ससुझाय कह्यों ताको काहू न सुन्यो काल्हि कहिबे को भाव अगहन शुक्लचयोदशी को अशोक बाटिका में अक्षैकुमार जूझो। चतुर्दशी को लंका दाह याते काल्हि कहे मंदोदरी कहत कि बापुरे विभीषण बारबार पुकारि कहत रह्यो की यज्ञ बड़ी एक बलाय बानरहै बज्रतेरे घरघालिहै भाव बज्रतेन को नाश करैगो इहां अग्नि करालता बिभाव हाथमींजिबो माथ धुनिबो अनुभाव मुख सूखो त्रासादि संचारी भय स्थाई याते भयानक रस है १० ॥

काननउजारेउतौउजारेउनबिगारेउकछु बानरबिचारोबाँधिआयोहठिहारसो । निपटनिडरदेखिकाहूनलख्यो विशेषि दीन्हीनछुड़ाइकहिकुलकेकुठारसो । छोटेऔबड़ेरे मेरेपूतऊअनेरेसब सांपनिसोखेलैंमेलैंगरेछुराधारसो ।

तुलसीमदोवैरोइरोइकैविगोवैआपु बारबारकह्योमैंपुकारि दाढ़ीजारसो ११ ॥

मन्दोदरी कहत कि कानन उजास्यो तौ उजास्यो यामें कछु बिगास्यो नहीं काहेते फल खाइबो वृक्ष तोरिबो हारको रहिबो बानरको सुभावही है तापर बिचारे बानर को हारसो मेघनाद हठी हठि करि बांधि ग्राम को लायो ताते अनेक राक्षस बधभये नगर भस्मभयो यह अपने हाथ कराइ लियो काहे ते निपट निडर कपि को देखि सब मतिअन्ध ह्वैगये काहूने विशेषि कै बिचारि न देख्यो की जो निशंक है तौ कछु कारण करैगो अस कहिकै कुल कुठार रावणको समुझाइ काहूने कपिको छोड़ाइ न दियो ताकोबोध मंदोदरी आपही करत किसमुझावै कौन पतितौ अनीति रत है नैहै जे मेरे छोटेबड़े पुच हैं तेऊ अमेरे कहे अन्यायी हैं जे सांपन सों खेलत अरु छूराकी धार गरेमें लगावत इहां हनुमान्जी सांप हैं पकरिबो खेलब है अग्नि छूराधारहै पूछिमें फूंकि देना गरे में लगावब है गोसाईंजी कहत कि मंदोदरी रोइ रोइ कहत कि दाढीजार रावण सों बारबार मैं कह्यों कि त्वैं अपने हाथ आपुको बिगोवै नाश करै गो ११ ॥

रानीअकुलानीसबडाढ़तपरानीजाहि सकैंनबिलोकि वेषकेशरीकुमारको । मींजिमींजिहाथधुनिमाथदशमाथति य तुलसीतिलोनभयोबाहिरअगारको । सबअसबाबडाढ़ोमैंनकाढ़ोतैंनकाढ़ो जियकीपरीसँभारैसहनभँडारको । खीझतिमदोवैसविषाददेखिमेघनादबयो लुनियतसबयाहीदाढ़ीजारको १२ ॥

एक तौ अग्निकरि सब जरोजात दूसरे हनुमान्जीको कराल वेष देखि नहीं सकत ताते सब रानी अकुलानी

भागोजात अरु हाथ मींजि माथ पीटि रावण की रानी सब कहतकि मणि भूषणादि सब असबाब जरिगयौतिलौ भरि घरते बाहर न भयो कैसे बाहेर होइ न मैं काढ्यौं न त्वैं काढे अपर कहत कि सबकों अपने जीव बचाइबे की परी सहन भंडार कौन सँभारै मेघनाद को देखि मंदोदरी सहित विषाद खीझत कि याही दाढीजार को सब बयो है जो सुनियत है भाव जो मेघनाद कपि को पकरि न लावत तौ यह दशा कैसे होती १२ ॥

रावणकीरानीबिलखानीकहैयातुधानी हाहाकोउकहै बीसबांहुदशमाथसों । काहेमेघनादकाहेकाहेरेमहोदरतू धीरजनदेतलाइलेतक्योंनहाथसों । काहेअतिकायकाहे काहेरेअकंपन अभागेतियत्यागेभोंडेभागेजातसाथसों । तुलसीबढ़ायबादशालतेबिशालबाहैं याहीबलबालिसों बिरोधरघुनाथसों १३ ॥

यातुधानी राक्षसी जे रावण की रानी ते बिलखानी कहती हैं कि हाइ हाइ हमारी यह दशा बीश बाऊ दश माथ वाले सों कोऊ कहै जाय भाव भुज शीश को बड़ा गुमान रहा सो कछु काम न करो काहे मेघनाद काहेरे महोदर तुम दोऊ बड़े मानी रहौ ते ऐसे अधीर भागे जात कि हमको धीरज नहीं देत अरु हाथ नहीं लगाइ लेत जो सहारे ते हमहूं भागि चलैं काहे रे अभागे अतिकाय अकम्पन तुमको भुजबल को बड़ा गुमान रहा सो सब भूलिगो हम सब नारिनको साथ सों त्यागे बालि सौ मूर्खों भागे जातहौ तुम सब शालवृक्ष सों बड़ी बड़ी बाहु वृथा बढ़ाई है हे कादर मूर्खो याही बलते श्रीरघुनाथजी सों बैर बढ़ायो है यह कहि श्रीरघुनाथजी के प्रताप को दिखाय सबको मान भँग करतहैं १३ ॥

हाटबाटकोटओटअट्टनिअगारपौरिखोरिखोरिदौरिदौरिदीन्हीअतिआगिहै । आरतपुकारतसँभारतनकोऊकाहू ब्याकुलजहांसोतहांलोगचलेभागिहै । बालधीफिरावै बारबारझहरावैझरैबूंदियासीलंकपघिलाइपागपागिहै । तुलसीबिलोकिअकुलानी यातुधानीकहैं चित्रहूकेकपिसों निशाचरनलागिहै १४ ॥

बजारकी गलिनमें किला की ओट अटारिनमें घरघर द्वारद्वार गलीगली दौरि हनुमान्जीने प्रचण्ड आगि लगाइ दई ताको देखि राक्षस राक्षसी अति दुखित पुकारत कोऊ काहू को सँभारत नहीं सब व्याकुल जो जहां रहैं सो तहांई से सब लोग भागि चले ता समय हनुमान् जी बालधी जो पूँछ है ताको चारहू ओर फिराइ बार २ झहरावैं कहे झिटकै हैं ताते बूँदिया सी चिनगी झरै हैं सोनेको लङ्क पागसो पिघलाइ बूँदिया सी पागत हैं गोसाईं जी कहत कि अकुलानी सब राक्षसी कहत कि वर्त्तमान कपिको को कहै कदाचित् चिचसारीमें भी बानर की प्रतिमा देखि परैगी ताहूसों निशाचर अब न लागैं गे यामें हनुमान्जीको प्रताप सूचित होत १४ ॥

लागिलागिआगिभागिभागिचले जहांतहांधीयकोनमाय बापपूतनसँभारहीं । छूटेबारबसनउघारेधूमधुंदअंधकहैं बारेबूढ़ेबारिबारिबारबारहीं । हयहिहिनातभागेजातघहरातगजभारीभीरढेलिपेलिरौंदिखौंदिडारहीं । नामलैचिलातबिललातअकुलातअति तातततौसियतझौंसियत झारहीं १५ ॥

आगि लागि आगि लागि ऐसा कहत जहां रहैं तहांते सब भागि चले ऐसे बिह्वल ह्वै भागे जो कन्याको माता

पुचको पिता नहीं सँभारत भाव कन्या पै माताको छोह पुच पै पिता को छोह ज्यादा रहत ऐसे बेसुधि भये कि युवतिन के बार बसन छूटि परे ते तन उघारे भागीं धुंवा कौ धुंधकार में सब अंधेसे ह्वै गये बली सब भागि गये बूढ़े बारे पीछे बारबार पानी पानी करत हैं कहूं घोड़े तुराय हिहिनात भागे जात कहूं हाथी चिक्कारत भागे ते भारी भीरमें परे ते ठेलि कहे ढकेलिकै पेलिगये जे पायें तर परे ते रौंदिगये जे धक्का में गिरे ते खौंदि कहे घायल ह्वै गये एक एकनको नाम लैलै चिल्लात बिललात कहे भागे भागे फिरत अति अकुलाने ताते तात तात हे तात पुकारि कहत कि आंचमें तौसियत कहे ताव खाइयत अरु लपक की झारसों झौंसियत झरसे जाइत है १५ ॥

लपटकरालज्वालजालमालदहूंदिशिधूमअकुलानेपहिंचानैकौनकाहिरे । पानीकोललातबिललातजरेगात जातपरेपाइमालजातभ्रातनूनिबाहिरे । प्रियातूपराहि नाथनाथतूपराहिबापबापतूपराहिपूतपूततूपराहिरे । तुलसीबिलोकिलोकव्याकुल बिहालकहैंलेहिदशशीशअब बीसचखचाहिरे १६ ॥

सधूम अग्नि ते दहद निकरत ते लपटैं कराल हैं निधूम अग्नि ते निसरत ते ज्वाल तिनके जाल कहे चहुंघाते धूमि एकमें मिलत तिनकी माल कहे समूह छाइरही अरु दशौं दिशामें धूम छाइ रहो तामें सब ऐसा अकुलाने कि कोऊ काहू को चीन्हत नहीं प्यासन के मारे पानीको लल्लात फिरत अरु आंचमें गात जरेजात ताते बिललात कहे भागे भागे फिरत कोऊ पांयन तर परे पुकारत कि दबे जाइत भाई तुम उबारौ पति नारिन से कहत कि हे प्रिये तू भागै नारी पतिसे कहतीं कि नाथ तुम भागौ पुच

पिता ते कहत कि बाप तुम भागौ पिता पुत्रते कहत कि हे पुत्र तुम भागौ इत्यादि बज्रत शब्द सुनात ऐसी दशा देखि सब लोग व्याकुल बिहाल कहत कि आपने कर्त्तव्यताको फल दशशीश बीसोआंखिन भरि देखिलेहि १६॥

बीथिकाबजारप्रतिअटनिअगारप्रतिपँवरिपगारप्रति बानरबिलोकिये। अर्द्ध उर्द्धबानरबिदिशिदिशिबानरहैमानोंरह्योहैभरिबानरतिलोकिये। मूंदेआंखिहीयमेंउघारे आंखिआगेठाढ़ोधाइजाइजहांतहांऔरकोऊकोकिये। लेहुअबलेहुतबकोऊनसिखावोमानों सोईसतराइजाइजाहि जाहिरोकिये १७॥

गलिन में बजारन में अँटारिन में घरन में देवारन पै इत्यादि नगर में सर्वत्र बानरै देखात पाताल आकाश ईशानादि बिदिशा पूर्वादि दिशा सर्वत्र कैसे देखात मानौं तीनिहूं लोक में बानरै भरि रहे हैं जे भयकरि आंखी मूँदि लेत तब हृदय में बानर देखात आंखि खोले आगे बानर ठाढ़ो धाइ जाइ जहां अर्थात् जहां अभय बिचारि भागि जात कैलास ब्रह्मलोकादि तहाऊं बानरै देखात और को किये भाव बानरन को रोंकि और कोऊ वस्तु जाने किये ऐसा सामर्थ्य को है जो बानरनकी भय मिटाय राक्षसन की रक्षा करै अर्थात् रघुनाथजी के बिमुख को रक्षक कोऊ नहीं इत्यादि हाल देखि तब कोऊ कोऊ कहत कि तब हमारो सिखावन न मान्यो अब अपनी कर्त्तव्यता को फल लेउलेउ भागौ न तबतौ जाको रोकिये सोई सतराइ रिसाइ जाइ वह रिस अब कहां गई १७॥

एककरैधौजएककहैकाढ़ोसौजएकऔजिपानीपीकैकहैबनतनआवनो। एकपरेगाढ़ेएकडाढतहीकाढ़ेएकदेखत हैं ठाढ़ेकहैंपावकभयावनो। तुलसीकहतएकनीकेहाथ

लायेकपिअजहूंनछांड़ैबालगालकोबजावनो । धावरेबु-झावरेकिबावरेजिआवरेहोऔरैआगिलागीनबुझावैसिन्धु सावनो १८ ॥

एक करै धौज अर्थात् धाइ जात अग्नि बुझाइबे हेतु एक कहत कि बुझाइबे पर न परौ सौज कहे सामग्री काढ़ौ एक प्यासे औजि कहे आसूदा ह्वै पानी पीकै कहत कि पेट भरिगयो ताते वहांको आवनो नहीं बनत एक अग्निके बीच साकरे में परे एक जरतमें काढ़ेगये एक दूरि ठाढ़े देखत कहत कि अग्नि भयङ्कर है एक कहत कि कपिने नीकी भांति हाथ लगाये वर्त्तमान रावण को मान भंगकिये ताहू पर बालबुद्धी मूर्ख रावण गाल बजावन नहीं छांड़त है जे गाढ़े परे ते पुकारत कि धाओ रे जे जरत ते पुकारत कि बुझाओ रे जे अधमरे ते पुकारत कि हैं बावरेउ जिआवो रे जे बाहर ठाढ़े ते कहत कि यह और भांतिकी अग्नि लागी है भाव कछु और भांति की दैवी अग्नि है हम लोगों की कौनि बात है जो समुद्र अरु सावन बुझावा चहै तौ न बुझाइगी भावसमुद्र उमँगि कै भूमि में छापचढ़ै सावन की जलवृष्टि आसमानते होइ तबहूं यह अग्नि न बुझैगी १८ ॥

कोपिदशकंधतबप्रलयपयोदबोले रावणरजाइधाइ आयेयूथजोरिकै । कह्योलङ्कपतिलङ्कबरतबुतावोबेगिबा-नरबहाइमारौमहावारिबोरिकै । भलेनाथनाइमाथचले पाथप्रदनाथवरषैमुशलधारबारबारघोरिकै । जीवनतेजा गीआगिचपरिचौगुनीलागी तुलसीभभरिमेघभागेमुख मोरिकै १९

अग्नि न बुझाइगी ऐसे बचन सुनि दशकंध कोप करि प्रलय कारक पयोद जे मेघ तिनको बुलावत भयोते रावण

की आज्ञापाइ यूथ जोरि कहे समूह बटुरिकै धाय आवे तिनते रावण कह्यो कि बरत लंका को बेगि बुतावो अरु महाजलधारा में बहाइ बोरि कै बानर को मारिडारो यह सुनि भलेनाथ कहि माथनाइ पाथप्रद जे मेघ तिन के नाथ अर्थात् मेघन के राजा चलेते बार बार घोरिकै घोर शब्द गर्जिकै मुशलसम मोटी जल की धारा बरषन लगे जीवनकहे जल यथा॥पयःकीलाल ममृतंजीवनंभुवनंबनं॥इत्यमरः एकतौ स्वाभाविक प्रचंड अग्निमें जल परेते अधिक भभकनिसरतदूसरेजोबड़वाग्नि जठराग्निबज्रपातााग्नियें जलपाय बुझात नहीं बल्कि जलही को जराइ देत है तीसरे हरिइच्छा में बिघ्न कर्ता कौनहै ताते जीवनकहे जल परतही पुनः अग्नि जागी चपलह्वै चौगुनी लागी यथा अग्नि में जल परेते भभक में शीघ्र चिनगी उड़ि चारह्व दिशि अग्नि बरि उठी ता प्रचंड अग्नि लङ्कामें बढ़ीदेखि मेघ बराय मुँह फेरि भागे १९॥

इहांज्वालजरेजातउहांग्लानिगरेगात सूखेसकुचात सबकहतपुकारहैं। युगषटभानुदेखेप्रलयकृशानुदेखेशेष मुखअनलबिलोकेबारबारहैं । तुलसीसुन्योनकानसलिलसर्पीसमानअतिअचरजकियोकेशरीकुमारहैं । वारिद वचनसुनिधुनैशीश सचिवनकहैदशशीशईशत्रासताबिकारहैं २० ॥

इहां तौ अग्नि के ज्वालते मेघ जरेजात उहां रावण के पास जावे की ग्लानिमें गरे कहे बूड़ेजात ताते देहैं सुखाइगईं सकोच सहित पुकार करि सब मेघ कहत कि युग षटछदुनी बारहौ कला सूर्य देखे ताह्व में ऐसातेज नहीं प्रलयकाल की अग्नि देखे ताह्व में ऐसा तेज नहीं शेष मुख की जो विषाग्निहै बार बार देखे ताह्व में ऐसा तेज

नहीं ऐसी अग्नि हम कानसों नहीं सुने जामें परैतौ जल सर्पि कहें घृतसम ह्वै अग्नि को प्रचंड करिदेत अरु कंचन काठ सो बरत यह अत्यंत आश्चर्य हनुमान्‌जी ने करोहै भाव कछु अद्‌भुत अग्नि है जो लंका में लगाई है ऐसे बचन मेघन के सुनि माल्यवानादि जे सचिव हैं ते शीशपीटि कहतकि हेदशशीश यह अग्नि नहींहै ईशकी बामता को बिकार कहे ईश्वर को महा कोप है यामें रक्षक कौन है २० ॥

पावकपवनपानीभानुहिमवानयम कालु लोकपालमे रेडरडांवांडोलहैं । साहबमहेशसदाशंकितरमेशमोहिंमहातपसाहसविरंचिलीन्हेंमोलहै। तुलसीत्रिलोकआजुदूजोनविराजैराजबाजेबाजेराजनकेबेटाबेटीबोलहैं। कोहै ईशनामकोजोवामहोतमोहूंसे कोमालवानरावरेकेबावरे सेबोल हैं २१ ॥

ईश बामता को बिकारहै ऐसे बचन सचिवन के सुनि रावण कहत कि अग्नि पवन जल सूर्य हिमवान् जो चंद्रमा यमराज काल इन्द्र बरुण कुबेरादि अरु सब लोकनके नाथ तै सब मेरे डरकरि डांवांडोलकहे भागे भागे फिरत हैं अरु महेश हमारे स्वामी हैं भाव हमारे सदा रक्षकहैं रमेश जो विष्णु ते शंकित हमते सदा डरतहैं अरु महातप के साहस कहे पराक्रम करि ब्रह्माजी को तौ मोल ऐसो लीनहै सदामेरे आधीनहैं ये जो त्रिदेवहैं तिनकी बामता को तौ मोको डरैनहींहै जोमोपर बाम होइऐसा तीनिलोक में दूसरा कौन है राजपर बिराजमान जासों मैं दंड नहीं लिये आजहूं बाजे बाजे राजन के बेटी बेटा बोल कहे दंडहेत बँधवा हैं याते त्रिलोक बिजयी प्रतापवान्‌हम मण्डलीकमणि राजा हैं मोहूं ऐसे को जो बाम होत सो

ईश कौनहै कौन रूपहै वाको कौन नामहै ताको बतावो नहीं तो हे मालवान आप के बचन बावलेके ऐसेहैं भाव निरर्थक हैं तुम्हारो कहिबो वृथा है २० ॥

भूमिभूमिपालव्यालपालकपतालनाकपाललोकपाल जेते सुभटसमाजुहैं । कहैमालवानयातुधानपतिरावरेको मनहुंअकाजआनैऐसोकौनआजुहैं । रामकोहपावकसमी-रसीयश्वासकीशईशवामताबिलोकिबानरकोव्याजुहै। जा रतप्रचारिफेरिफेरिसोनिशंकलंकजहांबाँकोबीरतोसों शूर शिरताजुहै २२ ॥

भूमिकेजेते भूमिपालराजाहैं यथासुरथसुधन्वावीरमणि दमनकादि अरु पातालके जेते व्यालपालक सर्पनके राजा यथा अनंत बासुकी तक्षक कर्कोटक शेषपद्मकमहा पद्मक एलापत्रकादि अरु नाकपालइंद्रलोकपाल धर्मराजअग्नि सूर्य पवन बरुण कुबेरादि जेते सुभटन की समाज हैं माल-वान कहत कि हे यातुधान पति रावण त्रैलोक में ऐसा समर्थ आजु कौन है जो आपको अकाज करिबो मनमें लावै प्रसिद्धकी को कहै भावतुम्हारो ऐसोप्रतापहै जासों सब डरत हैं हे रावण जो आप ने कहा कि कौन ईश है जो हमारे ऐसेको बामहोत ताकोसुनिये परब्रह्म श्रीरघु-नाथजीको क्रोधपावकरूपहै श्रीजानकीजीकोबिरहाग्नि उज्वलित श्वास की जो समीरताकी सहायता पाय अग्नि प्रचंडपरतजात ईशजो श्रीरघुनाथजी तिनकीबामता सोई कीश रूप करि देखौ बानर तौ बहानामात्र है काहेते जहां रावण तुम ऐसे बाँके बीरभाव कालह्व करि युद्धमें निशंक अरु शूरनमें शिरताज भाव स्वहस्त शिर भेद न करेते तुम बर्तमानको प्रचारिकै निशंक घूमिघूमि लंकाको जारतहै यातेनिश्चय जानिये कि बानररूप रघुनाथजी का

बामता है इहांकोह पावक श्वास समीरमें रूप कहें बानरके बहाने ईशकी बामता वर्णनकरे याते कैतवा पन्हुति अलंकार है २२ ॥

पानपकवानविधिनानाकैसंधानो सीधोविविधिविधान धानबरतबखारही । कनककिरीटकोटिपलँगपेटारेपीठ काढ़तकहारसबजरेभरेभारही। प्रबलपावकबाढ़ेजहांकाढ़े तहांडाढ़ेझपटलपटभरेभवनभँडारही। तुलसीअगारनपगारनबजारबच्योहाथीहथसारजरेघोरेघोरसारही२३ ॥

जो बस्तु जरी ताको कहत पान कहे पीवनेकी बस्तु यथा मेवादि औषधिनके अरक औषधिन के सरबत आसवादि अनेक भांति मदिरादि अरुपकवान कहेयथा खाझा बोंदी खुरमा जामुनि गुलगुला जलेबी आदि मिठाई अरु अनेक बिधि संधानो कहे शोधि बनायोसीधो यथा इस्तेमाल चाउर कांड़ाकी दाल मैदा घृत शक्करादि अरु बिविधि बिधान धान गेहूं उरदादि अन्न जो बखारिन में भरो जरत है इति भंडार अथ मंदिर की बस्तु मणि जटित कांचन के मुकुटादि भूषण कोटिन रेशमी निवारि के पलंग दुशालादि बसनन के भरे पेटार पीठ कहे सिंहासनादि के काढ़त में भार सहित कहार जरे काहे ते जब प्रबल अग्नि बाढ़ी ताकी लपटन की झपटै भवन भंडारमें भरि रहीहैं ताते जहां असबाब काढ़े तहांई डाढ़े कहे जरिकै रहिगये गोसाईं जी कहत कि काहूको छोरिदेने की सामर्थ्य न रही ताते हाथी हथिसार में घोड़ा घोड़सार में जरि गये २३ ॥

हाटबाटहाटकपिघिलिचलोघीसोघनो कनककराही लंकतलफतजायसों । नानापकवानयातुधानबलवानसब

पागिपागिढेरीकीन्हींभलीभांतिभायसों । पाहुनेकृशानु पवमानसोपरोसोहनुमानसनमानिकैजेंवायेचितचायसों। तुलसीनिहारिअरिनारि दै दैगारिकहैबावरेसुरारिबैरकी-न्होरामरायसों २४ ॥

बजारन में खंभादि राहन में छज्जादि जो थोरा सोना रहा सो अग्निमें पिघिलि घीसमबहि चलो भूमि अरु कोट में समूह सोना जो गलो नाहीं तप्त ह्वै रहो सोई लंका सोनेकी कराही है सो तलफत कहे दिग्धत जात तामें गलो सोना घीसम भरोहै जे बलवान राक्षस हैं ते सब अनेक भांति पकवान हैं तिनको भली भांतिकै भाव करि मन लगायकै पागि पागि ढेरी करी अर्थात् पाङ्न हेतु रसोई भाव सहित बनाई जात इहां बीररस में धृति चपलता गर्वादि संचारी भाव करि राक्षसनको अग्नि में डारिदिये कृशानुजो अग्नि सोई इहां पाङ्न है पवमान जो पवन सोई परोसनहार है तहां तप्तसोना में जे राक्षसन को हनुमानजी डारिदिये तिनको रक्तमांस जरिरुच ह्वै गये सो पाग बहै जब हलके परि गये तब पवन उड़ाय ज्वलित अग्नि में डारि दियो यह पवनको परोसब है प्रचंण्ड अग्नि मेंपरे ते बरिगये यह अग्निको भोजन करिबो है या भांति सों सन्मान करिकै अग्निकोजिंवाये हनुमान्जीचित चायकहे आनंद सहित चित्त में उत्साह यहबीररस की स्थायीहै अरु पाङ्न जेंवत में नारी गारी गावती हैं इहां अरि नारी जो राक्षसीन को रोदन सोई गान करि गारी दै दै कहती हैं हे बावरे सुरारि रावण तुम राम राय सों बैर कीन्हों ताको फल लेउ इतिशेषः इहां बीर रस ते राक्षसिन में करुणा रस हैं अरु उपमारू पक अलंकार करि श्री राम प्रताप वस्तु व्यंग्य है २४ ॥

——०——

रावणसोंराजरोगबाढ़तबिराटउरदिनदिनबिकलसकलसुखरॉकसो । नानाउपचारकरिहारेसुरसिद्धमुनि होतनबिशोकओतपावैनमनाकसो ॥ रामकीरजायत रसायनीसमीरसूनुउतरि पयोधिपारशोधिसरबांकसो । यातुधानबुटपुटपाकलंक जातरूपरतनयतनजारिकियोहै मृगांकसो २५ ॥

बिराट को उर जो है समुद्र ताके बीच में राजरोग सम रावण प्रताप करि बाढ़त भयो ताके शोक ते बिराट दिन दिन बिकल होत अरु सब सुख रॉक कहे क्षीण होत भयो भावनेत्र सूर्य प्रताप रहित सत ह्वै गये मन चंद्रमा मलीन भये बाजु दिग्पाल शोक ताप ते क्षीण भये ब्रह्माण्ड देह ताप ते तप्तह्वै रही पाप कफ रूप बाढ़त जात इत्यादि शोक निवारण हेतु अनेक भांति के उपचार कहे औषधी करि देवता युद्ध आदि करि सिद्धि सिद्धाई करि मुनिजप यज्ञादि करि सब हारिगये बिराट बिशोकन होत भयो औ तप कहे ज्वर सो मनाक कहे थोरी नहीं आवत भाव रावण को प्रताप रूप ताप बढ़तै जात ताके निवारण हेतु श्रीरघुनाथजी की आज्ञा ते रसायनी हनुमान्जी समुद्र पार जायकै सरवा कहे दिया को सरवा जामें धरिकै रस फूंका जातहै क कहे भूमि सिंधुपार की सोई सरवा है तामें सब धातु शोधि कै अर्थात् जातरूप रत्न कहे सोना मोती मय जो लंका है तामें राक्षसबूटी है तिनकीपुटपाक कहे एकमें मिलाय यत्न सहित कहेमृगांककी विधियथा तेल कांजी मठा त्रिफलागोमूत्र कुरथीको काढ़ादिमें तप्त करिदुइबारबुझाय सोनो व रखकरिखटाई अरु शुद्धपारा समान करि घोटै पुनः कचनाररस की एक पुट देइ अग्नि छाले के रस की तीनि पुट देइ करियारी को जर के रस की एक पुट देइ पीछे सानेको चौथाई मोती डारि घोटै

पुनः शोधा गंधक सब की बराबरि डारि दुइ दिन घोटै गोला करि सरवा में धरि बंद करि कपरमट्टी करि गजपुट में फूंकि देइ यह यत्न है इहां राक्षस करियारी आदि सब औषधी है तिनको मर्दिबो सोई घोटब है मेघनादादि सबल राक्षसन को दर्प सोई पारा है सामान्य राक्षसन को दर्प गंधक है सोना मोतीमयी लंका है तहां की भूमि सरवा है इत्यादि यत्न सों जारि हनुमान्जी मृगांक बनायो तहां विराटको मुख अग्नि है प्रचण्ड है भस्म करिदेना मृगांकरसको भक्षण है तहां रावण राजरोगको प्रतापरूप ताप आजुइ ते कम परो भाव सब लोक निर्भयभये २५ ॥

जारिबारिकैबिधूमबारिधिबताइ लूमनाइमाथोपगनि भोठाढ़ोकरजोरिकै । मातुकृपाकीजैसहिदामदीजैसुनि सीयदीन्हींहैअशीषचारुचूड़ामणिछोरिकै। कहाकहौंतात देखेजातजोबिहानदिनबड़ीअवलंबहीसोचलेतुमतोरिकै । तुलसीसनीरनैननेहसोशिथिलबैनबिकलबिलोकिकपिक हतनिहोरिकै २६ ॥

लंकाको जारि वारि बिधूम करे कोयलाकरे पुनः पूंछ समुद्रमें बुझाय श्रीजानकीजीके पायँनमें माथनाय हनुमान् जी हाथ जोरि आगे ठाढ़ह्वै कहे हे मातु कृपा कीजै अर्थात् चलबे की आज्ञा दीजै अरु सहिदानी कहे कछु अपनो चिन्ह दीजै यह सुनि जानकी जी अशीषदै सुन्दर चूड़ामणि शीघ्रते छोरिक दीन्हीं अरु कहतीभईं कि हे तात काह कहौं जो कहिबे को हालसो जा भांतिते दिन बिहान कहे दिन बीतत सो तुम देखन जात हौ तुम्हारे देखे हमारे प्राणनको अवलंब रहा ताहू को तुम तोरिकै चलेजातहौ ऐसे बचन सुनि जानकीजीको बिकलदेखि हनुमान् जी स्नेह सों शिथिलतन सजलनैन निहोराकरि बचन कहतेभये २६ ॥

दिवसछसातजातजानबेनमातुधरुधीरअरिअंतकीअवधिरहीथोरिकै। बारिधिबँधायसेतुऐहैंभानुकुलकेतुसानुजकुशलकपिकटकबटोरिकै । बचनबिनीतकहिसीताको प्रबोधकरितुलसीत्रिकूटचढ़िकहतडफोरिकै । जैजैजानकीशदशशीशकरिकेशरी कपीशकूद्योबातयातउदधिहलोरिकै २७ ॥

दिवस छः सात कहिबो थोरे दिनन को लोकोक्ति है अथवा छः सात कहे छःसते बयालिस दिन तहां अगहन शुक्लपूर्णिमाको हनुमान्जीकीयहबार्ताहै माघकृष्णद्वादशी को लंका समीप कपिन युत रघुनाथ जी प्राप्त भये याते बयालिस दिन बीतत में कुछ जानि न परी है मातु धीरज धरु अरि रावण के अंत कहे मृत्यु की अवधि थोरे दिनकी रही काहेते कपिसेन बटोरि समुद्रमें सेतुबँधाय लक्ष्मणजी सहित भानुकुलकेतु श्रीरघुनाथजी कुशल सहित ऐहैं ससेन रावण को मारि तुमको लैजायँगे इत्यादि बिनीत बचन कहि श्रीजानकीजी को प्रबोध कीन पुनः त्रिकूट शिषरपर चढ़ि डफोरि कहे ऊँचेस्वर हांकदैकै कहतभयो किरावण रूप गजमर्दन को केशरी कहे सिंहरूप श्रीरघुनाजी की जय होइ जय होइ ऐसा कहि कपि हनुमान्जी ऐसी शीघ्रता करि कूदे जो तनकरि बात कहे पवननिसरो ताकी घात कहे ठोकर ते समुद्र में हलोरा उठे याते बेगता गमन सूचित भयो २७ ॥

साहसीसमीरसूनुनीरनिधिलंघिलखिलंकसिद्धिपीठ निशिजागोहैमशानसो । तुलसीबिलोकिमहासाहसप्रसन्नभईदेवीसियसारिषीदियोहैबरदानसो । बाटिकाउजारिअच्छधारिमारिजारिगढ़ भानुकुलभानुकोप्रतापभा-

नुभानुसो। करतबिशोकलोककोकनदकोककपिकहैजाम-
वंतआयोआयोहनुमानसो २८॥

यामें हनुमान्जीको मशान जो जागिबो वर्णनकरेतहां अत्यंत साहसी होइतौया मारगमें पगदेइकाहेतेयामेंबि-घ्न करिबे हेतु अनेक भयंकर भय देखात तिनको न मानै तहां पवन साहसी के पुत्र हनुमान्जी महासाहसी ह्वै या मार्गमें पांव दिये तहां सुरसा सिंहिका लंकिनीआदि अनेक भय कारकबिघ्न तिनको कछु न गने पुनः जहांनदीके बीचमें रेतपरोहोइ तहां अर्द्धरात्रीको जाइमृतकके ऊपर बैठि मशान जागै तामें उलूक काग अजादिकी बलिदान देयमदिराकी धार दैकै मंत्रजपै जोनिर्बिघ्न पुरश्चरण पूरो होइ तौ श्मशानेश्वरी देवी प्रसन्नहोइ जो बरमांगै सोई देइ इहां हनुमान्जी समुद्र नांघि तहां की भूमि में मृतक शरीर लंकिनी को पायो यह देहधारी लंकापुरी है सो हनुमान्जी के मारे पापमयी देह छांड़ि दिव्यदेह पाई यह रामचन्द्रिका में लिखा है यथा॥ जबहींहनुमंतचले तजिशंका। मगरोकिरहीतिय ह्वै तब लंका॥ हनुमंतबली तेहियापरमारी। तजिदेहभईतबहींबरनारी॥ यातेलंका पुरी मृतक सिद्धि पीठि सोदेखितापैबैठि मशानसोंरात्री जागे तहांमुद्रिकारूप बलिदान दिये प्रेम मय बचन मद की धारदिये रामचंद्र जीके गुणानुवाद वर्णन किये सोई मंत्र जापसों पूर्ण भयो तहां रात्रि जागत समय रावण कृत अनेक भय देखानो ताको कछु न गने इत्यादि महा साहस देखि देवीसी श्री जानकी जी प्रसन्न ह्वै बर-दान दियो यथा॥ भक्तिप्रतापतेजबलसानी। आशिषदी न्हरामप्रियजानी॥ अजरअमरगुणनिधिसुतहोहू। क-रहुसदारघुनायकछोहू॥ यहि बरदान के बलते निशा-चरन को निदरि अशोक बाटिकाउजारे धरि कहे सेना सहित अक्षकुमार को मारि लंका गढ़ को जारि

इत्यादि साहस करिकै भानुकुल के प्रकाशक भानु जो श्रीरघुनाथजी हैं तिनको प्रतापरूप भानु को वर्त्तमान भानु सो उदय करि रावण की भयरूप राचीको नाश करे जामें सब लोकनायक इन्द्र वरुणादि कोकनद कहे कमल सम संपुटित रहे तिनके मन प्रफुल्लित भये कोक कहें चक्र वाक सम राजश्री को बियोग रहा तिनको संयोगभयो इत्यादि बचन सब कपि कहत कि हे जामवंत सब लोकन को बिशोक करत हनुमान्जी आयो आयो हर्षते द्वैबार कहे २८ ॥

गगननिहारिकिलकारीभारीसुनिहनुमानपहिचानिभयेसानँदसचेतहैं । बूड़तजहाजबच्योपथिकसमाजमनों आजुजायेजानिसबअंकमालदेतहैं । जयजयजानकीश जयजयलषणकपीशकहिकूदेकपिकौतुकीनटतरेतरेतहैं । अंगदमयंदनलनीलबलशीलमहा बालधीफिरावैमुखनानागतिलेतहैं २९ ॥

भारी किलकारीसुनि आकाश मार्ग निहारिहनुमान् जीको चीन्हि प्रसन्न मन देखि सब कपि जो दुखकरि मूच्छित रहैं ते आनंदसहित कैसे सचेतभये मानों जहाज बूड़त में कोई दूसरा जहाज लैकै पहुंचिगयो सब पंथिकन की समाज बूड़तमें बचिगई तथासो मानों सब कपि आजु ते नयो जन्म पाये यह जानि अंकमाल कहे परस्पर एक एकन को मिलत हैं अरु कहत कि जानकीशकी जयहोइ जय होइ लक्ष्मण सुग्रीव की जयहोइ ऐसे शब्द उच्चस्वर ते उच्चारण करिकै कौतुकी जे कपि हैं ते कूदत अरु समुद्र तट रेतमें ठौर ठौर अनेक भांति की नृत्य करत हैं तिनको देखि अंगद मयंद नल नीलादि जे महा बलवान कपिहैं ते बालधी कहे पूछ ताको फिरावत अरु मुखन ते अनेक भांति तालन की गति लेत इत्यादि मन आनंद के मुद्रा हैं ॥२९॥

आयोहनुमानप्राणहेतु अंकमालदेतलेतपगधूरिएकचूं बतलंगूरहैं । एकबूझैबारबारसोयसमाचारकहेपवनकुमारभोबिगतश्रमशूलहैं । एकभूखेजानिआगेआनिकंदमूल फलएकपूजैबाहुबलमूलतोरिफूलहैं । एककहैतुलसीसकलसिद्धिताकेजाकेकृपापाथनाथसीतानाथसानुकूलहैं ३०

सब कपिन के प्राण उबारन हेतु श्रीहनुमानजी खबरि लैकै आये ता आनंद ते सब कपि अंकमाल कहे अंकोरा भरिकै मिलत हैं पुनः कोऊ सुकृतकारक महात्मा मानि पायनकी धूरिलै शीश पै धरत कोऊ लांगूलकोचूंबत भाव याहीते लंका भस्म करे एक जानकीजीका समाचार बारम्बार बूझत है सो सब हनुमानजी कहे ताको सुनि कै जो भूखे प्यासे मागे चलिबे को जो श्रम रहै औ न खबरि पावबे की जो शूल रहै सो सब बिगत भई हनुमानजीको भूखे जानि एक कंदमूल फल सुंदर लैकै भोजन हेतु आगे धरत एक दल फूल तूरि आनि जल लैकै बलमूल जो हनुमानजी की बाहु हैं तिनको पूजत भाव इनते खलन को जीते एक कहत कि हनुमानजी को सब सुगम है काहे ते जापर कृपा के समुद्र सीतानाथ सानुकूल हैं ताको अणिमादि यावत सिद्धीहैं ते सब सुगम प्राप्त होती हैं ३० ॥

सीयकोसनेहशीलकथातथालंककीकहत चलेचायसों सिरानीपंथक्षनमें कह्योयुवराजबोलिबानरसमाजआजु खाहुफलसुनिपेलिपैठेमधुबनमें । मारेबागवानतेपुकारत देवानगेउजारेबागअंगदादिखायेघायतनमें । कहैंकपि राजकरिकाजआयेकीश तुलसीशकीशपथमहामोदमेरे मनमें ३१ ॥

यथा अनुकूल ताकी दृष्टि प्रिया होत याते श्रीजानकी जीको शील सनेहमयी स्वभाव की कथा तथा प्रतिकूलता

की हानि प्रिया याते लंका भस्महोइबो निशाचरनको बध इत्यादि कथा हनुमान जी कहत अपर कपि सुनत चाय कहे आनंद सों चलेजात में न जाने छिन में मार्ग सिराइ गई किष्किंधा में प्राप्त भये तब अंगद ने बानरन को समाज बुलाय कह्यो कि ये फलखाबे लायक समय आजुही है याते आजु या बनके सुंदर फल मनभाये खाउ यह सुनतेही सब मधुबन में पेलि कै पैठे भाव द्वारकी राह न देख सब सोंवा फांदि गये जब बागवान रोंकेउ तिनको कपि मारन लगेते सब बागवान पुकार करत देवान कहे दरबार को गये कहेउ कि अंगदादि बानर फल खायकै बाग उजारि दिये हम रोंकेउ सो तन में घाउ खाये भाव हमको मारेउ यह सुनतेही सुग्रीव कहेउ कि बानर काज करि आये खबरि लै आये श्रीरघुनाथजी की शपथ यह बात सांची है काहे ते मेरे मनमें महा मोद है ३१ ॥

नगरकुबेरकोसुमेरुकीबरावरीबिरंचिबुद्धिकोबिलास लंकनिर्माणभो । ईशहिचढ़ायशीशबीसबाहुबीरतहांराव-णसोराजारजतेजकोनिधानभो । तुलसीत्रिलोककीसमृ-द्धिसौजसंपदासकेलिचाकिराखीराशिजांगर जहानभो । तीसरेउपासबनबाससिंधुपास सोसमाजमहाराजजीको एकदिनदानभो ३२ ॥

धनवान कुबेरको नगर पुनःसुमेरुकीबराबरि कंचनमयो अति उन्नत विस्तृत अरु सबकला कुशल ब्रह्माकी बुद्धि का बिलास कहे चमत्कारी के आश्रित विश्वकर्मा ने लंक को निर्माणकरो तहांईश जो महादेवजी तिनको शीश चढ़ाइ बर लै अजीत बीसहैं जाके भुजा ऐसो बीर रन पराक्रम तेज प्रतापादि को निधानकहे समुद्र रावण ऐसो दिग्विजयी जो लंका को राजा भयो जाने आपने भुजबल इन्द्र वरुण कुबेरादि को जीति तीनहूं लोक की सब समृद्धि कहे धन

संचय अर्थात् मणि मुक्ता सुवर्ण रुपयादि को खजाना अरु सम्पदा कहे सब प्रकार का ऐश्वर्य यथा धन गज रथ तुरंग. महिषी धेनु भूमि बाटिकामंदिरादि आरोग्यतन स्त्री पुत्र पौत्र भोजन वस्त्रादि सौज कहे यावत सामग्री सो सब सकेलि कहे बटोरि इच्छा पूर्ण सम्पदा अन्न की राशि इव चाकि राखी कुल फांदि पै चिन्हांकित करि राखी यथा किसान आफर में राशि के किनारे गोबर की रेखा करत सो चाकवत् है तहां त्रिलोक सम्पदा राशि रावण ने लई राशि बूसा काढ़ि लेने पर जो डड़का बल्कल रहत ताको जँगरा कहत सोई जँगर सम सब जहान भयो इत्यादि रावणकृत ऐश्वर्य्य सो समाज महाराज रघुनाथजी को एक दिन क्षणमाचको दानभयोअर्थात् बिभीषणकोदियेकौनी दशामेंसोकहत कि तीसरेउपास अर्थात् पौषकृष्ण सप्तमी को हनुमानजी सों खबरि पाये प्रभात अष्टमीको मध्याह्न काल उत्तराके प्रथमचरण सिंहके चन्द्रमामेंग्यारहें बलो युद्ध हेतु वामें बली जानि लंका जावे को प्रस्थान कीन प्रभात चले पौषकृष्ण अमावस को सिंधुतट प्राप्त भये तहां फलादि भोजन न मिले चतुर्थी को बिभीषण आये याते तीसरे उपास बनवास कहे प्राकृत राजश्रीत्यागे सिंधु पास अर्थात् पार जावे की संदेह ऐसी दशा में बिभीषण को लंकनायकता दिये यामें धृति उदारता दान बीरतादि गुणवर्णन करे अरु श्री रघुनाथजी को अति प्रताप सूचित करिबे हेतु रावणको ऐश्वर्य्य वर्णन करे ३२॥ सवैया॥ तट वारिधिवारिधिरामधरातनुजार्थधराजिनयस्थितितो। स पुटांजलिदंडजदावनिपस्वरिपुत्रानुजअंकक्षतोविहितो-॥ पुनरंबुपत्योऽभिषेक्यलिकेसक्षताधिपसंगरितारहितोजन संश्रितमोचनरामदयालयमामकमानससन्निहितो ॥ १ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुम सियवल्लभशरणागत बैजनाथविरचितेकवित्तरत्नदीपिका टीकायांसुंदरकाण्डस्समाप्तः॥

श्रीगणेशायनमः ॥

## लंकाकाण्ड ॥

कार्यक्रियाकर्मनिदानरूपंनिरामयंभैषजमिष्टनामं ॥
सुधर्मपथ्यार्थगुणानुवादंनमामिरामंभवरोगवैद्यं १ ॥

बड़ेबिकरालभालुबानरबिशालबड़े तुलसीबड़ेपहार लैपयोधितोपिहैं । प्रबलप्रचंडबरिबंडबाहुदंडखंडिमंडि मेदिनीकोमंडलीकलीकलोपिहैं । लंकदाहुदेखेनउछाहु रह्यो काहुनकोकहतसबसचिवपुकारिपांवरोपिहैं । बाचिहैनपाछेत्रिपुरारिहूमुरारिहूकेकोहै रनरारिकोजोकोशलेशकोपिहैं १ ॥

लंकदाहभये पीछेसबसचिव सशंकित बार्ता करतहैं कि बड़े बिकराल भयंकर भालु अरु बड़े बिशाल उच्च देहन के बानर महाबली ते बड़े पहाड़न को लैकै समुद्र को तोपि राह करि उतरि आइहैं प्रबल प्रचण्ड कहे प्रतापवान बरिबण्ड कहे तेजवान रावण ताके भुजदंड खंडन करि सुधर्म करिकै पृथ्वी को मंडि कहे भूषित करिकै भूमण्डल को जीतनहार मण्डलीक रावण की चलाई जो लीक यज्ञादि धर्म को रोकि अधर्म को प्रचार ताको लोपि हैं मिटाय देहैं इत्यादि आगम काहेते समुझि परतकि जबते लंका भस्म होते देखेउ तबते युद्ध करिबेकी उत्साह काहू निशाचर बीर में न रही याते सब सचिव पांवरोपि कहे प्रण करि पुकारि कै कहतहैं कि औरन की क्या गति है जो त्रिपुरारि शिव मुरारि विष्णु इनके पाछे परि जो नि-

शाचर उबराचाहैं तौ न बचिहैं भाव इनके नाम में प्रसिद्ध दैत्यन की शचुता अर्थ होत यातेइनहू रक्षक नहीं हैं अथवा जा समय कोशलेश श्रीरघुनाथ जी कोप करि धनुष बाण गहैंगे तिन सों युद्धकरिबे को कोवीर समर्थहैजो निशाचरन को उबारै भाव कोऊनहींहै यथाजयंत ॥ब्रह्मधाम शिवपुरसबलोका। फिराश्रमितव्याकुलमनशोका॥ काहू बैठनकहानवोही। राखिकोसकैरामकरद्रोही॥ प्रमाण भगद्गुणदर्पणे॥ब्रह्मरुद्रेंद्रसंघैश्चत्रैलोक्यप्रभुभिस्त्रिभिः। राम बध्यानशक्यःस्यात्रक्षितुंसुरसत्तमैः १॥

त्रिजटाकहतबारबार तुलसीश्वरीसोंराघववानएकही समुद्रसातोसोखिहैं। सकुलसँहारियातुधानधारिजंबुकादियोगिनीजमातिकालिकाकलापतोखिहैं। राजदैनिवाजिबोबजाइकैविभीषणैबजैगो व्योमबाजनेबिबुधप्रेमपोखिहैं। कौनदशकंधकौनमेघनादबापुरोकोकुम्भकर्णकीट जबरामरनरोषिहैं २॥

तुलसी की ईश्वरी जो श्रीजानकीजी हैं तिनसों बार बार त्रिजटा कहत कि हे महारानीजी धीरज धरो एक समुद्रकी कौन बात श्रीरघुनाथजी को एकही बाण सातौ समुद्र सोखि लेइगो या भांति समुद्र उतरि पुनः यातुधान जो राक्षस तिनकी धारि कहे सेना सहित कुल रावण को संहारि कहे नाश करैंगे तिनको रुधिर पी मांस खाइ जंबुकादि कहे शृगाल गीध चीलह कागअरु योगिनिन की जमाति कालिका समूह ते तोषि हैं कहे अघाइ हैं भाव मतक दग्ध करनहार कोऊ न रहैगो या भांति अकंटक करि डंकाबजाइ बिभीषण को लंका की राज्य दै निवाजि हैं तब निर्भय ह्वै बिबुध जो देवता ते प्रेम करि पोषि हैं कहे पुष्ट ह्वै मन राघवमें लगाइहैं ताते आनंद ह्वै

आकाश में दुंदुभी आदि बाजा बजावेंगे इत्यादि निश्चय जानियेकाहेतजासमय श्रीरघुनाथजी रोषकरि धनुषबाण धारण करिहैं तिनसों युद्ध करिबे को कोऊ नहीं समर्थ है तहां रावण अरु बापुरो मेघनाद कीट सम कुंभकर्ण ये कौन हैं २ ॥

बिनयसनेहसोंकहतिसियत्रिजटासोंपायेकछू समाचा रआरजसुवनके । पायेजूबँधायोसेतुउतरेभानुकूलकेतु आयेदेखिदेखिदूतदारुणदुवनके । बदनमलीनबलहीन दीनदेखिमानोंमिटेघटेतमीचरतिमिरभुवनके । लोकपति शोककोकमूंदेकपिकोकनद दंडहवैरहैं रघुआदितउव-नके ॥ ३ ॥

कवि की उक्ति बिनय कहे नम्रता सनेह सहित बचन श्रीजानकीजी त्रिजटा सों कहती हैं कि आर्य कहे श्रेष्ठ अर्थात् अवधेश सुवन के कछू समाचार पाये हैं त्रिजटा बोली कि पायों है सेतु बंधाय भानुकुलकेतु श्रीरघुनाथजी समुद्र उतरि आये दारुण कहे कठिन दुवन कहे दुर्जन जो रावण ताके दूत देखि देखि आये तिनसों हाल सुनि निशाचरन के बदन मलीन भये अर्थात् बीर रसकी स्था-यी उत्साह जाती रही औ बलहीन भये अर्थात् धीरज गर्वादि बिभाव रहित भये दीन कहे करुणा रस बश भये ताकी उत्प्रेक्षा करत मानों निशाचर रूप अंधकार भुवन के घटे ताते मिटन चहत हैं लोकपति इन्द्रादि राज श्री बियोग ते कोक कहे चक्रबाक सम सशोकहैं औ कपि को-कनद जो कमल ता सम संपुटित हैं अब रघुनाथ रूप सूर्य उदय होबे के ह्वै दंड बाकी रहेहैं भाव माघकृष्ण द्वितीया को सेना समुद्र उतरी पंचमी की यह बार्ता है औ माघ शुक्ल द्वितीया को युद्ध प्रारम्भभयो सो बारह दिनको अंतर

परो सो देवतन के दिन सो ह्वै दंड होत यथा उत्तरायण दिन दक्षिणायन राती सब साठि दंड भये सो मनुष्य के बारहमास ते बारहपंच साठि एक मास पांचदंडको भयो छःदिनको एक दंड भयोयाते बारहदिनकेहैदंड कहे अब रघुनाथरूपी सूर्य उदय भये पर लोकपाल चक्रवाक से आनंदित होइंगे कपि कमल से प्रफुल्लित होइंगे ३॥

झूलना ॥ सुभुजमारीचखरत्रिशिरदूषणबालिदलत ज्यहिदूसरोशरनसांध्यो। आनिपरबामबिधिबामतेहिराम सोसकतसंग्रामदशकंधकांध्यो। समुझितुलसीशकपिकर्म घरघरघैरुबिकलसुनिसकलपाथोधिबांध्यो । बसतगढ़ बंकलंकेशनायकअछतलंकनहिंखातकोउभातरांध्यो ४॥

पुरबासी परस्पर बार्त्ता करत कि सुबाहु मारीच खर त्रिशिर दूषण बालि आदि को बध करन में जेहि श्रीरघुनाथजी ने दूसरो बाण नहीं साधे एकही बाण ते प्राण नाश करे तिन श्रीरघुनाथजी सों अब बिधि बामता बशते पर नारी श्री जानकीजी को हरि आनि मृत्युबश रावण संग्राम कांध्यो कहे अंगीकार कर्यो सो करि सकत है अर्थात् नहीं करि सकत है यह काकु व्यंग है तुलसीशजो श्रीरघुनाथजी तिन को प्रताप अरु कपि हनुमानजी तिन को लंका दाहादि कर्म समुझि लंका में घर घर वैरु कहे यहो चर्चा मचिरही है कि अब कुशल नहीं तापर पाथोधि जो समुद्र तामें सेतु बांधिबो सुनि पुरबासी सकल अति बिकल भये गोसाईंजी कहत कि यद्यपि बिकट गढ़ लंकामें बसत लंकेश रावण नायककहे राजा लोकबिजयी ताके अछत कहे देखत पुरवासी ऐसे भयातुर संभ्रम भये जो भात रांधिबे को हास नहीं काचो है कि पाको जैसे ही पावते तैसेही खाते हैं यामें प्रभु को अति प्रताप वर्णन करे ४॥

सवैया ॥ विश्वजयीभृगुनायकसेबिनहाथभयेहनिहाथ हजारी । बातुलमातुलकीनसुनीशिखकातुलसीकपिलंक नजारी । अजहूंतोभलोरघुनाथमिलेफिरिबूझिहैकोगजकौ नगजारी । कीर्तिबड़ोकरतूतिबड़ोजनबातबड़ोसोबड़ोई बजारी ५ ॥

पुरवासी कहत कि हाथ हजारी जो सहस्र बाहु ताको हनि कहे मारि बिश्वजयी कहे संसार के क्षत्रिन के जीतनहार परशुराम ऐसे बीर शिरोमणि तेऊ श्रीरघुनाथ जीके सम्मुख बिनहाथ भयेभाव हथियारधरि बिनतीकरे पुनः बातुल कहे बाई कोभरो बकवादी रावण को उसके मातुल कहे मामा मारीच ने सिखायो कि श्रीरघुनाथजी सों बैर न करो सो रावण नहीं सुन्यो आखिर को कपि हनुमान् लंका नहीं जारी अर्थात् जारी यह काकुव्यंग्यहै भाव अपराध एक रावण को घर सबकेफूंकेगये ताते अजहूं रघुनाथजी सों मिलिबो भलाहै जो आपन बचाउ चाहै सो मिलै नाहीं फिरि गज कहे हाथी अर्थात् मृगवर्ग गजारि कहे मृगराज अर्थात् को प्रजा है कौन राजा है यह कोऊ न बूझी सब मारे जाहिंगे अरु रावण को का कहिये जो कीर्त्ति करिकै बड़ो है अर्थात् तप स्तुति करि ब्रह्माको प्रसन्न करेउ शीशदान दै शिव को प्रसन्न करेउ अरु करतूति करि बड़ो अर्थात् भुजबल ते सब दिग्पालन को जीति लियो अरु जनन बिषे बात करि बड़ो अर्थात् जाके सम्मुख दूसरा बात नहीं करि सकत क्योंकि जाने वेदन पै तिलक करेउ तासों कोऊ काहकहै सोतो रावण बड़ोई बजारी कहे सब भाव को जानन हारोहै अथवा बजारीकहे जालसाज झूठी सांची सांची झूठी करनहार अथवा बजारी कहे दलाल जो कोऊ लाख कहै अपनो मतलब नहीं छाड़त ५ ॥

जबपाहनभेबनबाहनसेउतरेबनराजयरामरढ़े।तुलसीलियशैलशिलासबसोहतसागरज्योंबलबारिबढ़े।करिकोपकरैंरघुबीरकोआयसुकौतुकहीगढ़कूदिचढ़े। चतुरंग चमूपलमेंदलिकैरणरावणरांड़केहाड़गढ़े ६॥

कवि की उक्ति जब पाहन कहे पहाड़ बन बाहन कहे नाव सम भये अर्थात् सेतुबंध्यो तापर बानर उतरि श्रीरघुनाथजीकी जयजयकार करिरहेहैं गोसाईंजी कहत कि कोऊ पर्वत कोऊ शिला लिहे यथा जल सों समुद्र बाढ़त तथा बलकरि बाढ़त शोभित सब बारम्बार बानर कहत कि जबकोप करि श्रीरघुनाथजीआज्ञा करिहैं तब लीला माचही कूदि लंकागढ़पर चढ़ैंगे रथ गज वाजि पैदलादि जो चतुरंगिनी चमू कहे सेना ताको पल में दलि कै रांड़ कहे अकेला करिकै रावणहूंकेहाड़गढ़ैंगे यहआमर्ष है ६॥

घनाक्षरी॥ विपुलबिशालबिकरालकपिभालुमानैं कालबहुबेषधरेधायेकियेकरषा। लियेशिलाशैलसालतालऔतमालतोरितोपैतोयनिधिसुरकोसमाजहरषा। डगे दिगकुंजरकमठकोलकलमले डोलैधराधरधारिधराधर धरषा। तुलसीतमकिचलैराघवकीशपथकरैकोकरैअट ककपिकटकअमरषा ७॥

कवि की उक्ति विपुल कहे बहुत बिशाल कही बड़े बिकराल कही भयंकर कपि भालु कर्षा कहे क्रोध किये मानों बहुत बेष धरे काल धावत भये कोऊ शिला कोऊ पर्वत कोऊ साल कहे सांखूको वृक्ष कोऊ तार तमालादि तोरि लैकै तोयनिधि जो समुद्र ताको तोपे अर्थात् सेतु बांधिलिये सो देखि देवतन को समाज हर्षित भयो जब

कपिसेना चली तासमय दिगकुंजर डगमगाय उठे कच्छप बाराह कलमले कहे अंग चलित भये धराधर जो पर्वत धारि कहे समूह सुमेरादिते भूमि सहित डोलि उठे पुनः धराधर जो शेष ते धर्षा कहे दबाय गये गोसाईं जी कहत कि श्रीरघुनाथजी की शपथ करि तमकि कहे सरोष ह्वै चले ऐसी कपि कटक अमर्षा कहे बल बीरता के भरेतिन को कौन ऐसा बीर है जो अटकाइ सकै ७ ॥

आयेशुकसारणबोलायेतेकहनलागे पुलकशरीरसेना करतफहमही । महाबलीबानरबिशालभालुकालसेकरालहैरहेकहांसमाहिंगेकहामही । हँस्योदशकंधरघुनाथ कोप्रतापसुनि तुलसीदुरावैमुखसूखतसहमही । रामके बिरोधेबुरोबिधिहरिहरहू कोसबकोभलोहैराजारामके रहमही ८ ॥

बानर सेनाको शुक सारन आये तिनको बोलाय रावण पूछेउ तब कहनलगे तासमय फहमही कहे कपि सेना सहित श्रीरघुनाथ जीकी सुरति करि प्रेम तेपुलकांगह्वै कहत कि महाबली बानर बिशाल कहे बड़े भारी अरु कच्छ कालसम करालहैं ते कहां रहेहैं अरु कौनी भूमिमें अंबाहिंगे ऐसो प्रताप श्रीरघुनाथजीको सुनिसहमि कहे डेराइकै मुख सूखिगयो ताके दुरावबे हेतु रावण हंसत भयो कविकी उक्ति कि श्रीरघुनाथ जी के बिरोधे कही आज्ञाप्रतिकूल करिबेते बुरोहै ताकोभलाकरिबेको और कीको कहै बिधि हरि हरहू कोहै जो भलाई करि सकै यथा॥ रामवध्योनशक्यः स्यात् रक्षितुंसुर सत्तमैः ब्रह्मरुद्रेन्द्र संज्ञैश्चत्रैलोक्यप्रभुभिस्त्रिभिः॥ अथवा बिधि हरि हरहूको ह्वैकै श्रीरघुनाथजी को बिरोध करै ताको बुरोहैतहां रावण ब्रह्मा को प्रपौत्र बरदानी है सो बिरोध करि बंध

समेत नाश होत अरु बिष्णु को अवतार परशुरामजी बचन बिरोध कियो सो पराजयको प्राप्त भये अरु सतीजी शिवजी की बांमांगी परीक्षा माच बिरोध करे तिनको हाल रामायण में प्रसिद्ध है ताते राजा रामके रहम किये सबको भला है ८ ॥

आयोआयोआयोसोईबानर बहोरिभयोशोरचहुंओर लंकाआयेयुवराजके । एककाढ़ैसौजएकधौजकरैकहाह्वै हैपोचभईमहाशोचसुभटसमाजके । गाज्योकपिराजरघु-राजकीशपथकरिमूंदैकानयातुधानमानोंगाजेगाजके । स-हमिसुखातबातजातकीसुरतिकरिलवाज्योंलुकात तुलसी झपेटेबाजके ९ ॥

कवि की उक्ति श्रीरघुनाथ जी की आज्ञा ते युवराज अंगदजी आये देखिसभीत ह्वै राक्षस कहत कि जानै लंका दाह कियो सोई कपि फेरि आयो आयो इत्यादि शब्द को बड़ोशोर लंकामें होत भयो कोऊ काढ़त सौज कहे सामग्री धरते बाहर धरत एक धाये धाये फिरत कि अब काह होइगो अजितवीर आयो तौ पोचकहे बुराई भई यह समुझि सुभटन की समाज में महाशोच भयो ताही समय कपिराज अंगदजी श्रीरामचन्द्र की शपथ कहे दु-हाई दै गर्जत भयो मानों वज्रपात ऐसो घोर शब्द सुनि यातुधान राक्षसकान मूंदिलिये गोसाईंजी कहतकि बात जात जो हनुमानजी तिनकी सुरति करि सहमि कहे डे-राय कै तन सूखत जात राक्षस कैसे लुकाने जैसे बाज के झपेटे लवा बटैर पक्षी लुकात इहां भयानक रस है ९ ॥

तुलसीसबलरघुबीरजीकोबालिसुतवाहिनगनतबात कहतकरेरीसी । बखशीशईशजीकीखीसहोतदेखियत

रिसकाहेलागतकहतहौंमैंतेरीसी । चढ़िगढ़मढ़दृढ़कोट केकंगूरेकोपिनेकधकादेहैंढैहैंढेलनकीढेरीसी । सुनुदश-माथनाथसाथकेहमारेकपि हाथलंकालाइहैंतोरहैंगीहथे-रीसी १० ॥

गोसाईंजी कहत कि श्री रघुवीर जीको बल सहित बालिसुत अर्थात् एक तौ रावण को कांखचापनहार बालि ताको पुत्र दूसरे रघुनाथजी के बल सहित ताते अंगद वाहि रावण को नहीं गनत ताते जो बात कहत सो करेरी सी कहत कि ईश जो शिवजी तिनकी बख-शीश दीन्ही तुम्हारी सब संपदा है ताको खीश कहे नाश होत देखत हौ सो मेरे मनते होत कि तेरी संपदा बनीरहै ताते तेरी ऐसीबात कहतहौं तामें तेरेरिस काहे को लागतहै हे रावण श्रीरघुनाथ जीके साथके जे हमारे कपिहैं ते तुम्हारे गढ़पर चढ़िकै मढ़ जो मंदिर दृढ़ कहे पोढ़े जे कोटके कंगूराहैं तिनमें कोपकरि नेककहे थोरहू धक्का देहिंगे तौ ढेलन कीसी ढेरी ढहि परैंगी जो लंकामें हाथ लगाइहैं तौ हथेरी कहे हाथेकी गादीसी सचिक्कन चिन्ह रहित लंका होइगी ताते अबहीं कुशल है १० ॥

दूषणबिराधखरत्रिशिराकबंधबधेतालऊबिशालबेधे कौतुकहैकालिको।एकहीबिशिषबशभयेबोरबांकुरेसोतोहू हैबिदितबलमहाबलीबालिको । तुलसीकहतहितमानत ननेकुशंकमेरोकहाजैहैफलपैहैतूकुचालिको । बीरकरि केशरीकुठारपानिमानिहारि तेरीकहाचली बूड़ेतोसेगने घालिको ११ ॥

खर दूषण त्रिशिरा विराध कबंधादि राक्षसन को सहजही जाने बधे अरु सात दृढ़ तालके विशाल कहे बड़े

भारी तिनको एक बाणते बेधे इत्यादि कौतुक कालिह कहे थोरे दिनको है अरु महाबली बालि जाको बल तुम्हूं को विदित है भाव छः महीना कांखमें रहेहौ ऐसो बांकुरो वीर सो एक बाण के बश प्राणनाश भये अंगदजी कहत हे रावण हम तेरो हित कहते हैं औ तू नेकहू शंका नहीं मानत तौ हमरो क्या बिगरैगो तू आपनी कुचालको फल पावैगो काहेते तेरी क्या चाली है तुम ऐसे अनेकन सहस्राबाहु आदिकन को घालिको नाश करता ऐसे परशुराम जे वीररूपी हाथिन के सिंह तेऊ श्री रघुनाथजी के प्रताप प्रवाह में डूबे ताते हारि मानि शरण भये तहांतू क्याहै ११॥

सवैया ॥ तोसोंकहौंदशकंधररेरघुनाथबिरोधनकीजियबौरे। बालिबलीखरदूषणऔरअनेकगिरेजेजेभीतिमें दौरे । ऐसियहालभईतोहिकोनतौलैमिलुसीयचहैसुख जौरे । रामकेरोषनराखिसकैतुलसीविधिश्रीपतिशंकर सौरे १२ ॥

अंगद बोले कि रे दशकंध बावरे श्री रघुनाथजी सों विरोधन कीजिये बावरायाते कहे कि बावरान अपर की सुनैन आपुको कहिबेकी गतिहै संज्ञाते कहत समुझत सोसंज्ञा देखावत कि बालि ऐसोबली औ खर दूषणादि और सुबाहु मारीच कबंध विराधादि जेजे शरणागत भूमि त्यागि अभिमान भीतिपर मन दौरायेते गिरे भाव मानभंगहू आखिर शरणागत पद भूमिपै आये तैसेहाल तेरी भई तौ क्यों मानभंग को दुख सहैगो जो सहज सुख चहतौ श्रीजानकी जीको लैकौश्रीरघुनाथ जीको मिलि शरणागत हो जो कहौ कि मैसापराध हौं ताको कहत कि रामके रोष न शरणागतपैं श्रीरघुनाथजी के रोषनहीं

है ताते शरणमें राखिसकैंगे कौन विधिते जाविधि तुलसी को श्रीपति राखे भाव दैत्य की खीहै ताको अंगीकार कै महापावन कीन पुनः जाविधि शंकरशव कहे मृतक कपालादि अंगीकार कै पावन करे तैसे तोको श्री रघुनाथजी राखिहैं अथवा जो शरणागत नजाइगो तौ श्री रघुनाथ जीके रोषकिहे परब्रह्मा विष्णु शंकर॥सौकहेसैकरन ताको नहीं राखिसकैंगे यथा हनुमन्नाटकेब्रह्मास्वयंभूश्चतुराननो वा इंद्रोमहेन्द्रोसुरनायकोवा। रुद्रस्त्रिनेत्रस्त्रिपुरांतकोवा चातुंनशक्ता युधिरामवध्यम् १२ ॥

तूरजनीचरनाथमहारघुनाथकेसेवककोजनहौं। बलवानहैश्वानगलीअपनीतोहिंलाजनगालबजावतसोहौं । बीसभुजादशशीशहरौंनडरौंप्रभुआयसुभंगतेजौहौं। खेत मेंकेहरिज्योंगजराजदलौंदलबालिकोबालकतौहौं १३ ॥

अंगदजी कहत कि एक तौ निशाचर जातिही सबल तिनको नाथकहे राजा ताहूमें महाकहे राजनको राजा है अरु मैं श्रीरघुनाथ के सेवक सुग्रीव को जनहौं यथा श्वान जो कुत्ता अपनी गलीमें बलवान होत तैसैतू आपने घरमें बैठे सौहौ कहे हमारे सामने गाल बजावत तोको लाजनहीं लागत अरुमैं तेरे घरमेंहौं दूसरेप्रभुकी आज्ञा नहींहै ताते डरत हौं अरु प्रभु आयसु भंगत जोहौंना डरौं तौ तेरे बीसभुजा दशौ शीशन को हरौं कहे तोरि डारौं रण खेतमें यथा सिंह गजराजन को दलत तैसे तुम्हारे दलको मैं दलौं तौ बालिको बालकहौं १३ ॥

कोशलराजकेकाजहौंआजुत्रिकूटउपारिलैबारिधिबोरौं। महाभुजदंडद्वैअंडकटाहचपेटकेचोटचटाकदैफोरौं । आयसुभंगतेजौनडरौंसबमींजिसभासदश्रोणितघोरौं । बालिकोबालकजोतुलसीदशहूमुखकेरणमेंरदतोरौं१४॥

अंगद कहत कि कोशलराज जो श्रीरघुनाथ जी तिनके कार्य हेत आजु मैं त्रिकूट जो लंका ताको उचारिकै समुद्र में बोरिडारौं तामें परिश्रम नहीं काहे ते महाबलके भरे मेरे जो दै भुजदण्ड ताकी चपेटाकी चोट सो अण्डकटाह जो ब्रह्माण्डकोश ताको चटाक दै फोरि डारौं तो लंका क्याहै जो प्रभु आयसुभंगको न डरौं तो हे रावण तुम्हारी सभासद कहे सम्पूर्णको मोंजिकै शोणित समुद्रमें बोरौं अरु समरभूमि में रावणके दशौ मुखके दांत तारि डारौं तौ बालिको बालक कहावौं यामें उत्कर्ष है १४॥

अतिकोपसोंरोंप्योहैपांवसभासबलंकसशंकितशोरमचा। तमकेघननादसेबीरप्रचारिकैहारिनिशाचरसैनपचा। नटरैपगमेरुहुतेगरुभोसोमनोंमहिसंगबिरंचिरचा । तुलसीसबशूरसराहतहैंजगमेंबलशालिहैबालिबचा १५॥

जा समय अंगद जी अत्यन्त कोप करिकै सभा में पाँव रोपत भयो ता समय सब लंका भरेमें राक्षस शंका सहित भये ताते सोर कहे हल्ला मचि रहाहै पाँवको टारिबे हेत मेघनाद ऐसे बीर तमके सरोष ह्वै प्रचारिकहे ललकारिकै उठावतभे बलकरिकै पचिमरे न उठा तब सब हारिगये पाँव नहीं टरत सुमेरुगिरिते गरूभयो मानों भूमिकेसाथै ब्रह्माजीने रचोहै गोसांईजीकहत कि सबशूर सराहत कि बलसालि कहे कठिन बलवान एक बालिको पुत्र है १५॥

घनाक्षरी॥ रोप्योपांवपैजकैबिचारिरघुबीरबलललागे भटसिमिटिननेकुटसकतुहै । तज्योधीरधरणिधरणिधर धसकतधराधरधीरभारसहिनसकतुहै । महाबलीबालि कोदबतदलकतुभूमितुलसी उछलिसिंधुमेरुमसकतुहै । कमठकठिनपीठिघट्टापरोमंदरकोआयो सोईकामपैकरेजा कसकतुहै १६॥

भक्तनके सदा प्रतिज्ञापाल हैं ऐसा बल श्रीरघुनाथ जी को विचारि प्रण करि अंगदजी पाँव रोपत भये ताके उठाइबेहेतु सब योधा बटुरे उठावन लगे पै नेकु नहीं टसकत अर्थात् तनकु नहीं भुइँ छांड़त पाँवको महा भार नहीं सहाजात ताते धरणी धीर्य्य को छांड़ि दियो ताते धरणिधर जो पर्वत ते भूमि में धसकि गये धराधर जो शेष जी धीर्य्यमान तेऊ भार नहीं सहि सकत काहेते महा बली बालिको पुत्र जा समय पाँउ दाब्यो तासमय भूमि दलकि आई प्रथम धीर्य्य छांड़िबो कहे ताकी दशाकहत कि दलकि आई याते भूमिको नाम है बार कहे समुद्रसों जल उछलत अरु सुमेरुगिरि मसकत कहे फाटत जात कमठ जो कच्छप तिनकी पीठि पर बैठा मन्दराचल को परि गयो रहै सिंधु मथन समय सोई आजु काम आयो भाव पीठि फाटि नहीं गई परन्तु भारते करेजा कसकत कहे पिरात है १६ ॥

झूलना ॥ कनकगिरिशृंगचढ़िदेखिमर्कटकटकवदत मंदोदरीपरमभीता। सहसभुजमत्तगजराजरणकेशरीपरशुधरगर्बजेहिदेखिबीता। दासतुलसीसमरसबलकोशलधनीख्यालहीवालिवलशालिजीता। रेकंततृणदंतगहिशरणश्रीरामकहिअजहुंयहिभांतिलैसौंपुसीता १७ ॥

लङ्का विषे कनक को पर्बत है ताके शृंगपै चढ़िकै बानरन की समूह सेना देखि परम भयातुर ह्वै मन्दोदरी रावण सों कहत कि देखो सहसबाहु ऐसो बीर जोबीरतामदमें मतवारे हाथी सम यावत्बीर तिनमें राजा ता सहसबाहु गजराज पै रणमें सिंह सम ह्वै नाश करे ऐसे जो परशुराम तिनको गर्ब जो अहंकार जिनके देखतही बीला कहे नाश भयो ऐसे श्रीरघुनाथ जी समरमें बलवान

हैं जे बालि ऐसे कठिन बलीको ख्यालही एक बाण तै जीति लिये ऐसा जानिकै हे कन्त तृण जो घास ताको दांत तरे दाबि गजसम ह्वै ऐसे दीनबचन कहौ कि हे श्रीराम शरणपाल मैं आपकी शरणागतहौं मेरे अपराध क्षमाकरो या भांति तै आजह्व श्रीजानकीजीको लैकै श्रीरघुनाथजी को सौंपौ तो कल्याण है पैंतिस माचा भूलनाछंद है १७॥

रेनीचमारीचविचलाइहतिताडुकाभंजिशिवचापसुख सबहिदीन्ह्यौ । सहसदशचारिखलसहितखरदूषणहि पठैयमधामतैंतऊनचीन्ह्यौ । मैंजुकहुकंतसुनुमंतभगवंत सोंविमुखह्वैवालिफलकौनलीन्ह्यौ । बीसभुजशीशदश खीशगयेतबहिंजबईशकेईशसोंवैरकीन्ह्यौ १८॥

मन्दोदरी कहत कि रे कुमार्गी नीच सुनु जे श्रीरघुनाथ जी मारीच को बिचलाइ कहे बाणसों उड़ाय सिंधु पार डारेउ सुबाहु ताडुका को मारि मुनि मख राखेउ पुनः महादेवजीको धनुषतोरि सबलोकनको सुखदीन्हेउं चौदह हजार खल जो राक्षस तिनसहित खर दूषण को यमधाम कहे कालके मुखमें पठाये ऐसा हाल देखि तबहूं तैं श्रीरघुनाथजीको नहीं चीन्हेउ हे कन्त जो मैं कहौं सो मत सुन श्रीरघुनाथजीसों बिमुख न हो काहेते बालि बिमुख ह्वै कै कौनफल लीन्हेउ तुरत प्राण नाशभये तैसे तेरे बीसों भुजा दशौ शीश तबहीं खीस कहे नाशभयो जादिन ईशनके ईश जो रघुनाथजी तिनसों बैर कीन्हेउ यामें रामायण भरेको प्रताप रूढमरीति ते है १८॥

बालिदलिकालिहजल यानपाषानकियकंतभगवंततैं तबनचीन्हे । विपुलविकरालभटभालुकपिकालसेसंगतरु तुंगगिरिशृंगलीन्हे । आइगेकोशलाधीशतुलसीशजेहि

छत्रमिसमौलिदशदूरिकीन्हे। ईशवकशीशजनिखीशकरु ईशसुनुअजहुंकुलकुशलबैदेहिदीन्हे १९ ॥

जाने बालि ऐसो महाबली को कालिहूं मारे अरु नाव सम पाषाण करि सेतु बांधे ऐसे भगवन्त श्री रघुनाथ जी षट् भाग पूर्ण हैं ऐश्वर्य १ धर्म २ यश ३ श्री ४ वैराग्य५ मोक्ष ६ महारामायणे ॥ ऐश्वर्यं नचधर्मेणयशसाचश्रियैवच। वैराग्यमोक्षषटकोर्णः संजातोभगवान्हरिः १ पोषणंभरणाधारं शरण्यंसर्वव्यापकं। कारुण्यंषटभिःपूर्णं रामस्तु भगवान्स्वयं २ ॥ तिनको ह्वै कन्त तैं तबहूं नहीं चीन्हे भाव शरण नहीं भये अब बज्रत कराल वृक्ष भट अरु कालसम बानर ते तुंग कहे ऊंचे तरु सांखू तारादि के वृक्ष पहाड़न के शृंग लीन्हे ऐसी सेनासंगमेंलीन्हे श्रीरघुनाथजी आइ गये जे सुबेलही पर ते छचके मिस कहे बहाने ते तुम्हारे दशौशीश दूरि कीन्हेभाव छच मुकुट ताटंक बाण ते भूमि मेंगिराइ दिये हाल काहू ने नहीं जान्यो इत्यादि आपनो प्रतापजनाय तुमकोशिक्षा दईहै तातेईशजोमहा देव तिनकी दई बकशीश कुशल सहित सम्पदा ताको खीस कहे नाश जनि करु ईश कहे स्वामी सुनु अजहूं श्री जानकीजी को दीन्हे कुलको कुशल है नाहीं सब नाश करोंगे १९ ॥

जाकेसैनसमूहकपिकोगनैअर्बुदैमहाबलबीरहनुमान जानी। भूलिहैदशदिशाशीशपुनिडोलिहैकोपिरघुनाथ जबबाणतानी।बालिहूगर्बजियमाहिंऐसोकियोमारिदह-पटकियोयमकिधानी। कहतमंदोदरीसुनहिरावणमतो वेगिलैदेहिवैदेहिरानी २० ॥

जिन श्रीरघुनाथजी के संग सेना समूह है तिन कपिन को कौन गनिसकै तिनमें से एक हनुमान्जीको तुमने

जानोहै तिनकी समानवाले महाबली बीर अर्बुदन हैं जा समय श्रीरघुनाथ जो कोप करिकै धनुषचढ़ाइ बाणतानैंगे ता समय अभिमान न रहैगो व्याकुलता ते दशौ दिशि भूलिहै भाव दिशा भ्रम ह्वै जाइगो पुनः तुम्हारे शीश खण्डित ह्वै भूमि पै डोलिहैं तुम्हारही ऐसा गर्व बालिहू आपने जीमें कियो रहै भाव वर प्रसाद अपनाको अजीत माने रहै ताको यमकी घानीकहे कालमुखकोहूमें मान रूप तिलनको डारि मारि दहपट कहे मानको पेरि अज्ञान खरीसों अपनो सनेहरूप तेलकाढ़ि लियो मंदोदरी कहत कि हे रावण मेरोमतो सुनु श्रीजानकीजीको लैकै जल्दी श्रीरघुनाथजीको देहु यामें कल्याणहै २० ॥

गहनउज्जारिपुरजारिसुतमारितव कुशलगोकीशवर बैरिजाको। दूसरोदूतप्रणरोपिकोपेउसभाखर्वकियोसर्व कोगर्बथाको। दासतुलसीसभयवदतमयनंदिनीमंदमति कंतसुनुमंतम्हाको। तोलौंमिलुवेगिनहिंजौलौंरणरोस भयोदाशरथिवीरविरदैतबांको २१ ॥

जाको दूत कीश हनुमान्‌जी श्रेष्ठबैरीभाव प्रथम वाकी पूछ फूंके तापै तुम्हारो नगर जारेउयाते श्रेष्ठ बैरी ताने तुम्हारो बन उजारि सुत अक्षयकुमार को मारिनगर जारि तुम्हारे देखत कुशल सहित चलागयो पुनः दूसरो दूत अंगद सभामें कोप करि टारिबे की प्रतिज्ञा करि पांव रोप्यो आपने बलके आगे तुम सहित सब समाजको बल खर्व कहे छोटा करि दियो ताते सबको गर्व याको कहे मानमर्दन भयो गोसाईं जी कहत कि ऐसा समुझि भय सहित मन्दोदरी कहत कि हे मतिमन्द कन्त म्हाको कहे मेरो मत सुनु बिरद जो बाणा बांकोवालो बीर श्रीरघुनाथजी जौलौं रणमें क्रोध नहीं करतहैं तबलौं श्री जानकीजीको लैकै जल्दी मिलो तो कल्याण है २१ ॥

घनाक्षरी ॥ काननउजारिअक्षमारिधारिधूरिकीन्ही नगरप्रजार्योसोविलोक्योवलकीशको । तुम्हैंविद्यमान यातुधानमंडलीमेंकपिकोपिरोप्यौ पांउसोप्रभावतुलसीश को । कंतसुनुमंतकुलअंतकियअंतहानिहातोकीजेहीयते भरोसोभुजबीशको । तौलौंमिलुवेगिजौलौंचापनचढ़ायो रामरोषिवाणकाढ्यौनदलैयादशशीशको २२ ॥

अशोकबन उजारि अक्षयकुमारको मारि राक्षसनकी धारि कई सेना ताको मींजि धूरिमें मिलायदीन्हींनगर को जराय दियो सोतौ कीश हनुमान्जी को बल भली भांति देख्योपुनः विद्यमानकहे देखत तुम्हारे राक्षसमंडलीमें कपिअंगद कोपकरि पांउ रोप्यो काहूको टारो न टरो इत्यादि प्रभाव श्रीरघुनाथजीको है ताते मेरे मत सुनु हेकंतसों बैरकरिकुलको अंतकहेनाशकरायअंतमें हानि बिचारि आपनेबीसौ भुजनको भरोसो हातो कहे नाश कीजै भाव भुजबलको भरोसो उरमें न राखिये जब तक श्रीरघुनाथजीधनुषकोनहींचढ़ायो अरु तुम्हारेदशौ शीशन के दलनहारे बाणन को क्रोध करि तरकसते नहीं काढ़्यो तबलौं जल्दी मिलु यामें उबारहै २२ ॥

पवनकोपूतदेखोदूतबीरबाँकुरो जोवंकगढ़लंकसोढका ढकेलिढाहिगो । वालिबलशालिकोसोकालिहदापदलि कोपिरोप्योपाँउचपरिचमूकोचाउचाहिगो । सोईरघुनाथ कपिसाथपाथनाथबांधिआयेनाथभागेतेखिररखेहखाहि गो । तुलसीगरबतजिमिलिबेकोसाजसजिदेहिसीयनतो पियपाइमालजाहिगो २३ ॥

मंदोदरी कहत कि अपने मनमें विचारिदेखौ तौ श्री रघुनाथजी को दूत बांकुरो बीर पवनपूत श्रीहनुमान्जी

सो लंकाऐसो बांकागढ़ को ढकाकहे धक्कनसो ढकेलिकै ढाहिकहे गिरायगयो कठिन बलवान् अंगद कालिहूी दाप दर्प अभिमान तुम्हारो दलिकहे नाशकरे जा समय चपरिकहे बिलगाइकै कोपकरि सभामें पांउ रोप्योकोऊ न टारि सक्यो तेहिते सब तुम्हारी चमूजो सेना ताको चाउ जो उत्साह युद्ध करिबेकी सोचाहि कहे देखिगयो कि अब काहू राक्षसमें युद्धकोहर्षनहींरह्यौ वा उत्साह जो चाही सोगोकहे जातरही ऐसे जाके वृत सोई श्रीरघुनाथजी कपि सेना साथ लिहे पाथनाथ जो समुद्र ताको बाँधि उतरिकै लंकानिकट आइ गये जोभागौग तो खिरिर कहे खिरफति क्लेशमें परे खेहजो माटी ताको खात फिरोगे भाव बैठनेका ठिकाना न पावहुगेताते गर्वत्यागि मिलिबे की साजकहे दांतितृण दाबि हाथ बांधि मणिहेम गजवाजि फूलफल लैकै शुद्धमन आरतह्वै कै श्रीरघुनाथजी को मिलिकै जानकीजीको देहु नाहींतोहेपति पाइमाल कहे मर्दित ह्वै परिवार सहित धूरिमें मिलहुगे २३ ॥

उदधिअपारउतरतनहिं लागीबारकेशरीकुमारसोअ दंडकैसोडांड़िगो । वाटिकाउजारिअक्षरक्षकनिमारिभट भारीभारीरावरेकेचाउरसोंकांड़िगो । तुलसीतिहारेविद्य मानयुवराजआजुकोपिपांवरोप्यौसबकूंछकैकैछांड़िगो । कहेकीनलाजपियअजहूंनआयेबाजसहितसमाजगढ़रांड़ कैसोभांड़िगो २४ ॥

अपार समुद्र उतरत बार नहीं लागी हनुमान् जी आइके तुम कैसे अदण्ड रहौ तिनको डांड़िकै चलोगयो सोकहतकि अशोकवाटिका उजारि अक्षयकुमार सहित राक्षस रखवारन को मारि जे भारी भारी योधा रहे तिनको चाउर ऐसो मुष्टिका मूसरसों काड़िकै जातभयो

आजुहीभाव जल्दिही अंगद कोपिकै पांवरोप्यो तुम्हारे देखत सब समाज को बल कैसे छूंछ करिकै छांड़ि गयो काहूमें न बल ठहरा जो पांव उठाय सके ताते राक्षसन को समाज सहित तुम्हारो गढ़ रांड़ बिना पत्नी कैसो भांड़िकै चलोगयो ताहूपर बाजकहे त्यागेनहीं अभिमान अजहूं गाल बजावत हौ तो हे पीय तुम्हारे कहे सुनेकी लाज नहीं है भाव प्रभुशरण अबहीं नहीं भयो २४ ॥

जाकेरोषदुसहत्रिदोषदाहदूरिकीन्हेपै यतनक्षत्रीखो-
जखोजतखलकमें । माहिषमतीकोनाथसहसीसहस्रबाहु
समरसमर्थनाथहेरियेहलकमें । सहितसमाजमहाराजसा
जहाजराजबूड़िगयो जाकेबलबारिधिछलकमें । टूटत
पिनाककेमनाक बामराम सेतेनाकबिनु भयेभृगुनायक
पलकमें २५ ॥

त्रिदोष कहे सन्निपात की दाह जाके होत ताके प्राण तुरंत दूरिहोत तैसे जा परशुराम को रोष जो क्रोधरूप त्रिदोषकी दाह दुसह जो सहि न जाइ ताने खलक जो संसाररूप देहमें प्राणरूप क्षत्रीन को दूरि कीन्हे ताते खोजे कहे ढूंढ़े ते क्षत्रिनको खोज चिन्ह नहीं पाइयत है भाव क्षत्रिनको मिटाइ दिये नहीं रहे अरु महिष्मती नगरी को नाथ जो साहसी पराक्रमी सहस्रबाहु समरमें समर्थ महाबली मन्दोदरी कहत रावण ते हे नाथ हलक कहे कण्ठ भीतरकी मनोमय जो बाणी है तामें हेरि कहे विचारि देखिये भाव सहस्रबाहु ऐसा बलीरहै सो तुमहूं को पकरिकै बांधिराख्यौ सोई महाराज राजनको राजा सहस्रबाहु अपनी समाज सहित बल गर्वरूप जहाजराज कहे भारी जहाज सोऊ जा परशुरामके बलरूप समुद्र के छलक में बूड़ि गयो भाव सेना सहित नाश भयो तेई पर-

शुराम जनकपुर में पिनाक धनुषके टूटतमें नेकु कहे थोरी बामता टेढ़ाई श्री रघुनाथ जी सों कीन्हे तेई परशुराम पलक भरमें बिना नाकके भये भाव मानभंगभयो २५॥

कीन्हीछोनीक्षत्री बिनुछोनिपछपनहार कठिनकुठार पानिबीरबानिजानिकै। परमकृपालजोनृपाललोकपाल-नपैजबधनुहाईह्वैहै मनअनुमानिकै। नाकमेंपिनाकमिस बामताबिलोकिरामरोक्यों परलोकलोक भरीभ्रमभानि-कै। नाइदशमाथमहि जोरिबीसहाथपिय मिलियेपैनाथ रघुनाथपहिचानिकै २६॥

पूर्वकवित्त विषेहै कि भृगुनायक बिनानाक भये ताकी व्याख्या कहत कि छोनिप जोराजातिनकेछपनिहारकहे नाशनहार परशुरामजीने क्षत्रिनको नाशकरि बिन क्षत्री कीभूमि करिदियेऐसे कुठारपाणि कठिन बीरताकीबानि जोसुभावताकोजानिकहेविचारिकै भावअसधारीह्वै बीर-ताकरि निर्दयी ह्वै जीवहिं सायइ धर्म ब्राह्मण को नहीं है तौ परशुराम वेदबिरुद्ध धर्म करतेहैं याते दंडदेबे योग्य हैं ऐसा जानि यह निश्चय कियो कि आगे जनक पुर में इन को दंड देइंगे ताको कहत कि जो लोकपालन पर परम छपा करनहार नृपाल जो श्रीरघुनाथ जीहैं ते मन में यह अनुमाने कि जब जनक पुर में शिव को धनु जो पिनाक ताकोढाईकहे टूटैगोतबपरशुरामआइकै बीरता को अभिमान सहित कुबचन हमको कहैंगे अरु हम साभि प्राय बचन कसि समुझावैंगे की बीरता धर्मतुम्हारा नहीं है तुम वृथा अस्त्र धारण किहेहौ जब न मानैंगे तब दंडदेबे के पाच आपुह्वै जाइंगे तब दण्ड देइंगे इहां नाक कहेप्रतिष्ठा अर्थात्लोकप्रवाद ते लोक में मान बड़ाईको नाक कहतेहैं सोपरशुराममें जो प्रतिष्ठाहै सो बीरतातेहै

औ बीरता ब्राह्मण को वेद बिरुद्ध धर्महै यह बामता परशुरामकी प्रतिष्टारूप नाकमें बिलोकिकहे देखि कै पिनाक मिसि कहेधनु तोरिबेके बहाने बार्त्ता करि बाद बढ़ायकै तब लोक में जो भारी भ्रमरहै परशुरामके किये अवतारहैं कीनहींताको भानि कहे नाशकरिकै अर्थात्परशुरामको धनुष खैंचि भ्रम मिटाय दिये पूर्ण परब्रह्म अवतार को निश्चय कराये पश्चात् परलोक कहे अव्याहत गति स्वर्ग पाताल जाबे की सामरथी ताको नाशकरि बिना शक्ति करिदियेयथाबालमीकीये । इमांवातज्ञतिंरामतपोबलस मार्जितं। लोकान्प्रतिमान्यापिहनिष्यामीतिमेमतिः१ जडोक्ततेतदालोकेरामेवरधनुर्द्धरे । निर्वीर्योयामदग्न्योसौ रामोरामसुदैच्चत् २ मंदोदरी कहत रावणसों हे पिय ऐहे श्रीरघुनाथ जी को पहिंचानि कै तिनके पांयन को दशौमाथ भूमिमें नवाय बीसौ हाथ जोरिकै मिलिये शरण जाइये तब उबार है २६॥

कह्योमतमातुलबिभीषणहूबारबार अंचलपसारिपिय पाँइलैलैहौंपरी। बिदितबिदेहपुरनाथभृगुनाथगतिसमय सयानीकीन्हींजैसीआइगौंपरी । बायसबिराधखरदूषण कबंधबालिबैररघुबीरकेनपूरीकाहूकीपरी । कंतबीस लोचन बिलोकियेकुमंतफलरख्याललंकालाईकपिरांडकी सीझोपड़ी २७॥

मातुल कहे मामा मारीच औ बिभीषण हू यही मत बार बार कहे औ हे पिय मह्यं अंचल पसारि बार बार तुम्हारे पांय लैलै परी की श्री रघुनाथजी सों बिरोधन करौ काहेते राजनीतिहू मेंहैकी आपनो असमयबिचारि सबल शत्रु को मिलिचलिये ताको दृष्टांत देखावत की बिदेह पुरमें भृगुनाथ जो परशुराम तिनकी जैसी गति

भई सो सबको बिदित है की आपनो असमय बिचारि बचिबे की जैसीगौं आइपरी तैसी समय अनुकूल सयानी करी भाव जब बिचारि देखे कि श्री रघुनाथ जी सों हम न जीतैंगे तब अस्त्र दै शरण ह्वै बिनती करै अरु जो बिमुख ह्वै हठबश शरणनआये ते नाशभये यथा जयंत बिराध खर दूषण कबंध बालि इत्यादि बैर कीन्हें रघुनाथ जीसों तिन काहूकी हठ पूरी नहीं परी तैसे अपनी जानिये की रांड़की झोपड़ी सम तुम्हारी लंकाको ख्यालहीमें कपि हनुमानजी कोपकरि आगि लगाइ दई हे कंत आपने कुमंत्र को फल बीसौ नेचन सों देखिये ॥ २७ ॥

सवैया ॥ रामसोंसामकियेनितहैहितकोमलकाजन कीजियेटाँठे । आपनिसूझिकहौंपियबूझियेजूझबेयोगन ठाहरुनाठे । नाथसुनीभृगुनाथकथाबलिबालिगयोचलि बातकेसाठें । भाइबिभीषणजाइमिल्योप्रभुआइपरेसुनि सायरकाँठे २८ ॥

मन्दोदरी कहत कि श्रीरघुनाथजी सों साम कहे मिलापही किहे सदाभलो है ताते जो कार्य कोमलता ते बनै तामें टाँठे कहे कठोरता न कीजिये हे पिय आपहू मन में बूझि कै बिचारिये मैं अपनी सूझि कहे समुझ ते कहत हौं कि युद्ध किहे ते ठाहरु कहे ठौरही नाठे कहे नाश है ताते यह समय युद्ध करिबे योग्य नहीं है काहेते हे नाथ परशुराम की कथा प्रसिद्ध सुनीहै कि शरणह्वै आपु को बचाय गये अरु बली बालि अभिमानते आपनी बातसाठे कहेपकरे रहे कि हम न मिलैंगे ते चलिगये प्राणनाश भये इत्यादि भय दिखाय अब भेद दिखावत कि तुम्हारे घर में भी फूटनि भई कि तुम्हारे भाई बिभीषण रघुनाथजी को मिले अरु सुनियत है कि सायर जो समुद्र ताके कांठे कहे किनारे पर प्रभु आइ परे भाव निकट आइगये २८ ॥

पालिबेकोकपिभालुचमूयमकालकरालहुकोपहरीहै । लंकसेबंकमहागढ़दुर्गमढ़ाहिबेदाहिबेकोकहरीहै । तीतर तोमतमीचरसेनसमीरकोसूनुबड़ोबहरीहैं । नाथभलो रघुनाथमिलेरजनीचरसैनहियेहहरीहै २९ ॥

सुजनन को रक्षा करिबो दुष्टन को दंड देबो दोऊ राजा को चाही ताको कहत कि यमराज सहित कराल कालहू के कोप को हरणहार कपि रक्षन की सेना पालिबे कही रक्षा करिबे को समर्थ है पुनः असुरन को दंड दाता कैसे कि लंका ऐसे बंक कहे टेढ़े महादुर्गम गढ़ ढाहिबे कहे गिराइबे को अरु दाहबे कही फूंकि देबे को कहरी कहे कहर करनेवाले जुल्मी हैं तमीचर कहे राक्षसन की जो सेना तोम कहे समूह ते सब तीतर पक्षी सम हैं तिनको नाश करिबे को समीरसूनु हनुमानजी बड़ो बहरी बाज सम है ताते मन्दोदरी कहत रावण सों हे नाथ श्रीरघुनाथजी के मिलिबे ते तुम्हारो भलो है काहेते जाके बूत तुम युद्ध ठान्यौ है सो रजनीचरन की सेना हृदय ते हहरी कहे डरते सहमि गई है २९ ॥

घनाक्षरी॥रोषेरणरावणबोलायेबीरबानइतजानतजे रीतिसबसंयुगसमाजकी । चलीचतुरंगचमूचपरिहनेनिशानसेनासराहनयोगरातिचरराजकी । तुलसीबिलोकि कपिभालुकिलकतललकत लखिज्योंकँगालपातरीसुनाजकी । रामरुखनिरखिहर्ष्योहियहनुमानमानोंखेलवार खोलीशीशताजबाजकी ३० ॥

इहां लक मन्दोदरी के बचनन में श्रीरघुनाथजी को प्रताप बर्णन जब कहे कि तुम्हारी सेना हृदय तेहहरि गई सो सुनि रावण क्रोधित ह्वै युद्ध करिबे हेतं जे युद्ध को बाना

बांधे हैं ऐसे बीरन को बोलाये जे युद्ध की समाज की सब रीति जानते हैं ते सब युद्ध हेत सजे हाथी घोड़ा रथ पैदलादि चतुरंगिणी सेना चपरि कहे फरच्याइ कै चली निशान जो जुझाऊ बाजा हने कहे बजावतेभये रातिचरराज जो रावण ताकी सेना तौ सराहिबे योग्य हुई है काहेते सदा युद्ध में मन बढ़े तीक्ष्ण अस्त्र धारण उछाहते चली आवत तिनको देखि कपि भालु युद्धकी हर्ष भरे किलकत अरु कैसे ललकत जैसे सुंदरे अनाज की परोसी पातरी देखि कंगाल भूखा भोजन हेत धावत ता समय युद्ध करिबे को रुख रघुनाथजी को देखि हनुमानजी कैसे हर्षित भये मानों खेलवार जो शिकारी ताने बाज के शीश को ताज कहे टोपी उतारि आंखी खोलि पक्षी देखाइ छोड़िदियो तैसे निशाचरन पै धाये ३० ॥

साजिकैसनाहगजगाहसउछाहदलमहाबलीधायेबीरयातुधानधीरके। इहांभालुबन्दरविशालमेरुमंदरसेलिये शैलसालतोरिनीरनिधितीरके । तुलसीतमकितकिभिरे भारीयुद्धक्रुद्धसेनपसराहेनिजनिजभटभीरके।रुंडनकेझुंड झूमिझूमिझुकरेसेनाचैंसमरशुमारशूरमारेरघुबीरके३१ ॥

यातुधान धीर जो रावण ताके जे महाबली बीर हैं ते सनाह बखतर तन में सजि अरु जीन गजगाह आदि घोड़न के सजि सवार ह्वै उछाह के भरे सवारन को दल आगे धावत भयो अरु इहां सुमेरुगिरि सम विशाल ऊंचे भारी वृक्ष बानर ते नीर निधि कहे समुद्र तीर के पहाड़ औ शालादि के वृक्ष तोरि लैकै तमकि कै धाये अपनी जोड़ी तकि तकि क्रोधकरि भारी भारी युद्धमें भिरे ता समयजे सेनापति हैं ते अपनी भीर को योधन को सराहे कहे ललकारे ते भये तिनमें शुमार कहे जे गनतीवारे राक्षस

जे रघुनाथजी के मारे तेशीश गिरयो धर ठाढ़ो रहि गयो ऐसे जे शूर तिनके रुंडन के झुंड समूहते यथा पवन लागेते वृक्ष झकोरत तैसेझुकरेसे कहेझकोरा खाये से झूमि झूमि रणअजिर में नाचि रहेहैं ३१ ॥

सवैया ॥ तीखेतुरंगकुरंगसुरंगनिसाजिचढ़े छुटिछैल छबीले। भारीगुमानजिन्हैंमनमेंकबहूंनभयेरणमेंतनढीले। तुलसीलखिकेहरिकेहरिकेझपटेपटकेसबशूरसलीले। भूमिपरेभटघूमिकराहतहांकिहनेहनुमानहठीले ३२ ॥

जिन निशाचरनके मन में भारी गुमान है जिनके तन रण भूमिमें कबहूं ढीले नहीं परे ऐसे छुटे जे छैल छबीले बीरहैं ते तीखे कहे तीक्ष्ण कुरंग कहे मृगसम बेगवान सुंदरे रंगवाले तुरंग जे घोड़ा तिनको साजि कै सवार भये ते सब शूरनको लखिकै केहरि कहेकेशरी ताके पुचकेहरि कहेसिंह सम हनुमान हठीले सहित लीला सहजमें कूदि फांदि कै हांक दैकै झपटि जिनको पटकि पटकि निशाचर भटन को हनेते घूमि घूमि गिरे भूमि परे कहरत हैं भाव छुटे छुटे बीरन को ढूंढ़ि कै मारे ॥ ३२ ॥

शूरसजोयलसाजिसुवाजिसुसेलधरेबगमेलचलेहैं । भारीभुजाभरिभारीशरीरवलीविजयीसबभांतिभलेहैं। तुलसीजिन्हैंधायधुकैधरणीधरणीधरधोरधकानहलेहैं। तेरणतीक्षणलक्ष्मणलाखनदानिज्योंदारिददाबिदलेहैं ३३॥

जे निशाचर शूर सजोइल कहे बरछा आदि के करतब में ऊसियार ते सुंदर घोड़ेन पर जीन आदि सजि सवार ह्वै सेल कहे बरछा सुन्दर लिहेबगमेल कहे बागे मिलाये पांति बांधे आगे धावत भये जिनकी भुज दंड़ैअरु देहैं भा-

री पुष्ट ताते भरी ऐसे बली औ बिजयी कहे संग्राम जीतनेवाले सब भांति ते भले हैं जिनके धाइकै चलेते धरणी जो भूमि सोधुकै कहे धकधकायकै कंपित होत औ धरणिधर जो पर्वत धोर कहे ऊंचे ते धक्कन ते हालि उठत ऐसे तीक्ष्ण निशाचर लाखन को लषनलाल कैसे दाबि कै दलिडारे यथा महादानी दान दैकै दारिद को दलि डारत इहां लक्ष्मणजी दानी दान अस्थाने बाणनते दाबि लोक दारिद सम निशाचरन को दलिडारे ३३ ॥

गहिमंदरबंदरभालुचलेसोमनोउनयेघनसावनके। तुलसीउतझुण्डप्रचण्डझुके झपटैंभटजेसुरदावनके । बिरुझेबिरदैत्यजेखेतअरेनटरेहठिबैरबढ़ावनके। रणमारमची उपरीउपराभलेबीररघूपतिरावणके ३४ ॥

या दिशि ते मंदर जो पहाड़ तिनको गहि कै बानर भालु चलेसो मानौ सावन मासके समूह मेघ उनये कही सघन छाइ गये उतते सुरदावन जो रावण ताके प्रचंड जो धन के समूह झुंड ते झपटे दोऊ दल बिरुझाब कै लड़त बिरुदैत कहे जे बीरता को बाना बांधे अरु हठि करिबैर बढ़ावन हार ते रणखेत में अड़े हैं टरते नहीं काहे ते भले हैं बीर रघुपति औ रावण के ताते उपरी उपरा कहे हांकी हांका करत आपनी जीतिहेत रणभूमि में महा मार मचिरही है ३४ ॥

शरतोमरशेलसमूहपँवारतमारतबीरनिशाचरके । इततेतरुतालतमालचलेखरखण्डप्रचंडमहीधरके । तुलसीकरिकेहरिनादभिरेभटखड्ग खगेखपुवाखरके । नख दंतनसोभुजदंडबिहंडतमुण्डसोंमुण्डपरेझरके ३५ ॥

निशाचर रावण के जे बीर हैं ते शर जो बाण तोमर बरछा सेलजो सांगादि पँवारत कहे दूरिते चलावत अरु

गदा तरवारि त्रिशूलादि मारतहैं इत बानरनकी सेना तै ताल तमालादि वृक्ष खर कहे तीक्ष्ण प्रचंड कहे भारी खंड कहे शिला महीधर जो पर्वतन के समूह चलत भये गोसांईजी कहत कि जासमयकेहरिकहे सिंहनाद करि भट भिरे खड्ग कहे तरवारिके खगे कहे लागे तै खपवा जो कादर तै खरके कहे भागे नखनसों दांतन सों भुजदंड बिहंडत कहे काटि डारत मूड़ तोरि बहायमारे तै मूड़ झरि टूटि भूमिमें परत हैं ३५ ॥

रजनीचरमत्तगयंदघटाबिघटैमृगराजकेसाजलरै । झपटैभटकोटिमहीपटकै गरजैरघुबीरकीसौंहकरै । तुलसीउतहांकदशाननदेतअचेतभेबीरकोधीरधरै । बिरुझो रणमारुतकोबिरुदैत्यजोकालहुकालकोबूझिपरै ३६ ॥

निशाचर मत्त हाथिन के घटा कहे समूह बिघटै कहे नाश करिबे हेत हनुमान जी मृगराज कहे सिंहके साजते लड़ते हैं सो कहत की श्रीरघुनाथ जी की सौगंद करि गर्जि कै झपटि झपटि कोटिन निशाचर भटन को भूमि में पटकत हैं गोसांई जी कहत की उतरावण हांकदेत ललकारत सुनि कौन ऐसो बीरहै जो धीर्य्य धरिसकै तातें सब बानर बीर अचेत भये तासमय बिरदवालो बीर मारुत को पुत्रजो कालहू को काल देखिपरत सो रणभूमि में बिरझाय कै युद्ध करत है इहां मृगराज के साज में निशंकता कहे रघुबीर की सौंह में हृदय में सब लता करे गर्जिबे में बिभव बिरझाबे में हठ ३६ ॥

जेरजनीचरबीरविशालकरालविलोकतकालनखाये । तेरनरोरकपीशकिशोरबड़ेबरजोरपरेफलपाये । लूमलपेटिअकाशनिहारिकैहाँकिहठीहनुमानचलाये । सूखिगे गातचलेनभजातपरेभ्रमबातनभूतलआये ३७ ॥

जे निशाचर बीर बिशाल कहे बड़े भारी जिनकी करालता बिलोकिकै काल नहीं खाइ सक्यो इहां करालता देह की नहीं सभावित होत इहां इष्ट देवन सों बर पाइबे की करालता जानिये यथा बिराध अस्त्र करि न मरो तब रघुनाथ जी जियतही भूमिमें गाड़ि लिये बाल्मीकीमें प्रसिद्ध है यथा मकराक्ष लक्ष्मणजी को पकरि लिये अस्त्र सों नहीं मरयो तब आपनी देह लक्ष्मणजी बढाय दियो मकराक्ष के अंग फाटिगये यथा मेघनाद ऐसे जे निशाचर तपस्या करि इष्टदेवन सों तप को फल पाये ते काटे मारे पटके नहीं मारि सके याते बड़े बरजोर रहे तेई रोरकहे कठिन रणमें कपीशकेशरी किशोर के संमुख परे ते मारे पटके नमरे तौ हनुमान हठी जो बिनामारे छोड़ै तिनको लूमजो पूछि तामें लपेटिकै आकाश निहारि भावदेव बिमान में न लागि जाइ सून आकाश देखि हांकि कहे ललकारि कै तेई निशाचरन को आकाशको चलाय दिये ते भ्रम बातमें परे सदा चले जात आकाश में घुमावन हार पवन में परे सदैव घूमत मरिकै देहैं सूखि गईं फिरि भूमिमें नहीं आये यामें बुधिबलबरणनहै ३७॥

जोदशशीशमहीधरईशकोबीसभुजाखुलिखेलनिहारो। लोकपदिग्गजदानवदेव सबैसहमैसुनिसाहसभारो। बीरबड़ोबिरदैत्यबलीअजहूंजगजागतजासुपँवारो। सो हनुमानहन्योमुठिकागिरि गोगिरिराजज्यों गाजको मारो ३८॥

ईश जो महादेव तिन को महीधर कैलास ताको जो दशशीश बीसौ भुजन करिकै खेल खुलि कै खेलन हार है भाव प्रसिद्ध कैलास उठाये पुनः जाको साहस कहे पराक्रम भारी सुनिकै लोकप इंद्रादि दिशागज दैत्य

देवतादि सबै सहमिजातकाहे ते विरदैत कहे बीरताको बानावालो बड़ोबली बीर जाके बल प्रताप को पँवारा रामायणादि ते अजहूं जगमें जागत कहे प्रकाशित है ताही रावण के श्री हनुमान जी मुष्टिका मारे सो कैसे गिरि गयो यथा गाजके मारे गिरिराज पर्वतनको राजा हिमांचल वा सुमेरु गिरि जाइ यामें हनुमान्जी अति बलवान् करिगनेगये ३८ ॥

दुर्गमदुर्गपहारतेभारेप्रचण्डमहाभुजदंडबनेहैं । लष्यमेंपष्यरतिष्यनतेजजेशूरसमाजमेंगाजगनेहैं । तेबिरुदैत्यबलीरणबाँकुरेहांकिहठीहनुमानहनेहैं । नामलैराम देखावतबंधुकोघूमतघायलघायघनेहैं ३९ ॥

दुर्गकहे कोटसे दुर्गमकहे अजीत अरु पहाड़ समभारी पुष्टांग जिनके महाभारी पुष्ट भुजदंड करिकै प्रचंडबने हैं लष्यकहे लाखनबीरन में पष्यरकहे श्रेष्टप्रबल तिष्यन कहे तीक्ष्ण तेजमान इत्यादि प्राकृत भाषा है जे योधा शूरन की समाज में गाजकहे बज्रसम गनेजाते हैं भाव जापर चोटकरैं ताको नाशकरिदेइं ऐसे विरुदैत्य कहे बीरता के बानावाले रणबांकुरे बलीबीर निशाचरन को हांकिकहे ललकारिकै हठी हनुमानने हनेकहे मारेतिन की देहनमें घनेकहे बज्रतेरे घायल ह्वैगये तेघायल रणमें घूमतहै तिनको नामलैलै श्रीरघुनाथजी बंधुजो श्रीलक्ष्मण जी तिनको देखावत कि यह फलाना राक्षस है ताको हनुमान जीने मारा है ३९ ॥

घनाक्षरी॥ हाथिनसोंहाथीमारेघोड़ेघोड़ेसोंसँहारेरथ निसोंरथबिदरनिबलवानकी। चंचलचपेटचोटचरणचकोटचाहैं हहरानीफौजेंभहरानीयातुधानकी । बारबारसेवक सराहनाकरतरामतुलसीसराहैं रीतिसाहेबसुजानकी ।

लांबीलूमलसतलपेटिपटकतभट देखौदेखौ लषनलरनि हनुमानकी ४० ॥

युद्धमें हनुमानजी की फुरतई वर्णन यथा हाथिनको पकरि हाथिनपै पटके घोड़ेन सों मारिघोड़ेन को नाश करे रथनसों रथनको विदारनि तूरिड़ारनि बलवान हनुमानजीकी चंचल हाथन के चपेट जो चटकनाकी चोट सनखचरन को चकोटाकरि मांसनोचिलेना इत्यादिको चाहैं कहे देखै ताते यातुधान जो राक्षस तिनकी सेना हहरानी कहे घबरानी तातेभहरानी कहे यूथ फूटि फूटि भागनलगी गोसाईंजी सराहना करत सुजान साहेब की रीतिको कीसदाजनके गुण गाहक हैं तथा ॥ देखि दोषकबहुनउरआने ॥ सुनिगुनिसाधुसमाजबखाने ॥ को साहेबसेवकहितेवाजी आपुसमानसाजसबसाजी ॥ पुनः भगवद्गुणदर्पणे॥ दोषादर्शीगुणग्राहीभावग्राहीचराघवः॥ ताते सेवक जो हनुमानजीकी बारबार सराहना श्रीरघुनाथजी करते हैं कि देखौदेखौ लषणलाल हनुमानकी कैसी लरनि बांकीहै की जा समय निशाचर भटनको लपेटि भूमिमें पटकत ता समय लंबीलूम जो पूंछि सो कैसी लसत कहे शोभित होत ४० ॥

दबकिदबोरेएकबारिधिमेंबोरे एकमगनमहीमेंएकगगनउड़ातहैं। पकरिपछारेकरचरणउखारेएकचीरिफारिडारेएकमींजिमारेलातहैं। तुलसीलषनरामरावणविबुधबिधिचक्रपाणिचंडीपतिचंडिकासिहातिहैं।बड़ेबड़ेबानइतबीरबलवानबड़ेयातुधानयूथपनिपातेबातजांतहैं ४१ ॥

एकन को दबकिकहे घुरिकिदियेते दबोरे कहीं दबिकै लुकिरहे एकनको बहायदियेते समुद्र में बूड़िगये एक मगन कहे मुर्छित करि भूमिमें डारिदिये एकनको

महायदिये ते आकाश में उड़ेजात एकनको पकरि पटकि डारे एकन के हाथ पांव उचारिडारे नखनसों चीरि एकन के पेटफारिड़ारे एकनको लातनमारि मींजिडारे बड़े बीरताको बानाबांधे बड़ेबली बीरजे राक्षसनके यूथपति हैं तिनको बातजात जो हनुमानजी जा समय निपातेनाथकरे तिनकोदेखि लक्ष्मणजी औरघुनाथजी औ रावण सब देवता ब्रह्मा बिष्णु महादेव चंडिकादि सब हनुमान जीको बलदेखि सिहात ललचातहैं इहां हनुमान्जी की बीरता देखि अनेक सिहावते अद्भुतबीररसहै ४१ ॥

प्रबलप्रचंडबरिबंडबाहुदंडवीरधायेयातुधानहनुमान लियोघेरिकै । महाबलपुंजकुंजरारिज्योंगरजिभटजहां तहांपटकेलंगूरफेरिफेरिकै । मारेलाततोरेगातभागेजात हाहाखातकहैतुलसीसराखिरामकीसोंटेरिकै । ठहरठहर परैकहरिकहरिउठैहहरहहरहरसिद्धहँसेहेरिकै ४२ ॥

प्रबल कहे अतिबलवान प्रचण्ड कहे प्रतापवान् बरिबण्ड कहे तेजमान् पुष्टहैं भुजदण्ड जिनके ऐसे निशाचर वीर तीं हेवाले बटुरि धायकै हनुमानजी को घेरिलिये तिनको देखि महा बलपुञ्ज जो हनुमानजी कुंजरारि कहे सिंह ज्यों गर्जिकै लंगूर चारिउदिशि फेरि लपेटिलपेटि निशाचर भटनको जहांतहां पटकिडारे अरु लातनमारि मारि अङ्ग तूरिडारे जे बचेते हाहाकहे चिरौरीकरत भागेजात अरु टेरिटेरि कहत कि तुलसीश कहे हनुमान तोको रघुनाथजीकी शपथ हमको राखिले जे मारेगयेते ठहर कहे ठौरठौर घायलपरे कहरिकहरि उठत इत्यादि कौतुक हेरि कहे देखिकै हर महादेव अरु सिद्धगण हहरि कहे हहायकै हंसत की बड़े गुमान ते दौरे रहैं ताको फल भलीभांति पायो इहां बीरता बिपरीति ते हास रसभयो ४२ ॥

जाकीबाँकीबीरता सुनतसहमतशूर जाकीआंचअबहूं लसतलंकलाहसी । सोईहनुमानबलवानबाँकोबानइत जोहैयातुधानसेनाचलेलेतथाहसी । कंपतअकंपनसुखाय अतिकायकायकुंभऊकरणआइरह्योपाइआहसी । देखे गजराजमृगराज ज्योंगरजिधायोबीररघुबीरकोसमीरसू-नुसाहसी ४३ ॥

बज्रांग आदितीय बलवान समर निशंक ऐसी बांकी बीरता जा हनुमानकी सुनि जे रणशूरहैं तेऊ सहमिकहे डेराइजात अरु जाके प्रतापरूप आंच ते अबहूंलंका लाह सम लसत कहे टघिल उठत सोई बांके बानावालो बल-वान् हनुमानजी निशाचरनको बल जोहै कहे देखबेहेतु सेनाकी थाह ऐसी लेत रणमें बलिन सों युद्ध करत चले तहां औरकी को कहै जो रणमें कबहूं न कांप्यो ऐसो जो अकंपन सोऊ हनुमानजीकी युद्धमें कांपिउठो महा भारीहै देहजाकी सोऊ अतिकायकी काय जो देह सो युद्धमें सूखिगई कुम्भकरण महाबली युद्धमे संमुख आयो सो हनुमानजीके मुष्टिकाकी चोटपाइ आहकरि रहि-गयो इत्यादि सबके बलको थाहपाइकै रघुबीरजीकोदूत वीर साहसी कहे पराक्रमी समीर सूनु हनुमान गर्जि निशाचरन पै कौन भांति धायो यथा हाथिन को देखि सिंह धावत है यामें सबल निशंकता वर्णनहै ४३ ॥

झूलना॥ मत्तभटमुकुटदशकंधसाहसशैलशृंगबिद्दरनि जनुबज्रटांकी । दशनधरिधरणिचिक्करतदिग्गजकमठशेष संकुचितशंकितपिनाकी । चलतमहिमेरुउच्छलतसायर सकलबिकलबिबिबधिरदिशिबिदिशिझाँकी । रजनिचर घरनिघरगर्भअर्भकश्रवतसुनतहनुमानकीहाँकबाँकी ४४॥

हनुमानजीकी हांककैसीहै मत्तकहे बलकरिकै मदांध जे भटहैं तिनको मुकुटकहे शिरोमणिहै दशकंध ताको साहस जो बलसोईहै पर्वतको शृंग ताके बिदरनिकीही काटिबेको मानौवज्रकी टांकीहै पुनः जा हांकको सुनि सभीतहै दांतनसों पृथ्वी धरिकै दिग्गज चिक्कार करत कच्छपशेष संकुचित कहे सिकुरिजात त्रिलोक नाथकर्त्ता पिनाकी जो महादेव सोऊ शंकासहितहोत सुमेरु आदि पर्वत सहित भूमि डोलिउठत सायर जो समुद्रते सकल उछलतहै जाको सुनि व्याकुल बधिरहै ब्रह्मा भागिबेहेत दशौदिशा झांकतकी कहांजाइये ऐसी बांकीहांक हनुमानजीकीहै जाको सुनतही निशाचरनके घरनमें घरनी जो स्त्रीहैं तिनके गर्भके अर्भक जो बालक ते स्रवतकहे गिरिपरत हैं यामें सबलता वर्णन है समाचा झूलना छन्दहै ४४ ॥

कौनकीहाँकपरचौंकिचंडीशबिधि चंडकरथकितफिरि तुरँगहाँके । कौनकेतेजबलसीमभटभीमसेभीमतानिरखिकरिनयनढ़ाके । दासतुलसीशकेबिरदबरणतबिदुष वीरबिरुदैत्यबरबैरिधाँके।नाकनरलोकपातालकोऊकहत किनकहाहनुमानसेवीरबाँके ४५ ॥

सर्वोपरिबीरता हनुमानजीकी देखावतकी चंडीशकहे महादेव बिरंचि ब्रह्माकौनकी हांकपर चौंके इनकोचौंकव पूर्वके कवित्तमें लिखिआयेहैं चंडकर सूर्य कौनकी हांकपर थकितहै थभिकै फिरि तुरंग जो घोड़े तिनको हांके इनहूको थंभिबो याहीसमय संभावितहोत अथवा जन्महोतही रथसहित सूर्यनको लीलिगये याते सदैव भयमानेहैं जब बालअवस्थामें विद्यापढ़िबेहेत हठायकै पठ्यचैं तब रविरथ थंभिजाय पुनः हांकेपर घोड़ेचलैं अरु भीमसेन ऐसे भटबल सीमकहे मर्य्यादा महाबली ते कौ-

नके भीमताकहे भयंकर तेजको निरखि आंखीमूंदिलिये भावमहाभारतमें अर्जुनके रथध्वजापर करालरूपते गर्जेता समय हनुमान्जीको देखिडराइ भीम आंखी मूदिलिये अथवा जब गंधमादनपर फूललेबेहेत अर्जुन भीमादिगये तब भयानकरूप देखिबेकोकहे तब हनुमानजी भयंकर रूपदेखाये तब डरिकै भीम आंखीमूंदिलिये यह पद्मपुराणमें प्रसिद्धहै गोसाईंजी कहतकी तुलसी जो हनुमानजी तिनको बिदरकहे बीरताको यश ताको बिदुख जो पंडितजन सदाबरणन करतकी बिरदैत जो बीरताकी बिरदावलीवाले जो बीर बर कहे श्रेष्ट बैरी रावणादि तिनपै हनुमानजीकी धांकलागतहै धांकरुआ ग्रामीण बोलीमें प्रतापको कहतहैं स्वर्गमेंदेवता मृत्युलोकमें मानुष पातालमें नागादि तीनिहूंलोकमें हनुमान्जी की समताको बांकोबीर कहाहै भाव नहींहै अरु जो होइ तौ भूतकाल पुराणादिकनमें कोऊ काह्यन कहत अथवा वर्त्तमानमें कोऊ काहनहीं कहतहै ४५ ॥

यातुधानावलीमत्तकुंजरघटा निरखिमृगराजज्योंगिरितेटूट्यौ । बिकटचटकनचोटचरणगहिपटकिमहि निघटिगयसुभटसतसबकोछूट्यौ । दासतुलसीपरतधरणिधरकतझुकतहाटसीउठतजंबुकनिलूट्यौ । धीररघुवीरकेबीररणबाँकुरे हाँकिहनुमानकुलिकटककूट्यौ ४६ ॥

मत्त कुंजर कहे हाथी घटा कहे समूहन को निरखि मृगराज जो सिंह गिरिकहे पर्वतते ज्यों टूट्यो कहे निशंक वेगता ते चोटकस्यो त्यों यातुधान जो निशाचरनकी अवली कहे पंक्ति बंधी सेनापै हनुमानजी टूटे काहू को चटकनाकी बिकटकहे कठिन चोटमारे काहू को पद गहि भूमिपै पटकिडारे ते निघटिकहे नाशभये तिनको

देखि जे बाकीरहे ते सुभटनको सत कहे शूरता सबकी छूटिगई अधीरहै भागे गोसाईंजी कहतकी निशाचरन को पटकत ताकी चोटपरत भूमि धरकत कहे शंकितहै झुकतकहे हालतहै अथवा शंकितहै निशाचर झुकत गिरिगिरि परत भागे जे घायल रहिगये तिनको मांस जंबुक शृगालादि लूटिलिये यथा बाजार उठे अन्नादि जो पदार्थ परोरहत ताको भूखे लूटिलेतहैं धैर्यमान श्री रघुबीरके बीर रणमेंबांकुरे हनुमानजीने निशाचरनकी कुलि।टक जो सेना ताको कूटिडारे ४६ ॥

छप्पै ॥ कतहुंबिटपभूधरउपारिअरिसैनबरष्षत। कतहुंबाजिसोंबाजिमर्दिगजराजकरष्षत । चरनचोटचटकन चकोटअरिउरशिरबज्जत।बिकटकटकबिद्दरनबीरबारिद जिमिगज्जत । लंगूरलपेटतपटकिमहिजयतिरामजयउच्चरत। तुलसीशपवननंदनअटलयुद्धक्रुद्धकौतुककरत४७

श्रीहनुमान्जीको रण कौतुक वर्णनकरत कतहूं वृक्ष पहार उखारि शत्रुकी सेनापर वर्षाकरत कहूं घोड़नसों घोड़ा कहूं हाथिन को कर्षत कहे खैंचिकै मर्दन करत कहूं चरणकीचोट छातीपर कहूं चटकना को चकोटा शत्रुनके शीशपै बज्जतकहे लागत कठिनसेना निशाचरन को बिदारनहेत बीर हनुमान्जी मेघसम गर्जतहैं निशाचरनको लंगूरमें लपेटि भूमिपै पटकि श्रीरघुनाथजी की जयजयकार करत तुलसीकेईश पवननंदन अटलजो नहीं टरनेवाले ते युद्धमें क्रोधते कौतुककरतहैं ४७ ॥

घनाक्षरी ॥ अंगअंगदलितललितफूलेकिंसुकसे हने भटलाखनलषनयातुधानके। मारिकैपछारिकैउपारिभुज दंडचंड खंडिखंडिडारेतेबिदारेहनुमानके । कूदतकबंधके

कदंबबंबसीकरत धावतदेखावतहैंलाघौराघौवानके। तु-
लसीमहेशबिधिलोकपालदेवगण देखतबिमानचढ़े कौ
तुकमशानके ४८॥

यामें लक्ष्मणजीकेमारे हनुमानजीके मारे श्रीरघुनाथ
जीके मारे राक्षसनके चिन्ह बर्णन करत जिनके अंग अंग
दलित कहे टूटे कटेघावनते रुधिर मांसकी लालिमाते
किंशुक जो पलासकेसे वृक्ष ललित फूलेसे देखात ऐसेराक्ष-
सनके लाखन बीरनको लक्ष्मणजी हनेकहे मारेहैं जिन-
को पटकिकै मारि प्रचंड भुजदंडनको उचारि खंडि कहे
तूरितूरि भूमिमेंडारेहैं ते हनुमानजीके बिदारे हैं जेबिना
शिरके कबंध कदंब कहे समूह बम्बरी शब्द करत कूदत
धावतहैं यह राघवबाणकी लाघव कहे शीघ्रताहै भाव
ऐसेबेगते बाणमारे जो शीश उड़िगये पर धर ठाढ़नाचि
रहो ऐसा कहि देवगण मृतक राक्षसनके चिन्हदेखावत
गोसाईंजी कहत की शिव ब्रह्मादि लोकपाल इन्द्रादि
देवता बिमाननपर ते रण मशानको कौतुकदेखतहैं ४८॥

लोथिनसोंलोहूकेप्रवाहचलेजहांतहां मानहुंगिरिन
गेरूझरनाझरतहैं। श्रोणितसहितघोरकुंजरकरारेभारे
कूलतेसमूलबाजिबिटपपरतहैं।सुभटशरीरनीरचारीभारी
भारीतहांशूरनिउछाहकूरकादरडरतहैं। फेकरिफेकरिफेरु
फारिफारिपेटखातकाककंकबालककोलाहलकरतहैं ४९॥

रुधिरकी सरिताकरि बर्णन करतहैं लोथिनसों लोहू
की प्रवाहधार बहत सो मानों पर्बतन ते गेरू के झरना
झरतहैं ठौरठौर रुधिरसहित भयंकर हाथिन के समूह
तेई भारी करारेहैं जब नदी बाढ़त तब किनारे के वृक्ष
जरसहित उचरिपरतहैं तैसे सजरवृक्ष से घोड़े गिरत हैं

जे सुभटनके शरीर धारामें परे तेई नीरचारी कहे मीन मगर घरियाल हैं इत्यादिक भयंकरता देखि तहां जे शूरवीरहैं तिनके मनमें युद्धकी उछाह है भाव वीररसते पूर्ण हैं अरु जे कूर कहे कपटी कादर हैं ते डरतहैं फेरु जे सियार ते फेकरि कहे बोलि बोलि पेट फारि फारि खात यथा सरिता में बालक कोलाहल करत तथा काक औ कंक कहे कुही वा गीध ते कोलाहल करत ४९ ॥

वोझरीवझोरीकांधेआँतनिकीसेल्हीबाँधे मूड़केकमंडलखप्परकियेकोरिकै। योगिनिजमातिजोरिझुंडबनीतापसिसी तीरतीरबैठीसोसमरसरिखोरिकै । श्रोणितसो सानिसानिगूदाखातसतुवासे एकप्रेतपियतबहोरिघोरिघोरिकै । तुलसीबैतालभूतसाथलियेभूतनाथ हेरिहेरि हँसतहैंहाथहाथजोरिकै ५० ॥

समरसरिपै मेला वर्णन पेटकी वोझरी काढ़ि झोरी सी कांधेमें डारे आंतनकी सेल्हीसी गरेमें बांधे मुंडनके कमंडलनिहे कोरी कहे काटि खोपड़ी अर्द्ध को खप्पर लिहे ऐसीसाजते योगिनिनकी जमातिके झुंडजुरे ते खोरि कहे नहाइ नहाइकै समरसरिके तीर २तपस्विनीसी बैठी हैं ते श्रोणित जो रक्तरूप शरबतमें खोपड़ीको गूदासानि सानि सतुवासे खातहैं कोऊ एकप्रेत बहोरि कहे फिरि फिरि घोरिघोरि शरबत से रुधिर पियतहैं तहां जमातिनमें कोऊ मालिकहोत हुहां भूतनाथ जो भैरव हैं ते बैताल भूतनको साथलिहे समाजको अघाइखात देखि २ नेहपूर्वक भूतनसों हाथपकरिकै हंसतेहैं ५० ॥

रामशरासनतेचलेतीर रहेनशरीरहड़ावरिफूटी । रावणधीरनपीरगनीलखिलैकरखप्परयोगिनिजूटी । श्रो-

णितछीटछटानछुटीतुलसीप्रभुसोहैमहाछबिछूटी। मानों मरकतशैलविशालमेंफैलिचलीबरबीरबहूटी ५१॥

श्रीरघुनाथजीके शरासन कहे धनुष ते ऐसे बेगते तीर छूटे जो शरीरमें न रहे हाड़फोरि निकसिगये सो पीर को रावण ने नहींगनी काहेते धीर्यमान् है तहां कोऊ भावकरिकै जो प्रभुके सन्मुख जीवहोत सो अनित्य जानि देहको दुख सुख नहींगनतेहैं तहां रावण बैरभाव करि प्रभुके सम्मुखहै याते देहकीपीर नहींगनी तिन धावनते रुधिरकीधारा चली ताको लखिकै पानकरिबेहेतु खप्पर लैलै योगिनिनकी झुंड जुटतीभईं सोई रुधिर की धार छूटी ताकी छीटनको छटा करि प्रभु सोहत भये श्याम शरीरपै अरुणछीटनते रणसमयपाइ जो महाछवि छूटी कहे फैलिरही ताकी कवि उत्प्रेक्षा करत मानों रण रूप वर्षाकालपाइ मरकतमणि के विशालशैल कहे पर्वत के ऊपर श्रेष्ठ बीरबहूटी फैलि चलीहैं यामें युद्ध बीररस मय रूप वर्णते रुधिरछीट भूषितहै ५१॥

काननबासदशाननसोंरिपुआननश्री शशिजीतिलियोहै। बालिमहाबलशालिदल्यो कपिपालिविभीषण भूपकियोहै। तीयहरीरणबन्धुपरेउ पैमरेंउशरणागत शोचहियोहै। बाहपगारउदारकृपाल कहाँरघुवीरसों वीरबियोहै ५२॥

एकतौ कानन कहे बनमें बास जो स्वाभाविक उदासीन दूसरे रावण ऐसोबली सो अचुता ताऊपर जिनको आनन कहे मुख ऐसो प्रसन्न प्रकाशमान् है जा श्री कहे शोभा सों चन्द्रमाको जीतिलियोहै महाबलशालि कहे कठिन बली बालि को दलिकै कपि जो सुग्रीव तिनको दयाकरि पाले अरु उदार दानी ह्वै विभीषण को भूप

कियो तहां तिया जो श्रीजानकीजी हरिगईं अरु बन्धु श्रीलक्ष्मणजी घायलपरे ताको शोचनहीं केवल शरणागत विभीषणको शोच हृदयमें भरोहै ऐसे बांहको पगारकहे देवाल जाकी आड़पाये काहू चोटकोभय नहींरहत तैसे श्रीरघुनाथ जाको बांहदेत ताको सब भांति अभय करि राखत ऐसो उदार कृपाल अर्थात् दान दया बीर श्रीरघुनाथजी के समान बियो कहे दूसरो कहांहै यामें दान दया बीर दोऊ वर्णनहैं ५२॥

घनाक्षरी ॥ मानीमेघनादसोंप्रचारिभिरेभारीभट आपनेआपनेपुरुषारथनढीलकी । घायललषणलालसुनि बिलखानेरामभईआशशिथिलजगनिवासदीलकी । भाई कोनमोहछोहसीयकोनतुलसीश कहैमैंविभीषणकीकछु नसवीलकी । लाजबांहबोलकीनिवाजेकीसँभारसार साहेबनरामसेबलाइलेउंशीलकी ५३ ॥

युद्धमें मानो मेघनाद सों जे भारीभटहैं हनुमान् जामवानादि ते प्रचारिकै भिरे युद्धमें अपने पुरुषार्थ करिबे में काहूने ढील नहीं करी काहूसों जीति न गयो पीछे लक्ष्मणजी युद्धकरतमें शक्तिके लागे घायल भये सो हाल सुनि जगत व्यापक श्रीरघुनाथजी बिलखाने रोदनकरत में लंकाजीतनो विभीषणको राज्य देनो जानकीजी को लावनो इत्यादि आश दिलते शिथिल कहे ढील परिगई तहां भाईको मोहनहींहै काहेते सम्मुख मरणरणमें क्षत्रीको धर्महै औ जानकीजीको छोह नहीं है काहेते पतिव्रताके प्राण पतिके संगही रहत औ विभीषण को राज्य देबेको कहे सो बचनपूरा नहींभयो ताते श्रीरघुनाथजी बारबार यही बात कहत कि जो बात कही विभीषणको सोकुछ सवीलकहे पूरी कछु नकरी इत्यादि

अपने बोलकीलाज अरु बांहकेहे अपने भरोसाकी लाज है जिनको पुनः निवाजे कही अपनेदीन्हे की संभार है जिनको ऐसे साहबनके सारस सुसाहेब श्रीरघुनाथजीकी समान दूसरा नहींहै तिनको शील जो है ताकी बलाइ मैं लेउं भाव गोसाईंजी कहतकि शीलकी जो बाधाहोइ सो मेरे ऊपर आवै जामें प्रभु को शीलस्वभाव निर्विघ्न बनारहै ५३ ॥

लीनउखारिपहारविशालचल्यो त्यहिकालबिलम्बन लायो । मारुतनन्दनमारुतकोमनकोखगराजकोबेगल-जायो । तीखीतुरातुलसीकहतोपैहियेउपमाकोसमाउन आयो । मानोंप्रतक्षणपर्वतकीनभलीकलसीकपियोंधुकि धायो ५४ ॥

सजीवनिमूरिहेतु बिशाल पर्बत द्रोणागिरि उखारि बिलंब नहीं लगायो ताहीकाल में मारुतनन्दन ऐसी बेगता ते चले जो मारुतको औ मनको औ गरुड़ तीनि-हूंकी बेगताको लजाये तीखीतुरा कहे तीक्ष्णबेग ताको तुलसी कहतो परंतु समान उपमाको समाउ उरमें नहीं आयो भाव हनुमान्जी की समता को बेग त्रिलोक में दूसरा नहींहै तौ कौनकी उपमादीजिये ताते उत्प्रेक्षा करत मानों पर्बत की लकीर खिंचीसी आकाश में प्रत्यक्ष लसी अर्थात् दिव्यऔषधिन करि ज्वलित पर्बतजात श्याम आकाशमें अग्निकीसी लकीर शोभित प्रसिद्ध देखानी या भांति हनुमान् जी धुकि कहे शीघ्रता ते धावतभये ५४ ॥

घनाक्षरी ॥ चल्योहनुमानसुनियातुधानकालनेमि प-ठयोसोमुनिभयोपायोफलछलिकै । सहसाउखारोहैपहार बहुयोजनको रखवारेमारेभारेभूरिभटदलिकै । वेगबल

साहससराहतकृपालराम भरतकीकुशलअचललायोच-
लिकै । हाथहरिनाथकेबिकानेरघुनाथजनु शीलसिन्धु
तुलसीशभलोमान्योभलिकै ५५ ॥

सजीवनमूरि हेतु हनुमान्जी चले सो हाल सुनिकै यातुधान रावणने कालनेमिको पठायो सो मुनिवनिकै छले ताको फलपाये भाव हनुमान्जी छल जानिगये तुरतही मारिडारे जब द्रोणागिरि लेनलगे तहाँ इन्द्र के रखवार रहे ते मनाकिये तिनको हनुमान्जी मारे ते इन्द्रको खबरिदिये ते भारी भट बज्रत धाये तिनको दलिकै बज्रयोजनको पहाड़ उखारिलिये सहसालैकै शीघआइगये इत्यादि शीघ्रताको बल इन्द्रके रखवारन को जीते इत्यादि साहस कहे बीरताको बल इत्यादि दोऊ भांति के बल की प्रशंसा कृपालु श्रीरघुनाथजी करिकै कहत कि भरतकी कुशल औ अचल जो पर्वत दोऊको हनुमान्जी चलिकैलाये हरिनाथ जो हनुमान्जी तिनके हाथ रघुनाथजी मानहुं बिकाइगये काहे ते तुलसीके ईश शील समुद्रहैं ताते भलीभांति ते हनुमान्जी को भलो सेवककरि माने यामें कृतज्ञगुण देखायोहै ५५ ॥

बापदियोकाननभोआननशुभाननसों बैरीभोदशानन
सोतीयकोहरणभो । बालिबलशालिदलिपालिकपिराज
कै विभीषणनिवाजिसेतुसागरतरणभो । घोररारिहेरि
त्रिपुरारिविधिहारेहिय घायललषणवीरवानरबरणभो ।
ऐसेशोकमेंत्रिलोककैबिशोकपलहीमें सबहीकेतुलसीके
साहबशरणभो ५६ ॥

राज्यदेनेको कहि पिता बनबास दियो सो अशुभता मनमें न व्यापी आनन शुभानन भयो मंगलमय सुखचन्द्र

प्रसन्न बनोरहो ताहमें त्रिलोकविजयी दशानन ऐसो बैरीभयो जा बैरते श्रीजानकीजीको हरणभयो ऐसेहू शोक में धीरज न गयो महाबलवान् बालिकोमारि शरणागत सुग्रीवको पालि कपिन को राजा कियो औ शरणागत विभीषण को निवाजे लंकानायक कियो दुस्तर समुद्र में सेतु बांधि उतरे लंका में घोरयुद्ध देखि शिव ब्रह्मा हृदयमें हारिमाने कि रावणको जीतनो दुर्घट है काहेते लक्ष्मण ऐसे बीर घायल ह्वै वानर बर्ण भये यथा वानर घायलपरे तथा भये अथवा घायल ह्वै जौन बर्ण लक्ष्मण जी भये ताही बर्ण सब वानरबीर अधीर ह्वैगये तातें त्रिलोक शोकितभयो ऐसे शोकमें त्रिलोक को पलहीमें श्रीरघुनाथजी विशोक कियो भाव सजीवनमूरि मंगाय लक्ष्मणजीको जिआय पुनः रावणको मारि विभीषण को राज्यदै सबको अभय करिदियो ऐसे तुलसीके साहब श्रीरघुनाथजी सबके शरणपाल भये यामें धृति शरणपाल गुणहै ५६ ॥

कुम्भकरणहन्योरणरामदल्योदशकन्धरकन्धरतोरे।
पूषणबंशविभूषणपूषणतेजप्रतापगरेअरिओरे । देवनिशानबजावतगावतधावतगोमनभावतभोरे । नाचतबानर भालुसबैतुलसीकहिहारेहहाभैयाहोरे ५७ ॥

कंभकर्णको रणमें मारे कंधर कहे ग्रीवातोरि रावण को दले पूषण सूर्यबंशके भूषण पूषण श्रीरघुनाथ सूर्यन के तेज प्रतापते बोर कहे आशमानी पत्थर सम अरि रावणादि गरि कहे गलिगये तातें आनंदहूं देवता निशान बाजा बजायकै नाचत हैं काहेते रावण को भय करिकै भागतरहैं सो धावतगो अर्थात् भगिहल मिटी तातें परस्पर कहत कि हेरेभाइउ अब मनभावत भयो गोसाईं जी कहत कि वानर भालु सब नाचतहैं अरु जे निशाचर

बाकी रहे तिनसों व्यंग निरादर कहत कि भैया हारे हारेहारे ऐसाकहि हाहायकै हंसतहैं ५७ ॥

मारेरणरातिचररावणसकुलदलअनुकूलदेवमुनिफूल बर्षतुहैं । नागनरकिन्नरबिरञ्चिहरिहरहेरि पुलकशरीर हियहेतुहर्षतुहैं । बामओरजानकीकृपानिधानकेबिराजैंदे-खतविषादमिटमोदसरसतुहैं । आयसुभोलोकनिशिधारे लोकपालसब तुलसीनिहालकैकैदियेसरखतुहैं ५८ ॥

रातिचर राक्षसन को दल कुलसहित रावण को मारे ताते अनुकूल कहे प्रभुकी ओर मन सन्मुख करिकै इन्द्रा-दि देव अरु मुनि प्रभुपै फूलनकी बर्षा करतेहैं नाग जे पातालबासी नर जे मर्त्युलोकबासी किन्नर जे स्वर्गलोक बासी औ ब्रह्मा बिष्णु शिवादि के मनमें हर्षभयो ताहेतु ते प्रभुको निरखि प्रेमते देह पुलकि आई काहेते कृपा-निधान जो श्रीरघुनाथजी तिनके बामओर श्रीजानकीजी बिराजमान देखत सबके मनको बिषाद मिटिगयो ताते सब के मनमेंमोद सरसत कहे बाढ़तभयो गोसाईंजी कहत कि अभयको सरखत कैकै सबको निहालकिये कि अब तुमको काहूकी भयनहींहै आनन्दते आपने घरमें बसौ ऐसो आयसु श्रीरघुनाथजी को भयो ताको सुनि जयजयकार करिकै सब लोकपाल अपने अपने लोकनको सिधारेपुट॥ सवैया॥ पुरटालयपादपकल्पसुमूल सिंहासनरत्ननभानुसमः । सुख दाखित भूषणभूषणवंश प्रकाशकनाशक शोकतमः । गहि चामरकुचसखाचङ्घा कृबिसिंधुकथंनरबक्तुक्षमः । मनुजो जभवार्चितश्रीचरणं नितजानकिजानकिनाथनमः १ ॥ इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणागत वैजनाथ बिरचिते कवित्तरत्नदीपिका टीकायांलंका काण्डस्संपूर्णं ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

## उत्तरकाण्ड ॥

---

पीतांबरतडिद्दामं श्यामवर्णकलेवरं ॥
कृपावारिधरंरामं वंदेचैतापनाशनं १ ॥

कवित्त ॥ देवनकीभीति सहलोकनअनीति मेटिआये रणजीतिलिय साथखासदासनै। बाजतनिशानपुरधूमआश्रमानदेव साजिकैविमानआयअग्रमाकशासनै। छचचमर व्यजनअनुजलियबैजनाथ वेदगानसोहतसुदीपछत्रवासनै। राजनकेराजमहाराजराजारामचन्द्र जानकीसमेतआशु राजतसिंहासनै ॥

बालिसेबीरबिदारिसुकण्ठथप्योहर्षेसुरबाजनेबाजे।
पलमेंदल्योदाशरथीदशकन्धरलङ्कविभीषणराजबिराजे।
रामसुभावसुनेतुलसीहुलसेअलसीहमसेगलगाजेकायर
कूरकपूतनकीहदतेऊगरीबनिवाजनिवाजे १ ॥

बालिऐसे महाबली बीरको बिदारि कहे मारिकै सुकंठ सुग्रीवको थाप्यौ भाव कपिनायक कियो पीछे यों जानकीजीकी खबरिलेने को भूलिगये ताहूपर प्रभुदयाल बनेरहे काहेते जनको अवगुण प्रभुदेखते नहीं यह सुहृदता गुण है यथा॥ जेहिजनपरममताअरुछोहू। तेहिकरुणाकरकीननकोहू ॥ प्रमाणभागवते हनुमद्वाक्ये ॥ नजन्मनूनं महतोननसौभगं। नवाङ्नबुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः॥तैर्यद्विसृष्टानपिनोवनौकसः। वकारस्त्वेवतलक्षणाग्रजः १ ॥ ऐसो सौहर्दतागुणके बलते सुग्रीवको हालसुनि देवता हर्षित ह्वै बाजाबजाये अभिप्राय याकि पीछेभूलिजानो देवतनहूं

को स्वभावहै पुनः प्रभुरावण को पलही में दलिकै लंका की राज्यपर बिभीषणको बिराजमान किये अर्थात् शत्रु को भाई राक्षस घरते निरादर ह्वैकै शरण आयो ताको सखामानिमिले पुनः लंकनायक किये यह सौशीलतागुण प्रभुकोहै यथा ॥ कोटिबिप्रअघलागैजेही । आयेशरणतजौं नहिंतेही॥ प्रमाणभगवद्गुणदर्पणे ॥ शोणितोत्सिक्तसर्वांगं क्रव्यादंचजटायुषं॥अंकमारोप्यपप्रच्छसंचस्कारगतंनृपः १ ॥ ताते जे राजसी स्वभाववाले आलसीहैं ते सौहर्दगुणको सुमिरि झलसे हृदयमें आनंदभये गोसाईंजी कहतहैं कि जे हम ऐसे मलीनहैं ते प्रभुको सुशीलता गुणके बलतेगल कहे खुशी ह्वैकै गर्जतभये काहेते कायर कहे जे भक्ति क्रिया में कादरहैं राजसी स्वभाव वाले कामाशक्त इन्द्रादि औ क्रूरकहे छली मारीचादि औकपूतकहे जे पिताको धर्मत्यागै यथारावणादि ऐसनहूंको गरीबनिवाज श्रीरघुनाथजी निवाजेकहे स्वधामदियो १ ॥

वेदपढ़ैविधिशम्भुसभीत पुजावनरावणसोनितआवैं । दानवदेवदयावनेदीन दुखीदिनदूरहितेशिरनावैं । ऐस्यहुभागभगेदशभालते जोप्रभुताकबिकोबिदगावैं । रामसे बामभयेत्यहिबामहि बामसबैसुखसम्पतिलावैं २ ॥

जा रावण के समीप सडरह्वैकै ब्रह्मावेद पढ़िबेहेतु आवतहैं अभिप्राय कि प्रपौच दूसरे आशीर्वादीयहिमयाते वेद सुनावत जामें धर्म पर मनआवै अरु कुमार्गी बली जानिडरत हैं अरु महेश सभीत सदापुजावन हेतु जात जामें शीश अब न काटै औ देवता दानव दयावने कहे रावणकी दयाके प्यासतेदीनहैं ताते दिनकहे अतिदुखीह्वै दूरिहीते शीशनावत जामें राजीरहै ऐसीभारी भाग्य रावणकी एक ठौरकोकहै दशौमाथनमें दशठौर ब्रह्माकी लिखी सोइरिबिमुखता ते दशौमाथनते भागिगई ऐसी

प्रभुको प्रभुताहै ताको कविकोविद् गावत लोकमें प्रसिद्ध है कि श्रीरघुनाथजी सों बामकहे बिमुखभये तेहिबिमुख जीवको यावत् सुखसंपतिहै सो सबबिमुखह्वै जात यथा ॥ रामबिमुखचातानहिंकोपी । भुजाउठायकहौंप्रणरोपी ॥ प्रमाणरुद्रयामले॥येनराधमलोकेषुरामभक्तिपराङ्मुखाः॥ जपंतपंदयाशौचंधास्त्राणामवगाहनं । सर्वंतृथाबिनायेनशुणुध्वंपार्वतिप्रिये २ ॥

वेदबिरुद्धमहीमुनिसाधु सशोककियेसुरलोकउजार्‌यो औरकहाकहौंतीयहरीतबहूंकरुणाकरकोपनिवार्‌यो। सेवकछोहतेछाँड़िक्षमातुलसीलख्योरामसुभावतिहार्‌यो तौ लौंनदापदल्योदशकन्धरजौलौंविभीषणलातनमार्‌यो ३।

मुनिसाधुन को सशोक कहे दुखदै पापबढ़ाय भूमिको भारकिये औ देवलोक को तौ उजारिही करिदिये ऐसे वेदबिरुदकहे अधर्ममार्गमें चलोताके अवगुण और कहां तक कहौं तीय श्रीजानकीजी को हरिलैगयो तहौं तक प्रभुकोपनेवारे काहेते करुणाकेखानिहैं गोसाईंजी कहतुहैं किहे श्रीरघुनाथजी तिहारो स्वभाव मैं जान्यौ कि सेवकके छोहकहे मयाते क्षमाछांड़ि देतेहौ काहेते जबतक बिभीषण के लातनहीं मास्यो तब तक दशकंधर को दापकहे अहंकार नहीं दल्यो भावजनको दुख नहीं देखिसकत यह करुणा गुणहै ३ ॥

शोकसमुद्र निमज्जतकाढ़िकपीशकियोजगजानतजैसो। नीचनिशाचरबैरीकोबन्धु बिभीषणकीन्ह पुरन्दरऐसो । नामलियेअपनायलियो तुलसीसोकहौजगकौनअनैसो । आरतआरतिभंजनरामगरीब निवाजनदूसरऐसो ४ ॥

बालिके डरते शोक कहे दुखरूप समुद्र में निमज्जत

कहे बूड़त में काढ़िकै सुग्रीव को जा भांति कपिनायक कौन सो रामायण द्वारा सब जानतहैं नीच स्वभाव निशाचर जाति दुष्टपुनः बैरीरावण को बंधु ऐसे बिभीषण को सैसो कहे सो इन्द्रसम ऐश्वर्यवान् कीन्हे गोसाईंजी कहत अपना को कि तुलसी सम अनइस जगतमें दूसरा कौनहै सोऊ प्रभुकी शरणह्वै नामलियो ताहूको प्रभु दुरनही आपन करिलियो ताते आरत जो दुखित ताके दुखको भंजनहार श्रीरघुनाथजी ग़रीबनेवाज हैं दूसरो नहीं है ४ ॥

मीतपुनीतकियेकपिभालुको पाल्योज्योंकाहुनबालतनूजो । सज्जनसींवबिभीषणभोअजहूंबिलसैबरबन्धुबधूजो । कौशलपालबिनातुलसीशरणागतपालकृपालनदूजो।कूरकुजातिकपूतअघीसबकीसुधरैजोकरैनरपूजो ५॥

श्रीरघुनाथजी जैसे चंचल पशुकपि भालुन को प्रविच मिचरि पाले तैसे कोऊ अपने तनते उत्पन्न बालकको नहीं पालतहै अरु प्रभुकी कृपा ते सज्जनता के सींवकहे मर्य्यादा बिभीषण श्रेष्ठ बंधुसम जिनकी सज्जनता बंधुबधू सम अजहूं बिलसतहै भावश्रेष्ठ बंधुबधू सम अजहूं प्रभु पालतहैं गोसाईंजी कहत हैं कि जे पुरबासिन को संग लैपरधामको गये ऐसे कोशल पाल श्रीरघुनाथजी बिना शरणागत पाल कृपाल दूसरा नहींहै ताते चहै कुमार्गी क्रूरहोइ चहै कुजातिहोइ चहै पितातें बिमुख कपूतहोइ चहै पातकीहोइ इत्यादिकर्मनकी संदेह न करौ जोनर प्रभु को पूजौ इष्टमानि शरण आवो तौ सबकी सुधरैगी यामें सौलभ्यता गुणदेखायो है ५ ॥

तीयशिरोमणिसीयतजी ज्यहिपावककीकलुखाईदही है । धर्म्मधुरन्धरबन्धुतज्यो पुरलोगनकीविधिबोलिकही

है।कीशनिशाचरकीकरणीनसुनीनबिलोकिनचित्तरहीहै।
रामसदाशरणागतकीअनखौहीअनैसीसुभायसहीहै ६ ॥

जिन पतिव्रत धर्मरूप अग्निते कलुखाई कछे दाहकता जराई शीतलकरि अग्निमें प्रवेशह्वै कुशल पूर्वक निसरि आईं ऐसी पतिव्रता तियनमेंशिरोमणि जानकीजी तिनको त्यागेउ अरु धर्मधुरीण भक्तनमें अग्रणीय ऐसे बंधु लक्ष्मण जीको त्यागे यामें नैमित्य लीलाहै पुरलोग अवधबासिनको बोलाइ भक्तिदृढ़ता हेतु अनेक सिखावनदियो उत्तर काण्डमें अरु सुग्रीव बिभीषणकी जो करणी भैजाई में रतहोना इत्यादि को रघुनाथजी न सुने न देखे न चित्त में राखे काहेते शरणागतकी अनखौहीं दण्डदेबे योग्य अनैसीमना करिबे योग्य बार्ताकरै ताको श्रीरघुनाथजी सहजही स्वभावते सहिलेते हैं ६ ॥

अपराधअगाधभयेजनते अपनेउरआनतनाहिंनजू ।
गणिकागजगीधअजामिलके गनिपातकपुंजसिराहिंजू ।
लियेबारकनामसुधामदियेज्यहिधाममहामुनिजाहिंनजू।
तुलसीभजुदीनदयालहिरेरघुनाथअनाथनदाहिनजू ७॥

शुद्ध शरणागती श्रीरामनाम को माहात्म्य प्रभु की दीन दयालुता जे अपने उरमें नहीं विश्वास आनत भावजे शरणह्वै प्रभुको नहीं भजत तेईजन अपराधके अगाध समुद्रह्वै गये देखौ गणिका व्यभिचारिणी गज मदांध गीध मांस अहारी अजामील कुमार्गी इत्यादिके पापगने ते नहीं सिराहिं असंख्यरहैं तेऊ बारककहे एकबार नामलीन्हेते प्रभुसुंदर धाममें बासदीन्हे जा धामको अनेकन यत्नकरि महा मुनिनको जाइबो कठिन है सो पतितन को देत गोसाईंजी कहतहैं रे मन ऐसे दीनदयालु श्रीरघुनाथजी को भजु जे अनाथन के सदा दाहिन हैं भाव

दीननको दयाकरि अपन्यो लेतेहैं यह प्रभुकी दयालुता उदारता गुणहै ७ ॥

प्रभुसत्यकरीप्रहलादगिराप्रगटेनरकेहरिखम्भमहाँ ।
झखराजग्रस्योगजराजकृपाततकालविलम्बकियेनतहाँ ।
सुरसाखीदैराखीहैपण्डुबधूपटलूटतकोटिकभूपजहाँ । तु-
लसीभजुशोचविमोचनकोजनकोप्रणरामनरास्योकहाँ८।

महिमा तोरिमाखड्ड खंभमा इत्यादि प्रहलाद की बाणी प्रभुने सांचीकरी अर्थात् महाकराल रूप नरसिंह खंभाफोरि प्रगटे हिरण्यकश्यपको मारे झखराज जो ग्राह जा समय गजराजको ग्रस्यौ पकरिलियो बूड़तमें पुकारकिये तहां तत्काल कहे तुरतही प्रभु कृपाकरिउबारे नेकहू बिलंब नहींकियो जहां कोटिन राजनकी समाजमें दुरयोधन पट लूटतकहे खैंचत में पंडुबधू द्रौपदी की लज्जा राखी भाव चीर बढ़ायदियो इत्यादिको देवता साखीहैं गोसाईंजी कहतहैं कि ऐसे शोच बिमोचन प्रभुको भजु जनको प्रण श्रीरघुनाथजी कहांनहीं राखते हैं यामें भक्त प्रतिज्ञा पालगुणहै जासमय गोसाईंजी की रुचिबिचारि कृष्णचन्द्र धनुर्धारी भये ता समय को यह कवित्तहै ८ ॥

नरनारिउघारिसभामहँहोतदियोपटशोचहर्योमनको।
प्रहलादबिषादनिवारणबारण तारणमीतअकारणको ।
जोकहावतदीनदयालसही ज्यहिभारसदाअपनेप्रणको ।
तुलसीतजिआनभरोसभजैभगवानभलोकरिहैंजनको९॥

नर अर्जुनकी नारी द्रौपदी सभा में उघारिहोत में पटबढ़ाय दैकै वाके मनको जो शोच लाज जाबेको सो हरिलियो प्रहलादके मनको बिषाद के निवारण हार बारणकहे गजके तारणहार ऐसे अकारण कहे बिनाप्र-

योजन के मीत प्रभु जे सांचे दीनदयालु कहावतहैं जिनको अपने प्रणको पूरा करिबेको भारहै ताते और को भरोसेा छाड़िभजै ता जनको भगवान् भलोकरिहैं सदा भगवान् कहे षट् ऐश्वर्ययुक्त रामरस्त यथा महारामायण॥ ऐश्वर्येनचधर्मेणयशसाचश्रियैवच ॥ वैराग्यमोक्षषट्कोयः संजातेभगवान्हरिः ९॥

ऋषिनारिउधारिकियोशठकेवट मीतपुनीतसुकीर्त्ति लही। निजलोकदियोसवरीखगको कपिथाप्योसोभालु महैसबही । दशशीशबिरोधसभीतबिभीषण भूपकियो जगलीकरही । करुणानिधिकोभजुरेतुलसी रघुनाथअनाथकेनाथसही १० ॥

ऋषिनारि अहल्याको शापते उद्धारकियो शठ मूर्ख केवट नीचजाति निषादको मीतकरि पुनीतकहे पवित्र कियो जाने सुकीर्तिलही संसारमें सुंदर कीर्तिपाई सबरी औ खगकहे गीधइनको अपनो धामदियेकपिसुग्रीव को थाप्यो कपिनायक कियो सेा सबजग जानतहै दशशीशके बिरोधते भीत कहे डरायके शरण आयो ता बिभीषणको लंकाको भूपकियो जाकी लीककहे निशानी रामायणमें कथासदावनीरही गोसाईंजी कहत हैं कि रे मन ऐसे करुणानिधि को भजु औरघुनाथजी अनाथन के नाथ सहीकहे सांचेहैं यह प्रणतपाल गुणहै १० ॥

कौशिकबिप्रबधूमिथिलाधिप केशवशोचदल्योपलमा है। बालिदशाननबन्धुकथा सुनिशत्रुसुसाहबशीलसरा है। ऐसीअनूपकहैतुलसी रघुनायककीअगुणीगुणगाहै। आरतदीनअनाथनको रघुनाथकरैनिजहाथनछाहै ११॥

कौशिक जो बिश्वामित्रकी यज्ञ पूर्णकरे बिप्रबधू अ-

इत्यादिको आपते उद्धारकिये धनुषतोरि मिथिलाधिपको प्रणराखेउ इत्यादि सबके शोचपलक मात्रमें दले बालि दशानन के बंधु अर्थात् सुग्रीव बिभीषण को अकंटक राज्यदियो इत्यादि कथा सुनि सुसाहब श्रीरघुनाथजीको शीलमयी स्वभावकी सराहना शत्रुभी करतेहैं यथा कुम्भ कर्णकहै ॥ श्यामगातशरसीरुहलोचन ॥ देखौजाइतापत्रै मोचन ॥ बंधुबंशतैंकीनउजागर । भजेऊरामशोभासुखसागर ॥ अगुणी कहे गुणरहितनके गुणन को ग्राही यथा बानर चटुल चंचल पशु यथा ॥ प्रभुतरुतरकपिडारपर ते कियआपुसमान॥ पुनः येसबरुखासुनऊसुनिमेरे ।भयेसमरसागरकेबेरे ॥ ऐसो गुण रहितनके गुणग्राही बिरुदावली श्रीरघुनाथजीकी ताको तुलसीदास अनूप कहतेहैं समता योग्य दूसरो नहींहैं काहेते आर्त जे दुखितहैं यथा गज द्रौपदी दीन जे ग़रीबहैं यथा सबरी कोलभिल्लादि अनाथ जिनके दूसरो नाथ नहीं है यथा सुग्रीव बिभीषण इत्यादि पै श्रीरघुनाथजी अपने हाथन छांहीकरत जामें कोई आंच न लागै जैसे अंबरीष ११ ॥

तेरेब्यसाहेब्यसाहतऔरनि औरब्यसाहिकैबेचनहारे । ब्योमरसातलभूमिभरेनृपकूरकुसाहबसेतिहुंखारे । तुलसीत्यहिसेवतकौनमरैरजतेलघुकोकरैमेरुतेभारे। स्वामिसुशीलसमत्थसुजानसोतोसोंतुहींदशरत्थदुलारे १२॥

तेरे ब्यसाहे कहे दया वित्तदै जिनको मोललिये भाव जिन जीवनको शुद्धकरि भक्तिमें आरूढ़करे ते औरन को शुद्धकरत यथा॥ नारद उपदेशदै यथा भरत ॥ जोनहोत जगभावभरतको । अचरसचरचरअचरकरतको ॥ इत्यादि अपनोभाव देखाय और को भावीक करत औ और जे ब्रह्मादि देवता हैं ते ब्यसाहिकै बेचनहारे हैं भाव प्रथम अपनोमानि बरदानदियो पीछे जैसो कर्म करै तैसो फल

औरनके हाथ दिवायो यथा हिरण्यकश्यप रावण भस्मासुर ताते देवतादि जे स्वर्गमेंहैं नागादि जे पातालमें राजादि जे भूमिमेंहैं इत्यादि त्रैलोकमें भरेहैं ते क्रूर कहे कपटी कुसाहबहैं तैसे तिन्हंको खारे बनेरहत भाव हथा क्रोधित रहतहैं गोसाईंजी कहतहैंकितिन कुसाहबनको सेवाकरि क्रोध सहिसहि को मरै काहेते रजते लघुजीवनको मेरुतेभारी कौन करि सकतहै यथा बाल्मीकि निषाद सबरी गीधादि तुच्छजीव जिनकी कृपाते महान भये ऐसे स्वामी सुशील जे नीच ऊंच नहीं बिचारत सबरी के जूठे फल खाये गीधको अंकोरा में बैठारे समत्थ कहे जे बालि रावणको मारि सुग्रीव बिभीषणको थाप्यो अथवा निषादादिके पाप नाशकरि सुद्धती करिदियें सुजानकहे चतुर इत्यादि गुणसहित हे दशरथदुलारे तेरे समानतुहीं है दूसरा नहींहै १२ ॥

यातुधानभालुकपिकेवटबिहंगजोजो पालोनाथसद्यसोसोभयोकामकाजको । आरतअनाथदीनमलिनशरण आये राखेअपन्यायसोस्वभावमहाराजको । नामतुलसी पैभोंड़ेभागतेकहायोदास कियेअंगीकारऐसेबड़ेदगाबाजको । साहबसमर्थदशरत्थकेदयालदेव दूसरोनतोसों तुहींआपनेकिलाजको १३ ॥

यातुधान विभीषण भालु जामवान कपि सुग्रीवादि केवट निषादादि बिहंग जटायु इत्यादि हेनाथ जिनजिनको पाले सोसो सद्य कहे तुरतही तुम्हारो काम करिबे योग्य ह्वैगयो भाव सबआश भरोसाछांड़ि शुद्ध शरणागती धर्मपर आरूढ़ह्वैगये आर्तगजादि अनाथ सुग्रीवादि दीन सबरी आदि मलीन कोलभिल्लादि जे जे शरण में आये तिनको आपन बनाय शरण में राखे ऐसो कृपाशीलमयी

शरणपाल स्वभाव महाराज कोहै यथा ॥ कोटिबिप्रवधलागहिंजेही । आयेशरणनत्यागउंतेही ॥ सनत्कुमार संहिता यों ॥ सत्यसंधंनितक्रोधंशरणागतवत्सलं ॥ सर्वक्लेशापहरणंविभीषणवरप्रदम् ॥ गोसाईंजी कहतहैं कि मविच पूज्य तुलसीऐसो मेरो नामहै अरु कर्मनते अपूज्य अपावन मांग सम भोड़ो कहे अपावन हौं ऐसो बड़ो दगाबाज मोको प्रभु अंगीकार कीन्हेउ ताते मोहूं तुलसी दास कहायों हैं दशरथके सुवन समर्थ साहब तुमसम दयालुदेव दूसरो नहींहै अपने शरणागत की लाज को राखनहार तोसों दूसरोंहै १३ ॥

महाबलीबालिदलिकायरसुकंठकपि राजकियेमहाराजहौंनकाहूंकामको । भ्रातघातपातकीनिशाचरशरण आये कियेअंगीकारनाथयेतेबड़ेबामको । रायदशरत्थके समर्थतेरेनामलिये तुलसीसेकूरकोकहतजगरामको । आपनेनिवाजेकीतौलाजमहाराजको सुभावसमुझतमन मुदितगुलामको १४ ॥

बालि ऐसे महाबलीको दलिकै महाराज श्रीरघुनाथ जी कादर सुग्रीव जो काहूकामको नहीं ताको कपिराज कियो औ भ्राताके घातकी इच्छा जाके मनमें ऐसो पातकी जाति निशाचर येतो बड़ो बाम कहे कुटिल बिभीषण शरणआये ताको रघुनाथजी अंगीकारकीन्हे हैमहाराज दशरथसुवन समर्थ तुम्हारे नामकेलिये ते तुलसी ऐसे कूर को सब जग रामदास कहत ताते महाराज श्रीरघुनाथ जीको अपने निवाजेकी सदालाजहै ऐसोस्वभाव समुझत गुलाम तुलसीदास मनमें मुदितहै १४ ॥

रूपशीलसिंधुगुणसिंधुबंधुदीनको दयानिधानजानमणिवीरबाहुबोलको । श्राद्धकियेगीधकोसराहेफलसव-

रीकेशिलाशापशमननिबाह्योनेहकोलको । तुलसीउराउ होतरामकोसुभावसुनि कोनबलिजाइनबिकाइबिनमोल को । ऐसेऊसुसाहबसोंजाकोअनुरागनसो बड़ोईअभागो भागभागोलोभलोलको १५ ॥

श्रीरघुनाथ को रूप गुणन को समुद्र है तामें ते कछु कणमात्र लिखत क्रमालंकार ते यथा प्रभु शीलसमुद्र हैं याते नीच खग गीधकी आदुकिये नीच दीन मलीननको अपनो बनाय बड़ाई देना यह सौशील गुणहै प्रभुमें यथा भगवद्गुणदर्पणे ॥ हीनैर्दीनैर्मलीनैश्चवीभत्सैःकुत्सितैरपि ॥ महतोऽच्छिद्रसंश्लेषं सौशील्यंविदुरीश्वराः॥ पुनःदीनबंधु हैं याते दीन सबरीके फलनकी प्रशंसाकरे तहां ब्राह्मणादि वर्णको विचार बिना ज्ञानादिके साधनबिना गुण अवगुण बिचार बिना अपनो करिलेना यह सौहृद गुण है यथा भागवते हनुमानवाक्यम्॥ नजन्मननंमहतोनसौभगं न वाङ्नबुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः तैर्यद्विसृष्टानपिनोवनौकसश्चकारसख्येवतलक्ष्मणाग्रजः ॥ पुनः दयानिधान हैं याते शिलाशापको शमनकरे नाश करि अहल्याको दिव्य देह बनाये तहां बिना प्रयोजन अकारण प्रीतिकरना यह दयागुणहै सनत्कुमार संहितायां ॥ त्रैलोक्यनाथंसरसीरुहाक्षंदयानिधिंद्विदबिनाशहेतुं ॥ पुनः जान मणि करे सुजाननमें शिरोमणिहैं याते कोलभिल्लनको नेह निबाहे अर्थात् उनकीबोलीमें बातचीत करत यह चातुर्यता गुण है कि प्रभु सबकी भाषा समुझत यथा भगवद्गुणदर्पणे ॥ कीशानाभाषयारामःकीशेष्वयदेशिकः ॥ भल्लराक्षसपक्षेषुतेषांगीर्भिस्तथैवसः १ अन्यान्यदेशभाषाभिस्तत्तैवव्यवहारकः ॥ सर्वचतुरोरामःपारसीमपिपेठिवान्२ भूतप्रेतपिशाचानांभाषाविद्राघवःप्रभुः ॥ दैत्यदानवनागानांभाषाभिज्ञोरघूद्वहः ३ गीर्वाणवाणीनिपुणोरामस्तंप्रणतंसदा ॥

कीटपक्षिपतंगानांकृतज्ञोरसिकोपिसः ४ महाशाकुनिकोरामःसमुद्रागमपारगः ॥ ग्रामारण्यपशूनांचभाषाभिज्ञव्यवहारवित् ५ पुनः जाको बाहकहे भरोसादै जो बोल बोलत ताके निबाहबेमें बीरहैं हर्षसहितपूराकरत यहवीर्य गुणहै यथा ॥ त्यागबीरोदयाबीरोविद्याबीरोविचक्षणः ॥ पराक्रममहाबीरोधर्मबीरःसदाव्रतः १ पंचबीराःसमाख्याताराम एवसपंचधा ॥ रघुबीरोद्रुतिख्यातिःरूर्बबीरोपलक्षणः २ ऐसा स्वभाव श्रीरघुनाथजी को जानि तुलसीऊ रावरेात भाव मन आनंद होत जा सुभाव को सुनि बिना मोलको बिकाइकै को न बलिजाइ ऐसेहू सुसाहब सों जाको अनुराग नहीं भाव प्रभु के प्रीति रंगमें जाको मन नहीं रंगिगयो ते बड़े अभागीहैं काहेते विषयलोभते मनलोलकहे चंचलहै तातेउनकीभाग्य भागिगईहै १५ ॥

शूरशिरताजमहाराजनिकेमहाराजजाको नामलेतहीं सुखेतहोतऊसरो। साहबकहाजहानजानकीशसोसुजान सुमिरेकृपालकेमरालहोतखूसरो । केवटपखानयातुधान कपिभालुतारेअपनायोतुलसीसोधींगधमधूसरो । बोल कोअटलबाँहकोपगारदीनबंधु दूबरेकोदानिकोदयानिधानदूसरो १६ ॥

याकवित्त विषे तीनिचरणके पांचपांच विशेषण क्रम ते लागत चौथे चरणके विशेषण विपरीतिते लागत अंत आदिमें यथा अंतमें जो पदहै कि दूसरो भाव दूसरो नहींहै एक रघुनाथही शूर शिरताजहैं यह सौयगुण प्रभु को स्मरण कीन्हेते यमराजके दंडकीभय अरु कामादिकी विन्नता आपही नाशहैकै जीवशुद्धहैकै प्रभुमें लागत यथा भगवद्गुणदर्पणे ॥ अगणितपापानस्मरान्भगवदेव शरणानपि यमोदंडयिष्यतीतिनिद्रतिर्भगवतऐश्वर्याद्यपरपर्य्या-

यशौदार्यगुणानुसंधानफलं ॥ सोशौर्य्य गुण ते प्रभु केवट को अपनाये अर्थात् जो समूह पाप रहैं ता हेतु यमदंडकीभय सों औ कामादिकी विघ्नता सों सब क्षणमें प्रभु नाशकरि दीन्हे शुद्ध ह्वै सबभये अरु महाराजनके महाराज कहे यावत् भगवानके रूपहैं तिनकेपरे श्रीरामरूपहै जातेदया निधानहैं सबके रक्षकहैं यथा मंत्रार्थे ॥ जानक्यासहदेवे-शो रघुनाथोजगद्गुरुः ॥ रक्षकःसर्वसिद्धांतवेदांतेषुप्रगी-यते १ ताही दया गुणते प्रभु पषाणते अहल्याकी दिव्य देहकरी पुनः जिनप्रभुको नाम लेतही जो ऊसर है जिन के उरमें काहू सुकृति को बीज नहीं जामत तेऊ सुखेत होत भाव सबसुकृतिको फल परे धामको अधिकारी होत यथाविष्णुपुराणे ॥ अवशेनापियन्नाम्निकीर्तितेसर्वपा-तकैः ॥ पुमान्विमुच्यतेसद्यस्सिंहत्रस्तमृगैरिव ॥ पद्मे यथा ॥ सकृदुच्चारयेद्यस्तुरामनामपरात्परं ॥ शुद्धांतःकरणोभूत्वा निर्वाणमधिगच्छति १ यहप्रताप गुण दूबरे को दानि है याही गुणते प्रभु बिभीषण को अपनाये तहां ऊसर सम निशाचरजाति सो नामलिहे सुखेत सो भागवतभयो औ घरते निरादर दीन दूबर सो लंकनायकभयो और दूस-रो जहानमें नहींहै एक रघुनाथहीजी साहब कहे शर-णागत पालिबेको बीर यथा ॥ त्यागवीरोदयावीरोविद्या वीरोविचक्षणः ॥ पराक्रममहावीरोधर्मवीरःसदाव्रतः १ पंचवीराःसमाख्यातारामंयेवसपंचधा ॥ रघुवीरोद्भुतिख्या तिःसर्ववीरोपलक्षणः २ इत्यादि बाहको पगार कहे जा को भरोसादेत ताको निर्बाह करत यहि बीरता गुणते प्रभु सुग्रीवको पाले कि महाबली बालिको मारि सुग्रीव को कपिराजकीन्हे औ सुजान दूसरानहीं है एकजानकी-यही सुजान कहे चतुरहैं जो सबकी भाषा समुझत यह प्रमाण पूर्वके कवित्तमें लिखीहै सबकीभाषामें बातकरत ऐसे दीनबंधुहैं सो दीनबंधु सुजानता गुणते कपिभालुनको पालेदीन पशुनको सखाबनाये चतुरता गुणते उनकीबोली

समुझत औ अटल कहे अचलहै जिनको बोल यथा ॥ रामो मिथ्यानभाष्यं ते ऐसे कृपालुको स्मरण करतेही खूसटसम अपावन कुद्रूपी सोऊ हंससम विवेकी पावन होत यथा तुलसी धींग कहे कुमार्गी धमधूसर मूर्ख खूसटसम ताहू को अपन्याय हंससम पावनकरे १६ ॥

कीबेकोबिशोकलोकलोकपालहूतेसब कहूंकोऊभोन चरवाहोकपिभालुको । पबिकोपहारकियोख्यालहीकृपालुराम बापुरोबिभीषणघरौंधीहुतेबालको । नामवोटलेतहीनिखोटहोतखोटेखल चोटबिनमोटपाइभयोननिहालको । तुलसीकिबारबड़ीढीलहोतशीलसिंधु बिगरी संवारिबेकोदूसरोदयालको १७ ॥

इन्द्रादि लोकपालऊते कही बनेरहे लेकिन रावण रूप शोकको मिटाय लोकको विशोक कहे सुखी कोऊ न करिसकेउ औ सौभाविकमें चंचलपशु कपि भालु तिनको चरवाहोकहे सुमार्गमेंकोऊ न लगाइसक्यो औ बिभीषण बापुरो बालज्ञान कैसो बनायो धूरि कैसो घरौंदा निर्बल ताको ख्यालहीमें कृपालु श्रीरघुनाथजी पबि कहे बज्रसे पोढ़ो पहार सों अचलकियो यथा ॥ करऊकल्पभरि राज्यतुम ग्वहिंसुभिस्यऊममममाहिं ॥ पुनिममधामरिधास्यऊ जहांसंतसबजाहिं ॥ जो तांबादि चांदी के भीतर होत ताको खोटा कहत यथा बानरन में चंचलताहै जो चांदी तांबा मिलोहै ताको खल कही यथा राक्षसनमें बेकारता जीवमें मिलीहै तहां चहै खोटाहोइ चहै खल होइ जापर प्रतापीराजाको टकसारी सिक्का नामांकित होत ता नामकी ओटते खरेकी जगह पर चलत तैसेही खोटेखल प्रभुकेनामकी ओटहोतही निखोटेकहे खरेहोत अरु चोट बिनालागे भाव कर्म ज्ञानादि साधन बिनाकीन्हे

मोट कहे भक्ति मुक्ति पाइ कोनहीं निहालभयो ताते बिगरीको सुधारिबेयोग्य दूसरो दयालु नहींहै हे शीलसिंधु श्रीरघुनाथजी अब तुलसीकी बारको बड़ोढील होती है भाव जलदी क्यों नहीं अपन्यावतहौ १७ ॥

नामलियेपूतकोपुनीतकियेपातकीश आरतनिवारोप्रभुपाहिकहेपीलकी । कुलिनकीकौडीसोनिगोड़ीकोटी जातिपाँति कीन्हीलीनआपुमेंभामिनीभोंड़ेभीलकी । तुलसीओतारिबोबिसारिबोनअंतमोहूं नीके हैंप्रतीतिरावरे सुभावशीलकी। देवतौदयानिकेतदेतदादिदीननकी मेरी बारमेरेहीअभागनाथढीलकी १८ ॥

पातकीश महापापी अजामील पुत्रकोनाम हरिसंबंधी मृत्युसमय कहे ताहूको पुनीत करि परेधामको पठायो पील गजराज पाहि कहे किमैं शरणहौं ताहूको आरत जो ग्राहपकरेको दुख ताको प्रभु निवारे मिटाइदिये औ सबरी जो कुलिनकी कौड़ी कहे बेटी भाव काहू सुकृतिनकी नहींहै पुनः निगोड़ी निकाम जाको जूठे अनूठेको ज्ञान नहींहै पुनः कोटीजाति ताहू में पांति रहित अर्थात् भीलनकी पांतिते निसरि ऋषिके यहां आई तहां अपर ऋषिनत्यागे ताते दोऊपांतितेगई औ भोड़ी जाति भीलकी स्त्री भीलिनि सबरी ताहूको प्रभु आपु में लीन कीन्ही ऐसो शीलमयी स्वभाव रावरे कोहै ताकी मोको प्रतीतिहै कि तुलसीऊको तारिबो बिसारिबो न अंत में तुलसिऊको तारिहौ काहेते देव जो श्रीरघुनाथजी कृपा के निकेत कहे स्थानहैं ते दीननकोदादि देतेहैं भाव कोऊ अघ सतायो सभीत दीनह्वै जो शरणआयो ताको दुख प्रभु मिटाये गोसाईंजी कहत कि मोको कामादि अघ सतावत सो दुख निवारिबेको प्रभु ढील किहेहैं सो मेरी

अभाग्यते तहां अपनोदोषप्रभुके गुणसमुझि भरोसा राखन यहभक्तनको लक्षणहै यथा ॥ गुणतुम्हारसमुझैनिजदोसा। ज्यहिसबभांतितुम्हारभरोसा ॥ याते गोसाईंकहे हैं १८ ॥

आगेपरेपाहनकृपाकिरातकोलनीकपीश निशिचरअपनायेनायेमाथजू। साँचीसेवकाईहनुमानकीसुजानराय ऋणियाकहायेहौंबिकानेताकेहाथजू। तुलसीसेखोटेखरे होतवोटनामहीकी महँगीमाटीमगहूकीमृगमदसाथजू। बातचलेबातकोनमानिबोबिलगबलि काकीसेवारीझिको निवाजोरघुनाथजू १९ ॥

याकबित्तविषे व्यंगबचननमें स्तुतिहै यथा मार्गजातमें आगेपरिगई तातें पाहन अहल्याको पवित्रकीन्हे किरात औ कोलनी सबरीको कृपाकरि अपनायो कपीश सुग्रीव निशिचर विभीषण तिनको माथनायेते अपनाये भाव इन काहूते कुछु काम नहींबनो अपनेहीओरते कृपाकरे एक हनुमान्जीकी सांची सेवकाईहै ताको सुजानराय श्रीरघुनाथजी कछु देबे नहीं कीन्हे किंतु ऋणिया कहाय ताके हाथबिकाने यथा ॥ सुनुसुततोहिंउरिणमैंनाहीं ॥ तातें आपके नामके ओट होतही जे खोटे तुलसीऐसे तेऊ खरे होत यथा मृगमदके संग मगकी माटी महँगीहोत अर्थात् जहां कस्तूरी गिरिपरत ताकोउठावत माटी साथमें लागि आवत सो राहकीमाटी कस्तूरी के साथ महँगी बिकातहै तैसे आपके नामकेओट खोटेजीव पावनहोतहैं बातपरेपर बात कहीजात ताको बिलगकहे बुरा न मानब मैं बलिजाउं हे श्रीरघुनाथजी काकी शुद्ध सेवकाई देखि काको निवाजे अर्थात् जाको निवाजे ताको अपनी ओर ते कृपा करि निवाजे भाव अकारण कृपाकरि सबखदेत जो शुद्धहै सेवा करत ताकेहाथ आपु बिकाइजात यह व्याजस्तुतिहै १९ ॥

कौशिककीचलतपषाणकीपरसपाइं टूटतधनुषबनि-
गईहैजनककी । कोलपशुसवरीबिहंगभालुरातिचर रति-
नकेलालचिनप्रापतिमननकी । कोटिकलाकुशलकृपाल
नतपालबलि बातहूकितेकतृणतुलसीतनककी । राय
दशरथकेसमर्थरामराजमणि तेरेहेरेलोपैलिपिबिधिहून-
णककी २० ॥

कौशिक की चलत कहे विश्वामित्र की बाइसते प्रभु पदरज परसेते पाषाण अहल्याकी बनिगई जानकीजीके हेतु धनुषतूरे यातें जनकजीकी बनी भाव प्रणरह्यो भगवत् संबंधी भये पुनः कोल भिल्लपशु जो मृगरूप मारीच बिहंग जो जटायू ऋक्ष बानर सुग्रीव यातुधानादि रातिचर बिभीषणादि तेतबरक्तिनके लालची भावलौकिक सुख दुर्लभ रहै तिनको मनन सुखकी प्राप्तीभई भावलोक परलोक दोऊ सुखसमूह पाये इत्यादि जोजौन भांतिचाही ताको तैसही सुखदीन्हेउ यातेकोटिन कलामें कुशल कहे सब भांतिते सुजान औ कृपाल नत जो नम्रताके पालनहार ऐसे समर्थ आपु तहां बलिजाउं तृण समतनक तुलसीके तारिबे की केतिक बातहै राजन में शिरोमणि महाराज दशरथ के समर्थ पुत्र तेरे कृपादृष्टि हेरेते बिधि ऐसे गणक जे काल कर्म स्वभाव समुझिकै भाग्याभाग्य लिखत हैं ऐसी ब्रह्माकी लिखीलिपि जो पांति सोऊ लोपतकहे मिटिजात है भाव जापर कृपादृष्टि हेरत ताको काल कर्म स्वभाव मिटाइ देते हैं २० ॥

शिलाशापपापगुहगीधकोमिलाप सेवरीकेवापआप
चलिगयोहौसोसुनीमैं । सेवकसराहेकपिनायकबिभीषण
को भरतसभासादरसनेहसुरधुनीमैं । आलसीअभागी
अघीआरतअनाथपाल साहबसमर्थएकनीकेमनगुनीमैं ।

दोषदुखदारिददलैआदीनबंधुराम तुलसीनदूसरोदयानिधानदुनीमैं २१ ॥

या कवित्त विषे पांचविशेषण क्रमते चारिहू चरणते अर्थ सिद्धिहोत यथा शिलारूप अहल्याकी शापउद्धारकीन्हे सेा कैसीहै अहल्या आलसी भावजाने अपनो परायो पति न चीन्हे परपति रतिकीन्हें सेा दोष को प्रभुदले पविच करिदीन्हे पुनः गुहके पापदले कैसोरहै गुह अभागी जेा हिंसारत नीच जातिमें जन्मभयो ताके पापन के फल दुःख ताको नाशकरि प्रभुसुखी करिदीन्हें पुनः गीध सेां मिलाप कहे अकोरामें लीन्हें सेा गीध कैसारहै अघीकहे पातकी मांसअहारी सुकृतिरूप वित्तसेांदरिद्री ताको दारिददले सुकृतिन को शिरोमणि करे पुनःयह मैं सुनीहै कि शबरीके धामको आपु चलिकै गयोहै बाप कहे जगत्के पिताते शबरीको माता करिमाने गीतावली में लिखाहै तेहिमातु ज्योंरघुनाथ अपने हाथजल अंजुलि दई सेा कैसीरहै शबरी आर्तकहे ते गुरुको बियोग कटिनको त्याग ते आर्त ताते दीनरहै ताकी दीनता दलि सबेांपरिकरिदीन्हे ऐसे प्रभुदीनबंधुहैं पुनः सुग्रीव बिभीषण को सुसेवक करिमाने अरु राज्य सभामें आदरसहित प्रभु भरतजी सेां प्रशंसाकरे उनके सनेहको गंगाजी सम निर्मल पावन करिबर्णनकरे ते सुग्रीव बिभीषण कैसे रहैं अनाथ तिनको प्रभुमहाराज किये गोसाईंजी कहतहैं कि मैं अपने मनमें गुणिकै यह निश्चय कियो कि ऐसेा दयानिधान दुनियामें दूसरो नहीं है अनाथपाल समर्थ साहब एक श्रीरघुनाथहीजी हैं २१ ॥

मीतबालिबंधुपूतदूतदशकंधबंधु सचिवशराधकियो शबरीजटायुको । लंकजरीजोहैजियशोचसेाबिभीषणको कहोऐसेसाहबकीसेवानखटायको । बड़ेएकएकतेअनेक

लोकलोकपालअपनेअपनेकोतौकहैगोघटायको । सांकरे कोसेइबोसराहबेसुमिरिबेकोरामसो न साहिबनकुमति कटाईको २२ ॥

अचुबालि ताके बंधुसुग्रीवको मित्र कियो पुच अंगदको दूतकिये भावअचुसंबंधी की शंका न करे तैसे रावण के बंधु को सचिव करे यामें सबलता निःशंकता गुण देखाये अरु शबरीगीध महानिषिद्ध तिनकी श्राद्धकियो यामें सौशीलतागुण है बालिकी जो राज्यधानी सो निर्विघ्न सुग्रीव को दीन्हेउ औ बिभीषण को जरी लंकादीन्हे यह प्रभुके जीमें शोचहै तामें शंका कि प्रभुशोच क्यों करतेहैं॥निमिष माचमहंभुवननिकाया । रचैजासुअनुशासनमाया ॥ ऐसे समर्थनई क्योंनकरिदिये तहां उत्तर प्रभुभक्तनको मनोर्थ प्रथम पूराकरिकै पीछे दिव्य ऐश्वर्य देतेहैं यथा ध्रुवको प्रथम राज्यकराये पीछे अचलधाम दिये तैसे बिभीषण को बासना अपने राज्यकी रहै सो पूराकराय पीछे अपने धामको बास दिये ऐसे समर्थ सौशील सरल साहबकी सेवामें को न खटाय भाव सबकी सेवकाई पारहोइ तहां बैकुंठादि आदि अनेकन लोकहैं तिनके नायक यथा वरुण यम इन्द्र ब्रह्मा शिव बिष्णु महाबिष्णु महाशंभु बासुदेवादि जेते लोकनाथ हैं ते एकते एक बड़े हैं तिनके सेवक अपने साहबन को घाटिको कहैगो भाव अपने स्वामीको तौ सब सराहतेहैं परंतु सबके प्रशंसाकरिबे योग्य गुण श्री रघुनाथजीमें हैं याते सब प्रशंसा करतेहैं कि सांकरेको सांकर आधिमनकी पीड़ा व्याधि देहकी पीड़ादि कौनछ दुखहोइ जो श्रीजानकीनाथको नाम स्मरण करै तौ सब दुःखनाशकरिदेतेहैं ऐसीप्रशंसानारदजी अंबरीषसेकरेहैं यथा ब्रह्मबैवर्ते॥ आधयोव्याधयोयस्यस्मर्णानामकीर्तनात्॥ शीघ्रंनाशमायांतितंवंदेजानकीपतिम् १आदिपुराणेश्री कृष्णवाक्यं ॥ यद्वयाइलयानामवदंतिमनुजाभुवि ॥ तेषां

नास्तिभयंपार्थरामनामप्रसादतः २ ॥ पुनः श्रीरघुनाथजी सेवाकरिबे योग्य सुलभस्वामीहैं जे सेवक को मननहीं तोड़ते हैं यथा भागवते हनुमान्वाक्यं ॥ नजन्मनूनंमहतोनरौभगं नवाक्नबुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः॥तैर्यद्विसृष्टानपिनोवनौकस श्चकारसख्यंवतलक्ष्मणाग्रजः ॥ पुनःसराहबे योग्य जिनको यशपबिच सब गावत यथा भागवते ॥रामस्यकोशलेन्द्रस्य चरितंकिल्विषापहं ॥ पुनः सुमिरिबेयोग्य जिनकोनाम सहजही पतित पावनहै नंदीपुराणे नंदीश्वरवाक्यं ॥ सर्वदा सर्वकालेषुयेनकुर्वंतिपातकै ॥ तेपिश्रीरामसन्नामजपंकृत्वा परंपदम् ॥ ताते कुमतिको काटनहार श्रीरघुनाथजीकी समान दूसरो साहबनहीं है २२ ॥

भूमिपालब्यालपालनाकपाललोकपाल कारणकृपालमैंसबैकेजीकीथाहली।कादरकोआदरकाहूकेनहींदेखियत सबनिसुहातहैसेवासुजानटाहली । तुलसीसुभाय कहैनहींकछूपक्षपात कौनेईशकियकीशभालुखासमाहली। रामहीकेद्वारेपैबोलाइसनमानियत मोसेदीनदूबरे कपूतकूरकाहली २३ ॥

एकसमय गोसाईंजी वृन्दाबनमें रहैं तहां कृष्णउपासकोंने तर्क कीन्ही यथा तुलसी चरिचे वृजवासी उवाच ॥ चौपाई ॥ हमछंदरूपअवधकोपायो। इतेप्रभावदृष्टिनहिंआयो॥औरनचमत्कारकछुदेख्यो।दीनखीनप्राणीबजपेख्यो। तापैगोसाईंजीउत्तरदिये दो०॥ औरपुरिनसबबांटिलिय धनिकधनेशनरेश। दीनखीनरंकेशरण दीनानाथदिनेश ॥ पीछे यह कबित्त कहैहैं ॥ भूमिपाल जे राजा ब्यालपाल शेषादि नाकपाल इन्द्रादि लोकपाल ब्रह्मा आदि ते सबके जीकी थाहली अर्थात् पुराणादिकनमें सबकेचरित विदितहैं तिनकोसुनि विचारि सबको स्वभाव जानि लीन

है कि नर राजा जे हैं तिनको नीकीभाँति की टहल करनेवालेन की सेवा सुहातीहै अरु देवतादिकोंको जपतप यज्ञादि कर्म कांड बिधिपूर्वक जानिबे में सुजान टहल करनेवालेन की सेवा सुहात है यह लोक प्रसिद्धहै कि काहू देवता को आराधनकरै जो बिधिसहित न करै तो देवता प्रसन्न न होइ किंतु क्रोधितहोइ ताते सबके जीको हाल जानिये यह निश्चयभई कि जे कोऊ कर्मकरि नहीं सकत ऐसे जे कादरहैं तिनको आदर काहूके नहींदेखि परत गोसाईंजी स्वाभाविक में कहत कुछ आपनी उपासना को पक्षपात नहीं यह लोक वेद में प्रसिद्धहै यथा ॥ भावकुभावअनखआलसहू । नामजपतमंगलदिशिदशहू ॥ प्रमाण आदिपुराणे श्रीकृष्णवाक्यं ॥ अद्वयाहेलयानाम बदन्तिमनुजाभुवि ॥ तेषांनास्तिभयंपार्थ रामंनामप्रसादत: ॥ ब्रह्मवैवर्त्ते शङ्करवाक्यं ॥ ब्रजंस्तिष्टन्स्वपन्नंश्नन् स्वसन्वाक्ये प्रपूर्णके ॥ श्रीरामनामसंकीर्त्य भक्तियुक्त:परंब्रजेत १ कथञ्चिन्नामसंकीर्त्य भक्त्यावाभक्तिवर्जिता: ॥ दहतेसर्वपापानि युगांताग्निरियोस्थित: २ ब्रह्मपुराणे ब्रह्मावाक्यं ॥ प्रमादादिपिसंस्पृष्टो यथानलकणोदहेत् ॥ तथैष्टपुटसंस्पृष्टं रामनामदहेदघं ॥ इत्यादि प्रमाण तौ असंख्यहैं प्रसिद्ध बिचारि देखौ सेवाइ श्रीरघुनाथजी और कौन दूजने खास महलकी टहलको अधिकारी बानर भल्लनको कीनहै जे ऐसे आलसीहैं कि अपने रहबेको स्थान नहीं बनाइसकत तिनते और क्याबनैगो ऐसे काहलीकहे आलसी क्रूर कुमार्गी कोलभिल्लादि गोसाईंजी कहतहैं कि मोहिं ऐसे दीन दूबरे कपूतनको अपनेद्वारपै बोलाइकै श्रीरघुनाथजी सनोमान करतहैं २३ ॥

सेवाअनरूपफलदेत भूपकूपज्यों बिहीनगुणपथिक पियासेजातपथके । लेखेजोखेचोखेचिततुलसीस्वारथ हित नीकेदेखेदेवतादेवैयाघनेगथके । गीधमानोंगुरुकपि

भालुमानोंमीतकै पुनीतगीतसाकेसबसाहेबसमर्थके ।
औरभूपपरखिसुलाखितोलिताइलेत लसमकेखसमतुही
पैदशरत्थके २४ ॥

जगमें जे राजाहैं ते सेवकनको तौ सेवाकी अनुकूल फल-
दायकहैं औ याचकनको कूप समहैं अर्थात् जाकेपास गुण
कहे रस्सीहोइ तौ कूपते जलपावै बिना रस्सीके पथिक
राहके पियासे चलेजात तैसे गुणमाननको राजा दानदेत
बेगुण के बिमुखजात गोसाईंजी कहतहैं कि घने गथ कहे
बहुती द्रव्यके देनेवाले जे देवताहैं इन्द्रादि तिनको नीकी
भाँति बिचारिदेखे कि अपने स्वार्थके हितको चित्तते चो-
खेहैं भाव पूजा जप यज्ञादि जो करत तापै प्रसन्नहोत
ताहूपै लेखाकरिकै सुकृति योषिता की अनुकूल फलदेत
यथा ॥ पुण्येक्षीणेमृत्युलोके ॥ अरुसमर्थसाहब जो श्रीरघुनाथ
जीहैं तिनके यश कीर्त्ति करिकै ग्राके जो प्रताप सो सब
पुनीत पवित्र गीत कहे चरितको देव मुनि गान करिरहे
हैं कि जिनने अधम गीधको गुरु कहे बड़ा पिता के सम
माने अरु बानर रीछनको मीत करि माने जे चंचल प्रभु
हैं तहां और जे देवादि भूपहैं सो सब सेवकको परखिलेते
हैं खोटाहै वा खरा औ सुलाखिलेतेहैं भाव तनमनते एक
रसहैं कि नहीं औ तौलिलेतेहैं भाव सेवकाईमें पूराहै या
नहीं पुनः ताइलेत भाव बिघ्न देखाइ कसिलेत तब सेवा
के योग्य फलदेत अरु खसम कहे खोटे अर्थात् नकामनके
खसम कहे स्वामी एक तुमहीं दशरथके नन्दनहौ यह
लोक प्रसिद्धहै रघुनाथ अनाथके नाथहैं २४ ॥

रीतिमहाराजकीनिवाजियेजोमांगनो सोदोषदुखदा-
रिददरिद्रकैकैछोड़िये । नामजाकोकामतरुदेतफलचारि
ताहि तुलसीबिहाइकैबबूररेंडगोड़िये । याचैकोनरेशदेश

देशकोकलेशकरै देहैतोप्रसन्नह्वैबड़ीबड़ाईबोड़िये ।
कृपापाथनाथलोकनाथनाथसीतानाथ तजिरघुनाथहाथ
औरकाहिओड़िये २५ ॥

श्रीरघुराज महाराज की यह रीतिहै कि जा मागने वालेको नेवाजत हैं ताके दोषादि ते रहितकरि भवफंद तेछोड़ाई देतेहैं काहेते जिनकोनाम कल्पवृक्ष जो चारिउ फलदेत यथा दानिनमें शिरोमणि रघुवंशताकेनाथ रघुनाथ ते अर्थफल दैकै दारिद्रको मिटाइदेत सर्वधर्म शिरोमणि आह्लादिनी ऐसीसीता तिनकेनाथहैं ताते धर्मफलदै कामक्रोधादि दोष को मिटाइदेत पुनः सब कामनादायक लोकनाथ तिनके नाथहैं ताते कामफलदैकै दैहिक दैविक भौतिकादि दुख मिटाइदेत कृपापाथ नाथकहे कृपासागरहैं याते मोक्ष फलदैकै भवबन्धन ते छोड़ायदेत हैं ऐसे श्रीरघुनाथजीको त्यागि और काको हाथपसारिये अर्थात् देवदेवनमें क्लेशसहि नरेशनको कौन यांचै आखिर जो प्रसन्नह्वै बड़ी बड़ाईमानि देहै तौ बोड़ियेकहे दमड़ीको कौड़िये तौदेहैं ताते कल्पवृक्ष त्यागि बबूर सकंटकवृक्ष तीक्ष्णदेवता औरेंडअसार नरेशनकीसेवा कौनकरे २५ ॥ इहांतक अश्वासन अर्थात् गुण है प्रभुके अबभत्स अर्थात् जीवके अवगुण वर्णन यथा ॥

जाकेबिलोकतलोकपहोत बिशोकलहैसुरलोकसुठौरहि । सोकमलातजिचंचलता अरुकोटिकलारिझवैशिरमौरहि । ताकोकहायकहैतुलसी तुलजाहिनमाँगतकूकुरकौरहि । जानकिजीवनकोजनह्वै जरिजाउसोजीहजौ यांचतऔरहि २६ ॥

जाके सुदृष्टि बिलोकत लोकपकहे इन्द्रादि की ऐश्वर्य

होत अरु जीव बिशोककहे दुखरहितहै सुरलोक ऐसा सुन्दरठौर लहतकहे पावतहै ऐसी कमला जो लक्ष्मीजी तेऊ अपनो चंचल स्वभाव छांड़िकै सकल शिरमौर जो श्रीरघुनाथजी तिनको कोटिनकला करिकै रिझावतहैं भाव जाद्रव्यको लोभ करत सो लक्ष्मी प्रसिद्ध प्रभुकीचेरीहै ऐसे श्रीरघुनाथजीको दास कहायकै हे तुलसी देवादिके द्वारद्वारपै कूकुर सम कौरके हेतु तुच्छ सुखभोगत तोको लाज नहीं लागत है काहेते जानकी जीवनको जन ह्वैकै जो और की याचनाकरै ताकी जीह जरिजाउ काहेते सबके सिद्धिदाताश्रीरघुनाथजी हैं यथा ॥ हरिहिहरिता विधिहिविधिताशिवहिशिवताजेहिदई । सोजानकीपति मधुरमूरतिमोदमयमंगलमई ॥ तच प्रमाणरुद्रयामलेशिव वाक्यं ॥ यत्प्रभावेनहर्ताहं चाताविष्णुप्रजापतिः ॥ यत्प्रसादेनकर्तासूदेवोब्रह्माप्रजापतिः ॥ येनराघवलोकेषुरामभक्तिपराङ्मुखाः ॥ जपंतपंदयाशौचं शास्त्रानामवगाहनं ॥ सर्वं हुथाविनायेनस्युस्तुभंपार्वतिप्रिये ॥ पुनःपुलहसंहितायांविष्णुवाक्यं ॥ साविचीब्रह्मणाशार्द्धं लक्ष्मीनारायणेनच । शंभुनारामरामेति पार्वतिजयतिस्फुटं २६ ॥

जड़पंचमिलेजेहिदेहकरीकरनीलघुधाधरणीधरकी ।
जनकीकहुक्योंकरिहैनसम्हार जोशारकरैसचराचरकी ।
तुलसीकहुरामसमानकोआनहै सेवकिजासुरमाधरकी ।
जगमेंगतित्याहि जगत्पतिकी परवाहिहै ताहिकहानर की २७ ॥

जड़पंचतत्व यथा आकाशश्याम वायुहरित अग्नि अरुण जलश्वेत पृथ्वीपीत इत्यादि पांचोंजड़ हैं औ परस्पर बिरोधीहैं अग्निजलते बिरोध वायु पृथ्वीते बिरोध तिनको मिलाय देहरची तामें दशइन्द्री ताकेदेवता विषय यथा श्रवण देव आकाश विषे शब्द १ त्वचा देव पवन विषे

स्पर्श २ नेत्र देव सूर्य विषे रूप ३ रसना देव वरुण विषे रस ४ नासिका देव अश्विनीकुमार विषे गंध ५ इति सदेवविषे ज्ञानेन्द्री पुनः पगदेव यज्ञ विष्णु विषे चलन १ गुदादेव यमराज विषे मूलत्याग २ लिंगदेव प्रजापति विषे मैथुन ३ मुखदेव अग्नि विषे भक्षण ४ हाथदेव इन्द्र विषे व्यवहार ५ इतिसदेव विषे कर्मेन्द्री तहां एकएक तत्वते है है इन्द्री यथा सुख कान आकाशते १ त्वचाबाज़ वायुते २ नेत्रपद अग्निते ३ रसनालिंग जलते ४ गुदानासिका पृथ्वीते ५ अथप्रकृतिलोभ १ मद २ मान ३ काम ४ क्रोध ५ इतिप्रकृति आकाशको बास श्रोत्रमें सुख कान द्वारा भक्षण सुनब अहार १ धावन १ चलन २ सकोरन ३ पसारन ४ उल्लंघण ५ इति प्रकृति वायुकी नाभीमें बासनासिका द्वारागंध अहार १ स्वास १ प्रस्वास २ क्रिया है २ पुनः निद्रा १ कांति २ क्षुधा ३ आलस ४ जमुहाई ५ इतिप्रकृति अग्निकी पित्तमें बासनेत्र द्वारा रूप आहार ३ पुनः रक्त १ पसीना २ मूत्र ३ बीज ४ लार ५ इतिप्रकृति जलकी ललाटमें बासलिंग जिह्वा द्वार मैथुन षट्रस अहार ४ पुनः अस्थि १ मांस २ त्वचा ३ नाड़ी ४ रोमा ५ इतिप्रकृति पृथ्वीकी हृदयमें बासगुदा द्वारा ५ पुनः वायु आकाशते चित्तहै देवजीवहै १ जलते मनदेव चन्द्रमा २ पृथ्वीते बुद्धि देवब्रह्मा ३ अग्निते अहंकार देव रुद्र ४ पुनःयोग १ विराग २ स्मरण ३ ज्ञान ४ विज्ञान ५ उच्चाटनादि ६ चित्तकेअंशहैं १ पुनः जप१ यज्ञ २ तप ३ त्याग ४ आचार ५ ध्यानादि ६ बुद्धिके अंशहैं २ पुनःकर्म १ अकर्म २ विकर्म ३ नेम ४ संकल्प ५ विकल्पादि ६ मनके अंशहैं ३ पुनःमान १ क्रोध २ ईर्षा ३ पारुष्य ४ हिंसा ५ अचुतायुत ६ अहंकार के अंश हैं अथवायु अंगबास यथा हृदयमेंप्राण १ गुदामें अपान २ नाभीमें समान ३ कंठ में उदान ४ सर्वशरीरमेंव्यान ५ नाभीमेंनाग ६नेत्रमेंकूर्म७ क्षुधामें क्रिकिल ८ जमुहाई में देवदत्त ९ मृत्युमेंधनंजय १०

अथनाड़िका दाहिनेपिंगला १ बामेइंगला २ मध्यसुषुम्ना ३ चिपुटीमें महाशब्द ४ बामनेचेगंधारी ५ दाहिननेचेहस्तिनी ६ रसनामेंनाग्नि ७ दहिनेकर्णेपूषा ८ बामकर्णे पश्विनी ९ मुखेबिलंबिका १० स्थलस्थाने शंखिनी ११ अथ बाणी नाभीमेंपरा सो रामतत्वनिरूपिणी १ हृदयमें पश्यंती जीवात्मनिरूपिणी २ कंठमें मध्यमा धर्मार्थ कामस्वर्गादिबार्ता ३ जिह्वामें बैखरी प्राकृत व्यवहार ४ अथपंच कोश अन्नमय १ प्राणमय २ मनोमय ३ ज्ञानमय ४ बिज्ञानमय ५ इत्यादि को बिश्वाभिमानी प्रजापति देवता जाग्रत अवस्था बैखरीबाणी इतिपंचभौतिक स्थूलशरीर अथसूक्ष्म॥पञ्चप्राणमनोबुद्धिर्दशेंद्रियसमन्वितं॥अपंचीकृत मस्थूलसूक्ष्मागंभोगसाधनं॥इतिसूक्ष्मशरीर॥अथकारण॥अविद्याभगवच्छक्तिर्वर्ज्जीवस्यबंधनं॥सदसद्भ्यामनिर्वाच्याशरीरंसापिकारणम् इतिकारणशरीरइत्यादि रचनाधरणीधरजो श्रीरघुनाथजी करीहै जो और की करी नहीं ह्वै सकत सो प्रभु को लघुधा कहे कुछ बड़ी बात नहींहै ऐसे समर्थ जो प्रभुहैं ते अपने जनकी क्यों न संभारकरिहैं जो चराचरकी सारकहे सबको सेहारिकै भोजन देत ताको भक्त नहक संदेह करत यथा महाभारते॥ भोजनेच्छादने चिन्ताहृथाकुर्वंतिवैष्णवाः॥ योसोबिश्वभरोदेवोसभक्ताकिं उपेक्षति ॥ गोसाईंजी कहत कि श्रीरघुनाथजी की समिताको समर्थ और कौनहै काहेते जिनके घरकी सेवकिनी श्रीलक्ष्मीजी हैं ताते जगत्पति जो श्रीरघुनाथ की गतिजाकोहै ताको नरकी परवाहि कहाहै २७ ॥

जगयांचियेकोऊनयाचियेतौजियायाचियेजानकीजानहिरे । जेहियांचतयाचकताजरिजाइजोजारतजोरजहानहिरे । गतिदेखुबिचारिबिभीषणकीअरुआनुहियेहनुमानहिरे । तुलसीभजुदारिददोषदवानलसंकटकोटिकृपानहिरे २८ ॥

हे जिय जगमें काहूको न याचिये निष्काम भजनकरिये कदाचित सकामहूवै याचिये तो जानकीजान श्रीरघुनाथजीको याचिये काहेते जो याचकता दारिद्रता रूप अपने जीवते जहानको जारिरहीहै अर्थात् आशा महा दुखहै सोई दुख रूप याचकता प्रभुके याचेते जरिजातीहै भाव श्रीरघुनाथजीके याचेते फिरि याचकता रहिनहीं जातीहै काहेते जो लोकहू परलोकते पूर्णकाम करिदेते हैं ताको आगे देखावत कि बिभिषणकी गतिबिचारि देखु भाव सकाम रहे तिनको लंकाकी राज्यदिये पीछे परे धामदिये पुनःहनुमान्जी कीगतिदियेमें आनुअर्थात् निष्कामरहे तिनके प्रभुवशभये गोसाईंजी कहत कि दारिद दोष रूपबन के जारिबे को दावानलसमान है अरु कोटिनभांतिके संकट काटिबे को कृपाणसमहै ऐसे प्रभु को रे मन भजु २८ ॥

सुनुकानदियेनितनेमलियेरघुनाथहिकेगुणगाथहिरे। सुखमंदिरसुंदररूपसदा उरआनिधरेधनुभाथहिरे। रसनानिशिबासरसादरसोतुलसीजपुजानकिनाथहिरे। करुसंगसुशीलसुसंतनसोतजिकूरकुपंथकुसाथहिरे २९ ॥

अनुरागी भक्तनकी क्रिया अपने मनते उपदेश करते हैं प्रथम कीर्ति यश प्रताप सौशीलतादि अनेक गुण जो श्रीरघुनाथजी के हैं ताकी गाथा कहे कथा ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित लीला रामायणादि को नेमलिये कानदैकै नित श्रवण करु नेमलिये को यह भाव कि कर्मइन्द्रिन की बिषय रोकि शौच संतोष तप जप ईश्वर निष्ठादि सहित बिधिपूर्वक श्रवण औ कानदिये को भावमनादि बासना रहित समचितहूवै कर्णादि ज्ञानेन्द्रिनकी बिषय रोकि बिचार श्रद्धा सहित श्रवण सुखमंदिर कहे जीवनके सुखदायक जे गुण हैं क्षमा करुणा उदार बा-

त्वल्य शरण पालादि समूह यामेभरेहैं ऐसो श्यामतन कर कमलनमें धनुषबाण धारण कटिमें भाथकहे तरकस पीतांबर शोभित चन्द्र सों प्रसन्न बदन सर्वांग सुठौर बिना भूषणौ भूषित ऐसो सुन्दर रूप श्रीरघुनाथजीको उरमें आनु अथवा सुखमंदिर अयोध्या मध्य हेमरत्नमंदिर में श्रीजानकीजी सहित प्रसन्न रूप यथामहारामायणे ॥ सीतायुतंरघुपतिंचविशोकमूर्तिं परयंतितेनिशि सुदापरमेन रम्य ॥ भाव प्रसन्नरूप सुखमंदिर आसीन ध्यानकरिबे को चाही उपाशकन को याते गोसाईंजी कहत रेमन रात दिन रसनाते आदर सहित श्रीजानकीनाथ को जपु तहां रसना सों जपिबेको कहे आदरसहित जानकीनाथ को कहे रसना सों जपिबेको क्यों कहे तहां अंतरमें नामजपे जीवनमुक्त होतहै परंतु न प्रेमापराभक्ति होइ न रघुनाथ जीको समीपीहोइ यथा महारामायणे ॥ अंतर्जपंतियेनाम जीवन्मुक्तभवंतिते ॥ तेषांनजायतेभक्तिर्नचरामसमीपकः ॥ ताते जे अनुरागीहैं ते रसनासों जपत यथा महारामायणे ॥ जिह्वयाप्यंतरेनैवरामनामजपंतियै ॥ तेषांप्रेमापरभक्त्या नित्यंरामसमीपकाः १ ॥ श्रीरामनामरसनाग्रपठंतिभक्त्या प्रेमाचगद्गद्गिरोत्थहृष्टलोमः ॥ सादरकहिबेको यह भाव की रूषानाम निरादर होत ताते आदर सहित लाड़ दुलार को नाम अनुरागिनके जपिबेको चाही यथा सनत्कुमारसंहितायां ॥ श्रीरामचन्द्ररघुपुङ्गवराजवर्यराजेन्द्र रामरघुनायकराघवेशः ॥ राजाधिराजरघुनंदनरामभद्रदासोहमद्यभवतःशरणागतोस्मि ॥ पुनः रामायरामभद्राय रामचन्द्रायवेधसे ॥ रघुनाथायनाथायसीतायाःपतयेनमः ॥ याही हेतु जानकीनाथ कहे औ कूर कुपंथी यथाबज्रसूच्यां ॥ चार्वाकाश्चतुराःस्वतर्कनिपुणादेहात्मवादेरताः सर्वेषामनिरस्तदुसहमहाद्वैतेपराशक्तिकाः ॥ कर्तारंप्रभजंतिपापनिरताभूतेषुयेनिर्दयातेषामादिदकल्पमेवहिफलं वैवास्तिमोक्षंपरम् ॥ इत्यादि नास्तिकनकी कुसंगति

त्यागिकै सुसंतशीलवान् यथा महारामायणे॥ शांताःसमा नमनमार्दवसुशीलयुक्ताःरोषःक्षमा गुणदयामृजुबुद्धियुक्ताः ॥ विज्ञानज्ञानविरतिःपरमार्थवेत्तानिर्द्वैमकोभयमनःमच-रामभक्ताः ॥ ऐसे अनुरागी भक्तनकी संगतिकरु २९ ॥

सुतदारअगारसखापरिवार बिलोकुमहाकुसमाजहि रे। सबकीममतातजिकैसमता सजिसंतसभानबिराज-हिरे। नरदेहकहाकरिदेखुबिचारि बिगारुगंवारनकाज-हिरे। जनिडोलहिलोलुपकूकुरज्यों तुलसीभजुकोशल राजहिरे ३० ॥

ऐसन सुत जो पुत्रदार जो नारिसखा जो रुनेही परि वारके यावत् लोग हैं तिनको महा कुसमाज दुःखदायी करिकै बिलोकिकै सबकी ममता तजिकै ताग सम खैंचि समता कहे वासना त्यागि एकाग्रचित्तकरिकै प्रभुमें मन लगाउ इतिशेषः यह भक्तनको स्वाभाविक चाही यथा ॥ सबकीममतातागबटोरी। ममपदमनहिंबांधिबरडोरी ॥ शिवसंहिता में हनुमानजी कहे यथा ॥ पुत्रवत्मित्रवद्रामो माद्वन्ममसर्वदा ॥ श्यालवद्भ्रातृवद्रामः स्वस्रूवच्छ्वसुरादि वत् ॥ इत्यादिसर्वसंबंध प्रभुमें माननेको चाही यारीतिते संतनकी समाज में बिराजमानरहै नहीं तौ बिचारिदेखु नरदेहमें कहाहै भावसारांश कुछनहीं है एक हरिभजन सारहै हेगंवार सो काज न बिगारु लोलुपकहे परधन पर दारादि में मनलगाये कूकुर ज्यों भटईहेत वा कौर हेतु घरघर मांगत न डोलु हे तुलसी के मन के मलराज को भजु ३० ॥

बिषयापरनारिनिशातरुणाईसुपाइपरयोअनुरागहिरे। यमकेपहरुदुखरोगबियोग बिलोकतहूनबिरागहिरे ॥

ममताबशतेसबभूलिगयो भयोभोरमहाभयभागहिरे ।
जरठाइदिशारबिकालउयोअजहूंजड़जीवनजागहिरे ३१

परस्त्री हेतुक विषया कहे परक्रिया रतश्रृंगार परस्पर अवलोकन आलंबनहै षटऋतु शोभा रागरंग सुगंध चिबिधि पवन पुष्प बाटिकादि उद्दीपनहै षटभांति पर किया यथा ॥ बिदग्धा लक्षिता गुप्ता कुलटा मुदितानुसैनादिकेहाव भावादिमें कामाशक्तीत्यादि बिषयरूप रात्रीमें तरुणाई रूपनिन्द्राबढ़ी ताते परनारी के अनुरागमें परे भाव बाहीरंगमें मनुरंगिगयो इत्यादि बिषयरति सुखमें परि हरिशरणागतो भूलिगयो याहीजीवको सोइजाना है तहां यमराज प्रभुके कोतवालहैं जो कसूर करतताको दंडदेत यह वेदपुराण द्वारा लोकमें प्रसिद्ध है यथावध बिलासे ॥ देखे नरकबज्रत दुखदाई । करिकरि सुरतिबज्रत पछिताई ॥ अष्टधातुपुतरीकरितातो । लंपटकीलपटावत छातो ॥ परतियनगनदेखिलखचाई । फेरतकाकआंखि दुखदाई ॥ इत्यादि बचनलोक में प्रसिद्धतेई जीव को जगावने वाले यमके पहरूहैं पुनः पर स्त्री रतमें मानस कायिक अनेक रोगहोत यथा भयलज्जा कलंक अपमानादि मानसिक रोग हैं गरमी सुजाख प्रमेह नताकती आदिकायिक इत्यादि अनेक रोगहैं पुनः बियोग कहे बिप्रलंभ यथा पूर्वअनुराग अभिलाष चिंतागुणकथन स्मृति उद्वेग प्रलाप उन्माद व्याधि जड़ता मरणादि बियोग में इत्यादि अनेक दुःखबिलोकतहू बिषयते बिराग नहीं होत सो ममता-बशते ज्ञान बैराग सब भूलिगयो भाव बिषय रातिमें सोवतै रह्यो अब यमजातनादि महाभय रूपी भा कहे प्रभा घामको गहे भोर भयो जठराई जो जरा अवस्था सो पूर्व दिशा है तामें कालरूप सूर्य उदय भये भाव मरण काल आइगयो हे जड़जीव अजहूं नहीं जागत ३१ ॥

जनम्योजेहियोनिअनेककिया सुखलागिकरीनपरैबरनी । जननीजनकादिहितूभयभूरि बहोरिभईउरकीजरनी । तुलसीअबरामकोदासकहाइ हियेधरुचातककीधरनी । करिहंसकोवेषबड़ोसबसो तजिदैवकबायसकी करनी ३२ ॥

गोसाईंजी अपने मनते कहतकि ज्यहि योनिमें जन्म पायो ताही तनके सुखलागि कहे सुखकेहेतु अनेक क्रियाकहे कर्तव्यताकीन्हे जो बरणिबे योग्यनहीं भावनीच ऊंच बिचाररहित तहां जन्महेतही जननी हितूभई पीछे पिता हितूभयो स्यानभये पर भाई बहिन परिवार नातादि बहुत हितूभये युवाभये परउरकी जारनहारी जो नारिहै सो हितूभई अथवा पूर्वजे सब हितूभये तिनका ममता बशते पीछे जरनिकहे चयतापमें जीवजरत भयो है तुलसी अब श्रीरघुनाथजी को दासकहायो तातें अब चातककी धरणीकहे सबको आश भरोसाछाड़ि अनन्यहै प्रभुकी शुद्धशरणागति हियेमें धारु काहे ते हंसको वेषकरिबै भाव श्रीराम भक्तनको वेष यथा महारामायणे॥ भालेचरम्यतिलकंबिवरेखदीप्तं रामस्यपादसदृशंसचपीतमध्ये॥कंठेतथातुलसिदामलसद्भुजेवैतप्तेनबाणधनुषांकित रामभक्तः॥ यथा सब पक्षिन में उत्तम हंस तथा सबके भक्तनमें उत्तम श्रीराम भक्तहैं यथा शिवसंहितायां ॥ इन्द्रादिदेवभक्तेभ्योब्रह्मभक्तोधिकोगुणैः ॥ शिवभक्ताधिको विष्णुभक्तःशास्त्रेषुगीयते ॥ सर्वेभ्योविष्णुभक्तेभ्योरामभक्तो विशिष्यते ॥ रामदन्याःपरोध्येयोनास्तीतिजगतांप्रभुः॥तस्माद्रामस्यभक्तास्तेनमस्याःशुभार्थिभिः ॥ ऐसे श्रीराम भक्तरूप हंसको वेष किहे तौ बककहे बगुला और काक कौवा इनकी करणी त्यागि देवककी करणीकहे देवतामें मूरति साधुकी मनमें असाधु बकध्यानी लोकमें प्रसिद्धहैं

भावछली कामकरणी मनचंचल बचन कटुकर्म कुटिल भाव चंडाल ३२ ॥

भलिभारतभूमिभलेकुलजन्मसमाजशरीरभलोलहि-कै । ममताकरपातजिकैबरषाहिममारुतघामसदासहि-कै । जोभजैभगवानसयानसोई तुलसीहठचातकज्यों-गहिकै । नतऔरसबैविषबीजबये हरहाटककामधु-कानहिकै ३३ ॥

याके अंतर्गत सुकृतिरूप कृषी वर्णन है तहां प्रथिले अर्च्छोभूमि चाहिये तहां भारत खंडकी भलीभूमिहै तामें मध्यदेश जहां गंगा यमुना सरयू प्रयाग चित्रकूट वृन्दावन काशी मिथिलादि सुक्षेत्रन के मध्य श्रीअयोध्याजी जो विष्णुका मस्तकहैं यथा पद्मपुराणं॥येतद्वै ह्यपदंवदंतिमुन-यो याध्यापुरीमस्तके ॥ ऐसीभूमि सब सुकृतिके उपजावन हारीहै पुनःब्रह्मणादि सुकृतिरूप कृषीके स्वाभाविकअधि कारीहै ऐसे उत्तम कुलमें जन्मपायो तहां अयोध्यादिमें सतसंग हेतु रामभक्तनकी समाज भलीहै अरु विप्ररहित निरुज भक्तोतनलहि भाव नरतन पाइकै तातें ममता औ कषाकरे प्रीतिबैर त्यागिकै बर्षा जाडव परि घामरुहिकै गोसाईंजी कहतकि चातक की हठ गहिकै भाव अनन्य ह्वै जो श्रीरघुनाथजी को भजै सोई सयानहै जो भक्तिरूप धान्य उपराजै औ जो और कर्तव्यता करे ते मानो नरतन रूप सो नेको हरता में संत समाज रूप कामधे नुनहिकै विषबीजबये भाव विषय में मन लगाये महा-दुःख फलहै ३३ ॥

सोसुकृतीशुचिमंतसुसन्तसुजान सुशीलशिरोमणि स्वय । सुरतीरथतासुमनावतआवत पावनहोतहैतातन

छ्वय। गुणगेहसनेहकोभाजनसो सबहीसोंउठायकहौं भुजद्वय। सतिभावसदाछलछांड़िसबै तुलसीजोरहैरघुबीरकोह्वय३४॥

कर्मनेष्ठी की सुद्धतिसांची तबैहै जो रामसनेह होइ शुचिमंत कहे तप तीर्थ नेष्ठीकी पुनीतता तबै सांची है जोराम सनेहहोइ सुसंत कहे शांत रसवालेन की शांति तबै सांची जो रामसनेहहोइ सुजानकहे ज्ञानिनको ज्ञान तबै सांचो जो रामसनेह होइ सुशील शिरोमणिकी सज्जनता तबै सांची जो रामसनेहहोइ रामसनेहीकी देह छुये सब प्रविचहोत ताते देवतीर्थ आदि सब रामसनेही को आगमन मनावतहैं गोसाईंजी कहतहैं कि मैं दोऊभुजा उठायकै खुलिकै सबसों कहतहौं कि जो रामसनेह को भाजनहै सो सबगुणन को गेह है भाव सबगुण आपही आइजातेहैं जो सब छलछांड़िकै सतिभावते सदा रघुबीर को सनेहीह्वै रहै काहेते श्रीरामते परे दूसरातत्व नहीं है यथा पद्मपुराणे॥ राम.न्नास्तिपरोदेवोरामान्नास्ति परंव्रतम्॥ नहिरामात्परोयोगोनहिरामात्परोमखः३४॥

सोजननीसोपितासोइभ्रातसो भामिनिसोसुतसोहितमेरो। सोईसगोसोसखासोइसेवकसोगुरुसोसुरसाहब चेरो। सोतुलसीप्रियप्राणसमान कहांलोबनाइकहांबहुतेरो। जोतजिदेहकोगेहकोनेह सनेहसोरामकोहोइसबेरो ३५॥

जननी कहे माता सोईहै पिता सोईहै भाई सोई है स्त्रीसोईहै पुत्रसोईहै हितकारीसोईहै सगीसंबंधी सोईहै सखा सोईहै सेवक सोईहै गुरु सोईहै देवता सोईहै साहब सोईहै चेरो सोईहै इत्यादि संबंधी कहांतक बहुत बनाइ

कै का हौं तुलसीको प्राणनके समान प्रिय सोईहै जो पुत्रादि देहको नेहतजि द्रव्यादि गेहको नेहत्यागि श्रीरघुनाथजीको सनेहीह्वै शरणागत सबेरेहोइ भाव वृथादिन न गँवावै यामें यह प्रयोजन है कि हरिसनेहिनते सनेह करै औरसों नहीं सनेह राखना ३५ ॥

रामहैंमातुपितासुतबंधुओ संगिसखागुरुस्वामिसनेही । रामकीसौंहैंभरोसोहैंरामको रामरँगीरुचिराचौनकेही । जीवतराममुयेपुनिराम सदारघुनाथहिकीगतिजेही। सोईजियैजगमेंतुलसी नतडोलतऔरमुयेधरिदेही ३६॥

जिनके माता पिता पुत्र भाई संगी मित्र गुरु स्वामी सनेही एक रघुनाथजी हैं सौहैं कहे संमुख ह्वै जिनको मन रघुनाथजीका भरोसा राखेहै जिनकीरुचि रघुनाथजी के सनेह रंगमें रँगीहै राचौ न केही जिनकीरुचि और में नहीं पगीहै इत्यादि अनन्य भक्तनकी सौभाविक रीतिहै यथा ॥ स्वामिसखागुरुमातुपितुजिनकेसबतुमतात ॥ मनमंदिरतिनकेबसौसियासहितहउभ्रात ॥ यथा शिवसंहिता में हनुमान्जी कहेहैं ॥ पुत्रवत्पितृवद्रामोमत्वन्ममसर्वदा ॥ श्यालवद्रामवद्रामःश्वश्रूवच्छ्सुरादिवत् ॥ पुत्रीवत्पौत्रवद्रामोभागिनेयादिवन्मम ॥ सखावत्सखिवद्रामः पत्नीवदनुजादिवत्॥यःप्रीतिःसर्वभावेषु प्राणिनामनपायिनी ॥ रासेसीतापतावेवनिधिवन्निहितासुने ॥ अरु जीवत लोकमें आशभरोसा मुये परलोग आशभरोसा जिनके सदा एक रघुनाथहीजीकोहै सोई जगमें जीवत हैं यथा ध्रुव हनुमानादि औ जे प्रभुकीशरण नहींहैं ते और सब मृतकसम देहधरे जगमें डोलतहैं भाव पिशाचरूपहैं यथा पद्मपुराणे ॥ स्थानंभयस्थाननरामकीर्त्तिःरामेतिनामामृत शून्यमास्यं ॥ सर्पोनयंप्रेतगृहंगृहतद्यचार्च्यतेनैवमहेन्द्रपूज्यः ३६ ॥

सियरामसरूपअगाधअनूप बिलोचनमीननकोजलु है । श्रुतिरामकथामुखरामकोनाम हियेपुनिरामहिंकोथलुहै । मतिरामहिसोंगतिरामहिसों रतिरामसोंरामहिको बलुहै सबकीनकहैतुलसीकेमते यतनोजगजीवनकोफलुहै ३७ ॥

रूपकहे जो बिना भूषणै भूषितहोइ यथा ॥ अंगानिभूषितान्येवनिरूढाद्यैश्चविभूषणैः ॥ येनभूषितवद्भाति तद्रूपमितिकथ्यते ॥ ऐसी जो श्रीजनकनंदिनी रघुनंदनको उपमारहित जो रूप है सोई निर्मल अगाधजलहै तामें जे अपने बिलोचन कहे नेचनको मीन करि रूपही में मग्न रहतेहैं पुनः जैसे मृगा गानकोसुनत तैसे जे रामानुरागी श्रीरामकथाको मनलगाइ काननसों सुनतहैं पुनि श्रीरघुनाथके जे मधुरनामहैं तिनको आदरसहित मुखते सदा उच्चारण करतहैं यल कहे बासस्थान श्रीरघुनाथजी को परिकर सहितभावना करिकै हियेकमलमें राखतहैंपुनः मतिकहे बुद्धि जाकी रामतत्व निरूपणमें सदा रहत है पुनः गति पञ्चंच भावशरणागत रघुनाथैजीकेहैं रतिकहे प्रीति रघुनाथैजीमेंहै बल कहे भरोसा जाके एक श्रीरघुनाथैजीकोहै इत्यादि सबभांतिते जो श्रीरघुनाथजीको है तुलसीके मतते यतनोई जगतमें जीवनको फलहै सबकी मैं नहीं कहतहौं भाव कोई मतवारो अनख न मानै मैं अपनेमत सों कहतहौं ३७ ॥

दशरत्थकेदानिशिरोमणिराम प्रसिद्धपुराणसुन्योंयशमें । नरनागसुरासुरयाचकजो तुमसोंमनभावतपायोनकें । तुलसीकरजोरिकरैबिनती जुकृपाकरिदीनदयालसुनै । जेहिदेहसनेहनरावरेसो एसीदेहधरायकैजायजियै ३८ ॥

दशरथनंदन दानिनमें शिरोमणिहैं ऐसा यशपुराण-नमें प्रसिद्ध मैं सुन्योंहै नर मनुष्य नाग शेषादि सुरइन्द्रादि असुर प्रह्लादादि जो याचकहुते आपु सों याचनाकीन्हे सो मन भावत कौन नहीं पायो भाव सबपायो तुलसी करजोरिकै बिनती करतहै जो दीनदयाल कृपाकरिकै सुनौ कौन बिनती करतहौं कि जो देहधारीहुते आपु सों सनेहनहीं करत भाव रघुनाथजी सों बिमुखहै ऐसी देह धराइकै बिमुखता करनेवाले जायजियें अर्थात् मरिजाइं तौ भलाहै काहेते काको प्रभुपूर्ण कामनहींकरई कवित्तमें चारिचरण चारिभांतिके सो मध्यम तुकांत में एकभेद मिश्ररहेात भावस्वरते तुकांत होत याकोभेद काव्यनिर्णयके बाइस उल्लासके प्रारंभमें है जाको संदेहहोइ सो देखिलेइ ३८ ॥

झूठोहैझूठोहैझूठोसदाजगसंतकहंतजेअंतलहाहै। ताकोसहैशठसंकटकोटिककाढ़तदंतकरंतहहाहै।जानपनीको गुमानबड़ोतुलसीकेबिचारगँवारमहाहै । जानकिजीवन जाननजान्योतोजानकहावतजानकहाहै ३९ ॥

जे अद्वैतवादी संतहैं ते कहतेहैं कि हमजगत्को अंतलहा कहे पावाहै कौन अंतपावाहै कि जगत् सदाझूंठाहै झूंठाहै झूंठाहै चिबार कहबेते तीनिउ कालमें झूंठाहै न पूर्वमें सांचारहा न अबसांचाहै न आगे सांचा होइगो इत्यादि कहते तौ झूंठाहै अरु ताही जगमें हानि निंदापमान पराजय काम क्रोध लोभ मोह ममताईर्षा रोगादि कोटिन जो संकटहैं तिनको सहतेहैं भाव शोकके अभिमानीहैं पुनः लाभ सुत बित नारि जाति पांति कुल युवा तनमान बड़ाई निरोगतादि पाइकै दांतकाढ़त हहा यकै हंसतहैं भाव हर्षके अभिमानी हैं ताहू में जानपनीकहे ज्ञानको गुमान मनमेंहै ते तुलसीके मतते गंवारकहे महा

मूर्खहैं काहेते हर्ष शोक अभिमानादि अज्ञानता यही जगकी सचाई औ जीवको धर्महै यथा हर्ष विषाद ज्ञान अज्ञान जीवधर्म अहमिति अभिमान इत्यादि अज्ञानमें तौ बधे औ ज्ञानके गुमानते भक्तिको निरादर किहेहैं यह मूर्खताहै यथा ॥ जेअस्थिभक्तिज्ञानिपरिहरहीं । केवल ज्ञानहेतुश्रमकरहीं॥तेशठकामधेनुगृहत्यागी । खोजतअर्क फिरहिंपयलागी ॥ प्रमाणमहारामायणे ॥ येरामभक्ति ममलंसुविहायरम्यं ज्ञानेरताप्रतिदिनंपरिक्लेष्टमार्गे॥आ रान्महेंद्रसुरभीपरित्यक्तमूर्खाअर्कंभजंतिमुभगेसुखदुग्धहेतु भागवते ॥ ये यःस्थितिंभक्तिसुदस्यतेविभोक्लिश्यंतियेकेवल बोधलब्धये तेषामसौक्लेशलएवशिष्यतेनान्यद्यथास्थूलतुषा वघातिनाम् ॥ तातें ज्ञानकहे ज्ञानपाइ जो ज्ञानको जी-वनको नजान्यो तौ ज्ञानकहावत परि ज्ञानकहांहै भावबि-नाभक्ति ज्ञानच्युतभये भवसागरमें परतेहैं यथा ॥ जेज्ञान मानबिमत्ततवभयहरणिभक्तिनआदरी । तेपाइसुरदुर्लभ पदादपिपरतहमदेखेहरी ॥ प्रमाणभागवते ॥ संसारकूपे पतितंविषयैर्मुषितेक्षयम् ग्रस्तंकलाहिनात्मानंकोन्यस्त्रातु मिहेश्वर ३९ ॥

तिनतेखरशूकरश्वानभलेजड़ताबशतेनकहैंकछुवै । तु-लसीज्यहिरामसोंनेहनहीं सोसहीपशुपूछबिखाननह्वै । जननीकतभारमुईदशमांसभईकिनबांझगईकिनच्वै।जरि जाउसोजीवनजानकिनाथरहैजगमेंतुम्हरोबिनह्वै४० ॥

शुभाशुभ कर्म रस्सी में बांधे जगभार वाही ऐसे कर्म-कांडीते खरसम हैं योगक्रियाभिमानी मलभक्षक सिद्ध पुष्टांग ऐसे योगी शूकर समहैं ज्ञानबल मुंहजोर अकारण बाद भूंकना ऐसे ज्ञानी श्वानसमहैं भावबिना रामसनेह कर्मकांडी खरसम योगी शूकर समज्ञानी श्वानसम पुनः कहत कि नाहीं तिनते खरशूकर श्वानभलेहैं काहेते जड़ता

की बपते कछुकहते तौ नहीं हैं औ ज्ञानी आदि चैतन्यहू बिमुखता करतेहैं ताते गोसाईंजी कहत कि जाकोनेह श्रीरघुनाथजीसों नहींहै ते सहीकहे सांचोपशुहैं बिनापूंछवो बांड़े बिनाहू सींगके मुड़वा ऐसे कुटूपीभाव पशौमें सुभगनहीं ऐसे हरि बिमुखनकी जननी गर्भकेभार ते दशमास लौं काहेको मरिमिटी बांझक्योंनभई व्यै कहे गर्भडारि क्योंनदियो हे जानकी जीवनबिना तुम्हारो हूकै जे जगमें जीवतहैं तिनको जीवनजरि जाउ भाव वै मरिजाहूं ४० ॥

गजबाजिघटाभलेभूरिभटाबनितासुतभौंहतकेंसबकै।
धरणीधनधामशरीरभलोसुरलोकहुंचाहियहैसुखस्वैासब
फोटकसाटकहैंतुलसीअपनोनकछूसपनोदिनहूँ।जरिजाउ
सोजीवनजानकिनाथजियेजगमेंतुम्हरोबिनहूवै ४१ ॥

गजबाजि कहे हाथी घोड़ादि घटाकहे समूह चतुरंगिनी सेना तामें भलेमनमाने योधा भूरिकहे बहुतहैं औ बनितादि पुत्रपर्यंत यावत् समाजहै ते सबकोउ भौहैं तकतभाव आज्ञानुकूलहैं औ धरणी धन धाम इच्छापूर्वक भलोशरीर निरुज अर्थात् सप्तांगराज्यो पूर्णहैं यथा॥ स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानिचेत्यमरः॥इत्यादि तौ लोकमें सुखी हैं सोई अपने सुखकी चाह सुरलोकहूकी राखतेहैं भाव तीर्थ तप दान यज्ञादि करिकै सुरलोक सुखके अधिकारीभये इत्यादि सबसुख फोटक साटकहैं अर्थात् बिना श्रीराम शरणागत सबसुख बकना बूसासम असारहै गोसाईंजी कहत कि सपने कैसो सुखहै दिनकी लोक संपदामें अपनो कुछनहींहै तामें मनलगावतेहैं ताते हे जानकी जीवनबिना तुम्हारोहूकै जे जगमें जीवतहैं तिनको जीवन जरिजाउ भाव वै मरिजाहूं तौ और को तौ न बिमुखतादेहूं ४१ ॥

सुरराजसोराजसमाजसमृद्धि बिरंचिधनाधिपसोध-
नभो । पवमानसोपावकसोयमसोम सोपूषनसोभवभूष
नभो। करियोगसमाधिसमीरनसाधिकै धीरबड़ोबशहूम-
नभो। सबजाइसुभाइकहैतुलसी जोनजानकिजीवनको
जनभो ४२ ॥

सहितसमाज इन्द्रसों राजा होइ समृद्धिकहे संपूर्णऋधि सहित ब्रह्मा सों समर्थ होइ धनाधिप कुबेरसम धनमान् होइ पवमानकहे पवन सों बलवान् होइ पावकसो तेज मान्होइ यमराजसों दंडधारी सोमचन्द्रमासों शीतल होइ भव जो संसार ताको भूषणकहे प्रकाशक पूषणकहे सूर्यनसमहोइ योग अष्टांग यथा यम १ नेम २ आसन ३ प्रत्याहार ४ प्राणायाम ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ इत्यंष्टांग तहां अहिंसासत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य असंग्रह इति पांचयमहैं शौच संतोष तप जपनिष्ठाई पांचनियमहैं स्वस्तिकादि चौरासी आसनहैं तामें चारिमुख्यहैं यथा ॥ योगशास्त्र ॥ स्थिरुपद्मंतथासिंहंभद्रं चैवचतुष्टये ॥ इत्यादि आसन प्रत्याहारकहे अल्पान खल्पाहारी यथा ॥ योगशास्त्र ॥ सस्निग्धमधुराहारश्चतुरांशविवर्जितः भुज्यतेहरि संप्रीत्यैमिताहारःसउच्यते ॥ प्राणायामकहे मंचयुक्तादक्षिण श्वासाखैंचै आठबार सो पूरकहै थांभिराखै बत्तिस बारसो कुंभकहै बाम श्वासा सोराबार करिछाड़ै सो रेचकहै याते चितमें प्रकाशहोतहै इति प्राणायाम धारणाकहे नासिकाग्र भाग दृष्टिदै नाभीचक्रादि वस्तु विषे चितथिर करना इति धारणाहै चित्तका ध्येयाविषयक जो वृतिप्रवाह सो ध्यानहै इत्यादि भेद शून्य अर्थमात्र कामनाहोइ जेहिमें सो समाधि है इत्यादि योग करि समाधि लगाइ पुनः समीरकहे वायु यथा हृदयमें प्राण गुदामें अपान नाभीमें समान कंठमें उदान सबदेहमें व्यान

नाभीमें नाग नेत्रमें कूर्म क्षुधामें क्रिकिल जमुहाईमें देवदत्त मृत्युमें धनंजयादि समीरनकोसाधिकै बड़ोधीर्यमान्छै मनछ्को जीतिलये गोसाईंजी सौभरिक में कहत कि जो जानकीजीवन को जन न भयो तौ योगादि जावत साधनहैं सो जायकहे वृथाहैं यथा रुद्रयामले ॥ येनराधम लोकेषुरामभक्तीपराङ्मुखाः ॥ जपंतपंदयायौचंशास्त्राणामवगाहम् ॥ सर्वंवृथाविनायेनश्रुणुध्वंपार्वतिप्रिये ४२ ॥

कामसेरूपप्रतापदिनेशसेसोमसेशीलगणेशसेमाने ।
हरिचन्द्रसेसांचेबड़ेबिधिसे मघवासेमहीपबिषयसुखसाने।शुकसेमुनिशारदसेवकताचिरजीवनलोमसतेअधिकाने
ऐसेभयेतौकहांतुलसीजोपैराजिवलोचनरामनजाने ४३॥

काम समान रूपवानहोइ दिनेश कहे सूर्यसम प्रतापवानहोइ सोमकहे चन्द्रमासम शीलमानहोइ गणेश से माने कहे पूज्यमान होइ हरिश्चन्द्रसे सांचे कहे धर्मवान होइ ब्रह्मा सों बड़ो भयो विषयरससाने सुख सहित मघवाकहे इन्द्र से राजाभयो शुकदेव ऐसो मुनिभयो शारदा से वक्ता विद्वानभये चिरंजीवनमें लोमससे आयुर्बलभयो इत्यादि सबगुण पूर्णभयो औ राजीवलोचन श्रीरघुनाथ जीको न जान्यो भक्त न भयो ताको गोसाईंजी कहत कि सबगुण भये ते का भयो आखिर सबगुण लौकिक नरसमानहैं भक्तिअचलहै राजीवलोचन रामेत्यर्थः॥ तचरेफपर ब्रह्मवाचकः सश्रीरामस्यलोचन कंजयोः तेजः यथामहारामायणे॥ तेजोरूपमयोरेफो श्रीरामांवककंजयो॥ कोटि सूर्यप्रकाशरच परंब्रह्मस उच्यते॥ पुनः रेफस्याकारः प्रकाश वाचकः॥ सश्रीरामसुखमंडलस्यतेजोरूपः यथा॥ रामास्य मंडलस्यैव तेजोरूपेवरानने॥ कोटिकंदर्पशोभाढ्यो रेफाकारोहिबिंदुच॥ पुनः दीर्घाकारः जगत्स्थितवाचकः सश्रीरामवक्त्रसस्यतेजरूपः यथा मध्याकारोमहारूपः श्रीराम-

स्यैवबत्तसः पुनः जीवशब्दजगपालन रुगुणवाचकः ॥ ताते राजीवकी उत्पत्तिपालनदिव्यगुणादि अर्थभयो यथारामनुजकृतमंचार्थे॥रामएवहि लोकानां उत्पत्तिस्थितिकारकः एवंभूतोव्यापनशीलःश्रीरामेरकारार्थःरकारवाच्यःरादानेइतिधातोःरातिगृह्णातिकुक्षौविश्वामित्रिरःरादीप्राप्तिधातोःरातिप्रकाशतेइतिरःइत्यनेन जगज्जन्मादिकर्त्तृत्वेनरकारस्यसर्वेश्वरत्वंजगत्कारणत्वं चसिद्धं उक्तंवशिष्ठादीते॥ रकारमैश्वर्यबीजंतुमकारस्तेनसंयुतः अवधारणयोगेन रामोयस्मान्मनुःस्मृतः॥यद्वारमुक्रीड़ायामितिधातोडप्रत्ययेरमयतिसुखदुःखादि दाढ्यत्वेन विश्वमित्रिरः॥ एतेनजगत्पालकत्वंसिद्धं यद्वारमधातोर्विसर्गार्थकत्वंतदा जगतोरमयति उत्पादयतिइतिरः इत्यनेनाखिलब्रह्मांडानंतापरिच्छिन्नैश्वर्यविशिष्टोपहतपापमाविज्वरो विमृत्युर्विशोको विजिघित्सोऽपिपासःसत्यकामःसत्यसंकल्पइत्यादिगुणविशिष्टत्वंसिद्धं अयंरकारोयोगरूढः तच्चयोगेनजगज्जन्मादिकर्त्तृत्वाकर्तृत्वंप्रसिद्धं रूढ्यातु अखण्डब्रह्मवाचकत्वं परवाचकत्वेनप्रधानः सर्ववेदाश्रयत्वाच्च सर्वलोकस्यकारणत्वात् ईश्वरप्रतिपाद्यत्वादखंडब्रह्मवाचकउक्तंच ॥वीर्य्यथास्थितोवृक्षशाखापल्लवसंयुतः। तथैवसर्ववेदाहिरकारेषुव्यवस्थिताः ॥रकाराज्जायतेब्रह्म रकाराज्जायतेहरिः। रकाराज्जायतेशंभुःरकारात्सर्वशक्तयः ॥आदावंतेतथामध्येरकारेषु प्रतिष्ठितः। विश्वंचराचरंसर्वमवकाशेननित्यशः॥यथाकरंडेरलानिगुप्तान्यन्यैर्नदृश्यते। तद्वन्मंत्राश्चवेदाश्च रकारेषु व्यवस्थिताः।इतिपुलहसंहितावचनात् रघुनाथस्यसाक्षाद्रकारवाच्यस्य परब्रह्मवाचकत्वं सिद्धं॥तहांरेफको अर्थपरब्रह्मभयो रेफकी अकारको अर्थ शोभामय प्रकाशमयो भाव आकार सहित रेफ प्रकाशमय सोहत अरु दीर्घ अकार उत्पत्तिपालन अर्थभयो औ सौशील वात्सल्य करुणा दयादि जो दिव्यगुणहैं तेजीवशब्दको अर्थगुण निधिभयो लोचनकहे दयादृष्टि है सदा जिनके ऐसे राजिवलोचन

को जे न जानैं तौ रूपादियावत् गुणहैं ते सबहूथाहैं ४३ ॥

झूमतद्वारअनेकमतंगजँजीरजरेमदअंबुचुचाते । तीखे तुरंगमनोंगतिचंचलपौनकेगौनहुंतेबढ़िजाते । भीतरचंद्र मुखीअवलोकतिबाहिरभूपखड़ेनसमाते । ऐसेभयेतौकहा तुलसीजोपैजानकीनाथकेरंगनराते ४४ ॥

मदअंबुकहे मदको जलगंडस्थल में चुचुवात ऐसे मस्त मतंगकहे हाथी अनेकन जँजीरनमें जकड़े जिनके द्वारपै झूमतहैं औ तीखेकहे तीक्ष्ण मनोगति जिनकी मनकी ऐसी गति ऐसे चंचलहैं जो पवनहूंकी गौनते बड़ोबेगते बढ़िजातेहैं ऐसे घोड़े समूहजिनको प्राप्तहैं सुन्दरमंदिरके भीतर चन्द्रबदनी स्त्री अवलोकत कहे आज्ञानिहारतहै बाहेर द्वारपै समूहभूप खड़े जो दरबारमें अंबातनहीं ऐसे ऐश्वर्यमानभयो तौ काहभयो अन्तसमय कोऊ संग न जाहिंगे गोसाईंजी कहत कि जोपै जानकीनाथ के रंगन राते भाव श्रीरघुनाथजीकी प्रीतिरंगमें जिनको मनरँगि न गयो रामानुरागी न भयो तौ सब ऐश्वर्य्य वृथाहै यथा भागवते ॥ रायःकलत्रंपशवःसुतादयो गृहामहीकुंजरकोशभूतयः॥ सर्वेऽर्थकामास्क्षणभंगुरायुषः कुर्वंन्तिमर्त्यस्यकियत्प्रियंचलः ४४ ॥

राजसुरेशपचासकको बिधिकेकरकोजोपटोलिखिपाये । पूतसपूतपुनीतप्रियानिजसुन्दतारतिकोमदनाये । संपसिद्धिसबैतुलसीमनकीमनसाचितवैचितलाये । जानकिजीवजानेबिनाजनऐसेउजीवनजीवतजाये ४५ ॥

सुरेश जो इन्द्र ताके पचास गुणराजाहोइ ताको पट्टा कहे पुष्टताको पचब्रह्माके हाथको लिखापायो भावकल्पांत न बनोरहै पुनः पुत्रसपूतहोइ पुनीत प्रियाकहे पतिव्रत

स्त्री छोड़ जाने आपनी सुन्दरताके आगेरतिको मानमर्दन करोहै संपतिकहे संपूर्ण द्रव्य सिद्धि यथा देह अनुरूपको प्राप्ति सो अणिमाहै स्थूलरूप सो महिमा लघुदेह होइ सो लघिमाहै सहित देवता परेन्द्रियमें प्रवेशहोइ सो प्राप्ति है दिव्यदृष्टि सो प्राकाम्यहै मायाके अंश प्रेरणा सोईशिता है विषय भोगमें मनस्ववश सो वशिताहै मनोरथ प्राप्ति सो अवस्यतिहै इत्यष्टौसिद्धि भगवत्प्रधानहैं पुनः क्षुधादि रहित सो अनूर्मित्वहै दूरिवस्तु देखना दूरदर्शन दूरे श्रवण मनसमगति देह सो मनोजवहै इच्छा रूपधारी कामरूपहै अपर में प्रवेश परकाय प्रवेश है इच्छामरण स्वछंदमृत्युहै देवसमं अप्सरनकी क्रीड़ा प्राप्ति सो देवानां सहक्रीड़ा दर्शनहै संकल्प प्राप्ती सो यथासंकल्पहै जाकी आज्ञा अभंग सो आज्ञा अप्रताहतगतिहै इतिदश सिद्धीगुण संबंधीहैं तीनिउ कालकी बातजानै सो त्रिकाल ज्ञात्वहै शीतोष्णजित सो अद्वंदहै पराये चित्तकी बातजानै सो परचित्ताभिज्ञाता है अग्न्यादिके तेजको थांभै सो अग्न्यर्कांबुविषादीनां प्रतिष्टम्भहै काहूसोंपराजय न होइ सो अपराजय है इतिपांचसिद्धी तुच्छहैं सब तेइसिद्धीहैं ते सब मनकीमन रुचित्तलगायकै चितैरहीं भाव जो मनोरथहोइ सोईकरैं गोसाईंजी कहत कि जानकी जीवन को बिनाजाने जे ऐसउ जन हैं ते जीवतमें जीवन जाये कहे मृतक समान हैं ४५ ॥

कृशगातललातजोरोटिनकोघरबातघरेखुरपाखरिया।
तिनसोनेकेमेरुसेढेरलहेमनतौनभरोघरपैभरिया॥ तुलसी
दुखदूनोदशादुहुंदेखि कियोमुखदारिदकोकरिया। तजि
आशभोदासरघूपतिकोदशरत्थकोदानिदयादरिया ४६ ॥

आपनो कालपाय दुष्टकर्म उदयते दारिद्र प्रकाश लोग आतप पीड़ित तातेगातकहे देहकृशकहे दूबरिहै

रही क्षुधासोई उष्णआकुलीते अन्नशीतलता चाहत ताते रोटी कहे भोजनकी चाहते ललचातफिरतहैं घरकहेघर त्रिष घरबात कहे घरकी मर्य्यादा मिरिफ खुरपा खरि-या है भाव घासछोलि बेचिबो जीविकाहै तिनहींको कोऊ कालपाइकै सुकर्म उदयभयो भाग्यप्रकाशतेसुख शीतलता रूप सोनेकेमेरु पहाड़ सम धनको ढेरकहे कछीपाये ताते घर तौ भरिभयो पै मननहीं भरो आशाबनीरही गोसाईं जी कहत कि दूनोंदशा दूना दुख देखि अर्थात् दारिद्र दशामें जो सुखकी आशा रहै सोई सुखदशामें आशाबनी रही इत्यादि दोऊदशामें आशारूप दूनों दुख देखिकै दारिद्र को सुखकरिया कहे स्वाहीलगायकै मनरूपदेग ते निकारिदिये भाव आशा छांड़िदिये ते सुखीह्वैगयो यथा॥ आशापाशैर्वयेदासास्तेदासाजगतामपिआशादासीकृतायेन तस्यदासायतेजगत्॥ ताते आशको तजिकै श्रीरघुपतिको दासभयो जे दशरथनंदन दया के दरिया कहे समुद्रहैं ४६॥

कोभरिहैहरिकेरितयेरितवैपुनिकोहरिजोभरिहै। उथपैतेहिकोजेहिरामथपैथपिहैतेहिकोहरिजोटरिहै। तुलसीयहजानिहियेअपनेसपनेनहिंकालहुतेडरिहै। कुमयाकछुहानिनओरनकीजोपैजानकीनाथमयाकरिहै ४७॥

हरि श्रीरघुनाथजीके रितये कहे खालीकिहे ताको और को भरिहै लंकादुष्टराक्षसनते खालीकरे ताको कोऊ न भरिसक्यो अरु हरिजाको भरिहैं ताको पुनः कौनरितवै कहे खालीकरैगो यथा विभीषण को लंकामेंभरे ताको कोऊ न खालीकरि सक्यो अरु जाको श्रीरघुनाथजी थापि हैं ताको कौन उथापैकहे उखारैगो यथा ध्रुवप्रह्लाद अंबरीष हैं अरु जाको हरिटारिहैं ताको कौनथापैगो यथा हिरण्यकश्यप बालि जो जनशरण आवै ताको अभय करिदेत यथाबालीकीये॥ मिचभावेनसंप्राप्तनत्यजेयंक-

दाचन। दोषोयद्यपितस्यस्यात्तामेतदगर्हितम्॥ सकृदेव प्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते । अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येत द्व्रतंमम ॥ तातातेजाको श्रीरघुनाथजी रक्षाकरत ताको काहू कीभय नहींहै ऐसो आपने हियेमेंजानि गोसाईंजी कहतकी हम सपनेहूमें कालहू को नहींडरते हैं काहेते जो जानकीनाथ कृपाकरिहैं तौ और देवादिकी कुमयतें हानिनहीं ४७ ॥

व्यालकरालमहाबिषपावकमत्तगयंदनकेरदतोरे।शासतिशंकिचलीडरपैहुतेकिंकरतेकरनीमुखभोरे। नेकुबिषादनहींप्रहलादहिकारणकेहरिकेबलहोरे । कौनकित्राश करैतुलसीजोपैराखिहैंरामतौमारिहैकोरे ४८ ॥

हिरण्यकश्यप प्रह्लादजीके ऊपर व्यालकहे सर्पकराल छड़ाइदिये ते शंकामानिभागे महाबिष हालाहल दिये सोऊ निर्बिषह्वै गयो पावकमें फूकिदिये सोऊ शीतल भई मत्तगयंद छाड़े तिनके दांत रघुनाथजी तोरे ताते भागे इत्यादि यावत शासतिकिये सो सब शंकाकरि भागि चली ताते शासति करनेवाले जे किंकर सेवकहुते तेऊ आपनी कुटिलकरणी को डरमानि तापै मुंहफेरिलिये भाव अब हमते यह काम न होइगो अरु प्रह्लादजीको नेकुकहे थोरहू बिषाद न भयो याको यह कारण कि केहरिकहे नरसिंह तिनको बलह्वैरह्यो गोसाईंजी कहत कि कौनकी त्रासकरै जो श्रीरघुनाथ राखिहैं तौ और कौन मारिहै ४८ ॥

कृपाजेहिकीकछुकाजनहींनअकाजकछूजेहिकेमुखमोरे। करैतिनकीपरवाहिकोजाहिबिषाननपूछफिरैदिनदोरे। तुलसीजेहिकेरघुबीरसेनाथ समर्थसुसेवतरीझतथोरे।

कहाभवभीरपरीतेहिधौंबिचरैधरनीतिनसोंतृणतोरे ४९॥

जे धन राजादि मद में माते हरिसनेहिनसों विमुख तिनको कहतकि जाकी कृपाकिहे आपनो कछुकाज नहीं अरु जाके मुखफेरे अपनो अकाजनहीं तिनसों जो हरि सनेहीहोइ तौ विषय सनेहिनते परवाहि न करै काहेते जाहिकहे जिनके विषाणकहे सींग पूंछहीन मुंडबांड़े पशुसम दौरेफिरते ह्वैदिनकी जिंदगानी में गोसाईंजी कहतकि जाके श्रीरघुवीर ऐसे समर्थ स्वामीहैं जे थोरेही सनेह सेवाते रीझतेहैं यथाबाल्मीके ॥ शक्रदेवप्रपन्नायत वास्मीतिचयाचते ॥ अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंपुनः॥ हनुमन्नाटके ॥ याबिभूतिर्दशग्रीवेशिरच्छेदेपिशंकरात् ॥ दशनाद्रामदेवस्यसाबिभूतिर्बिभीषणे ॥ ताते श्रीरघुनाथ ऐसेस्वामीको जो सेवकहै ताको भवकहे संसारमें कहांधौं भीरपरी भावकछु संकट नपरैगो ताते लोकभामी लोग जेहैं तिनसों सनेह तृणसमान तोरिकै अभयह्वै भूमिपै विचरै ४९॥

काननभूधरबारिबयारिमहाबिषब्याधिदवाअरिघेरे । संकटकोटिजहांतुलसीसुतमातपिताहितबंधुननेरे । राखि हैरामकृपालतहांहनुमानसेसेवकहैंजेहिकेरे । नाकरसात-लभूतलमेंरघुनायकएकसहायकमेरे ५० ॥

जो भूमिपै विचरै कोकहै तामें शंकाकी भूमिपै अनेक विघ्नहैं ताहेतु प्रसिद्धकहतकि बनमें पहाड़नमें नदीआदि जलमें औमहाविषयकी बयारिकहे जहांबनमें हालाहल जहर को वृक्षहोत ताकी बयारि लागे मनई मरिजात अरु बाराह रक्ष व्याघ्र भूत ज्वरादि यावत् व्याधिहैं अरि घेरेकहे ठगचोर भीलादि वादाये वालो शत्रुके संमुख इत्यादि कोटिन संकट जहांहैं तहां मातापिता पुत्रभाई

हितकार कोऊ नेरे नहीं जो सहायकरै गोसाईंजी कहतकि जहां संकट परो तहां श्रीरघुनाथजी कृपालु राखिहैं संकटते उबारिहैं तहां चिदेव पूज्य अतरेबड़े स्वामी ते तुच्छकामनकी सहायता मांगनो सेवककी ढिठाई है ताकेहेतु कहत कि जिनके हनुमान् ऐसे सेवक जे राम भक्तनकीव्याधि निवारणार्थ पंचमुखधारेहैं चारि चारिउ दिशाको एकआकाशको जहां भक्तनको बांधादेखत तांको तुरतही निवारत यथातंत्रागमें ॥ येनवक्त्रेनविप्रेंद्रमर्चो प्रह्लादविनिर्ययौ ॥ कुर्वंतुमरणंतस्यसर्वशत्रुहरंपरम् ॥ पुनः ब्रह्मांडपुराणे ॥ श्रीरामहृदयानंदंभक्तकल्पमहीरुहं ॥ अभयं वरदंदोर्भ्यांकलयेमारुतात्मजं ॥ ताते नाक कहे स्वर्गलोक जहां देव नागादि की जो भय भूतल में शत्रुआदि भय यावतहैं तहां एक श्रीरघुनायक मेरे सहायक हैं एक समय अकबर बादसाह सिद्धाई देखबेको गोसाईंजी को बंधुवाकरेता समय यहकवित्त कहि हनुमान्जी को स्मरण करे तब बांदर कोटिन पैदा ह्वै दिल्ली उजारि दिये ५० ॥

जबैयमराजरजायसुतेमोहिंलैचलिहैंभटबांधिनटैया ।
तातनमातनस्वामिसखा सुतबंधुबिशालबिपत्तिबटैया ।
शासतिघोरपुकारतआरत कौनसुनैचहुंवोरडटैया । एक
कृपालुतहांतुलसीदशरथ्थकोनंदनबंदिकटैया ५१ ॥

इहांतक जीव के दोषकहे अब भयदर्शन यथा मृत्यु समय जब यमराजकी रजायसुते भट यमगण ग्रीवा बांधिकै मोको लैचलिहैं ता समयकी विशालकहे बड़ीभारी विपत्तिको बटैयाकहे सहायक मातापिता स्वामीसखा पुत्र भाई कोऊनहीं है तहां जन्मांतरके पापनके फलहेतु यमगण दंडदेत ताकी मारुतिकहे दुखघोर कहे महाकठिन परते आरतह्वै पुकार करत तामें कौनसुनै चारहूं ओरते

डटैया कहे सबदंड दायकै हैं अथवा दीनकी पुकारको सुनैया दूसरा नहीं है तहां की बंदी काटनेवाला एक दशरथको नंदन कृपालु है काहेते जो अबगौहै के नामको उच्चारण करै तौ तुरतही सब पापभागतेहैं जैसे सिंहके चारते मृगा भागते यथा ब्रह्मांडपुराणे ॥ अवशेनापियन्नाम्नि कीर्तिते सर्वपापकै ॥ पुमान्विमुच्यतेसद्यः सिंहत्रस्तैर्मृगारिव ५१ ॥

जहांयमयातनघोरनदीभटकोटिजलच्चरदंतटवैया ।
जहँधारभयंकरवारनपारनवोहितनावननीकखवैया।तुलसीजहँमातपितानसखानहिंकोऊकहूंअवलंबदेवैया।तहां बिनुकारणरामकृपालुबिशालभुजागहिकाढ़िलेवैया५२॥

जहां यमयातनाकहे पीड़ा ताके देनेवाले कोटिन भट बीरदयारहित अरु नदीवैतरणी घोरहै काहेते जामें अनेकन जलचर दांतपैनायरहे हैं फारिखावे को जहांधारा भी भयंकरहै काहेते वारते पारनहीं सूझिपरतहै औ नवोहितकहे न जहाजहै न नावहै न नीवखेवनहारहै जो सुगम उपाय ते उतारै यमपुरीको व्याख्या रामाश्वमेधहै औ भागवत में पंचमस्कंध के अंतअध्याय में समूहतेएकवैतरणीको लिखतहैं। यथा ॥ येत्विहवैराजन्याराजपुरुषा वाश्रयाखंडान् धर्मसेतून्भिंदंति तेसंपरेत्यवैतरण्यांनिपतंतिभिन्नमर्यादास्यांनिरय परिखामुतायनद्यंयदोगौरितस्ततोभक्ष्यमाणा आत्मनानिर्युज्यमानाश्चाभिरक्ष्यमानाः स्वाघेनकर्मपाकमनुस्मरंत उपतप्यंते विमूच पूयशोणितकेशनखास्थिमेदोमांसवसावाहिन्यासुपतप्यन्ते॥ गोस ईंजी कहत जहां यमपुरी में माता पिता रक्षादिकोऊ अवलंबकहे सहारा को देवैया नहीं है तहां बिना कारणै बिनहेतु जे कृपालु श्रीरघुनाथजी तेई बिशालभुजा ते गहिकै काढ़िलेवैया हैं ५२ ॥

जहांहितस्वामिनसंगसखा बनितासुतबंधुनबापुनमै-
या। कायगिरामनकेजनकेअपराधसबैछलछाँड़िक्षमैया।
तुलसीतेहिकालकृपालुबिना दूजोकौनहैदारुणदुःखदमै-
याजहांसबसंकटदुर्घटशोचतहांमेरोसाहबराखैरमैया५३

जहां यमपुरी में हितकार न स्वामी न संगी सखा न बनिता न पुत्र न भाई न माता न पिता तहां काय कहे देहके गिराकहे बचनके औ मनादिके करे यावत् सब अपराधहैं आपने जनके तिनको छलछांड़िकै सत्यसत्य क्षमा करनहार श्रीरघुनाथजी हैं यथा सनत्कुमार संहितायां॥ मानसंवाचिकंपापंकर्मणःसमुपार्जितं॥ श्रीरामस्मरणेनैव तत्क्षणान्नश्यतिध्रुवं॥ इदंसत्यमिदंसत्यं सत्यमेतदिहोच्यते॥ गोसाईंजी कहत जाकालमें यमपुरमें लेखापरीता कालमें श्रीरघुनाथ कृपालु बिनादारुण कहेकठिन दुःखको दमैया नाशकरैया दूसरा कौनहै एक रघुनाथजी हैं यथा अध्यात्मे॥ कोवादयालुःस्मृतकामधेनुरन्योजगत्यांरघुनाथ कादृते॥ स्मृतोमयानित्यमनन्यभाजा क्षत्वाम्हतामेखय मेवयातः॥ तातें जहां सब तनातें दुर्घटसंकटको शोच परत तहां मेरो साहब रमैया राखतहै रमयाकहे जो सबको अपनामें रमावै सबमेंरमै अध्यात्म्ये॥यस्मिन्रमंतेमुनयोविद्याज्ञानसंभवे तंगुरुःप्राहरामेतिरमणद्राम इत्यपि५३॥

तापसकोबरदायकदेवसबैपुनिबैरबढ़ावतबाढ़े। थोरे-
हिकोपकृपापुनिथोरेहिबैठिकैजोरततोरतठाढ़े। ठौंकिब-
जायलियेगजराजकहांलौंकहौंकेहिसोंरदकाढ़े। आरतके
हितनाथअनाथके रामसहायसहीदिनगाढ़े ५४॥

ब्रह्मादिक यावत देवताहै ते सब तापसको बरदायकहैं भाव जो तपस्या करत ताको बरदेत पुनः वाही भक्तके

बाढ़ै बलिष्ट भये पर सबै देव बैर बढ़ावत यथा हिरण्यक-श्यप तपस्या करै तब ब्रह्माजी बरदान दै अचल करैं पुनः जब बलिष्ट परो तब बैर बढ़ाय ईश्वर ते प्रार्थना करे कि यहि दुष्टको बधकरौ जब मरिकै फिरि रावणभयो तपस्या करो तब फिरि वर दै अचल करे जब रावण बलिष्ट भयो तब फिरि बैर बढ़ाय ईश्वर ते प्रार्थना करे कि रावण को मारो ताते कोप करत तो थोड़े दिनको छपा करत तो थोड़े दिनको अरु बैठिकै प्रीति जोरत औ ठाढ़े होतही प्रीति तोरि देत तहां बैठबे उठबेको अवधि क्षणमाचकीहै भाव क्षणहीं में प्रीति क्षणहीं में बैर ताते सब देवन की करतूतिरूप सिक्का को गजराज ने ठोंकि बजाइ परखि लियो सब खोटेही ठहरे कहिसों कहिसों गजराज ने रद कहे दांत भाव खीसै काढ़ि बिनय कासों नहीं करे यह कहां तक कहौं सबसों पुकार करे काहू देवने ग्राह सों न उबारे एक रघुनाथजी उबारे ताते आरत दुःखित के हितकार औ अनाथके नाथ औ गाढ़े दिनके सहायक श्रीरघुनाथजी सही कहे सांचेहैं ५४ ॥

जपयोगबिरागमहामखसाधनदानदयादमकोटिकरै। मुनिसिद्धसुरेशगणेशमहेशसेसेवतजन्मअनेकमरै। निग-मागमज्ञानपुराणपढ़ैतपसानलसेयुगपुंजजरै। मनसोंप्रण रोपिकहैतुलसीरघुनाथबिनादुखकोनहरै५५ ॥

जप कहे सिद्धि साध्य सुसिद्धि अरि ऋणी धनी शुभ दिशा मुहूर्त्त कूर्म चक्र शोधि जीवन जनन ताड़नादि सं-स्कारकरि मंत्र पुष्टाक्षर प्रति सहस्रसपादलक्ष पुरश्चरण भूमिशयन सत्यवचन सूक्ष्मभोजन श्रद्धा बिश्वासयुत इति जप करै योग कहे यम नेम आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि इत्यष्टांग योग करै बैराग्य में चारि भेद विषयको विष सों अधिक मानै सो हेतु बैराग्य है

पुनः जो विषयको व्यवहार करि वेदआज्ञा ते कर्म करे हरि अर्पण करि फल त्यागत दूजो जो फल न खाना ताको इच्छ क्यों लगावना याते विषयको स्वरूपै त्यागत ये द्वौ भेद स्वरूप बैराग्य हैं पुनः जो वस्तु त्यागै ताको फिरि कुछ वासना न उठै अभिमान न आवै ताको फल बैराग्यकहीपुनः सब लोकनको ऐश्वर्य्य महाविष मानि त्यागै ताकी अवधि बैराग्य कही पुनः चारि भेद तामें असार को त्याग सारकोग्रहण सो जितमानबैराग्यहै पुनः मोहदल जीति विवेकदल बलिष्ट करै कालकी विषय जीतै सो वितरेक बैराग्य है पुनः मनादि की विषय रोंकि इन्द्रिन में ईश्वर को प्रकाश मानै सो एक इन्द्रिय बैराग्य है पुनःत्रिलोक विषय मानापमानादिको स्वरूपही त्यागै सो वशीकार बैराग्य है पुनः चारि भेदनिधन निरादर ते मन्द बैराग्य है कथादि श्रवण ते तीव्र बैराग्य जो देहैं ते बैराग्य सो तीव्रतर है जो मोक्षहूसों बैराग्य सो तीव्रतम है महामख कहे अश्वमेध गोमेध नरमेध वाजपेय साधन कहे चारि मुक्ति हेतु प्रथम बैराग्य सो पूर्व कहि आयेहैं दूसर बिबेक सारासारकोबिचार तीसर षट्सम्पति यथा बासना त्याग समहै श्रवणादि इन्द्रिन की विषय रोंकनादम है विषय ते पीठ देना उपरति है शीतोष्ण सहना तितीक्षा है गुरु वेदांतबाक्य में विश्वास श्रद्धाहै चित्त एकाग्र समाधानादि षट्चतुर्थ है मेरी मुक्ति होयगी यह मुमुक्षुतादि चारि साधन करै मुक्ति हेतु अरु दान कहे देशकाल सुपाच बिचारि श्रद्धा सहित बासना रहित शान्तचित्त आदर ते देना यह दान सो करै दया कहे निर्हेतु सब जीवन को सुख देना ऐसी दया सदा करै दम कहे श्रवणादि इंद्रिन की विषय रोंकि देना इत्यादि कोटिन उपाय करै जीव को दुख काहूसों नहीं छूटै पुनः मुनिकहे मननशील सिद्ध कहे जिनको सिद्धि प्राप्तहै सुरेशजो सबल देवराजहैं गणेश विघ्ननाशक प्रथमपूज्य हैं महेश जो सब पदार्थ दाता ऐसे

समर्थादि को सेवा करत अनेक जन्म मरै जीव को दुख काहूसों नहीं छूटै निगम कहेवेद यथा ऋग्वेद ताको उपवेद आयुर्वेद है चिकित्साशास्त्रवैद्यक यजुर्वेद ताको उपवेद धनुर्वेद युद्धशास्त्र बाणविद्या सामको उपवेद गंधर्ववेद संगीत शास्त्र गानविद्या अथर्वण वेद ताको उपवेद अर्थ शास्त्र शिल्पविद्या नीति विद्या वेदनके षडंग यथा शिक्षा १ कृल्पसूत्र २ व्याकरण ३ निरुक्ति ४ छंदशास्त्र ५ ज्योतिष ६ आगम कहे शास्त्र प्रथम मीमांसा के जैमिनि आचार्य्य यामें यज्ञादि धर्म बिषयहै धर्म ज्ञानही प्रयोजन है यथोक्त कर्मके अनुष्ठान करिके पुरुषको परम पुरुषार्थ लाभ होत है द्वितीय वैशेषिक शास्त्र याके आचार्य कणाद मुनि यामें पदार्थ बिषय है पदार्थ तत्वज्ञान प्रयोजन है भावाभाव द्वै पदार्थ में द्रव्यादि छः पदार्थ भावमें ताके समान विरुद्ध धर्म जानिये ते पदार्थनके अनेक धर्मको ज्ञान होत तामें निवृत्तिधर्म उत्पन्न जो आत्म साक्षात्कार ताते मोक्ष होत है तृतीय न्यायशास्त्र याके आचार्य गौतम मुनि याको बिषय प्रमाणादि सोरह पदार्थ हैं ताको ज्ञान प्रयोजन है पदार्थ तत्वज्ञान ते मोक्ष होत चतुर्थ योगशास्त्र याके आचार्य पातंजलि मुनि चित्तवृत्ति रोंकनो बिषय है निर्विकल्प समाधि प्रयोजन है अपने निरुपाधि रूपमें स्थित सो मोक्षहै पंचम सांख्यशास्त्र याके आचार्य कपिल मुनि यामें प्रकृति पुरुषको बिबेक बिषय है औ अत्यन्त की दुख त्रयकी निवृत्ति प्रयोजनहै बिबेक ते मोक्ष होत षष्ठ वेदांत शास्त्र याके आचार्य वेदव्यास मुनि यामें जीव ब्रह्मकीएकता शुद्ध चैतन्यता बिषय है आनन्द प्राप्त प्रयोजन है सारासार बिबेक ते मोक्ष होत इत्यादि समुझबे को ज्ञान होय पुराण कहे ब्रह्म ब्रह्माण्ड बामन ब्रह्म बैवर्त्त मार्कंडेय भविष्यादि षट् पुराणैं राजसी हैं नारदीयविष्णु बाराह गरुड़ पद्मभागवतादि षट्पुराणैं सात्वकीहैं मीन कूर्मलिंग शिवस्कन्ध अग्न्यादि षट्पुराणैं तामसी हैं इत्यादि को

पढ़ैसर्गादि दशागजनै पुनः तपसानल कहे पंचाग्नि आदि तापत में पुंज कहे बहुत युगलौं जरा करै परंतु जीव को दुःख काहूसों न छूटै ताते गोसाईं जी प्रण रोपिकै अपने मनसों कहते हैं कि हे मन श्री रघुनाथजी बिना तेरो दुख कौनहरैगो बिना श्री रघुनाथजीकीभक्ति सबवृथा है यथा रुद्रयामले ॥ येनराधमलोकेषुरामभक्तिपराङ्मुखाः॥ जपं तपंदयाशौचं शास्त्राणामवगाहनं॥ सर्वंवृथाबिनायेनहरणुध्वं पार्वतिप्रिये ॥ मनसों कहिबे को यह भाव कि कोऊ मतवाला तर्क मानै ताते अपने मनसों कहत अनन्यता देखते ५५ ॥

पातकपीनकुदारिददीनमलीनधरेकथरीकरवाहैं ।
लोककहैबिधिहूनलिख्योसपनेहूंनहींअपनेबरवाहैं । राम
कोकिंकरसोतुलसीसमुझेहीभलोकहबोनरवाहैं । ऐसेको
ऐसोभयोकबहूंनभजेबिनबानरकोचरवाहैं ५६ ॥

पातक जो पाप तिन करिकै पीन कहे मोटोहौं कुदारिद करिकै अन्न बस्त्र हीन ताते दीन दुखित मलीन ह्वै रह्यौं बसन नाते कथरी पाच नाते करवा धरे कहे लिहे दुर्दशा विलोकि लोग कहत अर्थात् अभागी हैं अरु बिधिहू न लिख्यो तहां बिधिको लिखना द्वै भांति होत है एक कर्माक्षर हस्तपदशीशादिकी रेखा जो सामुद्रिक विद्यासों जानौंजातयथा ॥यस्यमीनसमारेखाकर्मसिद्धिश्च जायते। धनाढ्योसस्तुबिज्ञेयो बहुपुत्रोनसंशयः॥ एककाल अक्षर जो लग्नकुंडली में जैसे ग्रह परत तैसे फल ज्योतिष जातक सों जानौं जात यथा॥लग्नस्थानेनिशानाथेचिकोणे जीवभास्करे । कर्मस्थानेभवेद्भौम राजयोगस्सउच्यते ॥ इत्यादि भाग्य उत्तम एकहू ब्रह्माने नहीं लिख्यो अरु आपने बर कहे श्रेष्ठता बाहै कहे हाथन को बल सपनेहूं में नहींहै कि हम कछु करि सकैंगे ताते लोकवेद आपने

तीनों मतते नकाम हैं। सोई तुलसी श्री रघुनाथजी को किङ्कर सेवक जैसो भयो तैसो समुझेही बनत है काहे ते आपनी बड़ाई आपने मुख ते कहिबो यहबात जगमें रवां नहीं है सलिल रीति नहीं है बल्कि दूषण है ताते अपना नाहीं कहे परंतु और महात्मों ने कहे हैं यथा नाभा जी भक्तिमालमेंलिखे ॥ कलिकुटिलजीवनिस्तारहितबाल्मी-कि तुलसी भये ॥ ताते बानरका चरवाहो जो श्रीरघुनाथ जी तिनके बिना भजे ऐसे नकाम को ऐसो समर्थ कबहूं नहीं भयोहै अर्थात् जो कोऊ भयो सो रघुनाथजी को भजिकै भयो यथा बाल्मीकि शबरी गीधनिषाद अरु बा-नर चंचल पशु आलसी कादर तिनको सबल करि सुमार्ग में लगायो य ते बानरको चरवाहो कहे ५६ ॥

मातपिताजगजायतज्योबिधिहूनलिखीकछुभालभ-लाई। नीचनिरादरभाजनकादरकूकुरटूकनलागिललाई। रामसुभावसुन्योतुलसीप्रभुसोंकह्योबारकपेटखलाई।स्वा रथकोपरमारथकोरघुनाथसोंसाहबखोरिनलाई ५७ ॥

जगमें तो माता पिता जाया कहे स्त्री नकाम जानिकै त्याग कियो औ भाल जो माथ तामें भलाई भाग्य की रेखा ब्रह्मा ने कछु नहीं लिखे ताते भाग्यते नीच लोक में निरादर ताको भाजनकहे पात्र बाहुबल हीन ताते का-दर ताते यथा कूकुर टूकन हेतु ललचात फिरत रहौं तब श्रीरघुनाथजीको स्वभाव सुन्यों कि महाउदार दानीहैं यह जानिकै एकही बार प्रभुसों पेट खलायकै आपनी गरज कह्यों सो स्वारथ को जो सुख लोकमें परमार्थ को जो सुख परलोकमें सो सब पूर्ण करे याते श्रीरघुनाथ ऐसे सुसाहेबको खोरि न लगावा चाहिये जो कुछ कसरि सो आगे कहत ५७ ॥

पापहरैपरितापहरैतनपूजिभोहीतलशीतलताई। हंस कियोबकतेबलिजाउंकहांलौंकहौकरुणाअधिकाई। काल बिलोकिकहैतुलसीमनमेंप्रभुकीपरतीतिअघाई। जन्मज-हाँतहँरावरेसोंनिबहैभरिदेहसनेहसगाई ५८॥

श्री रघुनाथजी कृपा करिके मेरे पाप हरे अर्थात् पा-वन करे काहे ते जाने कि मेरो तन जगमें पूज्य भयो औ परिताप हरे संताप मिटाये काहे ते जान्यो कि हियतल जो हृदय तामें शीतलता आई औ सर्वभक्षी पाषण्डी बक सम रहौं ताको सारासार विवेकी शुद्ध हंस सम किये ऐसे प्रभुकी मैं बलिजाउं करुणाकी अधिकारता कहांतक कहौं प्रभुकी प्रतीति के बलते मन अघानो है परन्तु काल कहे समयकी भयते कि या समय में कोऊ धर्म पार नहीं जात याते अथवा कालमृत्यु थोड़े दिनको जीवन जब लग चैतन्य भयो तबलग काल पहुंचि गयो फिरि जन्म पाये जबलग चेतन्यता आई तबलग विक्षेप रहो ताते यह डर कि अल्पज्ञ जीव प्रभु सनेह भूलि न जाइ याते गोसाईंजी कहत कि कर्माधीन जन्म जहां पावों तहां आपु ते सनेह सगाईकहेनाता सोदेहभरि निबहै भावभक्ति बनीरहै५८॥

लोगकहैंअरुहौंहूंकहौंजनखोटोखरोरघुनायकहीको। रावरीरामबड़ीलघुतायशमेरोभयोसुखदायकहीको।कैयह हानिसहौंबलिजाउँकिमोहूंकरौंनिजलायकहीको। आनि हियेहितजानिकरोज्योंहौंध्यानधरौंधनुशायकहीको५९॥

लोकोंमें सब कहत अरु मोहूं कहत हौं कि खोटो हौं वा खरो हौं एक रघुनायकही को गुलाम हौं अपर को नहीं हौं महाराज यामें आपकी बड़ी लघुता है कि ऐसे महाराज ह्वै कै तुलसी ऐसे कुबुद्धी को सेवक किये रहो

यश मेरो मेरे हृदयको सुखदायक भयो अर्थात् इतनेबड़े समर्थ स्वामीको सेवककहायो तौमैं धन्यहौं मैं बलिजाउं हे करुणा सागर कितौ अपनी लघुतांकी हानि सहौं कितौ आपने किंकर होवे लायक को मोहूं को करिये तहां रामभक्तन के लक्षण यथा महारामायणे ॥ अन्यैवि-हायसकलंसदसच्चकार्य्यं श्रीरामपंकजपदं सततंस्मरंति। श्रीरामनामरसनाग्र पठंतिभक्त्या प्रेम्नाचगद्गदगिरोप्यथ हृष्टलोमाः॥ सीतायुतंरघुपतिंचविशोकमूर्तिंपश्यत्यहर्नि-शंमुदापरमेणरम्यम् । शांताःसमानमनसश्चसुशीलयुक्ताः ॥ तोषक्षमागुणदयामृजुबुद्धियुक्ताः । विज्ञानज्ञानविरतिः परमार्थवेत्ता निर्धामकोऽभयमनःसचरामभक्तः॥ ऐसोसु-भाव जबहोइ तब आपकी कैंकर्य्यता करबे योग्य होउं यह मेरो हित जानिकै अपने हृदय में दया आनि ऐसो अनन्य कीजै जामें मैं धनु शायकंहीं को भाव धनुषधारी रूप को ध्यानकरौं औररूपहूंमें मनु न लागै ५९ ॥

आपुहौंआपुकोनीकेकैजानतरावरोरामभरायोगढ़ायो। कीरज्योंनामरटैतुलसीसोकहैजगजानकीनाथपढ़ायो।सो ईहैखेदजोवेदकहेनघटैजनजोरघुबीरबढ़ायो । हौंतौसदा खरकोअसवारतिहारोईनामगयंदचढ़ायो ६० ॥

इहां तक तौ कवित्त में भय दर्शायो अबराम सनेह नामबल दृढ़ताहेतु प्रार्थनाकरतहेश्रीरघनाथजी भरायो गढ़ायो कहे बनायो मैं आपही को हौं ऐसो अपना कोमैं नीकी भांति आपुही जानतहौं औ जगत भी यही बात कहत कि याको जानकीनाथैने पढ़ायो अर्थात् तु-लसी के हृदय में भक्ति को प्रकाश रघुनाथै जीकी कृपा ते है अरु मैं कैसो हौं कि यथा कीर कहे सुवा सम मुखही ते नाम रटतहौं भाव हृदय में राम सनेह नाहीं है सोई बात को मेरे मनमें खेद है काहे ते जो वेद कहत कि जेहि

जन को श्रीरघुवीर बढ़ावतहैं सो फिरिनहीं घटतहै यथा श्रुतिः॥ तस्नात्तमुद्धवोत्सज्य चोदनांप्रतिचोदनां॥ याहि सर्वात्मभावेनमयास्याच्ह्यकुतोभयं १ नारदीयपुराणे॥ श्री रामंस्मरणाच्छ्वासासमस्तक्लेशसंचयः॥ मुक्तिंप्रयातिविप्रेंद्र तस्यविघ्नोनबाधते २ ताते हौं कहे मैं तौ सदाखरको असवार रजक व चाण्डालवत्पतितमलक्रिया को पात्र हौं परंतु आपको नाम मोको गयंदकहे हाथीपर चढ़ायो भाव महाराज सम मानि जगत माथ नावतहै ताकी लाज कीजै ६० ॥

घनाक्षरी ॥ छारतेसंवारिकैपहाड़हूतेभारीकियोगारो भयोपांचमपुनीतपक्षपाइकै। हौंतौजैसोतबतैसोअबअधमाईकैकैभरोपेटरामरावरोईगुणगाइकै । आपनेनिवाजेकीपैकीजैलाजमहाराजमेरीओरहेरिकैनबैठियेरिसाइकै। पालिकैकृपालव्यालबालकोनमारियेओ काटियेननाथबिषहूकोरूखलाइकै ॥ ६१ ॥

छारकहे धूरि हलकी नीच निरादर तैसो मैं रहौं ताको श्री रघुनाथजी संवारिकै पहाड़हू ते भारी कियो अर्थात् अचल पुष्ट उच्च पूज्यमान करि दियो औ पुनीत श्री रामभक्ति को पक्ष पाइकै पांच कहे संतन की समाज में गारो कहे गरू भयों अथवा पांच कहे गाणपती सौर शाक्त शैव वैष्णवादि पांच में गरु कहे रामभक्तन में गिनती भयो अरु हौं कहे मैंतौ जैसो तब रहौं तैसे अबहूं मनशुद्ध हरि शरणही भया काहे ते अबहूं अधमता करिकै पेट भरत हौं कौन अधमाईहै हे श्रीरघुनाथजी आपुको गुण गाइकै जगत को रिझाइ पुजावत जोद्रव्यादि पावत सो पेटही में लगावत कुछु सुकृतिमें नहीं लगावत याते आपु केप्रसन्नहेतुनहीं गुणगावतहौंताते अपने निवाजेकीपैकहं

जोआपु दयाकरि बड़ाईदीन्हीहै तापैलाजकी जे अर्थात् अपनी ओरते दयादृष्टि राखेरहिये अरु मेरी करणी की ओर हेरि रिसाइकै न बैठिये काहेते हे कृपालु जो व्याल कहे सर्पहू को बालक पालिये तौ अपने पाले की लाज करि ताहूको न मारिये ताही भांति जो बिषहूको रूख लगाइये ताहूको न काटिये तथा मैं आपुही को पालो पोषोहौं ६१ ॥

वेदनपुराणगानजानोंनविज्ञानज्ञानध्यानधारणास-माधिसाधनप्रवीनता। नाहिंनविरागयोगयागभागतुल-सीकेदयादानदूबरोहौंपापहीकीपीनता।लोभमोहकामको हदोषकोषमोसोंकौनकलिहूजो सिखिलईमेरियैमलीन-ता। एकहीभरोसोरामरावरोकहावतहौंरावरेदयालदीन-बन्धुमेरीदीनता ६२ ॥

या कवित्त में वेदादिके यावत् भेदहैं सो सब पचपन के कवित्त में विस्तारहै याते इहां सूक्ष्म लिखत हौं चारिउ वेद अठारहौं पुराणादि को गान कछु नहीं जानतहौं ज्ञान कहे अपनो रूप चीन्हिबो विज्ञान कहे ब्रह्म को जानिबो ध्यानकहे इष्टमें चित्त लगावना धारणा कहे ना-सिकाग्र दृष्टिदेनाभि चक्रादि वस्तुविषे चित्तस्थिर करना समाधि कहे अखंड ध्यान इष्टमें लयहोना ताके जो साधन यमनियमादि की प्रवीणता एकहू नहीं है विराग कहे विषय को त्याग योग अष्टांगकरि मनस्थिर करना याग अश्वमेधादि तुलसी की भाग्य में एकहू नहीं है एक श्री रघुनाथ जीकी दयारूप दान पाइबेको दूबरो कहे भूखा हौं अरु अपने पापन करिकै पीनता कहे मोटाहौं काम क्रोध लोभ मोहादि दोषन को कोष कहे खजाना मो स-मान दूसरो जहान में कौनहै जो कलियुगहू ने जो रीति

सिखिलई है सो मेरीही मलीनता है ताते मो समान कुटिल दूसरा नहीं है जो कहौं ऐसे कुटिलहौं तो तुम श्रीराम दासकाहेको कहावतेहौ ताको कहत हे श्रीरघुनाथजी रावरे दयालु दीनबंधु हौ भाव दीनपर अकारण दयाकरि कृतार्थ करते हौ अरु मेरे दीनताहै वाही एक भरोसे सों मैं आपको दास कहावत हौं नहीं तौ न कहावतो ६२ ॥

रावरोकहावोंगुणगावोंरामरावरोईरोटीद्वैहौंपावोंराम रावरोहिकानिहौं। जानतजहानमनमेरेहूगुमानबड़ोमान्योमैंनदूसरोनमाननमानिहौं।पाँचकीप्रतीतिनभरोसो मोहिंआपनोईतुमआपनाइहौंतबैहीपरिजानिहौं । गढ़ि गुढ़िछोलिछालिकुंदकैसीभांईबातै जैसीमुखकहौंतैसीजी यजबआनिहौं ६३ ॥

हे श्रीरघुनाथजी रावरो कहे आपही को गुलाम कहावों अरु आपहीको करुणादया उदारतासों शीलादि जो समूह गुण हैं तिनको गावों पुनः राम कहे रकार मकार जो द्वै वर्ण हैं तेई द्वै रोटी पावों अर्थात् श्रीराम नाम ही की उरमें भूख है अरु कानि कहे मर्यादा लाज आपहीकी है अरु अनन्यता मेरो को जहान जानत यथा तुलसीमस्तकतौनवै अवधनुषबाण लेउहाय॥ इत्यादि भजतेप्रसिद्ध है कि गोसाईंजी अनन्य रामोपासक हैं यह ॥ लोकजानतहै अरु मेरेहू मन में बड़ो गुमान है अनन्यताको यथा ॥ एकभरोसोएकबल एकआसविश्वास । स्वातिबुंदरघुबंशमणि चातकतुलसीदास ॥ इत्यादि दूसरे को न आगे मान्यो है न अब मानतहौं न पीछे मानिहौं पांच कहे ब्रह्मा विष्णु महेश देवी गणेशादि पंचदेवन की मोको प्रतीति नहीं है अथवा पांच कहे पंच जग के

लोग जो मोको श्री रामभक्त कहत सो मोको प्रतीति नहीं है औ अपनोई कहे आपनी अनन्यता की मोको प्रतीति नहीं है कि या मेंमैंभक्त ह्वैगयो हे श्रीरघुनाथ जी जब तुम अपनें ह्वै तामें जब परिहौं तब आपही अपनि जैहौं कौन भांति ताको कहत यथा कुदेर लकड़ी को गढ़िडौल्यावत छोलि कै सफा करत भांडूं कहे खरादि कै चीकनी करत तैसे मेरी बातैं यथा गुण गावौं आपु को कहावौं नाम की भूख है इति गढ़ी गुढ़ी है दूसरे को नहीं मानत हौं यह मेरे गुमान है ताको जहान जानत इति छोली छाली है पांचकी न प्रतीति न आपनो भरोसो आपके भरोसे हौं इति कुंद कैसी भांडूं इत्यादि बातैं जो मुखसो कहत हौं तैसी जब मेरे जीवमें करिदेहौ तब जानि हौं कि मोको आपनो गुलाम बनायो ६३॥

बचनबिकारकरतबरबारमनबिगतबिचारकलिमल कोनिधानुहै। रामकोकहाइनामबेचिबेचिखाइसेवासंगतिनजाइपाछिलेकोउपखानुहै॥तेहूतुलसीकोलोगभलो कहैताकोदूसरोनहेतुएकनीकेकैनिदानुहै। लोकरीति विदितबिलोकियतजहांतहां स्वामीकेसनेहश्वानहूकोसन मानुहै ६४॥

बचन बिकार कौन बिकारता है कहत नाम बेचिबेचि खाउं द्रव्य पाइबे हेतु जगतमें श्रीराम नामको माहात्म सुनावत हौं करतब खुवार कहे कर्म खोटे हैं कौन भांति श्रीरघुनाथ जीकी सेवा पूजा नहीं करत हौं अरु मन विकार रहित कलिमल कहे पाप को निधान कहे भरहूँ रहोहौं भाव विचार नहीं पापही मनमें भरोहै काहे ते सत्संगति में नहीं जात है तहां रामदास कहाइ श्री बचन कर्म मनादि में बेकार तौ काहे ते राम दास सब

कहततापै पीछलेलोगनकी कहनूति उपखान कहे मसला परबात कहनो सो अंत में कहैंगे ऐसो तुलसी कुटिल ताहू को लोग भलो कहत ताको और दूसरो हेतु नहीं है निदान कहे कारण एक यही रीति लोकमें विदित जहां तहां विलोकियत कहे देखियत है कि स्वामी के सनेह खानहूंको सन्मानहै यही उपखानु कहनूतिहै यथा॥ ज्यों स्वामिमयाकूकुरसनमान । त्योंरामभक्तपातुलसीकोमान ॥ पुनः ॥ घटदिरामदुनियांसबहारी । टेंटेलरिक्रागाउं गोहारी ६४ ॥

स्वारथकोसाजनसमाजपरमारथको मोसोंदगाबाज दूसरोनजगजालहै । कैनआयोंकरौंनकरौंगोकरतूतिभलीलिखीनबिरंचिहूभलाईभूलिभालहै । रावरीशपथ रामनामहींकीगतिमेरेइहांझूठोझूठो सोतिलोकतिहूंकाल है । तुलसीकोभलोपैतुम्हारेहीकियेकृपालकीजेनबिलंब बलिपानीभरीखालहै ६५ ॥

स्वार्थको साजकहे लोकसुखके जोअंगहैं यथा ॥ सुंदरि वनिता १ अतरादिसुगंध २ सुंदरबसन३ भूषण४ गानतान ५ तांबूल ६ उत्तमभोजन ७ गजादिवाहन ८ इत्यष्टौ सौभाग्य अंग यथा ॥ भगवद्गुणदर्पणे ॥ सुगंधंबनितावस्त्रं गीतंतांबूलभोजनं ॥ भूषणंवाहनंचेतिभागाष्टकमुदीरितं १॥ इत्यादि एकहू नहीं है परमार्थ को समाज कहे तीर्थ व्रत यज्ञ तप जप ज्ञान योग वैराग्य शांति संतोषादि तेएकहूं नाही हैं जाल कहे माया प्रपंच यावत जगत् है तामें मो समान दगाबाज दूसरो नहींहै औ भली करतूतिकहे सुकर्मादि न आगे कै आयों है न अब करतहौं न फिरि करिहौं भलाई कहे सुखद रेखा माथेमें ब्रह्मा भूलिहूकै नहीं लिखी है श्री रघुनाथजी रावरी कहे आपुकी शपथ

करि कहत हौं कि मेरे एक श्री रामनामहीं की गति है और को आश भरोसा नहींहै यहमें सांचीकहतहौं काहे ते आपके दूसरा जोझूठा है सो तीनहूलोकतीनिहूंकाल में झूठावाको विश्वास कोजनकरैगो तातेमेरीबातको प्रमाण करिये हे कृपालु तुलसी को भलो तुम्हारेही किये पै होइगो यातें अब विलंब न करिये काहेते पानीभरीखाल है यह उपखान कहनतिहै यथा पानी भरी खाल रहि नहीं सकती है शीघ्रही सरिजातीहै तथा देहको ठेकाना नहीं तहां ईश्वरकी भलाई तौ जीवके हेतुहै देह अनित्य कीक्यों संदेहकरियाको यहभाव किजो कहैहै कि तुलसी को भलो पै तुम्हारेही किये कृपालु तहां तुलसी नाम देहसाच को है तातें यही देह आपनो गुलाम करिलीजे जामें दूसरी देह न धरिबे परै ९५ ॥

रागकोनसाजनबिरागयोगयागजिय कायरनछांड़ि देतठाटिबोकुठाटको । मनोराजकरतअकाजभयोआजुल-गिचाहैचारुचीरपैलहैनटूकटाटको । भयोकरतारबड़ेकूर कोकृपालुअतिपायोंनामपारसहौलालचीवराटको । तुल-सीबनीहैरामरावरेबनायेनातौ धोबीकैसोकूकरनघरकोन घाटको ९६ ॥

राग कहे लोकस्नेह ताको साजकहे अष्टांगभोग यथा वनिता सुगंध वसन भूषण गान तांबूल भोजन वाहनादि सो एकहू नहीं है औ विराग कहे संसार के त्याग में योग अष्टांग यथा ॥ यम नेम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि अरु याग अश्वमेधादि सोऊ नहींहै औ सुखके हेतु अनेकउपाय रूपी कुठाटको ठाटव ताको जीव कादर छांड़ि नहीं देत कायर यातें कहे कि कीन एकौनहींहोतवासनासबकीराखत इत्यादिमनोराज कहे

मनोरथकरत आलुतक अकालभये काहेते चारचीर कहे सुंदर दुग्धादि खरवस्तादि कीतौ चाह करत अन्न जहै कहे पावत नहीं टाट को पुरानो टूकराभाव बड़े सुख को चाहत्यौथोरहू सुखनहींपावत ऐसो मैं कूरकहे कपटीतो हूपैकरतार कृपाल भयो काहेते नराट कहे कौड़ी को नैं लालचीभाव तुच्छ देववभूतादिकी चाह अरुपायों पारस समश्रीराम नाम तातें तुलसी कीजो बनिहैसो हेथीरघुनाथजी रावरे कहे आपुके बनाये बनिहै नाहीं तौ धोबी कैसो कूकुरन घरको न घाटको यह कहमूति उपखान है अर्थात् जो श्रीरघुनाथ जी कृपा न करैं तौ लोकपरलोक एकहू न बनि परीयथा ॥ घाटेजायधोबिनियांमारै घरमा दीहहींफरका । धोबीकेसोकूकुरघाटभयो न घरका ६६ ॥

ऊंचोमनऊंचीरुचिभागनीचौनिपटहीलोकरीतिलाय-
कनलंगरलवारुहै । स्वारथअगमपरमारथकीकहांचली
पेटकीकठिनजगजीवकोजवारुहै । चाकरीनआकरीनखे
तीनबनिजभीखजानतनकछूकिसमकबारुहै । तुलसी
कीबाजीराखीरामहीके नामनतभेटपितरनसों नमूड़हूमें
बारुहै ६७ ॥

ऊंचो मन कहे मान बड़ाई आदिको मनोरथ है ऊंची रुचि कहे भूषण बसनादि भोजन छादनादि नीके की चाह औ भाग्य निपटनीचोहै भाव एकहू आश पूर्णनहीं है लोकरीति कहे यथा शीलता उदारता कोमलता सत्कारता धीर्य्य धर्मादि जो उत्तम लोकरीति है तासों लायक एकहू नहीं हौं काहे ते लंगर कहे कुमार्गी लवार कहे झूठा हौं स्वार्थ कहे भोजन बसन इच्छापूर्वक मिलनो यही अगम है तौ परमार्थ कहे परलोककी बातौ चली है काहेते पेट भरि भोजन मिलिबो सुख जग में

कठिन है तौ जीव सुख तौ जमारु कहँ जानहारैहै काहेते जब क्षुधा लागत तब धर्म कर्म कुछु नहीं बनि परत है तहाँ क्षुधा मूर्ख को जो उपाय है यथा चाकरी सोऊ नहीं आंकरो कहे खानि ते खोदि कोऊ पदार्थ मिलत सोऊ नहीं खेती नहीं बनिज भीख अरु काहू भांति को कबार नहीं जानत काहे ते सुभाव कूर कहे ढेढ़ा है ताते जीविका की एकौ सूरति नहीं है तौ क्षुधावंत ते परमार्थ कैसे बनै तहां चौरासी लक्ष योनिरूप कोठा भूमि नरदेह रूप चौपरि कीसी बाजी आई जो अबकी पांसा न परो भाव हरि शरण नभये तौ फिरि वाही चौरासी को गयो तैसे नरदेह रूप तुलसी की बाजी को श्रीरघुनाथजी को नामही ने राखी गाढ़े कृपाकरि अपनो करि लियो जो प्रभु कृपा न करते तौ मेरे जीवोद्धार की कुछ सूरति न रहै कौन भाँति यथा भेंट पितरन सों न मूढ़ कहे मे बार है यह कहमति उपखान है यथा पितरन को भेंट देवे को वृषोत्सर्ग तेरहीं नित्यकुंभ बरषी श्राद्ध गया पीछे क्षौर कर्म भी पितृकाजही है तहां और कर्म की को कहै पितृ भेंट देवे को मूढ़ में बार भी नहीं है कि क्षौरकर्म भी तौ कराय डारिये तैसे हरि शरणागत को उपाय मो में एक कहू नहींहै ९७॥

अपतउतारअपकारकोअगारजगजाकोछाहछुयेसह-मतब्याधबाधको। पातकपुहुमिपालिबेकोसहसाननसो काननकपटकोपयोधिअपराधको। तुलसीसेवामकोभो दाहिनोदयानिधानसुनतसिहातसबसिद्धसाधसाधको। रामनामललितललाम कियोलाखनिकोबड़ो कूरकायर कपूतकौड़ीआधको ९८॥

अपत उतार कहे पतितन में पतित अपकार कहे पर अकाज कारक जो कर्म ताको अगार कहे घर हौं जग

में अपावन कैसो हौं कि व्याध जो जीवहिंसक बाधक विघ्नकर्त्ता तेऊ जाकी छांह छुवत सङ्कमत डरै हैं काहेते पापरूपी पृथिवी पालिबे को सहसानन जो शेष सम हौं भाव भूमि सम गरू भारी पाप शीश पर धरे मोको बोझ नहीं जानि परत है औ कपटको कानन कहे बनहौं भाव अनेककपट करत हौं अपराधको पयोधि कहे समुद्र हौं ऐसे तुलसी बाम कहे कुटिल को दयानिधान श्रीरघुनाथ जी दाहिनेभयो भाव अपनी शरण करिलियो ताको देखि सुनिकै अणिमादिक सिद्धी प्राप्तवाले सिद्ध मनवश करन वाले साधु साधना करनेवाले साधकादि सब सिहात कहे ललचात कि हम ऐसे न भये सो कैसो भयो ताको कहत कि ऐसो बड़ो कूरकहे कुमार्गी कायरकहे धर्मकर्म करिबेमें कादर कपूत कहे कुलधर्म सों बिमुख ऐसो नकाम आध कहे फूटी कौड़ी को पोढ़ी कौड़िउ को नहीं ऐसे तुलसी को श्रीरामनाम ने ललित कहे सुंदर ललाम कहे रत्न करि दियो जो लच्छन के मोल को अथवा कपूत यथा कहे जल ताकोपूत आश्रमानीपत्थर कपूतहै सोकूर बड़ो बाते कहे कि जहां गिरत तहां छपी दलि डारत कायर बाते कहे कि घाम बयारि लागतही गलिजात मोल जाको कौड़ीको नहीं ऐसो कूर कादरकपूत हिमोपल सम तुलसी को श्रीराम नामने लाखन के मोल को सुख पुष्ट हीरा बनायो जो लोक में प्रकाशित है यह अर्थ हम याते करे कि तंचन में हिमोपल को हीरा ह्वै जाने की क्रिया लिखी है परंतु शक्तिवान् को काम है यथा श्री राम नाम तुलसी को पावन करे क्रिया यथा ॥ चनखार-स्यखवेदैपुटंबस्वैहिमोपले । वेष्टिमधूकतैलेग्निं स्वपक्वहीर-कंभवेत् ६८ ॥

सबअँगहीनसबसाधनबिहीनमन वचनमलीनहीन कुलकरतूतिहौं । बुधिबलहीनभावभगतिबिहीनदीन

गुणज्ञानहीनहीनभागहूबिभूतिहौं। तुलसीगरीबकीगई बहोरिरामनामजाहिजबजीहरामहूकोबैठोधूतिहौं। प्रीति रामनामसोंप्रतीतिरामनामकी प्रसादरामनामकेपसारि पाइंसुतिहौं ६६ ॥

यम नेमादि योगके सब अंग करि हीनहौं बिबेक बैराग्य समादिषट् संपति मुमुक्षुतादि साधन करि बिहीनहौं मनमलीन भावबिषय आशक्तहौं बचन मलीनभावपरदोष गावत हौं कुल करतूति कुलके शुभ कर्मतेही न बुद्धि बल चतुरता करि हीन औ भक्ति के जे भाव हैं दासता सख्यतादि ताहू करि हीन दीन बित्तहीन गुण यथा विद्या कारी गरी आदि ज्ञान सारासार को बिचार हीन औ भाग्य बिभूति कहे ऐश्वर्य इत्यादि सबते हीनहौं इत्यादि तुलसी कों गई ताको बहोरि कही फेरि आनि दई श्री रामनाम ने जाको जीह सो जपत में बैठे श्री रामहू को धूति हौं कहे छलिहौं भाव पाप पुण्य को फल दुख सुख नरक स्वर्ग श्री रघुनाथजीकी आज्ञा तेहै तहां सुकृति तौ मेरे हई नहीं है पाप समूह है सो नाम जपि ताके बल ते पापको उलंघि जाउंगो यथा यमन हराम कहि पारभयो ऐसो नाम को प्रभाव है ता रामनाम में मेरी प्रीति है ताते मोको राम नाम की प्रतीति है कि श्रीराम नाम के प्रसाद ते पायँ पसारि कै सोइहौं भाव पाप शत्रु कामादि चोरन सों निर्भय ह्वै कै.६९॥

मेरेजानजबतेहौंजीवह्वैजनम्योजगतबतेबेसाह्योदामलोभमोहकामको । मनतिनहींकोसेवतिनहींसोभावनीकोबचनबनाइकहौं हौंगुलामरामको । नाथहूनअपनायोलोकझूठीह्वैपरीपैप्रभुहूतेप्रबलप्रतापप्रभुनामको। आपनीभलाईभलोकीजैतौभलोईनतौ तुलसीकोखुलैगोखजानोखोटेदामको ७० ॥

मेरे जान जबते मैं जीवहूँ जगमें जन्म पायों तबते लोभ मोह कामको दाम कहे सिक्का कमायों बेसाह्यों खजाना भरयों काहे ते जान्यों कि लोभादिकही की सेवा में मन लागत है औ तिनहीं में प्रीति भावनीको है अर्थात् अंतर में चाह लोभादिकही की है औं मुख सों बचन बनाइ कै कहत हौं कि मैं श्री रघुनाथजी को गुलाम हौं तहां रघुनाथजी ने न अपनायो भाव सांचो दास न करिलियो औ लोकहू में मेरी दासता झूठी है ठीक परी भाव यह सब सांच माने कि तुलसी झूठो रामदास है ऐसी मेरी बिगरी पै प्रभु के नाम को प्रताप प्रभुहू ते प्रबल है अभिप्राय यह कि रूप एक ठौर रहत ता रूपको प्रताप नाम द्वारा लोक में प्रकाशित होत ताको सुनि सब आपही डरत जो निर्बलहू है प्रतापी को नाम लेइ तौ वाको कछु भय नहीं होत तैसे राम नाम के भरोसे मैं हौं ताते अपनी भलाई ते मोको भलो कीजै तौ भली है नाहीं तौ तुलसी के कमाये जन्मान्तर के कामादि खोटे दामन के खजाना खुलैगो भाव मेरी खोटाई जाहिर होयगी यथा लोभ को सिक्का पाषंड है तामें सुबेष रूप सोना देखाउ में अशरफी है भीतर तृष्णा कुधातु भरी विडंबना खोटाइ प्रगटी मोह की सिक्का ममता तामें मायारूप चांदी देखाउ में रुपैया भीतर मिथ्या दृष्टि कुधातु भरी अज्ञानता खोटाई प्रगटी कामको सिक्का सौहार्दता है तामें प्रीति रूप तांबा देखाउ में पैसा लोलुपता भीतर लोहा भरो कलंकता खोटाई प्रगटी १० ॥

योगनबिरागजपयागतपत्यागब्रततीर्थनधर्मजानोंवेदबिधिकिमिहै । तुलसीसोपोचनभयोहैनहिंह्वैहैकहूं शोचैसबयाकेअघकेसेप्रभुक्षमिहै । मेरेतौनडरुरघुबीर सुनोसांचीकहौंखलअनखैहैंतुम्हैंसज्जननगमिहै । भले

सुकृतीकेसंगमोहितुलातौलिये तौनामकेप्रसादभारमेरी आरनमिहै ७१ ॥

योग अष्टांगादि विराग जग सो उदासीनता जप विधि सहित मंत्र जाप याग अश्वमेधादि तप पंचाग्न्यादि त्याग विषय छोड़ना व्रत चांद्रायणादि तीर्थ प्रयागादि धर्म सत्य शौच तप दानादि वेदकी बिधि कैसी है इत्यादि एकहू नहीं जानत हौं याते तुलसी सम पोच कहे नीच न भयो है न है न आगे कहूं होइगो याते सबसोच करते हैं कि या तुलसी के अघ प्रभु कैसे क्षमा करैंगे ताको मोको कछु डर नहीं है श्रीरघुनाथजी मैं सांची बात कहत हौं ताको सुनो जो मोको अपनाइ हौ तौ ताको सुनि खल तौ अनखैहैं तुम्हैं ईर्षा करिहैं परंतु सज्जन न अनखैहैं काहे ते उनको गमि है वेद पुराण ते नाम को प्रभाव जानते हैं नाहीं तौ आपु भले सुकृती के साथ मोको तुला नाम तराजू पर धरि तौलिये तौ आपुके नामके प्रसाद ते मेरी ओर भार नमिहै गरु परि है काहेते सतयुग में ध्यान त्रेता में यज्ञ द्वापर में अर्चा करि बहुत कालमें जो फल प्राप्त होत रहै सो फल कलियुग में श्रीरामनाम के स्मरण मात्र में प्राप्त होतहै यथा ॥ विष्णुपुराणे ॥ ध्यायन्कृतेयजन् यज्ञैस्त्रेतायांद्वापरेऽर्चयन् ॥ यदाप्नोतितदाप्नोतिकलौसंकीर्त्यकेशवं ॥ कलेर्दोषनिधेराजन्नस्तिह्येकोमहान्गुणः १ कीर्तनादेवकृष्णस्यमुक्तसंगःपरंव्रजेत् ॥ परंतु रामनामैकंवैभवंपरतरात्परं ७१ ॥

जातिकेसुजातिकेकुजातिकेपेटागिबश खायेटूकसबके बिदितबातदुनीसो । मानसबचनकायकियेपापसत्यभाय रामकोकहायदासदगाबाजपुनीसो । रामनामकोप्रभाव पाउमहिमाप्रतापतुलसीसोजगमानियतमहामुनीसो । अतिहीअभागेअनुरागतनरामपद मूढ़येतोबड़ोअचरजदे-खीसुनीसो ७२ ॥

जाति अपनी के सुजाति ऊंचीजातिके कुजाति नीची के पेटागि कहे भूखवश ते सबकी रोटिनके टूक खाये सो बात दुनिया में विदित सब जानत हैं औ मानस वचन कायदेह अर्थात् मनसा वाचा कर्मणा सतिभाय स्वाभाविक सुभावते पाप किये फिरि श्रीरघुनाथजी को दास कहायो पुनिसोई पूर्ववत् कर्म करि दगाबाज बनो हौं तहां श्रीराम नामको ऐसो प्रभावहै ऐसो कुटिलमैं सोऊ महिमा प्रताप पायों कौन महिमा प्रताप पायों अर्थात् तुलसी को सब जग महामुनि बाल्मीकि सम मानियत है यथा भक्तिमाल में लिखा है ॥ कलिकुटिलजीवनिस्तारहित बालमीकितुलसीभये ॥ येतो बड़ो आश्चर्यदेखि सुनिकै जे श्री रामपद में मनसों अनुराग नहीं करत ते मूढ़ अतिही कहे महा अभागे हैं भाव थोड़ी मेहनति में बड़ी मंजूरी मिलत ताहू में विमुख याते अभागी ७२ ॥

जायोकुलमंगनबधावोनबजायोसुनि भयोपरितापपाप जननीजनकको । बारेतेललातबिललातद्वारद्वारदीन जानतहौंचारिफलचारिहिचनकको । तुलसीसोसाहिब समर्थकोसुसेवकहि सुनतसिहातशोचविधिहूगनकको । नामरामरावरोसयानोकिधौंबावरोजो करतगिरीतेगरुत्तृणतेतनकको ७३ ॥

मंगन कहे याचक के कुलमें पाय कहे जन्म पायो और की को कहै बधावा तक न बजायो काहेते जननी जनक कहे माता पिताको पापरूप परिताप कहे दुःख देनहारो प्रकट भयों भाव जन्म होतही महादारिद्र आयो ताते बारेहीते भूखकरि बिललातकहे व्याकुल ललात कहेएक एक दानाको ललचात द्वार द्वार फिरत ऐसो दीन रहौं कि जो चारिहूचना पावौंतो चारिहू फल सम मानत रहौं

सोई तुलसी अब समर्थ साहेब श्री रघुनाथजी को सेवक भयो ताको सुनि सिहात ललचात समर्थ ब्रह्मा ऐसे गणक शोच करत भाव भाग्य की रेखा एकहू नहीं यह ऐश्वर्य कहांते भयो है श्रीरघुनाथजी रावरोनाम सयानो है किधौं बावरो है जो तृण सम तनक को गिरि कहे पर्वत ते गरू करत है भाव पतित जीवन को सुकृतिनको शिरोमणि बनावत है ७३ ॥

वेदहूपुराणकहीलोकहूविलोकियतरामनामहीसोंरीझेसकलभलाईहै। काशिहूमरतउपदेशतमहेशसोइसाधनअनेकचितईनचितलाईहै। छाछकोललातजेतेरामनाम केप्रसादखातखुनसातसों धेदूधकीमलाईहै । रामराज सुनियतराजनीतिकीअवधि नामरामरावरोतौचामकीचलाईहै ७४॥

वेदहू पुराण कहत सो सुनेहैं अरु लोकहूमें विलोकि कहे देखियत है कि श्रीराम नामहीके रीझे मन लगाये सकल भांति सबकी भलाई है और उपाय ऐसो सुगम नहींहै काहेते महादेव ते अधिकी सुजान कोऊ नाहीं है ते काशीजी में जो कोऊ जीव मरत ताको सोई श्रीराम नामही उपदेश करि मुक्त करतहैं औ अनेक साधन वेद कहे तिनको करिबेको कौन कहै शिवजी चित्त लगायकै चितयेभी नहीं भाव श्रीरामनामके आगे सब साधन तुच्छ माने इत्यादि वेद पुराणन में सुने हैं यथा ॥ केदारखंडे शिववाक्यं ॥ रामनामसमंतत्वं नास्तिवेदांतगोचरं ॥ यत्प्रसादात्परांसिद्धिं संप्राप्तासुनयोमलां १ अध्यात्मेशिववाक्यं ॥ अहोभवन्नामगृणात्प्रतार्यो वसामिकाश्यामनिशं भवान्या ॥ मुमूर्षमाणस्यविमुक्तयेहं दिशामिमंचंतवराम नाम २ पद्मपुराणे ॥ येयेप्रयोगास्तंत्रेषुतैस्तैर्यत्साध्यतेफलं ॥

तत्सर्वंसिध्यतित्क्षिप्रं रामनामैवकीर्तनात् ३ ऋग्वेदे ॥ परं ब्रह्मज्योतिष्मयंनाम उपास्यंमुमुक्षुभिः॥ यजुर्वेदे॥रामनाम जपतेनैवदेवतादर्शनंकरोति कलौनान्येषां ॥ सामवेदे ॥ रामनाम जपादेव मुक्तिर्भवति॥अबलोक की देखीबात कहत कि जे छाछ कहे माठा को खलचात नहीं पावत तेई श्रीराम नामके प्रसाद ते सोंधे कहे पाके सुगंधित दूध की मलाई को खातमें खुनसात रिसात कि बहुतपाके दूधकी माधुर्य्यता जात रहतहै भाव पतित सुकर्मरूप छाछ को खलचात ह्वै नहींसकत तेई श्रीराम नामको प्रभावते सोंधे दूध सम परम धर्मता की मलाई ज्ञान को खुनसात कि भक्ति आगे ज्ञान निरसहै हे श्री रघुनाथजी सुनियत है कि आपकी राज्यमें अवधि कहे मर्यादा राजनीति की चलती रहै यथा तांबा चांदी सोनादि मोल अनुकूल तौल पै अपनो सिक्का बनाय को मोल थापिदेत ताहीपर चलत तथा तांबे को सिक्का पैसा लघुमोल सों कर्मकांड है ताको थोड़ो मोल स्वर्ग सुख है चांदी को सिक्का रुपया मध्यम मोल सो ज्ञान है ताको मध्यम मोल कैवल्य मुक्ति है सोनेको सिक्का अशरफीको बड़ोमोल सो उपासना है ताकोबड़ामोल नौधाप्रेमापराभक्ति प्रभुकी समीपीइत्यादि श्रीराम राजमें कर्मज्ञानउपासना वालेनको अपनेअनुकूल फल पावतेरहै अरु आपके नामने चामकी मर्यादासिक्काचामकोचलायोभावचामकी चकती परसिक्का करिसब सिक्कनते ऊंची मर्यादा करिदियो इहां चामकहे कर्मज्ञान उपासना रहित ऊंचनीच कोऊजीव कैसहू पापीपतितहोइ श्रीरामनाम स्मरण करतही ऊंची सबोंपर गति पावत है यथा ॥ अपतअजामिलगजगणिकाऊभयेमुक्तहरिनाम प्रभाऊ ॥ हनुमत्संहितायां ॥ रामत्वतोधिकंनामइतिमे निश्चलामतिः । त्रयाणुतारितायोध्यानाम्नातुभुवनत्रयं ॥ शुकसंहितायां ॥ आकृष्टःकृतचेतसांसुमहतामुच्चाटनंचाहसामावांडालमयूकलोकसुलभोवश्यंचमुक्तिश्रियः॥ नोदी-

ब्रांनचद्त्रिणांनचपुरश्चर्यांमनागीक्षते मंचोयंरसनास्पृशेव फलतिश्रीरामनामात्मकः २ दृहद्विष्णुपुराणे॥ अविकारी विकारीवासर्वदोषैकभाजनः॥परमेशपदंयातिरामनामानु कीर्तनात् ३ अथर्वणवेदेश्रुतिः ॥ यश्चांडालोपिरामेतिवाचं वदेत्तेनसहसंवदेत्तेनसहसंवसेत्तेनसहसंभुनीयात् ७४॥

शोचसंकटनिशोचसंकटपरतजर जरतप्रभावनामल-लितललामको। बूड़ियोंतरतबिगरियोसुधरतिबातहोत देखिदाहिनेसुभावबिधिबामको। भागतअभागअनुरागत बिरागभागजागतआलसितुलसीहूसेनिकामको। धाई धारिफिरिकैगोहारिहितकारीहोत आईमीचुनिकटजपत रामनामको ७५॥

यामें श्रीरामनाम को प्रभाव द्वैभांति कहे एक हेतुर-हित यथा॥ अजामील पुचके बहाने नाम लिये ताके महा पाप नाश भये हरिधाम गयेतथा यमनहराम कहि धाम पायो दूसरो हेतु सहित जे प्रीति ते रामनाम जपते हैं तिनको यावत् प्रतिकूल बिघ्न करता तेई अनुकूल ह्वै स-हाइ करता होत तहां हेतु रहित को प्रभाव रामनाम कैसो है यथा ललित ललाम कहे सुंदर रत्न पास आयेते शोचसंकट ज्वरादि रोगकछुनहीं व्यापत यहकाव्य कला-धर में रघुनाथ कवि लिखो है यथा॥ बिषकोभय भयबज्र को नेकन-व्यापततास। शुद्धअंगकोहोतहैहीराजाके पास॥ पुनः॥ संततिसंपतिबढ़तअरु रहतनिरोगितगात। गजमु-क्ताजाकेरहततताकोयशअवदात॥ तैसे राम नाम सुंदररत्न के प्रभावते पाप कर्मन को शोच औ यम शासति को सं-कटको शोच संकट परत भावहरि पार्षदन ते दंड पावत औ उर जो चिताप सोआपही अरिजात अब हेतु सहित कहत कि जिनको श्रीराम नाममें प्रीतिहै ते काहू क्लेश

में वा भवसागर में बड़ियो तरत कहे पार होत यथा परीक्षित अकालमृत्युमें बूड़े तेऊ तरे औ बिगरियो सुधरत जिनकी बात बिगरि जात यथा सुग्रीवकी सुधरि गई अरु कर्मबश जाको सुभाव बाम ह्वै गयो यथा बाल्मीकि तिनहूं को स्वभाव दाहिनो भयो व्याधाते महामुनि भये बामबिधि कहे टेढ़े कर्म जिनके यथा निषाद तिनहूं को कर्म दाहिनो भयो कुल समेत पावन भयो अभाग कहे हरि बिमुखता यथा ॥ कहहनुमंतबिपतिप्रभुसोई । जबतव सुमिरणभजननहोई ॥ऐसो अभाग भागतअरु बिरागजगते बिमुख तासों अनुरागत अरुआलसी नकाम तुलसी ऐसेन की भाग्य जागत भाव हरिचरणमें प्रीति होत मीचुकहे मृत्युकी धारि कहेसेना जो मारिबेको धाई आवतसोऊ श्री रामनाम जपतसोई मृत्युधरि लौटि हितकारी गोहारि होत यथा अंबरीष पै छत्यानल मृत्यु ते सहायक भई ७५॥

आंधरोअधमजड़जाजरोजराजमनशूकरकेशावकढका ढकेलोमगमैं । गिरोहियेहहरिहरामहोहरामहन्योहाइ हाइकरतपरीगोकालफगमैं।तुलसीविशोकह्वैत्रिलोकप-तिलोकगयोनामकेप्रतापबातविदितहैजगमैं । सोईराम नामजोसनेहसोंजपतजनताकीमहिमाक्योंकहीहैजातअ-गमैं ७६ ॥

काहू समय की बातहै कि एक यमन कहे मुसल्मान अधम कहे पातकी सुभाव जड़ जरा कहे बुढ़ापा अवस्था करिकै जर्जर निर्बल देह आंधर ताको शूकर को शावक कहे बालक ने ढका कहे धक्का दै राह में ढकेलिदियो हृदय ते हहरि गिरत में कह्यौ कि हौं कहे मोको हराम ने हनो हायहाय करत काल फंग में परो कहे मरिगयो तहां हराम शब्दते रामनाम निकरो ताके प्रताप ते हरि

गण आदू यमगणन सों छीनि लियो याते विशोक ह्वै कै त्रिलोकपति लोक जो हरिधाम तहां को गयो श्रीराम नाम के प्रताप ते यह बात जग में विदित सब जानतहै इ-त्यादि नामको प्रभाव हेतु रहितहै सोई श्रीरामनामको जन सनेहते जपत ताकी महिमा अगमहै क्यों कहीजात यथा वाराहपुराणे शिववाक्यं॥ देवाच्छूकरशावकेननिहः-तोम्लेच्छोजराजर्जरो हारामेतिहतोस्मिभूमिपतितोजल्पं स्तनुंत्यक्तवान्॥ तीर्णोगोष्पदवन्नवार्णवमहोनाम्नः प्रभावा त्पुनःकिंचित्रंयदिरामनामरसिकास्तेयांतिरामास्पदं ७६॥

जपकोनतपखपकियोनतमाइयोगयागनविरागत्याग तीरथनतनको। भायकोभरोसोनखरोसोबैरबैरीहूसोबल अपनोनहितूजननीनजनको। लोककोनडरपरलोककोन शोचदेवसेवानसहाइगर्बधामकोनधनको। रामहीकेनाम तेजोहोइ सोईनीकोलागै ऐसोईसुभावकछुतुलसीकेमन को ७७॥

यामें सब भरोसो त्यागि शुद्ध शरणागती कहत कि मंत्रादि जपको न कियें न तपकियें काहते खपनाम कादर हैं। ताते तमाइ नाम पूर्णतीव्र योगहू न कियें याग यज्ञ न विराग कहे जगते उदासीनता न विषयको त्याग कियें तीर्थन में तनकौ नहीं कियो अपनोकरि भाईको भरोसो नहीं न बैरिहू सों खरोसोकहे अच्छा बैरिहू नहीं कियें आपनेहू बल नहीं औ हितू माता पितादिहू को बल नहीं लोकको न डर अर्थात् मर्यादा भी न बनायें परलो-कहू को शोच नहीं भाव सुकर्म भी नहीं कियें सहायक देवताकी सेवाभी नहीं कियें गर्ब धामको न धनको भाव न घरहै न धनहै इत्यादि एकहू नहीं तौ फिरि क्या है ताको कहत कि श्रीरामही के नामते जो कुछ होइ भलो

व बरो सोई नीको लागतहै अस कुछु सुभाव तुलसी को मनकोहै भाव केवल श्रीराम नामको भरोसो है दूसरो नहीं ७७॥

ईशनगणेशनदिनेशनधनेशनसुरेशसुरगौरिगिरापति नहिंजपने । तुम्हरेईनामकोभरोसोभवतरिबेकोबैठेउठे जागतवागतसोयेसपने । तुलसीहैबावरोसोरावरोईराव-रीसौरावरेहूंजानिजियकीजियेजुअपने । जानकीजीवन मेरेरावरेबदनफेरेठाउंनसमाउंकहूंसकलनिरपने ७८॥

ईश महादेवहू को पूजादि नहीं किये जे देवतन में श्रेष्ठ हैं गणेशहू को न पूजे अग्रपूज्यहैं सूर्यहू को नहींपूजे जलोक प्रकाशक हैं धनद कुबेर सुरेश इन्द्र सुर और सब देवता गौरि पार्वती गिरापति ब्रह्मादिकाहू को मंचादिको जप-नो नहीं है मेरे हैका कि बैठे उठे जागत वागत कहे चलत फिरत सोवत सपनेमें भव तरिबेको भरोसा आपुके नाम-हीको है रावरी सौ आपुकी सौगंद खाइकै कहतहौं कि तुलसी जो बावरो है सो रावरोई गुलाम है ताते आपहू यह जियसों जानिकै आपनो गुलाम कीजियेजू मेरे कर्मन को न देखिये हे श्रीजानकी जीवन आपके बदन फेरेते मेरे समावे को ठाउं कहीं नहींहै काहेते यावत् देवता गनाये ते यंचराज पर पूजामें अंगदेवता आपुकेसाथ सब पूजापाव-ते हैं यह राम तापिनी आदिते प्रसिद्ध है तिनको छाड़ि आपुहीको भरोसा राख्यो याते सकलदेव निरपने कहे बिराने ह्वै गये ते मेरेऊपर क्रोध करैंगे लोकहूमें जे अमला को नहीं मानते ते राजा के बूतते जो राजा मुंह फेरै तो अमला बिगारि न डारै ७८॥

जाहिरजहानमेंजमानोएकभांतिभयोबेंचियेविबुधधेनु रासभीबेसाहिये । ऐसेउकरालकलिकालमेंकृपालतेरेना-

मकेप्रतापनत्रितापतनदाहिये। तुलसीतिहारोमनबचनक र्मजनयेहूनातोनेहनिजओरतेनिबाहिये। रंककेनिवाजरघु राजराजाराजनकेउमरिदराजमहाराजतेरीचाहिये७९ ॥

धर्म अधर्म है मार्ग सदैव रहे अब या समय में धर्मलोप भये अब एकही भांति अधर्म मार्ग में जमाना जहान में जाहिर भयो कि बिबुधधेनु कामधेनु को तो बेंचिये औ रासभी गदही बेसाहिये भाव तन सुख रूप द्रव्य सुकृति को बेंचिये पापरूप द्रव्य दै दुःकृत्य बेसाहिये जो दुःखद है ऐसेउ कलिकाल कराल में जामें और धर्म कर्म हैनहीं ताहूमें हे कृपालु आपुके नामको प्रताप ने दैहिक दैविक भौतिकादि तीनिउं तापनके तनको दाहियतुहै याते जन तुलसी मन बचन कर्महूंते तिहारो दास है कदाचि येहू नहीं तौ निज ओरते नेह निबाहियतहौ आपनी ओरते दयाकरि आपनो गुलाम करि मानियत हौ ऐसे रंक के निवाज राजन के राजा महाराज रघुराज दराज कहे बड़ी उमरि तेरी चाहिये इहां कविभावते आशीर्वाददेत कि रघुकुल राजगद्दी पर सदैव आसीन रहौ ७९ ॥

स्वारथसयानपप्रपंचपरमारथ कहायारामरावरोहौ जानतजहानहै । नामकेप्रतापबापआजुलौंनिबाहीनीकी आगेकोगोसाईंस्वामीसबलसुजानहै । कलिकोकुचालि देखिदिनदिनदूनीदेव पाहरूईचोरहेरिहियहहरानुहै । तुलसीकीबलिबारबारहीसँभारकीवीयदपि कृपानिधान सदासावधानहै ८० ॥

स्वारथ भये में आपनो सयानप माने कि यह कामहम अपनी चतुराई ते कीन भाव कपट सयानो हौं औ पर-मार्थ में प्रपंच कहे छली को देखाउ और मनमें औरऐस

कुटिल मोको बालक मानि बाप सम आपुनामके प्रताप तेआजतक नीकी निबाही औ आगेके निबाहिबेकोहेगो-साईं आपुसबल सुजान स्वामी हैं परंतु हेदेव कलियुगकी कुचालि प्रतिदिन दूनी बढ़त कौनिकुचाल है कहत पहरोई चोर अर्थात् कलियुग राज पहरुवा सोई कामादि चोरन को लै सुकृति धन चोरावत देखि हिया हहरान कहे डेरान है याते कहत हौं हे कृपानिधान यद्यपि आपु सदा सावधानहैं तदपि मैं बलिजाउं तुलसी की ओर बार-बार सँभार की बी काहेते पहरूही चोरहै ताते मेरेमनमें बेकारता अवगुण न देखब ८०॥

दिनदिनदूनीदेखिदारिददुकालदुखदुरितदुराजसुख सुकृतसकोचुहै। मांगेपैतपावतप्रचारिपातकीप्रचंडकाल कीकरालताभलेकोहोतपोचुहै। आपनेतोएकअवलंबअंब डिंभयोसमर्थसीतानाथसबसंकटबिमोचुहै। तुलसीकी साहसीसराहियेकृपालराम नामकेभरोसेपरिनामकोनि शोचुहै ८१॥

अब समय की व्यवस्था कहत कि दारिद्र दुकाल महँगी हानि रोगादि दुःख दुरित कहे पाप दुराज कहे राजा दुष्ट इत्यादि प्रतिदिन दूनी बढ़त है औ सुख सुकृति को सकोचु कहे घटत जात है औ कालकी करालता ऐसी प्रचंड भई कि जामें पातकी जन प्रचारि कहे लखकारि कै पैत कहे दांव मांगे पावत हैं औ जे भले सुकृती हैं ते पोचु कहे बुराई पावत हैं ऐसा हाल देखि अपना कोतौ एक अवलंब है यथा डिंभ कहे बालक को अंब कहे माता इव समर्थ सीतानाथ को भरोसा है जो सब संकट को बिमोचुकहे छोड़ावनहार है इत्यादि तुलसीकी साहसी कहे बीरता धीरता को सराहिये काहेते हे कृपाल श्री

रघुनाथजी श्री रामनामके भरोसे परिणाम कहे अंतकाल समय निश्शोचु कहे शोचु रहित हौं। भाव श्रीरामनाम के प्रतापते भवसागर को न जाउंगो ८१॥

मोहमदमात्योरात्योकुमतिकुनारिसोबिसारि वेदलोक लाजआकरोअचेतुहै। भवैसोकरतमुंहआवैसोकहतकछु काहूकीसहतनाहिंसरकसहेतुहै। तुलसीअधिकअघमाइहूअजामिलतेताहूमेंसहायकलिकपटनिकेतुहै। जैबेको अनेकटेकएकटेकहवैबेकी सोपेटप्रियपूतहितरामनामलेतु है ८२॥

अजामील को आपनो रूपक कहत अजामील मद में मातोरहै मैं मोहरूप मदमें मातोहौं। वह कुनारिन सों रात्योरहै मैंकुमति कुनारीसों रतहौं उज्ज्वेदमार्ग बिसारे रहै मैं लोकलाज बिसारे हौं। उज्ज आँकरो कहे टेढ़ारहै मैं अचेत हौं। वाको जो भावै सो करत रहै मेरे जो सुखमें आवत सो कहत हौं। उज्ज काहू की बातनहीं सहत रहै मेरे सरकस हेतुहै भाव हरि भरोसा जबर या कारण ते काहूको नहीं मानत हौं। याते तुलसी अघमाहूहू करिकै अजामील ते अधिकहै ताहूमें कपटको निकेत कहे स्थान कलिकाल सहायक अर्थात् धर्म में विघ्न करता ताते भवसागर जावेकी अनेक टेककहे निश्चय है अरु हरि शरण ह्वैबेकी एकही टेकहै यथा अजामील प्रियपूत को नामलै तर्यो तैसे मैं प्रियपूत रूप पेट भरिबे हेतु श्रीराम नाम लेतहौं ताके प्रतापते मेरी भी सुधरी ८२॥

जागियेनसोइयेबिगोइयेजनमजाय दिनदुखरोइयेक-लेशकोहकामको। राजारंकरागीओबिरागीभूरिभागीये अभागीजीवजरतप्रभावकलिबामको। तुलसीकबंधकैसो

धाइबोबिचारुअंधधंधदेखियतजगशोचपरिणामको। सोइ बोजोरामकेसनेहकीसमाधिसुखजागिबो जोजीहजपैनीके रामनामको ८३ ॥

जागिये न भाव चैतन्य ह्वै हरिभजन करिये सो नहीं औ सोइये न भाव संसारही में सुखी रहिये सोऊ नहीं याते जायकहे वृथा जन्म बिगोइयत कहे बिताइयतु है काहे ते काम क्रोध के क्लेश करि प्रतिदिन दूनो दुःख बढ़त ताते रोइयत है तामें राजा औ रंक कहे दरिद्री रागी कहे लोकनेही विरागीकहे जगत्यागी भूरिकहे बड़भागी सुखी अभागी आदि यावत् जीव हैं ते सब कलियुग को बामकहे तीक्ष्ण प्रभाव में जरत हैं इत्यादि सब कबन्धकहे बिनशीश कैसो धरको धाइबे सम वृथा बिचारु है तुलसी अन्ध जगको धन्धा झूठो ताको देखियतहौ भाव झूठेधंधा में मन लगायो तामें परिणाम कहे अन्तकाल में शोचु है भाव पछितावे को परी ताते जो सोइबो होइ तौ श्रीरघुनाथजी के सनेह की समाधि सुखमें सोउ भाव प्रेमाग्रह रूप जो जागिबो होइतौ जीह करिकै नीके प्रेम सहित श्रीराम नामको जपै ८३ ॥

बरनधरमगयो आश्रमनिवासतज्यो त्रासनचकृतसो परावनोपरोसोहै। करमउपासनाकुबासनाबिनासोज्ञान बचनबिरागबेषजगतहरोसोहै। गोरषजगायोयोगभगति भगायेलोगनिगमनियोगतेसोकलिहिक्षरोसोहै। कायमन बचनसुभायतुलसीहैंजाहि रामनामकोभरोसोताहीकोभरोसोहै ८४ ॥

बर्ण के धर्म यथा ब्राह्मण के तप शौचदान क्षत्री के सत्य शौच तप दान वैश्यहू के सोई शूद्रके सत्यदान ब्राह्मण धर्म

के नौ कर्म यथा सम दम शौच शांति दया ज्ञान विज्ञान शापाशीर्वादको समर्थ क्षत्रीधर्मके कर्म छः स्वर्गदान तपमें शूर१ तेजसी प्रतापी २ धीर्य्यमान सावधान ३ नीति विद्या दक्ष४ युद्धमें अचल५ वेदआज्ञापाल६ क्षत्रीकी वर्मासंज्ञासो चारि भांति एकगृहितजोकर्म कहिआयेहैं औदूसरा धर्म शील तीसरा तापस यथा मनु सतरूपा चौथा भक्त यथा ॥ रुक्मांगद अंबरीष औ वैश्यकर्म कृषीवाणिज्य गोरक्षा इनकी गुप्तसंज्ञा सो चारि भांति प्रथम गृहस्थ दूसरे सुकर्मी जो तीर्थ व्रत दान करै तीसरा तापस यथा श्रवण चौथा साधु शूद्र तीनि वर्ण सेवी गृहस्थ दास दूसरा भगवदास शबरी आदि इत्यादि वर्ण के धर्म सब जात रहे औ आश्रम चारि ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ बानप्रस्थ ते अपनो निवास कहे कर्मतजे काहेते कलिप्रेरित अधर्मकी भय करि धर्म कर्म चलत ह्वै परावनो सो परो अर्थात् सब भागिगये औ सुत बित नारि तन सुखादि कुबासना नेकर्म ज्ञान उपासनादि को बिनाश कियो औ बैराग्य बच माच रहि गयो औ दिगंबरादि जो बेष हैं ते जगत् हरोसो कहे जग में धन हरिबे हेतुहै गोरख योगीह्वै योग नहीं जगाये मानों भक्ति भगाये लोगन को श्रीराम भक्ति ते बिमुख करे तहां गोरख को दोष नहीं काहे ते योग मार्ग वेद आज्ञा है याते निगम नियोग कहे वेद आज्ञा के बहाने गोरखरूप ह्वै कलिकाल जग को छल्यो है भाव एक गोरख में सबल योगदर्शाय अनेकन को भक्ष्याभक्ष्य मद मांसादि खवाय लोगन को भ्रष्ट करि दियो तहां अनेकन पंथ भक्ति विरोधी हैं एक गोरखै को क्यों कहे तहां और पंथ वेद बाह्य धर्महै तिन को प्रमाण नहीं दूसरे भ्रष्ट क्रिया नहीं योग वेद मार्ग तामें गोरख भ्रष्ट क्रियामें चलाये याते गोसाईंजी कहत कि मनसा बाचा कर्मणा जाको श्रीराम नामको भरोसाहै ताहीको भवसागर तारिबेको भरोसा है और को नहीं है ८४ ॥

वेदपुराणबिहाइसुपंथकुमारगकोटिकुचालचलीहै । कालकरालनृपाल कृपालन राजसमाजबड़ोई छलीहै । बर्णबिभाग न आश्रमधर्म दुनीदुखदोष दरिद्रदलीहै । स्वारथको परमारथको कलिराम कोनाम प्रतापबलीहै ८५ ॥

इति प्रार्थना अब कलिकाल की भभरिमें नाम शरणागती प्रबल कहे वेद पुराण की आज्ञा ते कर्म ज्ञान उपासना नौधाप्रेमापरादि सुधर्ममय पंथ बिहाय कहे छाड़ि कै अनेकन कुमार्ग कहे कुपंथन में कोटिन भांतिके कुचाल भक्ति बिरोधी बार्ता धर्म नाशक बार्त्ता यथा पत्थर पानी तीर्थमें का है इत्यादि अनेकन कुचालै चली हैं अरु काल कहे समय कराल है याते सुधर्म में बिघ्न लागत भूपालजो राजा ते छमा रहित निर्दयीहैं नायब दीवानमंचीकारिंदे आदि जो राज समाज ते बड़ेई छलीहैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्रादि बर्ण बिभाग जात रहे वर्णसंकर भये गृहस्थ ब्रह्मचर्यवान प्रस्थ संन्यासादि आपनो निवास स्वधर्म की मर्यादा छाड़िदिये ताही दोषन ते दरिद्र दुःखने दुनियां को दलिडारो याते और उपाइ नहीं है कलियुग विषे स्वार्थ कहे लोक सुखहेतु को परमार्थ कहे परलोक सुखहेतु को श्रीरघुनाथजी को नामही एक प्रताप करिकै बलीहै यथा विष्णुपुराणे ॥ ध्यायन्कृतेयजन्यज्ञै स्त्रेतायांद्वापरेर्चयन् ॥ यदाप्नोतितदाप्नोति कलौसंकीर्तनान्नरः ॥ पुनःवाल्मीकीयटीकायां ॥ रामेतिवर्णद्वयमादरेणसदास्मरन्मुक्तिमुपैतिजंतुः ॥ कलौयुगेकल्मषमानसानामन्यत्रधर्मे खलुनाधिकारः ८५ ॥

नमिटैभवसंकटदुर्घटहैतपतीरथजन्मअनेकअटो।कलिमेंनबिरागनज्ञानकहूंसबलागतफोकटझूठनटो। नटज्यों

जनिपेटकुपेटककोटिकचेटककौतुकठाटठटो । तुलसीजो सदासुखचाहियतौरसनानिशिबासररामरटो ८६ ॥

अनेकनजन्म तक तपस्या अरु तीर्थन में अटो तीर्थाटन करौ पर भवसागर को संकट मिटी काहेते अति दुर्घटहै मोह प्रेरित विषय की प्रबलता ते कलियुगमें न वैराग्य है न क्वहुं ज्ञानहै यावत् तपस्या तीर्थाटन ज्ञान वैराग्यादि हैं ते सब फोकट कहे बूसीसम साररहित झूठ में जटित देखावमात्र पाषंड हैं ताते नटज्यों नटसम पेटके हेतु कुपेटक कहे कुजीविका कुकर्म करि जीविका अर्थात् चेटक टटकादि कोटिन करि कौतुक कहे इंद्रजालीतमाशा जग ठगिबे हेतु ठाट जनि ठटौ हे तुलसी जो सदा सुखचाहौ तौ प्रेम सहित रसना करिकै निशिबासर दिनराति श्री रामनाम रटौ भाव या समयमें श्रीराम नामहीमें जीवोद्धार समर्थहै और धर्म नहींहै ८६ ॥

दमदुर्गमदानदयामखकर्मसुधर्मअधीनसबैधनको । तपतीरथसाधनयोगबिरागसोहोइनहींदृढ़तातनको । कलिकालकरालमेंरामकृपालयहैअवलंबबड़ोमनको । तुलसीसबसंयमहीनसबैयकनामअधारसदाजनको ८७ ॥

दम कहे इन्द्रिन की विषय रोंकना सो या समय में दुर्गमहै औ दान कहे गोभूम्यादि सुपात्र को देना दया जीव रक्षा मख अश्वमेधादिकर्म वेदआज्ञा करना सुधर्म सत्य शौच तप दानादि वा वर्णादि को शुभ धर्म इत्यादि सब धनके आधीन है अर्थात् बिना धन होतनहीं धनिन के श्रद्धा नहीं औ तपस्या विधि सहित तीर्थयात्रा विवेकादि ज्ञानकेसाधनयोग वैराग्यादिकीन्हेतेहोतहीनहीं काहेते इत्यादि करिबेमें दृढ़ता चाही सो दृढ़ता तनमेंहै नहीं काहेते कलिकाल करालहै तामें मनको अवलंब

बड़ो यहीहै कि श्री रघुनाथजी कृपालुहैं आपनी ओरते कृपाकरि मनको अपना में लगाइलेते हैं ताते गोसाईंजी कहत कि सब संयम कहें साधन ते हीन सबैहै ताते जनन को सदा आधार एक श्रीराम नामहीं है ८७ ॥

पाइसुदेहबिमोहनदीतरणीनलहीकरणीनककूकी ।
रामकथाबरणीनबनाइसुनीनकथाप्रहलादनधूकी. । अब
जोरजराजरिगातगयोमनमानिगलानिकुबाधिनमूकी ।
नीकेकैठीकदईतुलसीअवलंबबड़ीउरआखरदूकी ८८ ॥

विशेष मोहरूपी नदी तरिबेयोग्य सुंदरउत्तम नरदेह रूप तरणीकहे नाव पाइकै पारजाबेकी करणी कछू नहीं कीन्हीसो कहत कि श्रीरघुनाथजीके पावन चरित्रनकी कथा बनाइ बर्णन ना कीन्हीं जामें बुद्धिनिर्मलहोति अरु प्रहलाद ध्रुवादि हरिभक्तन के शरणागत दृढ़ता की कथा सुनी न जामेंप्रभुके भक्तवत्सलतादि गुणनते मनमेंबिश्वास आवत इति तरुणाई वृथागई अब जरावस्था की जोर अग्निमें गात जरिगयो जर्जर ह्वै गयो ताहू पर मनमें ग्लानि मानिकै कुबानि न मूकी कुमार्गी स्वभाव न तजी इत्यादि एकहू न भयो तब तुलसी नीके भवसागर पार जाबेको मनमें एक यहै ठीक दई कि श्रीराम नाम के जे दोऊ आखर हैं ते मेरे उरमें हैं यह बड़ी अवलम्ब है ये दोऊ बर्णको ऊर्द्धगामी स्वभाव है भाव स्वर नष्ट भये रेफ व्यञ्जन बर्णन के ऊपर जातेहैं तौ देह नष्टभये जीवको ऊर्द्ध गति जावो स्वाभाविक होइगो यथामनुस्मृतौ ॥ यन्नाम संसर्गवशाद्विवर्णौ नष्टस्वरौमूर्द्धनिगतौस्वराणां ॥ तद्राम पादौहृदिसन्निधाय देहीकथंनोर्द्धगतिंप्रयाति ८८ ॥

रामबिहायमराजपतेबिगरीसुधरीकविकोकिलहूकी ।
नामहितेगजकीगणिकाहुअजामिलकीचलिगैचलचूकी ।

रामप्रतापबड़ेकुसमाजबजाइरहीपतिपाण्डुवधूकी । ताको भलोअजहूंतुलसीजेहिप्रीतिप्रतीतिहैआखरदूकी ८९ ॥

सब साधन रहित श्रीराम नामके अवलम्बते भवसागर पार जाबेको कहे ताको प्रमाण देखावत कि इन दोऊ अक्षरनमें ऐसोई प्रभावहै यथा श्रीरामशब्द बिहाय मरा शब्द उलटा नाम जपेते बिगरी बात सुधरि गई कबि कोकिल बाल्मीकिकी यथा ॥ कूयन्तंरामरामेतिमधुरंमधुराक्षरं ॥ आरुह्यकविताशाखांवन्देबाल्मीकिकोकिलं॥ औ एकही बार रामनाम कहे गजकी सुधरी कीरमुख नाम सुनि गणिका की सुधरी पुचहेतु नाम लीन्हे अजामिल की सुधरी इत्यादि के चलकहे चञ्चल स्वभावते जो चूकी अर्थात् बिगरी रहै सो चलीगई दुर्योधनकी सभामें अनेक समर्थ बैठेरहे जबदुर्योधन कुमार्गपरआरूढ़भयो तबकाहू ने न बरज्यो सब सामिल रहे ऐसे कुसमाज में श्रीराम प्रतापते डंकाबजायभावलोकमेंप्रसिद्धहै पाण्डुबधूद्रौपदी की पतिरही बसन बाढ़िगयो ताही भांति गोसाईं जी कहत कि श्रीराम नामके दोऊ जे आखरहैं तिनमें जाकी प्रीति प्रतीति है ताजन को अजहूं भलो है ८९ ॥

नामअजामिलसेखलतारणतारणवारणबारंवधूको । नामहरेप्रह्लादविषाद पिताभयशासतिसागरसूको । नामसोंप्रीतिप्रतीतिविहीन गिलोकलिकाल करालन चूको । राखिहैरामसोजासुहिये तुलसीहुलसै बलआखर दूको ९० ॥

पुनः श्रीराम नामकैसो प्रतापवान्है जो अजामिलऐसे खलनको तारणहारहै वारण कहे गजको बारबधूगणिका ताको तारणहारहै अरु श्रीराम नामहीने प्रह्लादको

बिषाद हरे कौन भाँतिकी पिताजो हिरण्य कश्यप ताको भय कहे डर शासति संकटको सागर समुद्र सो श्रीराम नाम के प्रताप ते सूखि गयो भाव अग्न्यादि कोऊ बिघ्न न व्यापे यथा नृसिंहपुराणे प्रह्लाद वाक्यं ॥ रामनाम जपतांकुतोभयंसर्वतापशमनैकभेषजं ॥ पश्यतातममगाधसं-निधौपावकोऽपिसलिलायतेऽधुना १ ऐसे श्रीराम नाम की प्रीति प्रतीतिते जे जन बिहीन हैं तिनको गिलौ कहे लीलि जाउ हे कलिकाल कराल अब ना चूकौ कदाचि श्री राम नाम लैलेहूँगे तौ फिरि न तुम्हारे लीले लीलि जाहूँगे भाव यह कि श्रीराम नाम विमुख कलियुग में निस्तार दुर्घट है यथा ॥ भविष्योत्तरे नारायण लक्ष्मी सों कहेउहै ॥ जीवाःकलियुगेघोराःमत्पादविमुखासदा ॥ भवि ष्यंतिप्रियेसत्यंरामनामविनिंदकाः ॥ गमिष्यंतिदुराचा-राःनिरयेनाचसंशयः॥ कथंसुखंभवेद्देविरामनामबहिर्मुखे ॥ औजे श्रीराम नाम जपतेहैं तिनको श्रीरघुनाथ जी बचाइ राखैंगे कौन को ताको गोसाईं जी कहत कि श्री राम नाम के दोऊ आखरन को बल जासुके हियेमें झलसत है तिनको कलियुग नहीं दबाइ सकत है ९० ॥

खेतीन किसानको भिखारिको न भीख बलि बणिकको बणिजन चाकरको चाकरी। जीविकाविहीन लोग सिद्यमान शोचबश कहै एक एकन सों कहाँ जाइ का करी । वेदहू पुराण कही लोकहू विलोकियत साँकरे समय को राम रावरे कृपाक-री । दारिद दशानन दबाई दुनी दीनबंधु दुरित दहन देखि तुलसी हहाकरी ९१ ॥

बलि कहे हे श्री रघुनाथ जी यासमय में किसानन के खेती नहीं पूरी उपजत अकाल प्रबल ताते भिखारी को भीख नहीं मिलत बणिक् कहे बनियन को काहू व्यापार

में नहीं पूरी नफा होत चाकर को चाकरी नहीं लागत इत्यादि चारि भाँति जीविका विहीन लोग सिद्यमान कहे दुखित ह्वै शोच बश एक एकन सों कहत कि कहां कौने देश जाइये काकरी कौन रोजगार करीजामें जीविका होइ इत्यादि समयमें कौन सहायकहै ताको कहत कि वेदहू पुराणने यही बात कही औ लोकहूमें बिलोकियत कहे देखियतहै कि साँकरे समयके आये पर हे श्रीरघुनाथ जी जहां जाको सहाय करी तहां आपु की कृपाने सहाय करी याते कहत कि दारिद रूप दशानन कहे रावण ने दुनियाँ को दबाइ लीन्हों ताके दुरितकहे पाप में अपना कोदहत कहे जरत देखि ताकोबंधु दीनबिभीषण यथा रघुनाथ जीसों शरण शरण पुकार करी तथा बिभीषण रूप तुलसी प्रभुसों हाहा बिनती करीकि मोको उबारौ९१॥

कुलकरतूतिभूतिकीरतिस्वरूपगुण यौवनजरतजुर परैनकछूकही । राजकाजकुपथकुसाजभोगरोगहीकेवेद बुधविद्यापाइविवशबलकही।गतितुलसीशकीलखतनहीं जोतुरतपवितेकरतछारपवैसोपलकही । कासोंकीजैरोष दोषदीजैकाहिपाहिराम कियोकलिकालकुलिखललखल कही९२ ॥

कलियुग जा भांति जगको बिगारो है सो कुछु कहीं परै है ताको कहत यौवन रूप ज्वर प्रबल भयो तहां बात पित्त कफादि कारण ते ज्वर होत यहां ॥ कामबातकफ लोभअपारा । पित्तक्रोधजितछातीजारा ॥ तहां यौवन अवस्था में काम प्रबल सो बातहै क्रोध प्रबल सो पित्त है ताते बात पित्तमय यौवन ज्वरते सब जग जरत है ताके लक्षण यथा ज्वरमें मूर्च्छाहोत यहां कामबश नीचीजाति में रतभये कुलते च्युतभये सो मूर्च्छाहै कलंक भये करतूति

कहे मर्यादा नाशभई सो घुमनी है पापकर्म ते भूतिकहे ऐश्वर्य नाशहोत सो तनदाहहै अयशते कीर्त्ति नाशहोत सो नींदनाश है विषयाशक्ती ते स्वरूपता नाश सो शीश पीड़ाहै मन मलिनभये गुण नाशहोत यथा धीर्यशील जात सो कंठमुख सूखनिहै लोलुपताते सन्तोष नाश होत सो अंगपीड़ा है बिद्याभिमान सो बकबाद है इतिज्वर के लक्षण हैं तहां दधिदुग्ध मिठाई आदि कुपथपाइ ज्वरबढ़त है यहां राजकाज कुपथ यथा ऐश्वर्य दधिहै कुमति दूधहै तन पोषकताआदि मिठाई इत्यादिराजसी साजरूपकुपथ पाइ यौवनज्वर प्रबलभयो अरु सुखभोग सोई कुसाज है जाको पाइ ज्वर बिगरि जातहै यथा बनिता सोई दिन की नींदहै सुगन्ध लगावना सो दुर्गन्ध स्थान है राग तान सो पवनहै भूषण बसन सो मैले बसन हैं सुभोजन सो घामहै गजादि बाहन सो परिश्रमहै इत्यादि कुसाजपाइ यौवन ज्वर बिगरि गयो अर्थात् चिदोष सो भयो ताको बेग कहत कि वेद औ बुध कहं चतुर विद्या व्याकरणादि पाइ ताके अभिमानबश बलक कहत उफान को यहां विद्या अभिमान सो बल कही बकवाद करत सो प्रलाप सन्निपात है ताके बशते यथार्थ देखि समुझि नहीं परत तहां तुलसीश जो रघुनाथजी वैद्य हैं नाम औषधि है तिनकी गति नहीं लखत कि जो तुरतही पबि कहे बज्र ते छार करत औ छारते पबै कहे पहाड़ करत छणमें बज्र सम पाप ताको छारकै देते यथा निषाद औ छार सम पतित जीव तिनको पहाड़ सम करत यथा बाल्मीकि इत्यादि प्रभुकी प्रभुता कोऊ नहीं देखत काहे ते कलिकाल कुलि खल कही सब संसारही में खलल कहे सुमार्ग बिगारि दियो तो काको दोष दीजे कि तुम हरिबिमुखता करते हो औ कासों रोष कीजे कि तुम हरिबिमुख हौ सुख देखबे लायक नहीं ताते हे श्रीरघुनाथजी मैं पाहि कहे शरण हौं मोको उबारो ८२ ॥

बबुरबहेरेकोबनायबागलाइयतरूंधबेबोसोऊसुरतरु काटियतहै । गारीदेतनीचहरिचंद्रहूदधीचहूकोआपनेच-नाचबाइहाथचाटियतहै । आपमहापातकीहँसतहरिहर हूकोआपुहैअभागीभूरिभागीडाटियतहै । कलिकीकलुष मनमलिनकियेमहत मशककीपांसुरी पयोधिपाटियत है९३ ॥

तंत्रन में जहां पिशाचादि को सिद्ध करिबे हेतु मंत्र जपादि सो बबुर बहेराहीतर लिखा है याते मलीन बुद्धी लोक पुजाइबे को पिशाचादि सिद्ध करबे हेतु बबुर बहे-रादि की बाग सुथल बनाइ कै लगावते हैं ताके रूंधिबे को सुरतरु देवपूजक वृक्ष यथा पीपर चंदन आंब बिल्व अँवरादि को काटत हैं वा नीच प्रसंगी अधर्मिन सों नेह करि तिनको पालिबे हेतु धर्मात्मन को दंड देत औ सूम शिरताज नीच आपु तौ ऐसो है जो चना चबाइ हाथ चाटत कि कुछुलागि न रहा होइ वा चनौ पेटभरि नहीं प्राप्त ऐसे नीच ते हरिश्चन्द्र दधीचि आदि धर्मात्मन को गारी देते हैं कि वे अहमक रहे जो सर्बस्व औ प्राण दै दिये तहां जो आपु अधर्मी तौ धर्मात्मन को क्यों मानैं औ आपु तौ महापातकी हैं स्वाभाविक पापही में मन रहत अरु औरे सुकृतिनको कौनकहै लोक पावन करता हरि हर ऐसे पाविचन को पाप लगाय हंसते हैं यथा बिंदा मोहिनी के प्रसंग ते आपुतौ ऐसे अभागी जो अन्न बस्त्र नहीं पावत औ बड़े ही भाग्यवानन को डाटत कि हम काहूको नहीं समुझते हैं ऐसे नीच दरिद्री कुमार्गी जीव कलि की कुचाल में कलुष कहे पाप करिकै मन म-लीन ते किंचित् धर्म्म देखाउ माच करि महत् कहे बड़ा गुमान किये हैं कि हम भवसागर पार जायंगे तापै गो-सांईंजी तर्क उपखान कहत कि मशन की पांसुरिन सों

पयोधि कहे समुद्र पाटा चाहत हैं भाव महापापी कुटिल जीव किंचित् धर्म देखावमात्र करि भवसागर पार कैसे जायँगे ९३ ॥

सुनियेकरालकलिकालभूमिपालतुमजाहिघालोचाहियेकहौधौंराखैताहिको। हौंतौदीनदूबरोविगारेउढारेउरावरोनमैहूंतैहूंताहिकोसकलजगजाहिको । कामकोहलाइकैदेखाइयतआंखिमोहिं येतेमानअकसकीबेकोआपुआहिको। साहिबसुजानजिनश्वानहूंकोपक्षकियोरामबोलानामहौंगुलामरामसाहिको ९४ ॥

हे कलिकाल कराल सुनिये जाको तुम घालो कहे मारो चाहो ताहि को कहो कौनधौं राखिसकै काहे ते तुम भूमिपाल हौ तुमको नीति करनी चाहिये भाव मोटे सबलको डाटौ दीन दूबरेको पालौ तहां हौं कहे मैंतो दीन दूबरो हौं दूसरे आपुको कछु ढारो कहे बनायो बिगारयो नहीं इति बिनतीकरे ताहूपर कलियुग न मान्यो तब कहत कि जाहि मालिक को सकल जगहै ताही के मैं हूं तोहूंहै भाव रघुनाथजीकी तरफ ते तुम राजाहौ मैं उनको गुलाम हौं तहां काम क्रोधादि कुटिल दूत लगाइबै मोको आंखि देखाइयत हौ तो हम पूछतेहैं कि इतनो अभिमान औ अकस कहे शत्रुता करनेवाले आपु हमरे कौन हैं अच्छा जो अकस करते हौ तो यह बात जाने रहना यह खूबकारी एक दिन परैगी काहे ते श्री रघुनाथजी सज्ञान साहेब हैं जे अवधबासी श्वानहूंको पक्ष करि ब्राह्मणको दण्ड दीन औ मैंतो श्रीराम साहेब को गुलामहौं अरु रामबोला मेरो नामहै यह प्रौढ़िहै ९४ ॥

सांचीकहौंकलिकालकरालमें ढारोबिगारोतिहारोकाहै। कामकोलोभकोक्रोधकोमोहकोमोहिसोंआनिप्रपंच

रहाहै ॥ हौजगनायकलायकआजुपैमेरियोदेवकुटेवमहा है । जानकीनाथबिनातुलसीजगदूसरेसोंकरिहोंनहहा है ९५ ॥

हे कलिकाल कराल यह सांची कहतहौं कि मैं तुम्हारो बनायो बिगारयो कहा है भाव कबहूं काम बनावतो अब ना बनावतो तो क्रोध करिबो उचितरहै वा कुछ बिगारतो तो क्रोध करिबो उचितहै निहेंतु क्रोध क्यों करतेहौ कौन क्रोध है सो कहत कि कामको प्रपंच लोलुपता लोभको प्रपंच पाषण्ड क्रोधको प्रपंच अविचार मोहको प्रपंच अज्ञानता इत्यादि प्रपंच करिबे को तुमको मेरेही ऊपर रहाहै भाव और कोऊ नहींहै जगमें एक महीं हौं क्यों न कुकूमति करौ आज तुम जगनायक कहे स्वामीहौ दण्ड रच्छादि सब करिबे लायक हौ पै हे देव मेरी भी यह महाकुटेव है भाव पुष्ट हठ पकरेहौं कि एक जानकीनाथ बिना जगमें दूसरेसों हहा बिनती तुलसी न करिहै भाव श्रीरघुनाथहीजीसों गर्ज सुनैहौं तुमते हाहा बिनती न करिहौं ९५ ॥

भागीरथीजलपानकरौंअरुनामद्वैरामकेलेतनितैहौं । मोसोंनलेनोनदेनोकछूकलिभूलिनरावरीओरचितैहौं। जानिकैजोरकरोंपरिणामतुम्हेंपछितैहोपैमैंनभितैहौं । ब्राह्मणज्योंउगिल्यौ उरगारिहौं त्योंहींतिहारेहियेनहितैहौं९६ ॥

भागीरथी महापापनाशिनी गंगाजीको जलपान करतहौं भाव काहूके कूपको नहीं औ श्रीरघुनाथजीके नाम द्वैबार संध्या प्रभात वा सीताराम ऐसे द्वैनाम वा एक बार नाम लीन्हे भवसागर पार होत मैंतो श्रीराम के द्वै नाम

नितही लेतहौं हे कलिकाल हमसों तुमको न कछु लेनो है न कछु देनोहै याते रावरे कहे आपकी ओर मैं भूलिहू कै न चितैहौं भाव आपते मैं हेतु रहित हौं ऐसा जानिहू कै जोर करते हौ सो कछु भलो नहीं क्योंकि परिणाम कहे अन्तमें तुमहीं पछितैहौ पै मैं न झितैहौं मैं न डरिहौं कौन भांति यथा उरगारि गरुड़ ब्राह्मणको उगिल्यो त्यों हीं हौं कहे मैं तिहारे हृदयमें न हितैहौं भाव मह्यं तुह्मारे उरमें न पचौंगो गरुड़ जासमय अमृत हरबे हेत चले तब पिताते कहे कि हमारे क्षुधा लगी तब कश्यप ने कह्यो कि उत्तरतटवासी पातकी निषादनको खाउ यहसुनि गरुड़ सबको भक्षण करिगयो तिनमें एक नष्ट ब्राह्मण मिला रहै वह उरमें दाहक भयो तासों गरुड़ कह्यो कि तुम निसरि आवो वाने कह्यो कि हमारे संगिनको निकासौ तो हमनिकरैंगे यह सुनि गरुड़ सबको उगिलिकै सुखी भये भाव यह कि नष्ट भो ब्राह्मण किंचित् ब्रह्मतेजते गरुड़ पचाइ न सके तैसे मैंभी जो पतित हौं तो श्रीराम नामके प्रताप ते कलियुग तुम न पचै सकोगे ९६॥

राजमरालकेबालकपेलिकै पालतलालतखूसरको।
शुचिसुंदरसालिसकेलिसुवा रिकैबीजबटोरतऊसरको।
गुणज्ञानगुमानभभेरिबड़ाकल्पद्रुमकाटतमूसरको। कलि
कालविचारअचारहरीनहिंसूझैकछूयमधूसरको ९७॥

राजमराल कहे हंसनके बालकन को पेलि कहे ढकेलि कै खूसर कहे खूसट जो मशानी पक्षी अपावन ताको लालत दुलारत पालत नेह राखत भाव उत्तम पावन बिबेकी हरिभक्तनके वेष बालकन को निरादर करि कौल कपालिन का पूजतेहैं शुचि कहे पवित्र सुन्दर शालि कहे धान सुखेतसों सकेलि कहे बटोरि कै बारि कहे फूंकि कै ऊसर बोइबे हेतु ऊसरही को बीज बटोरत हैं भाव सुशक्ति को

अधर्म अग्निमें जराइ डारत तुच्छदेव भूतादिके सिद्धहेतु उनके यंत्र मंत्र बटोरते हैं तापर अनेक भांति को गुमान करेहैं सोई बड़ो भर्मेरि कछे घबराइट ज्ञानादि गुणन के भगाइबे हेतु है भाव गुमान भये ज्ञानादि सब गुण जात रहत हैं औ मूसर हेतु कल्पद्रुम काटत हैं भाव लौकिक कलेश परे पर श्रीराम नाम लेते हैं धर्म अधर्म को बिचार तप शौचादि अचार सब कलिकाल ने हरि लयो तापर भमधूसर निर्बुद्धी जीवन को नहीं सूझि परत कि और धर्म तो हूँई नहीं सकत सौभाविक श्रीराम नाम तो जपिये कल्प हेतु ९७॥

कीबेकहापढ़िबेकोकहाफलबूझिनवेदकोभेदविचार्यो।
स्वारथकोपरमारथकोकलिकामदरामकेनामबिसार्यो ।
वादबिबादविषादबढ़ाइकै छातीपराईऔआपनिजार्यो ।
चारिहुकोछहुकोनवको दशआठकोपाठ कुकाठज्योंफा-
र्यो ९८॥

कीबे कहा सुन्दर नरदेह पाइकै का करिबेको चाही अर्थात् हरिभक्ति न कीन्ह्यों औ वेद पुराणन को भेद काहूसों बूझिकै वा अपने मनते न बिचार्यो कि पढ़िबेको कहा फलहै यथा॥ वेद पुराणसन्तमतयेहू। सकलसुकृतफल रामसनेहू॥ पद्मपुराणे॥ सर्वेषांवेदसाराणां रहस्यंतेप्रका-शितं। एकोदेवोरामचन्द्रो ब्रतमन्यंनतत्समं॥ स्वारथ कहे लोक सुखदाता परमारथ कहे परलोक सुखदाता कलि-युगमें बिशेष कामद मनोरथदाता कल्पद्रुम सम श्रीराम नामको बिसारि कै विद्याके मानते बाद बिवाद विषाद कहे दुख बढ़ायके क्रोध सों परारी और आपनी छाती जरायो याते चारिहू वेद यथा ऋग्यजु साम अथर्वण छहू शास्त्र यथा मीमांसा सांख्यवैशेषिक न्याय योगवेदान्त

नव व्याकरणै यथा इन्द्र चंद्र काश्य कृष्ण सकठ पिप्पला-यन माणिनि अमर जैन्येन्द्र सरस्वती दशआठ पुराणै यथा मीन भविष्य शिव बाराह बामन ब्रह्म ब्रह्माण्ड गरुड़ मार्कण्डेय पद्म विष्णु नारदीय लिंग ब्रह्म बैवर्त्त अग्नि कूर्म स्कन्ध भागवत इत्यादिको पाठ कहे पढ़िबो कैसाकीन्हो यथा कुकाठ बिना रेशाको उकठा खुहा जो फारिबे को परिश्रम इथा तथा बिना हरिभक्ति वेदादिको पढ़िबो इथा यथा ॥ श्रुतिपुराणसब ग्रंथकहाहीं । रघुपतिभक्ति बिनासुखनाहीं ॥ पद्मपुराणे ॥ नतत्पुराणंनहियचरामो यस्यांनरामोनचसंहितासा । सनेतिहासोनहियचराम: काव्यंनतत्स्यान्नहियचराम: ॥ अन्यच ॥ पठितसकलवेदा: शास्त्रपारंगतोवा यमनियमपरोवाधर्म शास्त्रार्थवेत्ता ॥ अटति सकलतीर्थंबाजकोवाऽतारिन नहिहृदियदिराम: सर्वमेत इथास्यात् ९८ ॥ एक समय सिद्धजन आप गोसाईं जीसों पूँछो कि तुम्हारे कौन सिद्धाई है तापर गोसाईं जी यह कवित्त कहे आगम वेद पुराण इति ॥

आगमवेदपुराणबखानतमारगकोटिनजाहिंनजाने ।
जेमुनितेपुनिआपुहिआपुकोईशकहावतसिद्धसयाने । धर्म
सबैकलिकालग्रसेजपयोगविरागलैजीवपराने । कोकरि
शोचमरैतुलसीहमजानकिनाथकेहाथबिकाने ९९ ॥

आगम कहे षटशास्त्र चारिउ वेद अठारहौ पुराण उपपुराण इत्यादि कोटिन मार्ग बखानत जो कोऊ जाना चाहै तो जानो नहीं जात तथा ऋग्वेदी यजुर्वेदी सामवेदी अथर्वणी मीमांसी सांख्यवैषिकी न्यायी योगीवेदान्ती वैष्णव शैव शाक्त सौरी गाणपती स्मार्तक द्वैतबादी अद्वैतबादी बशिष्टाद्वैतबादी ईश्वरबादी मायाबादी जीव बादी कालबादी कर्मबादी अग्निबादी जलबादी भूमिबादी पवनबादी आकाशबादी कामबादी तपस्वी तीर्थी-

टनी मौनी पयोहारी जापक अर्चक नवधी प्रेमीपरावले इत्यादि आस्तीक पुनः जंगम चार्वाक दिगंबर कौल कपाली जैनी आवक तंची बौधनी लंपटी आरद्रपटी अजिनपटी पाशुपती महाव्रती इत्यादि अनेकन हैं पुनि जे मुनि हैं तिन में जे ब्रह्मवादी हैं ते आपु अपना को ईश कहावते हैं अणिमादिक वाले अपना को सिद्ध कहावते हैं जे कर्मकांडी आचार्य है ते अपना को सयाने कहावते हैं सत्य शौच तप दानादि यावत् धर्म हैं तिन सबन को कलिकाल ग्रस्यौ कहे लीलि लेन चाहत ता भयते जप योग वैराग्य जीव लैलै पराने कहे भागिगयो ताको शोच करिकरि को मरै गोसाईंजी कहत कि हम जानकीनाथ के हाथ बिकाइ गये भाव शुद्ध शरणागतके भरोसे हौं ९९॥

धूतकहौअवधूतकहौ रजपूतकहौजोलहाकहौकोऊ ।
काहूकीबेटीसोंबेटानब्याहबकाहूकीजातिबिगारनसोऊ ।
तुलसीसरनाम गुलामहैरामको जाकोरुचैसोकहौकछु सोऊ । मांगिकैखैबो मजीतकोसोइबो लेबेकोएकनदेबेको दोऊ १०० ॥

धूत कहौ कोउ छली कहौ अवधूत कहौ कोऊ सांचो फकीर कहौ रजपूत कहौ कोऊ उत्तम धीर्य्यवान कहौ जोलाहा कहौ कोउ कोऊ नीच कादर कहौ वा कोऊ कुछु कहौ मोको काहू की बेटी सों बेटा नहीं ब्याहिबे है जो काहू की जाति बिगारत होऊं सोऊ नहीं है ताते जाको जो रुचै सो कुछु कोऊ कहौ तुलसीतौ सरनाम प्रसिद्ध श्रीरामको गुलाम है मांगि कै खैबो अर्थात् काहू एक को आसरा नहीं दूध भिक्षा उत्तम धान्य है औ मसजिद को सोइबो भाव काहू के द्वारपै नहीं जाबे हैं भरोसे रघुनाथजी के न काहू सों लेनो

एकन देनो दोइ भावलोक व्यवहार रहितहौं १०० जा-तिपांति की मर्यादा सरवरिया ब्राह्मण नमें प्रसिद्ध है पांति वालेन को बनवास वखात पांतिवालेन के विवाहत जाति में वे श्रेष्ठ हैं ॥

मेरेजातिपांतिनचहौंकाहूकीजातिपांतिमेरेकोऊकाम को नहौंकाहूकेकामको । लोकपरलोकरघुनाथहीकेहाथ सबभारीहैभरोसोतुलसीकेएकनामको । अतिहीअयाने उपखानोनहिंबूझैंलोग साहेबकोगोतगोतहोतहैगुलाम को । साधुकैंअसाधुकैंभलोकैंपोचशोचकहा काकाहूके द्वारपरोजोहौंसोहौंरामको १०१ ॥

मेरे जाति पांतिन भाव जो जाति में प्रगट भयो ताको त्याग कियों याते मेरे जातिकी भांति नहीं है तौ औरहू की जाति पांति नहीं चाहत हौं कि मोको कोऊ जाति पांति में बैठावै काहेते न कोऊ मेरे कामको है औ न मैं काहूके कामको हौं क्योंकि मैंतो श्रीरघुनाथजीके हाथ बिकाइ गयों याते लोकहू परलोक को निबाह मेरो श्री रघुनाथही के हाथ है काहेते तुलसीको भारी भरोसा एक श्री राम नामही को है भाव यंच राजपै रामार्चन बिधान में अनेक अंगदेव पूजे जात सो रहित हौं एकनाम बल श्रीराम को गुलाम हौं यामें जे संदेह करते हैं ते अतिही अयाने लोग हैं जे उपखान नहीं बूझते हैं सो कौन उपखान है यथा साहेब को गोत सोई गोत गुलाम हूको होत तौ जो मैं श्रीराम गुलाम हौं तौ काहू की जातिपांति मोको क्या करनाहै साधुहौं कैधों असाधु भ-लोहौं कैधों पोच कहे बुरोहौं या बातको कहा शोच है क्यामैंकाहू के द्वार पै परो हौं भलो बुरो जो कुछहौं सो श्रीरामहीको हौं १०१ ॥

कोऊकहैकरतकुसाजदगाबाजबड़ो कोऊकहैरामको गुलामखरोखूबहै। साधुजानैंमहासाधुखलजानैंमहाखलबानीझूठीसांचीकोटिउठतहबूबहै। चहतनकाहूसोंकहतनकाहूकोकछूसबकीसहतउरअंतरनऊबहै। तुलसीको भलोपोचहाथरघुनाथहीकेरामकी भगतिभूमिमरीमतिदूबहै १०२॥

कोउ कहत कि छल कपट ठगी आदि कुसाज करत याते बड़ो दगाबाज है कोऊ कहत शुद्ध शरणागत खूब खरो श्री रघुनाथजीको गुलाम है तहां जे साधु हैं ते महासाधु करि मानत हैं औ जे खल हैं ते महाखल जानत हैं इत्यादि झूठी सांची बाणी कोटिन हबूब कहे पानी कैसो बुल्ला उठता हैं हबूब शब्द अरबी है औ काहूसों कछु चाहत नहीं कि माको कोऊ कछु देइ औ काहूको कछु कहत नहीं कि क्यों ऐसी बात माको कहते हौ सबकी कही बात सहत हौं ताको कछु उर अंतरमें ऊब नहीं काहेते तुलसी को भलो होनो वा पोच कहे बुरो होनो सब श्री रघुनाथ हीके हाथ है क्योंकि श्री रामभक्ति रूप भूमि पै मेरी मति दूब सम सदा हरित है भक्ति पै मति सदा लवलीन है १०२॥

जागैंयोगीजंगमयतीसमाजध्यानधरैं डरैंउरभारीलोभमोहकोहकामको। जागैंराजाराजकाजसेवकसमाजसाजशोचैंसुनिसमाचारबड़ेबैरीबामके। जागैंबुधबिद्याहितपंडितचकितचितजागैंलोभीलालचधरणिधनधामके। जागैंभोगीभोगहीबियोगीरोगीरोगबश सोवैंसुखतुलसीभरोसेएकरामके १०३॥

योगी अष्टांग करनेवाले जे चित्त निरोधक हैं जंगम जे शिवलिंग उपासक हैं यती संन्यासी व जैनी समाज सत्संग में रहनेवाले ध्यान धरे जे ध्यानी हैं वा योगी आदि के समाज में जे ध्यान आपने तत्व पर राखते हैं ते काम क्रोध लोभ मोहादि को भारीडरहै उरमें तातेजागते हैं भाव सदा सजग रहतेहैं जे राजा हैं ते राजकाज कहे प्रजादिकी रक्षा तसीलादि सेवक सिपाह समाजको अस्त्र बाहनादि साजिबे हेतु बड़े बैरी बाम कहे टेढ़ेको समाचार सुनि शोच बशते जागैं बुधजन पंडित बुद्धि विद्या हेतु जागैं लोभी सदा चकित चित धरणि धन धाम के लालच हेतु जागैं भोगी भोग हेतु जागैं बियोगी बिरह में जागे रोगी रोगबशजागैं इत्यादि सबको भय लागिहै गोसाईं जी कहत याको एक श्री रघुनाथ जीको भरोसा है सोई सुखसों सोवतहै यथा॥ जो अपराध भक्त कर करई। राम रोषपावकसोजरई॥ बाल्मीकीये॥सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते॥अभयंसर्बभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम १०३॥

छप्पै॥ राममातुपितुबंधुसुजनगुरुपूज्यपरमहित। साहेबसखासहायनेहनातेपुनीतचित॥ देशकोशकुलकर्म धर्मधनधामधरणिगति। जातिपांतिसबभांतिलागिरामहिंहमारपति॥ परमारथस्वारथसुयशसुलभरामतेस कलफल। कहतुलसिदासअबजबकबहुंएकरामतेमोर भल १०४॥

सबको आश भरोसा छाड़ि यावत् संबंध हैं सब श्रीरघुनाथ जीमें स्थित करत यथा माता पिता बंधु सुजन कहे संबंधी पूज्य कहे इष्ट परम हित कार स्वामी सखा सहायक पुनीत कहे पवित्र चितते यावत सनेह के नाते हैं देश आपनो या राज कोष कहे खजाना कुलको धर्म कर्म कहे

द्रव्यधाम घर धरणि पृथ्वी गति कहे भरोसा जाति पांति आदि सब भांति पति कहे मर्यादा हमारी एक श्रीरघुनाथैजी लागि हैं परमारथ कहे परलोक में गति स्वारथ कहे लोक सुख जगमें सुयशादि यावत फलहैं ते सकलएक श्रीरघुनाथैजी सों सुलभ होइ गोसाईंजी कहत कि चहै सब होइ चहै कबहुंहोइ जबहोइ तब एक रघुनाथै जीसों मेरो भलोहोइ यह अन्यताको लक्षणहै यथा ॥ नातोनेह रामसों करि सब नातोनेह बहैहौं ॥ यही शिव संहिता में हनुमान्जीकहे यथा ॥ पुत्रवत्पुत्रवद्रामोमात्रवन्ममसर्वदा। द्र्यालवद्रामवद्रामःश्वश्रूवच्छ्रीसुरादिवत्। पुत्रीवत्पौत्रवद्रामो भागिनेयादिवन्मम । सखीवत्सखिवद्रामःपत्नीव द्रनुजादिवत् ॥ इत्यादि सब कहे हैं १०४ ॥

महाराजबलिजाउंरामसेवकसुखदायक । महाराज बलिजाउंरामसुन्दरसबलायक ॥ महाराजबलिजाउं रामसबसंकटमोचन। महाराजबलिजाउंरामराजीवबिलोचन ॥ बलिजाउंरामकरुणायतनप्रणतपालपातकहरण । बलिजाउंरामकलिभयबिकलतुलसिदासराखिय शरण १०५ ॥

पंचम चरण में करुणायतनादि तीनि गुण कहे तिनको इहां क्रम ते उदाहरण जानब यथा राजनके राजा महाराज हे श्रीरघुनाथ जी मैं बलि जाउं आपु करुणायतन हौ भाव करुणा गुण के स्थान हौ करुणा गुण को यह लक्षण है कि सेवक के दुख में प्रभु आपु दुखित होत औ सेवक को सुखी करत यथा विभीषण पै रावण शक्ति चलाई सो प्रभु आपु सहे विभीषण को बचाइ लिये ताते महाराज आपु सेवक सुखदायक हौ पुनः हे महाराज श्री रघुनाथ जी मैं बलिजाउं आपु प्रणतपाल हौ प्रणत

कहे शरणागत ताके पालनहार हौ यथा बिभीषण शरण आये ताको लोकहू परलोकते अकंटक कीन्हे ताते सुंदर रूप आपु सब लायक हौ पुनः हे महाराज श्री रघुनाथ जी आपु पातकहरण हौ पाप हरणहारे याते कि जहां पापन करिकै काहू को दुख परा सो शरण ह्वै आपु को नाम पुकारा ताके पाप नाश करि कलेश मिटाइ दियो यथा गज वा अहल्या उद्धार कियो ताते आपु संकटमोचन हौ सब भांति संकट के छुड़ावनहार हौ पुनः हे महाराज श्री रघुनाथ जी मैं बलिजाउं आपु राजीवलोचन हैं कमलसम नेत्र शीतल हैं वा रामराजीवबिलोचन यथा श्री रामराम कहे परब्रह्म गुणनिधि जीव कहे जीवन पै बि कहे बिशेषि लोचन कहे दया दृष्टि राखे हौ अर्थात् श्री रघुनाथ जी परब्रह्म गुणनिधि हौ जीवन पै बिशेषि दयादृष्टि राखे हौ ताते बलिजाउं मैं कलियुग के भय करिकै बिकल हौं सो तुलसी दासहूको शरणमें राखिये राजीव शब्दार्थ तेंतालिस के कवित्त में लिखा है याते इहां सूक्ष्म कहा १०५॥

जयताड़कासुबाहुमथनमारीचमानहर। मुनिमखरक्षनदक्षशिलातारणकरुणाकर॥ नृपगणबलमदसहित शंभुकोदंडबिहंडन। जयकुठारधरदर्पदलनदिनकरकुलमंडन॥ जयजनकनगरआनंदप्रद सुखसागरसुषमाभवन। कहतुलसिदाससुरमुकुटमणि जयजयजयजानकिरमन १०६॥

जोपूर्व गुण कहे सो सप्तकाण्ड सूचनिका ते तीनि षटपद में कहे तहां प्रताप वर्णन ताते ताड़का बधते प्रारम्भ करे यथा ताड़का सुबाहु को मथन कहे नाशक औ मारीच मानहर कहे बिन फर बाण ते उड़ाइ समुद्र पार

डारे ऐसे श्री रघुनाथ जी की जय होइ मुनि विश्वामित्र की यज्ञ रक्षा करिबे में दक्ष कहे प्रवीण हैं शिलारूप अहल्या तारणहार करुणा के आकर कहे खानि हैं रुद्र गण समूह दुष्टराजन को बल मद सहित शंभु को धनुष विखंडन कहे नाश करनहारे कुठारधर परशुराम को दर्प कहे अभिमान दलनहारे दिनकर सूर्य कुलमण्डन कहे भूषण श्रीरघुनाथ जी की जय होइ जनक नगर आनंदप्रद कहे श्री जानकीजीके बिवाह ते सबको सुखदिये ऐसे सुख के समुद्र सुषमा शोभा के भवन श्री रघुनाथजी की जय होइ गोसाईं जी कहत कि सुरमुकुटमणि देव शिरोमणि याते कहे देवतन की रक्षा हेतु चले ऐसे श्री जानकीरमण की जय होइ जय होइ जय होइ इहांतक बाल अयोध्या भयो १०६ ॥

जयजयंतजयकरअनंतसज्जनजनरंजन। जयबिराध बधबिदुषबिबुधमुनिगणभयभंजन॥ जयनिशिचरीबिरूपकरनरघुबंशबिभूषण । सुभटचतुर्दशसहसदलनत्रिशिराखरदूषण॥ जयदंडकबनपावनकरनतुलसिदाससंशयशमन। जगबिदितजगतमणिजयतिजयजयजयजय जानकिरमन १०७॥

जयन्त इन्द्रपुत्र जो काग ह्वै द्रोह कियो ताके जयकर कहे जीतनहार औ अनंत कहे अनेकन अत्रि आदि सज्जनन को रंजन कहे आनन्द करनहारे श्री रघुनाथ जी की जय होइ बिराध के बधबेमें पंडित अर्थात् काहू अस्त्र सों नहीं मरत रहै ताको जीवतही भूमि में गाड़ि दियो ताते बिबुध जो देवता मुनिगण कहे समूह तिनके भय डर के भंजनहारे प्रभु की जय होइ निशाचरी सूर्पनखा की नाक कान काटि बिरूप कुरूप करनहारे ऐसे रघुबंश

विभूषणकी जयहोइ चौदह हजार सुभट सहित त्रिशिरा खर दूषण के दलनहारे प्रभु की जय होइ शुक्र शाप ते दग्ध दण्डकबन पवित्र करनहारे तुलसीदास की संशय कलियुग की ताको नाशनहारे जग में विदित जगत मणि सूर्य इव प्रकाश करनहारे श्री जानकीरमण की जय की इति कहे संपूर्ण जय जिनमें है ऐसे प्रभुकी भूतकाल में जय होत आई वर्तमानमें जयहै भविष्यमें होइ १०७ ॥

जयमायामृगमथनगीधशवरीउद्धारण । जयकबन्ध सूदनबिशालतरुतालबिदारण ॥ दवनबालिबलशालिथपनसुग्रीवसंतहित । कपिकरालभटभालुकटकपालनकृपालचित ॥ जयसियबियोगदुखहेतुकृतसेतुबंधबारिधि दमन । दशशीशबिभीषणअभयप्रदजयजयजयजानकि रमन १०८ ॥

रावण प्रेरित मारीच माया कहे कपट मृगरूप आयो ताको मथन कहे नाशनहार गीध शवरी नीच योनि सम्बन्धी कहे उद्धार करि निज धाम पठावनहार प्रभु की जय होइ कबन्ध बिन शिर के राक्षस को सूदन कहे नाश करनहार सुग्रीव के बताये बिशाल ताल तरु कहे दृक्षनको विदारन हार प्रभुकी जय होइ शालिकहे महाबली बालि को दमन कहे नाशकरि हित कहे मित्र सुग्रीव को संतकरि कपिनायक करिथापे ऐसे प्रभुकी जय होइ औ कृपालहै चितजाको ताते चंचल पशु बानरन को अरु कराल भट भालुन की कटक के पालनहार प्रभु की जयहोइ श्रीजानकी जीके बियोग के दुख हेतु कृत कहे करत भये सेतुबंधवारिधि कहे समुद्र उतरि दशशीश को कुल सहित दमन कहे नाशकरि विभीषणको लोकहू परलोकते अभयप्रद कहे देनहारे श्री जानकी रमण की तीनिहूं काल में जयहोय १०८ ॥

कनककुधरकेदारबीजसुंदरसुरमणिवरासींचिकामधुक धेनुसुधामयपयबिशुद्धतर ॥ तीरथपतिअंकुरस्वरूपयक्षेशरक्षतेहिमरकतमयशाखासुपत्रमंजरिसुलक्षजेहि ॥ कैवल्यसकलफलकल्पतरुशुभसुभावसबसुखबरिस। कहतुलसिदासरघुबंशमणितोकिहोहितवकरसरिस १०६ ॥

अभूत कल्पवृक्ष को रूपक कहत तहां प्रथम थालहा चाहिये सो कहत कि कनक कुधर केदार कनक कुधर कहे सुमेरुगिरि जो भूमि सर्व वस्तु की खानि ताको मध्य सारंस सुमेरु सोई केदार कहे थालहा होइ तब बीज चाहिये सो कहत बीज सुंदर सुरमणि वरकहे श्रेष्ठ सुरमणि कहे चिंतामणि जो चिंतित फल देनहारी सोई अदग्ग सुंदर बीज होइ तहां सींचेते बीज जामि अंकुरित होत ताको कहत बिशुद्धतर कहे विशेषि शुद्धहूते शुद्ध सुधाकहे अमृतमय कामधेनु के पयकहे दूधसों सींचो जाय तब अंकुरहूँ वृक्षहोवो चाही सो कहत कि तीर्थपति प्रयाग सब फल दायक सोई जाको अंकुर होइ पुनः स्वरूपहोइ ताको रक्षक चाही सो यक्षेश कुबेर जाके रक्षक होयं शाखापत्र चाही सो मर्कत मणि जो हरित नीलरंग सों श्याम मर्कत मणिमय शाखा होइं हरित मर्कत मय सुंदर पत्रहोइँ तब मंजरी चाहिये सो कहत सुलक्षि कहे लक्ष्मीजी सुंदर मंजरी होइं तब फल चाहिये सो कैवल्य कहे मुक्ति सकल फल सहित कल्पवृक्ष शुभ सुभाव अर्थात् यह कल्पवृक्ष ते शुभ अशुभ जोई मांगै सोई देइ तैसो सुभाव न होइ यह कल्पवृक्ष शुभ सुभाव ते सब सुखै बरसै ताहूपै गोसाईंजी कहत हे रघुबंशमणि ऐसहू कल्पवृक्ष होइ तौ का आपके कर सरिस होइ अर्थात् नहीं होइ यह दृढ़तातिशयोक्ति अलंकार है यथा ॥ सामासंख्यविचारिकै पुनिविशेषिदृढभाव। दृढ़ताअतिशयउक्तिसो बर-

अतरसिकसुदाव ॥ या कवित्त में राज सिंहासनासीन समय कीहै इहांतक पच्चीस कवित्तन में कलियुग की भ-भरिमें श्री रामनाम शरणागती प्रबल कहें १०९ ॥

जाइसोसुभटसमर्थपाइरणरारिनमंडै । जाइसोयती कहायबिषयबासनानछंडै॥ जाइधनिकबिनदानजाइनि-र्धनबिनुधर्महि। जाइसोपंडितपढ़िपुराणजोरतसुकर्महि॥ सुतजाइमातुपितुभक्तिबिनुतियसोजाइजेहिपतिनहित । सबजाइदासतुलसीकहैजौनरामपदनेहनित ११० ॥

सुभट योधा समर्थ कहायकै रणभूमि पायकै रारि कहे युद्ध में न मंडै बीरता करि युद्धको भूषितन करै सो जाय कहे वृथा हैं फिर वाको कोऊ बीर न कहैगो यती विरक्त कहाय विषय की बासना न छांड़ै सो वृथा जाय वाको विरक्त न कहैगो धनिक धनवान् कहाय उत्तम दान न दियो सो धनिक जाय कहे वृथा है वाको सब दरिद्री कहैंगे निर्धन जो गरीब है बिन धर्म कहे जो लौकिक धर्म छांड़ि देय तो वाकी मर्य्यादा लोक में वृथा ह्वै जाय कोऊ बिश्वास न राखै पंडित बुद्धिमान् पुराण पढ़ि सुकर्म में रत न भयो सो जाय कहे वृथा है वाको कोऊ सुबुद्धी न कहैगो पुत्र ह्वै कै माता पिताकी भक्ति सेवा न करै सो जाय वृथा है वाको कोऊ सपूत न कहैगो स्त्री ह्वै पतिसों हित कहे प्रीति न राखै सो जायकहे वृथा है वाको लोग कुनारी कहैंगे तथा गोसाईंजी कहत कि जे श्रीरघुनाथजी केपद कमलनमें नितनेह न कीन्हे ताके वर्णाश्रम धर्म कर्म सब वृथा हैं यथा रुद्रयामले॥ येनराधमलोकेषु रामभक्ति पराङ्मुखा। जपंतपंदयाशौचं शास्त्रानामवगाहनम्॥ सर्वं वृथाविनायेन स्मृतंपार्वतिप्रिये ११०॥

कोनक्रोधनिरदह्योकामबशकेहिनहिंकीन्हों । कोन लोभदृढ़फंदबाँधित्रासनकरिदीन्हों॥कवनहृदयनहिंलाग कठिनअतिनारिनयनशर । लोचनयुतनहिंअंधभयोश्री पाइकवननर॥ सुरनागलोकमहिमंडलहुकोजुमोहकीन्हो जयन । कहतुलसिदाससोऊबरैजेहिराखरामराजिव नयन १११ ॥

कौन ऐसा शांतचित्त है जाके उर को क्रोधाग्नि ने निर्दह्यो कहे दाह नहींकरिदियो कौन ऐसा धीर्य्यमान् है जाको काम ने बश नहीं कियो भाव सब को बश करि लोलुप बनावत कौन ऐसा त्यागी है जाको लोभने दृढ़ा रूप दृढ़ फंद में बाँधि करि चिन्तारूप त्रास न दीन्हें कौन ऐसा इन्द्रीजित है जाके हृदय में अति कठिन नारी के नयन को बाण नहीं लगो भाव सुंदर स्त्री देखि को न आशक्तभया श्रीद्रव्य वा राजश्री यथा देश कोष सेना बाहनादि ज्ञकूमत पाइ कौन ऐसा चैतन्यहै जो वर्त्तमान नेच न के रहते मन ते मदांध न भयो सुरलोक नागलोक महि मंडल हू में को ऐसा बिबेकी है जाको मोह ने जीति न लियो भाव सब को ममता बश करि मिथ्या दृष्टि करि दियो गोसाईंजी कहत कि कमलनयन श्रीरघुनाथजी जाको राखत हैं सोई उबरत है भाव जो श्रीरघुनाथजी की शरण ह्वै श्रीरामनाम उच्चारण करत ताका एकहू बिघ्न नहीं बाधकहोत यथा नारदीपुराणे॥श्रीराम स्मरणा च्छ्रीसासमस्तक्लेशसंचयः। मुक्तिंप्रयातिविप्रेंद्रतस्यविघ्नोनबाधते॥ श्रीरामरक्षायां॥पातालभूतलव्योमचारिणाः छद्म कारिणः। नदृष्टुमपिशक्तास्ते रक्षितंरामनामभिः १११॥

सवैया॥ भौंहकमानसधानसुठान जेनारिबिलोकत बाणतेबाचे। कोपकृशानुगुमानअँवाँघट ज्योंजिनकेमन-

आँचनआँचे। लोभसबैनटकेबशह्वैकपिज्योंजगमेंबहुनाच ननाचे। नीकेहैंसाधुसबैतुलसीपैतेई रघुबीरकेसेवकसाँचे ११२ ॥

टेढ़ी भौंह रूप कमान पर सुठान कहे संधान कीन्ह नारि बिलोकनि कहे चंचल दृग तिरछी कटाच्छरूप बाण तेजे बचिगये तेप्रभुकी सेवकाई करिबे योग्यहैं पुनः गुमान कहे द्रव्य गुणविद्या जाति महत्त्वादि को अहंकार रूप आँवाँ में कोप रूप क्षुधानु कहे अग्निउबलित आँचमें घट सरिस जिनके मन न आँच मन क्रोध में न तप्त भये ते प्रभु की सेवकाई करिबे योग्यहैं लोभरूपी नटके बश ह्वै कपि समान सब प्राणी जैसे जग में बहुत नाच नाचत हैं तैसे जे न नाचैं तेई रघुबीर के साँचे सेवक हैं भाव कामादि रहित ह्वै सेवकाई करै सो साँचो सेवक नहीं तो गोसाईं जी कहत कि सहज भाव में तौ सबै साधु भले हैं ११२ ॥

भेषसुबनायभले बचनकहैंचुवाइ जाइतौनजरनिधरणिधनधामकी । कोटिकउपायकरिलालिपालियतदेह मुखकहियतगति रामहीकेनामकी । प्रगटैउपासनादुरावै दुर्बासनाहिं मानसनिबासभूमिलोभमोहकामकी। रागरोषईर्षाकपटकुटिलाईभरे तुलसीसेभगत भगतिचहैराम की ११३ ॥

अन्तर में धरणि पृथिवी धन द्रव्य धाम घर ताके वृद्धि की चाहते चिन्तारूप जरनि छियेते तौ क्षणहू माच नहीं जाती है औ ऊपर ते तुलसी माल द्वादश तिलक मुद्रा अंकितादि सुभेष बनाइ प्रेमामृत से चुवाइ टिकोरि टिकारि भले भले नवधा प्रेमापरादि हेतु सहित मोठे मोठे

बचनबनायकै मुख ते कहतहैं तनपोषक कैसेहैं जो सुखदायक धाममें शय्याशीतोष्ण निवारण दिव्यभोजन बसनादि कोटिन प्रकार के उपाय करि लालि कहे दुलराइ कै देह को पालन करत अरु झूठही सुखते कहत कि हमारे एक गति श्रीरामही के नाम की है जाको गुप्त राखिबे को चाहीता उपासना को तौ प्रगट करतेहैं कि हम श्री रामोपासक हैं औ भीतर लोभ मोह काम की जा जन्म भूमि है दुर्वासना कुमार्गी चाह सो मानस कहे मन में निवास कहे टिकी ह ताको दुरावत कहे चोराये रहत राग कहे काहू सों प्रीति काहूसों रोष कहे क्रोध किहे ईर्षा कहे मनमें शत्रुता राखे इत्यादि कपट करि भीतर तौ कुटिलाई भरे ते तुलसी ऐसे झूठे भक्त तेऊ श्री रघुनाथजी की भक्ति चाहत सो कैसे मिली काहे ते जा अनेकन जन्म तक जप होम योग ध्यान समाधि ब्रह्म ज्ञानादि में रत होइ तौ अंतःकरण शुद्ध होइ तब श्रीराम भक्ति को अधिकारीहोत यथा महारामायण॥ येकल्पकोटिसततंजपहोमयोगै। ध्यानैःसमाधिभिरहोरत ब्रह्मज्ञानात्॥ तेदेविधन्यमनुजाहृदिवाह्यशुद्धा। भक्तिस्तदाभवतितेष्वपिरामपादौ॥ सदाशिवसंहितायां॥ कल्प कोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानिच॥ पंचांगोपासनेनैव रामोभक्तिंप्रजायते ११३॥

कालिहहीतरुणतनकालिहहीधरणि धनकालिहहीजितौं गोरणकहतकुचालिहै। कालिहहीसाधौंगोकाजकालिहही राजासमाजमासोंकोऊकहाभारेमहीमेरुहालिहै। तुलसी यहीकुभांतिघनेघरघालिआये घनेघरघालतहैधनेघरघालिहै। देखतसुनतसमुझतहूनसूझैसोईकबहूंकह्योनकाल हूकोकालकालिहहै ११४॥

अब दुर्वासना को रूप कहत कि ऐसा मनोरथ करत कि मेरो तन कालिहही तरुणकहे युवाह्वै जाइ जामें स्त्री मोहित होइ यह कामकी कुवासनाहै धरणि जो पृथिवी धन द्रव्यादि सब कालिहहीहोइ यहलोभकी दुर्वासनाहै कालिहही शत्रुको रणमें जीतौंगो यह क्रोधकी दुर्वासना है इत्यादि कुमार्ग की वासना के वचन कुचाली कहतेहैं कालिहही सब काम साधि लेउंगो राजसी समाज मेरे कालिहही होइगो मोसेभारे कहे भारीसबल कोऊ कहां होइगो महीं कहे मेरेही ऐसा बल है जासों मेरु कहे पर्व्वत हालत हैं अथवा मेरे बलते महीं पृथिवी मेरु पर्व्वत सब हालत भाव मोसे भारी बलवान कौनहै मैं पर्वत हलावन हारहौं यह अभिमान की कुवासनाहै गोसाईंजी कहत कि याही कुभांति कुरीति करि भूतकाल में अनेगिन घर घालेहैं वर्तमान में अनेगिन घर घालतहैं भविष्य में अनेगिन घर घालिहैं इत्यादि सुनेहैं अरु देखते हैं अरु समुझते हैं ताहू पर नहीं सूझतहै सोई कुभांति दुर्वासना में सब कर्तव्यता शीघही माने हैं कबहूं यह न कह्यौ कि कालहू को काल कहे मृत्युहू को समय कालिह है भाव अन्त समय कि सुधिभूली है दुर्वासना ते ११४ ॥

भयोनतिकालतिहूंलोक तुलसीसोंमन्दनीदैसबसाधु सुनिमानौनसकोचुहौ । जानतनयोगहियहानिमानैजान कीशकाहेकोपरेखोहौपापीप्रपंचीपोचुहौ । पेटभरिबेके काजमहाराजकोकहायों महाराजहूकह्यौहैप्रणतविमोचु हौ । निजअघजालकलिकालकीकरालता बिलोकिहोत ब्याकुलकरतसोईशोचुहौ ११५ ॥

भूत भविष्य वर्तमानेति तीनिउं कालमें स्वर्ग मृत्यु पाताले ति तीनिउं लोक में तुलसी ऐसो मतिमन्द नहीं भयो

ऐसा कहि सब साधु हमारी निंदा करते हैं ताको सुनि कछु सकोचु नहीं मानत हौंक्योंकि सांची कहतेहैं औरघुनाथजी अपनी सेवकाई करिबे योग्य मोको नहीं जानतेहैं भाव कुमार्गी नष्ट मानतेहैं ताते श्रीजानकी ग्रहमको सेवकाई राखिबेमें हियेते हानि मानतेहैं की हमारी सेवा योग्यनहींहै ताको मैंकाहेको परेखो उनकोलागुदै उरहनो काहेकोदेउं पापी प्रपंची कहेछली पोचुकहे बुरातौ मैंहईहौं काहेते पेट भरिबेके हेतु महाराज को गुलामकहायों तोआसरा कौनहै ताको कहत कि महाराज हूतो कहेउ किहम प्रणतकहे शरणागत के क्लेश को बिमोचु कहे छड़ावनहारहौं यथाबाल्मीकीये॥सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते। अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम॥ ऐसे प्रभुके बचननको भरोसाहै तहां कलिकालकी करालताभयंकर रूप दुखद सुभाव समुझि व्याकुल होत हौं तामें आपने अघ जाल कहे पाप समूह आपुमें समुझि ताहीको शोचु करतहौं कि कैसे उबार होइगो ११५॥

धर्मकेसेतुजगमंगलकेहेतुभूमिभारहरिबेकोअवतार लियोनरको । नीतिओप्रतीतिप्रीतिपालचालिप्रभुमान लोकवेदराखिबेकोप्रणरघुबरको । बानरबिभीषणकी ओरकीकनावड़ोहैंसोप्रसंगसुनेअंगजरेअनुचरको । राखे रीतिआपनीजोहोइसोईकीजै बलितुलसीतिहारोघरजाई वाहीघरको ११६॥

धर्म को सेतु कहे धर्म अपार समुद्र है ताको पारजाइबो दुर्घट है ताके सेतु हैं सहजही पार करिदेत भाव सत्य शौच तप दानादि को फल शरणागत को सुलभसिद्ध होत जग मंगल के हेतु कहे जिनके नामके लेतही सब अमंगल नाश होत सुंदर मंगल उत्पन्न होत औ भूमिको

भार हरिबेको नरको ऐसो रूप ह्वै लोक में अवतीर्ण भयो ताके गुण कहत नीति यथा साम दाम दंड बिभेद वा धीर्य्य संतोष बिचार नम्रतादि प्रीति यथा ॥ प्रणयप्रेम आशक्तिपुनि लग्नलागअनुराग । नेहसहितसबप्रीतिके जानबअंगबिभाग ॥ यथा हम तुम एकही यह प्रणय है याकी सौम्य दृष्टि आशक्त होना आशक्ती है याकी एक-टक दृष्टिस देाऊ अहंकार की बिषय है प्रीति उमंगि नेत्र कंठ भरि आवै सो प्रेम है याकी बिह्वल दृष्टि है क्षण प्रति सुमिरण होना यह लग्न है याकी उत्कण्ठा दृष्टि है ये प्रमलग्न दोऊ मनकी बिषय है चितकी चाह सो लाग है याको चोपदृष्टि है जा रंग में चित रँगा रहै सो अनुराग है याकी मत्त दृष्टि है ये लाग अनुराग दोऊ चित्तकी बिषय हैं मिलनि बोलनि में आनंद सो नेह है याकी ललित दृष्टि है चिक्कनता शोभा सहित सर्बांग व्यव-हार सो प्रीति याकी आधीनदृष्टि है यह नेह प्रीतिबुद्धि की बिषयहै इत्यादि बुध्यादिकी बिषयअनुकूलह्वै जेहिरस को अत्यंत भोगी ह्वै सर्वांग परिपूर्ण ह्वै जाइ ताको प्री-तिकही औ प्रतीति कही बिश्वास सो नीति औ प्रतीति पालिबेकी चालि कहे स्वभाव है प्रभुको औ लोक वेदको मान कहे मर्य्यादा राखिबेको पन है श्री रघुनाथजी को तामें बानरजो सुग्रीव औ बिभीषणकी ओरको कनावड़ो है भाव ऐसा कुछुहार है किजिनके अवगुण जन्मपर्यंतनहीं देखे सोप्रसंग सुनि अनुचर जो मैंताको अंगक्रोधसों जरत भाव जैसी कृपा उनपै तैसीमोपर क्योंनढोंताते जोआपनी रीति राखि कै जैसी ह्वै सकै तैसी कीजिये मैं बलि जाउं हे श्रीरघुनाथ जी तुलसी तिहारोई गुलाम है जो न दया होइ तौ वा आपने घरको लौटि जाउं जहां को गुलाम हौं जो दया होइ तो वही घर को जाउं जहां सुग्रीव बिभीषण गये भाव दया करौ तौ अबहीं पार करौ नहीं गुलाम आपु के द्वार परो है कबहूं तौ सुधि लेबै करिहौ

यथा ॥ कौनकुजन्मअवधबसजोई । रामप्रायणसोपरि होई ११६ ॥

नाममहाराजकेनिबाहीनीकीकीजैउरसबहीसोहात मैनलोगनिसोहातहौं । कीजैरामबारयहिमोरीओरचख-कोरताहिलगिरंकज्योंसनेहकोललातहौं। तुलसीबिलो-किकलिकालकीकरालताकृपालकोस्वभावसमुझतसकु-चातहौं । लोकएकभांतिकोत्रिलोकनाथलोकबशआपनो नशोचस्वामीशोचहीसुखातहौं ११७ ॥

महाराज श्रीरघुनाथजी के नामकी निबाही जो कुछ कीजै सो नीकी बात कीजै कैसी जो सबही उर सोहात भाव मैंतौ भलाई करत हौं कि जामें सबके उर में नीक लागै परंतु लोगन को मैं नहीं सोहात हौं अर्थात् मेरी सब निंदै करते हैं हे श्रीरघुनाथजी यही बार मेरी ओर चख कहे नैन कोर सों सनेह सहित कीजे भाव दयादृष्टि हेरिये ताही लागि रंकज्यों जैसे दरिद्री द्रव्य हेतु तैसे रंक सम मैं दयादृष्टि को ललचात हौं काहे ते जो सुगम काम को कुसाइति में प्रारंभ कीजै तौ बिना बिघ्न लागे न रहै तहां कुसाइतिन को शिरताज कलिकाल है जो ऐसा पाप में लिप्त राखत जाते शुभ काम सिद्ध होतही नहीं ऐसो करालता बिलोकि तामें श्रीरघुनाथ जी को कृपाल सुभाव समझत गोसाईं जी कहत कि मैं सकुचात हौं कि कलियुग के प्रभाव ते लोक एक भांति कोहै पाप मयीसो चि कहे तीनिके बशहै अर्थात् काल कर्म सुभावके औ लोकनाथ जो श्रीरघुनाथ जी हैं ते लोक के बश हैं ताते आपने बने बिगारे का शोच मोको नहीं है स्वामी के शोचही करिकै सूखत जात हौं कि कलियुग प्रेरित कुमार्गी लोकके बश हैं तौ कृपालता क्यों करैंगे तौ कैसे जीवन को उद्धार होइगो यह शोच है ११७ ॥

तौलौंलोभलोलुपललातलालचीलवारबारबारलाल चधरणिधनधामको । तबलौंबियोगरोगशोगभोगयातना केयुगसमलागतजीवनयामयामको । तौलौंदुखदारिद दहतअतिनिततनतुलसीहैकिंकरबिमोहकोहकामको । सबदुखआपनेनिरापनेसकलसुखजौलों जनभयोनबजा-इराजारामको ११८ ॥

तौलों धरणि धन धाम के लालच ते लालची लवार कहे झूठा बनि लोभ बश ते लोलुप कहे लंपट ह्वै बारबार ललात कहे ललचात फिरत पावत कुछुनहीं तबलौंबियोग कहे प्रियजन को बिछोह रोग कहे उदर बाई खांसी आदि शोग कहे राज द्रव्य पुत्रादि नाश होना तेहिको भोग यातना कहे पीड़ा में जीवनजन्म के यामयाम कहे एकैक पहर युग सम लागत गोसाईंजी कहत कि जबलौं तू कामक्रोध मोहको किंकर बनो है तौलौं दुख दारिद्र तेरे तनको अत्यंत दाहत हैं औ जगमें यावत दुख हैं तेसब आपने कहे अपनाको प्राप्तहैं औ यावत सुखहैं ते निराप-नेकहे बिराने हैं वे नहीं प्राप्त हैं इत्यादि सब दुख तबलौं है जब लौं डंका बजाय कै श्री रघुनाथ जी को दास न भयो ११८ ॥

तबलौंमलीनहीनदीनसुखसपनेनजहांतहांदुखीजन भाजनकलेशको । तबलौंउबैनेपायफिरतपेटौखलायबांये मुखसहतपराभवदेशदेशको । तबलौंदयावनोदुसहदुख दारिदकोसाथरीकोसोइबो ओढ़िबोझूनेखेशको । जबलौं नभजैजीहजानकीजीवनराम राजनकोराजासोतौसाहब महेशको ११९ ॥

तबलौं मलीन कहे अपावन है हीन कहे नीच है दीन कहे दुखित है जागतकी को कहै सपने में सुख नहीं सपन भी दुखदाई देखतहैं काहते वे जन क्लेश के भाजन हैं जहां जाइं तहांई दुखी रहैं तौलौंउवैने कहे निरादर पाये पेट खलाये मुंह बाये देश देश को पराभव कहे अपमान सहत फिरत हैं तबलौं दुसह कहे जो सहा न जाइ ऐसे दुखदारिद्र को दयावनो कहे दया को पात्र ह्वै रहोहै भाव दुख दारिद्र दयाकरि वाही में बास किहे हैं ताते घास फूस की साथरी पै सोइबो औ भूने भांभरे खेस को ओढ़नो इत्यादि दुख तब तक है जब तक जीह जानकीजीवन को नहीं भजत हैं कैसेहैं श्रीरघुनाथजी जो राजन को राजा सोतौ महेशङ्क को साहब है तहां महेश देवन में हरिभक्तन में योगिन में अग्रणीय हैं तिनको साहब कही सर्वोपरि श्रीरामरूप सूचित करे ११९ ॥

ईशनकेईशमहाराजनकेमहाराजदेवनकेदेवदेवप्राणहूंकैप्राणहौ । कालहूकेकालमहाभूतनकेमहाभूतकर्महूके कर्मनिदानहुकेनिदानहौ । निगमकोअगमसुगमतुलसी हूसेकोयेतेमानशीलसिंधुकरुणानिधानहौ । महिमाअपार काहूबोलकोनवारापार बड़ीसाहिबीमेंनाथ बड़ेसावधान हौ १२० ॥

ईश कहे ब्रह्मा विष्णु महेश तिनहूं के ईश कहे स्वामी हैं ईशता देनहारे हैं यथा ॥ हरिहिहरिता बिधिहिबिधिता शिवहिशिवता जेहिंदई ॥ सो जानकीपति प्रमाण वशिष्ठसंहितायां ॥ जयमत्स्याद्यसंख्याव तारोद्भवकारण। ब्रह्माविष्णुमहेशादिसंसेव्यचरणांबुज ॥ स्कंधपुराणे ॥ ब्रह्मा विष्णुमहेशाद्यायस्यांशेलोकसाधका।तस्मादिदेवंश्रीरामं विशुद्धंपरमंभजे ॥ अरु महाराज कहे जगरक्षक यावत्

अवतार हैं तिनके महाराज कहे अवतार शिरोमणि हैं यथा भरद्वाजसंहितायां ॥ अवतारावहव:संति कलाञ्चां-शाविभूतय: । रामएवपरब्रह्मसच्चिदानंदमव्ययं ॥ देव कहे चतुर्व्यूह नारायणादि रूपन के देव कहे पूजित हैं यथा सदाशिवसंहितायां॥महाशंभुर्महामाया महाविष्णुश्चशक्त य: । कालेनसमनुप्राप्ता राघवं परिचिंतयेत् ॥ प्राण कहे यान अपान उदान समान व्यान तिनहूं के प्रान कहे प्र-काशकहौ काल कहे पल दंड दिन मास वर्ष युगादि तिन हूं के काल कहे करनहारहौ महा भूत कहे पृथिवी जल अग्नि पवन तिन के महा भूत कहे उपजावन हार हौ कर्म शुभा शुभ क्रिया फल दुख सुख ताहू के कर्म कहे भ-ले को बुरा बुरे को भला करनहारे निदान कहे कारण यथा गुण सुभाव माया ईश्वर तिन के निदान प्रेरक हौ निगम कहे वेद तिन को अगम हौ येतो बड़ो मान कहे महत्व पाइकै तेई श्री रघुनाथजी तुलसी ऐसेनको सुलभ हैं तौ करुणानिधान शील समुद्र हौ काहे ते आपुकी महिमा अपार है जो वेद पुराण संहितादि में देव मुनि कवीश्वर आदिन के काहू के बालको शक्ति नहीं है जो वारापार पाइ सकै इतनी बड़ी साहिबी पाइ कै जो दीनन पर दया दृष्टि राखत हौ तौ हे नाथ बड़े साव-धान हौ १२० ॥

आरतपालकृपालजोरामजेहीसुमिरेतेहिकोतहंठाढ़े। नामप्रतापमहामहिमाअँकरेकियेखोटेउक्कोटेउबाढ़े। सेव-कएकतएकअनेकभयेतुलसीतिहुंतापनडाढ़े। प्रेमबड़ोप्रह-लादहिकोजिनपाहनतपरमेश्वरकाढ़े १२१ ॥

आरत कहे दुखी जनन को पालन कहे उबारिबे में श्री रघुनाथ जी कृपाल हैं कृपा काको कही सब जीवनके

रक्षक हमहीं हैं यह कृपा गुण के स्थानहैं काहे ते गजादि आरत ह्वै जो जहांई सुमिरे ताको तहांई ठाढ़ मिले बिलंब नहीं करे औ श्रीरघुनाथ जी के नाम की महा महिमा है कि जाके प्रताप ते यमन अजामील जे खोटेऊ जन रहैं तिनहूं अंकरे कहे खरे ह्वै गये औ बाल्मीकादि जे छोटे जीव रहैं ते बाढ़े कहे महामुनि ब्रह्म तुल्य भये गोसाईं जी कहत कि उत्तम मध्यम एक ते एक सेवक होत गये अंबरीषादि तिन सबन की प्रभु ऐसी रक्षा करे कि दैहिक दैविक भौतिकादि तिनापन में कोऊ नहीं डाढ़े कहे जरे सब को प्रभु बचाये तिन सबन सों बड़ो प्रेम प्रह्लाद जीको है जिन पाहन के खंभा सों परमेश्वर श्री नृसिंहजी को प्रगट करि लिये याही ते भागवतन में अग्रणीय हैं १२१ ॥

काढ़िकृपानकृपानकहूंपितुकालकरालविलोकिनभागे। रामकहांसबठांउहैखंभमेंहासुनिहांकनृकेहरिजागे। बैरीविदारिभयेविकरालकहेप्रहलादहिकेअनुरागे। प्रीति प्रतीतिबढ़ीतुलसीतबतेसबपाहनपूजनलागे १२२ ॥

पुत्र पै पिताकी कृपा होत यथा लालन पालन हितोपदेश पुनः परुष बचन दंड देतहू में कृपा रहत इत्यादि कृपा कहूंनहोंताते पिता हिरण्यकश्यप काल सम कराल जो मृत्युरूप ह्वै कृपाण जोतरवारि काढ़ि ठाढ़ भयोताको देखि प्रह्लाद जी नहीं भागे भाव डरते मनु सुरा नहीं जब हिरण्यकश्यप बोल्योकि तेरा राम कहांहै प्रह्लाद बोल्यौ मोमें तोमें खड्ग खंभमें सब ठावहै हिरण्यकश्यप बोल्यौ क्या खंभा में है प्रह्लाद कह्यौ हांऐसी हांक सुनतेही नृकेहरि कहे नृसिंह जी जागे कहे प्रगट ह्वै गजि कै बैरी भक्तद्रोही हिरण्यकश्यप को उदर बिदारि कहे पेट फारि मारिडारयौ तेहि क्रोध ते बिशेष कराल भयो जो

रूप देखि भयते कोऊ देवता स्तुति न करि सक्यौ तब सब के पठाये प्रह्लादजी जाइ कहे कि महाराज शान्तहोउ तब क्रोध तजि प्रह्लाद पै अनुराग करि शान्त भये यह हाल देखि सुनि प्रतीति आई तब प्रीति भई तबते लोग सब प्रकारके पाहन कहे पत्थर पूजन लगे सब प्रकार पाहन कहबेको यह भाव कि पाँच प्रकारते पाषाण पूजबेकी बेद की आज्ञा है एक स्वयंव्यक्त यथा श्रीरंगंब्यंकटाद्रि द्वितीय देवतनकी प्रतिष्ठा कीन्हे यथा जगन्नाथ रामेश्वर तृतीय सिद्धन की प्रतिष्ठा कीन्हे यथा पन्हरीनाथ बाला जी चतुर्थ मनुष्यनके स्थापितकीन्हे जो गाँवनमें घरमें हरि मन्दिरहैं पंचम स्वयं प्रतिष्ठित शालिग्राम शिला यथार्थ पंचके ॥ श्रीरंगब्यंकटेसाद्या स्वयंव्यक्तास्समीरिताः। दिव्यं-देवप्रतिष्ठानात् सैद्धंसिद्धैस्तुपूजितं ॥ मानुषैःस्थापितंतत्तुग्रामग्रहभिदाद्विधाः । अर्चावतारःसुलभः पद्माकरजलंयथा ॥ अर्चावतारइत्येवं कथितोमयथामति ॥ इत्यादि पंच प्रकार तौ वेदाज्ञा है जबते नृसिंह जी उत्पन्न भये तबते सब पाषाणको देवसम लोग मानतेहैं पाँव स्पर्शादि को परहेज राखत १२२ ॥

अंतर्य्यामिहुतेबडबाहेरजामिहैंरामजेनामलियेते । धावतधेनुपन्हाइलवाइज्योंबालकबोलनिकानकियेते । आपनिबूझिकहैतुलसीकहिबेकीनबावरिबातवियेते । पैजपरे प्रहलादहुकोप्रगटेप्रभुपाहनतेनहिंयेते १२३ ॥

अंतर्य्यामी तें बाहेर जामी रूप बड़ोहै भाव निर्गुण रूपते बड़ोहै सगुण रूप श्रीरघुनाथ जी काहे ते जे श्रीराम नाम लेतही आरत जनपै रक्षा हेतु प्रभु कैसे धावत यथा बालक कहे लघु दिनको बच्छरू को बोल कानेमें परतही लवाई कहे थोरे दिनकी ब्याई धेनुकहे गऊ पन्हाइ कहे

धनमें दूध स्रवत ऊँकारि धावत तैसे प्रभु भक्तन हेतु धावत यथा भरद्वाजस्तोत्रे॥ रामरामेतिरामेतिवदंतंविकलं भवान्। यमदूतैरनाक्रांतं वत्संगौरिवधावत॥ गोसाईं जी कहत कि मैं अपनी बूझि कहे समुझते कहत हौं बिये कहे दूसरे ते कहिबे की बातनहीं है क्योंकि बावरी बात बावरे कीसी कही शब्द वर्ण रहित संज्ञा साचते समुझबे योग्य है कौन बातसों कहत पैज कहे प्रतिज्ञाको अवसर परे पर प्रह्लादजू को जिनके बचनमें प्रसिद्ध निर्गुण रूपको बोध होतयथा महिंमा त्वहिंमादि ते निर्गुण होत औ प्रतिष्ठित पाषाणादि ते सगुण रूप बोध होत तहां प्रह्लादजूके कहे ते प्रभु पाइनहीं ते प्रगट भये भाव सगुणहीं रूप सहायक भये नहिं येते अर्थात् आपने भक्तजू को सहाय करिबे को हियेते न प्रगट सहाय करिसके यातें निर्गुण ते सगुण रूप बड़ोहै ताको प्रयोजन यह कि अर्चा अवतार सौभाविक जीवनके कल्याण हेतु प्रगट भये हैं यातें प्रतिमादि अर्चा परम धर्महै १२३॥

बालकबोलिदियेबलिकालकोकायरकोटिकुचालचलाई। पापीहैबापबड़ेपरितापतेआपनीओरतेखोरिनलाई। भूरिदईविषमूरिभईप्रहलादसुधाईसुधाकीमलाई। रामकृपातुलसीजनकोजगहोतभलेकोभलोईभलाई १२४॥

बालक प्रह्लादजी तिनको बोलाइ कै हिरण्यकश्यप ने काल को बलिदान दियो कौन भांति अग्नि में जराये जल में बोरयो पहाड़ ते डारि दिये हाथी सर्पादि अनेक कुचालै कायर ने चलाई कायर कादर कहबे को यह भाव कि इस प्रकार जीव मारना कादरही को काम है ऐसा पापी बाप है जो बड़े परिताप कहे दुःख देबे प्रह्लाद के आपनी ओरते खोरि नहीं लाई भाव उठाय नहीं राखी बिष मूरि हालाहलादि भूरि कहे बहुत पियाइ दई सोई

प्रह्लाद की सुधाई ते सुधा की मलाई कहे अमृत को सारांश भयो भाव अमृत पियतते काल पाइ नाशहात प्रह्लाद को नाश कबहूं न होइगो याही भांति औरनहूं को गोसाईंजी कहत कि जे भली भांति रघुनाथजी में मन लगाये ऐसे जे भले जन हैं तिनको जग में भली भांति कहे मर्याद सहित भलाई होत जे बुराई करत तिनहीं को बुरा होइ जात यथा अम्बरीष दुर्वासा को हाल प्रसिद्ध है १२४ ॥

कंसकरीब्रजबासिनपैकरतूतिकुभांतिचलीनचलाई । पाण्डुकेपूतसपूतकपूतसुयोधनभोकलिछोटोछलाई । कान्हकृपालबड़ेनतपालगयेखलखेचरखीसखलाई। ठीकप्रतीतिकहैतुलसीजगहोइभलेकोभलोईभलाई १२५ ॥

कुभांति कहे कुरीति की करतूति कहे करणी भाव अनीति ब्रजबासिन पै कंसने करी परंतु जो चलाई सो चली नहीं सब बिघ्न श्रीकृष्णचंद्र निवारण किये पीछे कंसहूको मारे तैसे पाण्डु के पूत कहे धर्मात्मा हरिभक्त युधिष्ठिर अर्जुनादि तिन पै कुभांति करतूति कहे मर्याद बिगारिबेवाली करणी कपूत सुयोधननेकरी जो छलाई कहे छल विद्या में छोटा दूसरा कलिकाल भयो ताहू की चलाई न चली काहे ते नत कहे शरणागत के पालनहार कान्ह बड़े कृपाल हैं तिनकी कृपा ते खल खेचर कहे दुष्ट खेचर खलाई कहे आपनी दुष्टताई ते खीस कहे नाश ह्वै गये इत्यादि समुझि ठीक प्रतीति कहे आपने मन को बिश्वास तुलसी कहत हैं कि भले हरि दासन को जग में भलीभांति ते भलाई होतहै १२५ ॥

अवनीशअनेकभयेअवनीजिनकेडरतेसुरशोचसुखाहीं। मानवदानवदेवसतावनरावणघाटिरच्योजगमाहीं । ते

मिलयेधरिधूरिसुयोधनजेचलतेवहुछत्रकिछाहीं। वेदपुराणकहेजगजानगुमानगोविंदहिभावतनाहीं १२६॥

अवनीश कहे राजा अवनी कहे भूमि पै अनेकन हिरण्यकश्यपादि भये जिनके डर के शोचते देवता सूखत रहे तिनहूं को प्रभु मिटाय दये मानव कहे मनुष्य दानव दैत्य देवतादिनको सतावनहार रावणने जगमें घाटि रची घाटि कहे देवादिकन्यन को बरबश विवाह करिलियो यथा॥ देवयक्षगंधर्वनरकिन्नरनागकुमारि। जीति बरीनिजबाहु बलबहुसुंदरबरनारि॥ ऐसेहू रावण को प्रभु नाश किये औदुर्योधन जो बहुते छत्रन की छाहींमें चलत रहे अर्थात् अनेकन छत्रधारी राजा सेवा हेतु संग रहतरहे तिनहूंको प्रभु धूरि में मिलाय दिये इत्यादि तीनि युग को हाल वेद पुराण कहत हैं वर्त्तमान में देखि जग में सब जानत है कि गुमान अहंकार गोविंद को नहीं भावत ताते गुमान करनहार नहीं रहत शीघ्रही जातहै १२६॥

जबनैननप्रीतिठईठगश्यामसोस्यानीसखीहठिहोवरजी। नहिंजानोवियोगसुरोगहैआगेझुकीतबहौंतेहिसोतरजी। अबदेहभईपटनेहकेघालेसोब्यौंतकरेविरहादरजी। ब्रजराजकुमारबिनासुनुभृङ्गअनंगभयोजियकोगरजी १२७॥

गोसाईंजी अनन्य रामोपासक इहां ब्रजनाथ चरित कहबे को का प्रयोजन है कवि स्वभाव नेम रहित होत व प्रीति बंचकता कहि स्वदृष्ट में प्रीतिपालकता दृढ़ करे जा समय में उद्धवजी योग उपदेश हेतु ब्रज को आये ता समय एकभ्रमर राधिकाजी के समीप आयो सो उद्धवको सुनाय भ्रमर सों कहती हैं कि जा समय हमारे नयनन

ने ठग श्याम सों प्रीति ठई कहे ठानी ता समय हमारी सयानी सखीने हठ करके हम को बरज्यो कि प्रीति न करो पीछे दुखदाई होइगी तब हम नहींजानत रहीं कि बियोग करिकै सोई प्रीति पीछे रोग होइगी तब न समुझते हम तेहि सखी सों तर्जी कहे भिक्षकारि कै भुकी कहे सक्राधित भई सोई नेह के घाले कहो प्रीति मिलाये ते देह पट सम भई ताको बिरह रूप दरजी ब्यौंतकरतहै देह को टूकटूक करत है हेभृंग हमारे बचन सुन ब्रजराज कुमार श्रीकृष्ण बिना अनंग जो कामदेव सोई हमारे जीव लेने को गरजी भयो अब प्राण लेन चाहत है १२७ ॥

योगकथापठईब्रजकोसबसोशठचेरीकीचालचलाकी। ऊधौजूकौनकहैकुबरीजोबरीनटनागरहेरिहलाकी । जाहिलगैपरिजानैसोई तुलसीसोसुहागिनिनंदललाकी । जानीहै जानपनीहरिकी अबबांधियैगीकछु मोटिकला की १२८ ॥

ब्रजराज ने जो ब्रजको योग की कथा कहाय पठाई है सो सब शठ चेरी कूबरीकी चलाँकी की चालहै हे उद्धवजी कूबरी को कौन कहै कि तू शठ है काहे ते शठ है जो नटनागर छलाकी को हेरिकै बरो भाव नट छली होत तिन में नागर कहे चतुर तौ महाछली है औ छलाकी कहे है लाका करनेवाले निर्दयी छली को हेरिकै बरी ताते महाशठ है परि कहे परंतु जाके चोटलागत सोई जानत है सो कुबरी तौ नंदलाल की सुहागिनिहै सुहागिनि बियोगिनिको दुखका जानै अब हमहूं हरिकी जानपनी कहे ज्ञानमानी जानि लई कि कूबर पर राजी होत हैं तो कौन उकलाकी रचित कीन्ही काहू चीज की मोटि कहे पोटरी पीठि पर बाँधैगी भाव काहू युक्ति सों कूबर बनावेंगी जामें हमहूं सों राजी होइं १२८ ॥

पठयोहैछपदछवीलेकान्हकेहूकहूं खोजिकैखवासखा सोकूबरीसीवालको । ज्ञानकोगढ़ैयाबिनुगिराकोपढ़ैया बारखालकोकढैयासोबढैयाउरशालको । प्रीतिकोवधिक रसरीतिकोअधिकनीतिनिपुणविवेकहैनिदेशदेशकालको। तुलसीकहेनबनैसहेहीबनेगीसब योगभयोयोगकोबियोग नंदलालको १२६ ॥

भ्रमर के बहाने ऊधो जीको कहत यामें व्याज निंदाहै सखिन की उक्ति कहतीहै कि छवीले कान्हने केहू भांति कहूं ते खोज करिकै छपद पठायो है भाव चारि पांवको पशू कहावत भ्रमर के तौ छः पांव हैं ताते महापशु काहू की दर्द का जानै पुनः सखी कहत कि भ्रमर नहीं है यह कूबरी ऐसी बाल को खासो खवास है भाव जैसे वह कुटिल कुद्रूप है तैसे यहौ निदर्दी कुरूप है याते ज्ञान को गढ़न हारो है भाव निर्दयी झूंठही ज्ञान की बातें बनाय कै मुख ते कहत है बिन गिराको बिन बिद्या को पढ़ैया मूर्ख कपठोरी करत है पुनः बारखाल को कढ़ैया निर्दयी नाऊ बारन के साथ खाल काढ़ि लेतहै पुनः बचन रूप बरमा ते उरमें छिद्र करिबे को बढ़ई है प्रीति रूप पक्षी पकरिबे को बधिकहै काहे करिकै नीतिके फंदनते प्रीति खतंच नहीं रहत औ रस रीति नाश करिबे को बधिक ते अधिक कहे व्याधा समहै जो तुरतहो जीव को मारि डारत तहां रसरीतिकहे शृंगार संयोगआलंबन उद्दीपन हाव भावादि को नाश करत काकरिकै विवेक में निपुण हैं बिबेक ते रस रीति नाश होतहै तब पाछे संतोष करि कहत कि जैसो देश है जैसो काल काहे समयहै तैसे निदेश काहे उपदेश देनहारो ठीक हैं भाव हमारो समय ऐसे ही कहन लायक है ताते भ्रमर जो हमको उपदेश देत है तासों उत्तर की बात काहे नहीं बनत है याको कहिबो

सहिलेने सों बनत है काहे ते अष्टांगादि योग हम स्त्रीन को अयोग्य रहै ताको योग कहे संयोग भयो भाव यदुनाथ की आज्ञा है कि याग करौ औ जो हमारी योग्य रहै नंदलाल को सदा संयोग तिन नंदलाल को बियोग भयो याते समय अनुकूल भ्रमर कहतहै १२९॥

हनूमानह्वैकृपाललाड़िलेलषणलालभावतेभरतकी जैसेवकसुहायजू। बिनतीकरतदीनदूबरोदयावनोसोबिगरेतआपहीसुधारिलीजेभायजू। मेरीसाहिबिनीसदाशीशपरविलसतदेविक्योंनदासकोदेखाइयतपायजू। खीझ हूमेंरीझबेकोबाणिरामरीझतहैंरीझेह्वैहैं रामकीदुहाईरघुरायजू १३० ॥

हे हनुमान् जी हेलाड़िले अलबेले लषण लाल भरत भावते कहे हे शत्रुहन जी हे भरत जी सब जने कृपाल ह्वै कै सेवककी सहायकीजै का कीजै दूबरो दीनजन तुलसी दयावनो कहे दया करिबे योग्य बिनती करत है तामें जो बिगारे भाव होइ तिनको आपही सुधारिलीजै मेरी साहिबिनी हे श्रीजानकी जी श्रीरघुनाथजी प्रेमी व्रत नायक हैं ताते प्रीति भाव ते तुम श्रीरघुनाथ जी के शीश पर बिलसत हौ भाव जीवन धन हौ यथा अगस्त्य संहितामें श्रीमुख बचन शिवजीसे कहे॥ आल्हादिनींपरां शक्तिंस्तूयाःसात्वतसंमतां। तदाराध्यस्तदारामस्तदाधीनस्तयाबिना ॥ तिष्ठामिनत्वणंशंभोजीवनंपरमंमम ॥ हे देवि दास को क्यों नहींपाय देखाइयतहौ भावजो आपु कृपा करि दरश देहौं तौ श्रीरघुनाथ जी आपही प्रसन्न ह्वै दरश देइंगे कदाचित्कहौ कि श्रीरघुनाथ जी न प्रसन्न ह्वै हैं ताको कहत कि उनको तौ रीझिबेको सुभाव ही है ताते खीझतहू में श्री रघुनाथ जी रीझत हैं भाव

आपै क्रोध करि मारतहू हैं ताको उत्तममति देत ताते श्रीरघुनाथ जीकी दुहाई है आपु संदेह न करौ श्रीरघुराय जू रीझे ह्वैहैं अथवा जाको मैं दास कहावत हौं सो मेरी साहिबिनी श्रीतुलसी जी जो प्रभु के शीशपर सदा बिलसत हे देबि आपु दास को पांव क्यों नहीं देखाइबत पुनः पूर्ववत् १३० ॥

बेषबिरागकोरागभरोमनमायकहौंसतिभावहौंतोसों।
तेरेहीनाथकोनामलैबेचिहौं पातकीपामरप्राणनिपोसों ।
येतेबड़ेअपराधीअघीकहतैंकहुअंबकीमेरोतुमोसों । स्वारथकोपरमारथकोपरिपूरणभोफिरिघाटिनहोसों १३१ ॥

माता सों बालक निर्छल रहत याते गोसाईंजी कहत हे माय श्री जानकी जी मैं तोसों सतिभाय ते कहत हौं कि बैरागको तौ ऊपरते बेष मृगचर्म कमंडलादि धारण धातु पाचबसन रहित त्यागी बनोहौं औ मनमें रागभरो है भाव धरणि धन धाम में प्रीति किहे हौं काहेते तेरेही नाथ को अर्थात् श्री जानकीनाथ को नाम लै बेचि कहे द्रव्य हेतु नाम लैकै पुजायकै हौं कहे मैं जोपातकी पामर कहे मूढ़ सो प्राणन को पोसों कहे पालत हौं तहां पेट हेतु स्वामी को नाम लेनो यह बड़ो अपराध है ताको करने वाला इतनो बड़ो अपराधी ताते अघी हौं अर्थात् श्रीरघुनाथ जी को कसूरवंद हौं ताभय ते तेरी शरणहौं ताते हे अंब अब मोसों तैं कछु मोको किं तैं मेरो है भाव मोको आपनो किंकर करि लीजै तो स्वारथ परमारथ कहे लोकहूपरलोकको निबाह सबपूरण होइगो फिरि घाटि न होइगो भाव श्री रघुनाथ जी कछु कम न करि सकैंगे १३१ ॥

जहांवालमीकभयेब्याधतेमुनीद्रसाधुमरामराजपेशि षसुनिऋषिसातकी। सीयकोनिवासलवकुशकोजनमथल

तुलसीछुवतछांहतापगरैगातकी। विटपमहीपसुरसरित समीपसोहैसीतावटपेखतपुनीतहोतपातकी। वारिपुरदिगपुरबीचविलसतिभूमि अंकितजोजानकीचरणजलजात की १३२॥

बाल्मीकि आश्रम के चरित्र सूक्ष्म प्रताप माच कहते हैं जहां जेहि भूमिमें सप्त ऋषिन को सिखावन सुनि यथा बाल्मीकि प्रचेता के पुत्र हैं ठगनकी संगति ते जीव हिंसा की वृत्तिह्वै गई काहू समय सप्तऋषिन को मारने पर आरूढ़ भये सप्तऋषि पूछे कि घरवालेन ते पूछौ कि हमारे पापमें शामिल हौ सो पूछे परकोऊ न शामिल भयो तब बाल्मीकि पूंछे कि मेरा उद्धार बताओ सप्तऋषि बोले कि राम नाम जपौ बाल्मीकि कहे कि मोसों नहीं बनैगो तब कहे कि मरा मरा जपौ प्रयोजन यह कि रकार राम रूप परब्रह्म है मकार जीवरूप है मध्यकी अकार दोऊको संबंध करावनहारीहै श्रीरामानुज मंजार्थेयथा॥ रकारार्थो रामःसगुणपरमैश्वर्यजलधिर्मकरार्थोजीवःसकलविधकैंकर्य निपुणः॥ तयोर्मध्याकारोयुगुलमथसम्बन्धमनयो रनन्या र्हंब्रूतेचिनिगमसुसारोयमतुलः॥ ताते प्रथम मकार उपदेश करि जीव स्वरूपाज्ञान कराये पीछे ईश्वर रूप रकार को ज्ञान कराये याते मरा मरा कहे उलटा नाम जपि कै व्याधा ते मुनीन्द्र बाल्मीकि मुनिन में श्रेष्ठ साधु हरिभक्त भये कौन भूमिमें जहां श्री जानकी जी को निवास औ लवकुश को जन्मस्थल है गोसाईंजी कहत कि इक्षवाकु को राजा सुरसरि ते जो गंगा जी ताके समीप कहे किनारे पर सोहत है श्रीसीतावट करि प्रसिद्ध है जाके पेखत कहे दर्शमात्र ते पातकीजन पुनीत होत औ जाकी छाहके छुवतही दैहिक दैविक भौतिकादि तापै गात की गरत कहे मिटि जात हैं सो भूमि श्री जानकी जी के

चरण कमलन सों अंकित सो बारि पुर दिगपुर के बीचमें बिलसत है काशी प्रयाग के बीच गंगाजीके किनारे सीता-मढ़ी करिकै प्रसिद्ध है १३२ ॥

मरकतबरनपरनफलमानिकसे लसैंजटाजूटजनुरूख वेषहरुहै । सुषमाकोढेरुकैधौंसुकृतसुमेरुकैधौंसंपदासक लमुदमंगलकोघरुहै । देतअभिमतजाससमेतप्रीतिसेइयेप्र तीतिमानितुलसीबिचारिकाकोघरुहै । सुरसरिनिकटसो हावनीअवनिसोहैंरामरमणीकोवटकलिकामतरुहै १३३।

अब वटवृक्ष की शोभा अरु माहात्म्य कहत मर्कत मणिवत् हरित वर्ण के चोकने चमकदार पर्ण कहे पत्र हैं औ माणिक जो लालमणि तैसे सुंदर फल हैं लसैं जटाजूट कहे बरोहैं विराजमान मानों रूख वृक्ष बेष धरें हर कहे महादेव हैं किधौं सुषमा कहे शोभा को ढेर है तहां शोभाके नव अंगहैं यथा द्युति लावण्य स्वरूप सोई सुंदर-ता रमणीय क्रांति मधुर मृदुता बहुरि सुकुमारता गनीय तहां हरित नवीने दलनमें चंद्रसी ज्योति सोद्युति है बरो-हकी फुनगी में मोतीकैसो पानी झलक सो लावण्यता है सौभाविक भूषितसों देखात सो स्वरूपता है सर्वांग सुठौर बनो सो सुंदरता है देखतहू अनदेखी सी शोभा सो रम-णीकता है लालन बदलनमें सोनेकी सी ज्योति सों कांति है जाके देखतमें तृप्त न होइ सो माधुरी है अरुण दलन में मृदुता है बरोह फुनगी में सुकुमारता है इत्यादि शोभा के स. ढेरहैं अब माहात्म कहत किधौं सुद्धत रूप सोने को पर्वत है किधौं धरणि धन धाम भूषण बसन वाहनादि सब प्रकार की संपदा औ मुद कहे मानसी आनंद मंगलकहे प्रसिद्ध उत्सवादि को घरु है पुनः यह वटवृक्ष का को घरु है तहां नित्य तौ शंकर को नैमित्य यौ जानकीजी

को ऐसा बिचारि गोसाईंजी कहत कि जो प्रतीतिमानि प्रीति समेत सेइये तौ अभिमत कहे बांछित फल देत हैं गंगाजीके निकट सोहावनीभूमिमें रामरमणी श्रीजानकी जीको बटवृक्ष कलियुग में कल्पवृक्ष है १३३॥

देवधुनीपासमुनिबासश्रीनिवासजहां प्राकृतहूबटवूट बसतपुरारिहैं। योगजपयागकोविरागकोपुनीतपीठिरा गिनपैसीठिदीठिबाहरीनिहारिहैं। आयसुआदेशबाबूभ लोभलोभावसिद्धि तुलसीविचारियोगीकहतपुकारिहैं। रामभगतनकोतौकामतरुतेअधिक सियवटसेयेकरतलफ लचारिहैं १३४॥

एकतौ प्राकृतहू बटके बूट कहे वृक्ष में पुरारि जो महादेवजी ते सौभाविक बसते हैं दूसरे देवधुनी श्री गंगाजी के पास तीसरे महामुनि श्री बाल्मीकि जीको बासस्थान चौथे श्री जानकीजीको निवास है ता भूमि वृक्षकी महिमा वेदहूको अगमहै तहां पर योग जप यज्ञ वैराग्यादि सिद्ध करिबे को पुनीत पीठ कहे पवित्रभूमिहै औ रागी कहे जिनके मनमें काम लोभ मोहादि पक्षी रूप बसे हैं तिनपै सीठि कहे कटु दृष्टि सो बहरी बाज सो निहारत है भाव मोहादि नाशक है औ सुंदरे भाव को सिद्धदायक है ऐसा माहात्म योगीजन बिचारिकै कहते हैं गोसाईंजी कहत आज्ञाको आदेश कहे पूरण करन हारे बाबू भले भले तहां बसत हैं औ श्री रघुनाथजी के भक्तन को तौ कल्प वृक्ष ते अधिक है भाव कल्पवृक्ष तीनि फलदेत औ श्रीजानकीजीको बटकी सेवा कीन्हेते चारिउ फल करतल में सुगम आवत अर्थ धर्म काम मोक्षहू वह कामार्थ धर्महीं देत १३४॥

जहांबनपावनोसुहावनेविहँगमृगदेखिअतिलागतअ-
नंदखेतखूंटसो । सीतारामलषणनिवासबासमुनिनकोसि
द्धसाधुसाधकसबैविवेकबूटसो । झरनाझरतझारशीतल
पुनीतवारिमंदाकिनिमंजुलमहेशजटाजूटसो । तुलसीजो
रामसोंसनेहसांचोचाहियेतौ सेइयैसनेहसोंविचित्रचित्रकू
टसो १३५ ॥

जहां जेहि चित्रकूट को बन पावन कहे पवित्र है काहे ते जहां श्रीराम जानकी सदा बिहार करते हैं तहां के पक्षी अरु मृगा सुहावने कहे शोभायमान हैं पुनः चित्र कैसा है जो देखत में आनंद खेतको खूंट कहे सींवमेंड़सी लागत काहेते जहां श्री सीता राम लक्ष्मण को निवास है अरु अत्रि आदि मुनिनको बास या प्रभावते अणिमा-दिक प्राप्त वाले सिद्ध शांतचित्त वाले साधु सम दमादि साधना वाले साधकादि यावत् चित्रकूट में रहत ते सबै विवेकके ऐसे बूट कहे हरित वृक्ष ज्ञान कैसे ह्वै रहे यावत् झरना झरतझार कहे सबनमें शीतल स्वादिष्ट पवित्र वारि कहे जल बहत है अरु तहां मंदाकिनी नदी जामें मंजुलकहे उज्ज्वल निर्मल जल बहतजो महेशके जटा जूट सों प्रगट है अर्थात् गंगाजी की धारा है गोसाईं जी कहत कि श्री रघुनाथ जीसों जो सांचो सनेह को चाहौ तौ मणि रचित विचित्र जो चित्रकूट है ताको सनेह सों सेइये १३५ ॥

मोहबनकलिमलपलपीनजानिजिय सायुगाइविप्रन
केभयकोनेवारिहै । दीन्हीहैरजाइरामपाइसोसहायलाल
लषणसमर्थबीरहेरिहेरिमारिहै । मंदाकिनीमंजुलकमान
असिवानजहांवारिधारधीरधरिसुकरसुधारिहै । चित्रकूट

अचलअहेरीबैठ्योघातमानोंपातककेब्रातघोरसावजसंहारिहै १३६ ॥

मोहरूपी बनमें कलिमल कहे कलियुग के पाप बाघ से पल कहे मांसते पीन नाम मोटे परेते साधुरूपी गाइ ब्राह्मण के भयदायक जानि तिनके मारिबेको श्री रघुनाथ जी रजाय दये चित्रकूट को सो आज्ञा पाई अरु लषण लाल सहाय कहे साथी भये जे समर्थ बीर हैं हेरि हेरि मारैंगे तिनके बलते चित्रकूट ने मंजुल मंदाकिनी ऐसी कमान औ जलकी धारा ऐसो बाण खकर आपने हाथन सों सँभारि धीर्य्यमान ह्वै चित्रकूट अचल अहेरी कहे शिकारी मानों घात पर बैठो है ब्रात कहे समूह पातक रूप घोर सावज व्याघ्र बाराहादिकनको संहारि है भाव रघुनाथजी की आज्ञाते पापन को शीघ्रही नाश करत है यह चित्रकूटको माहात्म कहे १३६ ॥

लागिदवारिपहारढहीलहकीकपिलंकयथाखरखोकी। चारुचुवाचहुंओरचलीलपटैंझपटैंसोतमीचरतोकी। क्यों कहिजातमहासुषमाउपमातकिताकतहैंकविकोकी। मानोंलसी तुलसी हनुमानहिये जगजीति जरायकीचौकी ॥ १३७ ॥

बसंत ऋतु में पलाशादि वृक्ष फूले सहित पहाड़ की शोभा कैसी है यथा दवारि कहे दावानल सी लागी पहाड़ ढही कहे शोभित भई अथवा कपि हनुमान्जीयथा लंकाको खर खोकी कहे फूंकिदये तेलह की कहे टघिले सोना सों चारु कहे सुंदर चुवा कहे झरना चारिहू ओर ते चलत मानों सोई सोना बहि चलो औ फूलनकी ज्योति मानों अग्नि की लपटैं हैं अरु भ्रमर उड़त वा फूलन में श्यामता है सो तोकी कहे छोटे छोटे तमीचर कहेनि-

शाचर मानों झपटि रहे हैं जरत में वा बुझावबे हेतु इत्यादि उपमाको निरादरकरत काहेते कि बनकी शोभा मंगलीक है तहां दावानल की उपमा अमंगल यह दूषण है बनकी सुषमा कहे शोभा महा अद्भुत है ता कहे ताको ताकिकै उपमा क्यों कहिजात ऐसा कबिको है कत कहे कहां है जाके ऐसी बुद्धि है गोसाईंजी कहत कि जग जीतिकी जराय कहे मणि जटित चौकी श्री रघुनाथ जी की दई हनुमान्‌जी के उरमें लसी कहे शोभित है भाव दिग्विजय को तकमा है दूहां पर्वत हनुमान्‌जी हैं फूलो बन सोई चौकी है १३७॥

देवकहैंअपनीअपनाअवलोकनतीरथराजचलोरे।देखि मिटैअपराधअगाध निमज्जतसाधुसमाजभलोरे । सोह सितासितकोमिलिबो तुलसीहुलसेहियहेरिहलोरे। मानोंहरेतृणचारुचरैं बगरेसुरधेनुकेधौलकलोरे १३८॥

अब प्रयागजी को माहात्म कहत कि अपनी अपना आपुस में देवता कहते हैं कि तीर्थराज प्रयाग को अवलोकन कहे देखन चलो काहेते जाके देखतही दर्शन मात्र ते अगाधनि जाकी थाह नहीं ऐसे अपराध मिटि जात हैं जहां भलेभले साधुनकी समाज मज्जतकहे स्नान करत है सित कहे गौर गंगा जी असित कहे श्याम यमुनाजी दोऊ धारा मिलिकै शोभित ताके हलोरे देखि तुलसी को हियेते हुलास आनंद उठत है काहे ते मानों सुरधेनु के कलोरे नवीनी धेनु धौलरंगकी समूह बगरे कहे फैले हरित तृण चरत हैं तहां गंगाजी के हलोरा कामधेनु की कलोरी हैं सो ऊपर है यमुनाजी की तरंगै हरित तृण सम तरे हैं भाव एक एक हलोरा कामधेनु है १३८॥

देवनदीकहंजोजनजान कियेमनसाकुलकोटिउधारे । देखिचलेंझगरैंसुरनारि सुरेशबनाइबिमानसंवारे। पूजा

कोसाजबिरंचिरचैं तुलसीजेमहातमजाननहारे । ओक
कीनीवपरीहरिलोक बिलोकतगंगतरंगतिहारे १३९ ॥

अब गंगाजीको प्रताप माहात्म वर्णन है देवनदी कहे श्री गंगाजी के स्नान हेतुजो जन जाने को मनोरथ किये ते अपने कुलके कोटिन जीवन को उद्धार करि दिये जब चले ताको देखि सुरनारी ताके बरिबेहेतु आपुसमें झगरा करत अरु सुरेश जो इंद्रते आपनेलोककोलावनेहेतु बनाइ कै बिमान सँवारि साजिराखे अरु चंदन फूल धूपदीपादि पूजा करिबे हेतु सब साज रचिकै ब्रह्मा धरि हाथत काहते गोसाईंजी कहत कि गंगाजी को माहात्म जानतेहैं कौन माहात्म कहत हे गंग तिहारे तरंगन के बिलोकत कहे देखतही हरि के लोकमें ओक कहे घरकी नेउ परत है भाव हरिधाम में बास पावत यह जानि वा जीवके पूजा हेतु ब्रह्मा आगे ठाढ़े रहत १३९ ॥

ब्रह्मजोब्यापकवेदकहैं गमनाहिंगिरागुणज्ञानगुनी
को । जोकरताभरताहरता सुरसाहिबसाहिबदीनदुनी
को । सोईभयोद्रवरूपसहीजुहैं नाथबिरंचिमहेशमुनीको ।
मानिप्रतीतिसदातुलसीजलकाहेनसेवतदेवधुनीको १४०

जो ब्रह्म सबमें व्यापक है जाको वेद ऐसा कहते हैं कि जे गुणी जन हैं तिनको ज्ञान करि देखिबे को गुण करि जानबे को बाणी करि कहबे की गम्य काहूको नहीं है जो करता उत्पत्ति करनहार भरता पालनहार हरता संहार करनहार है औ जो सुर कहे देवन को साहेब दीन दुनियाको साहेब सोई ब्रह्म द्रवरूप जलरूप सही कहे सांचो सोईहै जो ब्रह्मा महादेव मुनीश्वन को नाथहै सोई जलरूप भयोहै ऐसी प्रतीति मानिकै हे तुलसी देव धुनी श्रीगंगाजीके जलको सदा काहेनहीं सेवतहैं १४० ॥

बारितिहारोनिहारिमुरारिभयेपरसेपदपापलहौंगो। ईशहवैशीशधरोंपैडरौंप्रभुकीसमताबडदोषकहौंगो। वरु बारहिबारशरीरधरौंरघुवीरकोहवैतबतीरहौंगो। भागी रथीबिनवौंकरजोरिवहोरिनखोरिलगैसोकहौंगो १४१॥

हे श्रीगंगाजी तिहारो वारि कहे जलको निहारि कै मुरारि कहे मुरआदि दैत्यन के मारिबे को समर्थ भये परंतु पायन में धारण कियेपै मैं पायन में धारण करिबे में बडो पापलहौंगो तातें पायनमें न धारण करौंगो अरुईश कहे महादेव शीश में धारण करि समर्थ भये सोमैं शीशमें भी न धारण करौंगो क्योंकि शिव प्रभु हैं तिनकी समता होबो यह बड़ो दोष है तामें दाह पावौंगो तातें वरकु बारम्बार देह धारण करौं तामें श्री रघुबीर को गुलाम ह्वै कै तव कहे तुम्हारे तीर सदा रहौंगो हे भागीरथी हाथ जोरिकै बिनती करतहौं जामें पुनः खोरि कहे दोष न लागै सोई बात आपसों कहौंगो भाव आपके तट बासकरि श्री रघुनाथ जीको भजौं यह कृपाकरि दीजिये और नहीं चाहत हौं १४१॥

लालचीललातबिललातद्वारद्वारदीनवदनमलीनमन मिटैनबिसूरना। ताकतसराधकैबिवाहकैउछाहकछूडोलै लोलबूझतशबदढोलतूरना। प्यासेनपावहिंबारिभूखेनच नकचारिचाहतअहारतपहारदारिधूरना। शोककोअगार दुखभारभरोतौलौंजन जौलौंदेवीद्रवैन भवानीअन्नपूरना १४२॥

दरिद्रकी प्रबलता ते लालची ह्वै ललात कहे ललचात भूखते विललात कहे व्याकुल द्वारद्वार मांगत फिरत दी-

नता ते वदन कहे सुख मलीन अरु मनकी बिसूरना कहे भोजन चाहना नहीं मिटत है ताते जहां ब्याह वा कछू उत्साह होत तहां भोजन हेतु ताकत फिरत हैं लोल कहे चंचल ह्वै डोलत जहां ढोल तूरना कहे तुरही को शब्द सुनत तहां बूझत फिरत कि इहां कौन काम है प्यासे भये पर बारि कहे पानी नहीं पावत भूखलगे पर और को कहे चारि चना नहीं पावत तेजन अहार तौ सहार कहे बहुत चाहत परंतु धूरिपरढूंढ़े एक दालि भी नहीं पावत हैं शोक कहे शोच मानसी क्लेश के अगार घरदुहैं जामें समूह शोक भरा है दुख कहे दैहिक दैविक भौतिकादिकोबोझाबड़ा भारीहै सोजन तबलौं जबलौं दे विनमें भवानी अन्नपूर्णा द्रवतकहे कृपानहीं करतीहैं भाव कृपाभये पर दुख दारिद्र नहींरहत देवी संज्ञा माचभवानी रुद्राणी अन्नपूर्णा लौकिकरूप काशी जी में हैं १४२॥

भस्मअंगमर्दनअनंगसंततअसंगहर । शीशगंगगिरिजाअर्धंगभूषणभुजंगवर । मुंडमालविधुबालभालडमरूकपोलकर । विबुधवृंदनवकुमुदचंदसुखकंदशूलधर ॥ त्रिपुरारित्रिलोचनदिग्बसन विषभोजनभवभयहरण । कह तुलसिदाससेवतसुलभशिवशिवशिवशंकरशरण १४३ ॥

अब शिवजीको प्रताप माहात्म कहतकि अंगमें चिता की भस्म लगाये पै अपावन नहीं होत औ शिर में गंगा ऐसी पावन धारण ते अधिक पावनता नहीं कामरहित कैसे जो अनंग के मर्दन कहे जीतनहार हैं औ कामाशक्त कैसे जो गिरिजाको सदा अर्द्धांगही में राखत संतत कहे सदैव असंग रहत संग काहूको नहीं राखत पुनः संगति में कैसे राखत जे कुटिल स्वभाव के सर्प तिनको भूषण किये हैं पुनः हर कहे जगके संहारक हैं पुनः वरकहे श्रेष्ठ रक्षक

हैं पुनः कराल वेष कैसो बनाये जो मुंडमाल धरे पुनः विशाल वेष कैसो जो बाल विधुभाल दुहूनको चन्द्रमा माथे पै शोभित पुनः डमरू लिहे जामें पावननाद वेद भरो है पुनः कपाल लीन्हें जामें अपावन वस्तुभरी पुनः देवरूप नव कोकानेलिन को मोददायक चन्द्रमा है पुनः धनादि सुख इहा उपजावन को कंद कहे मूल है वा सुख जल वर्षनको मेघ है पुनः चिताप नाशिबेको त्रिशूल धारण किहैं त्रिपुरदैत्यके अरिहैं जिनके तीनि लोचनहैं दिग्वसन कहे दिगंबर हैं जामें सब जरजात रहैं ऐसो विष ताको भोजन करिगये काहेते भव जो संसार ताके भय हरणहार हैं ऐसे समर्थ हैं तिनको गोसाईंजी कहत कि सेइबेको सुलभ हैं काहेते शिव शिव शिव तीनहीबार कहे प्रसन्न ह्वै सर्वस देत ऐसे शंकर की शरण हौं भाव काशीजीमें पराहौं तातें कलियुग सों उबारि श्री रामभक्ति दीजे १४३॥

गरलअशनदिग्वसनव्यसनभंजनजनरंजन। कुंदइंदु कर्पूरगौरसच्चिदानंदघन॥ विकटवेषउरशेषशीशसुरसरि तसहजशुचि। शिवअकामअभिरामधामनितरामनामरुचि॥ कंदर्पदर्पदुर्गमदमनउमारमनगुणभवनहर। त्रिपुरारित्रिलोचनत्रिगुणपरत्रिपुरमथनजयत्रिदशवर १४४॥

गरल अशन कहे जहर है जिनके भोजन दिशा हैं वसन और वसन नहीं धारैं भाव तन पोषक नहीं हैं व्यसन कामाशक्ती ताके भंजन कहे नाशकरता अरु जन जो दास तिनके रंजनकहे आनंददाता कुंदसे कोमल इन्दुसे सुखद शीतल कर्पूर सम सुगंधित गौरांग हैं अरु सत चित आनंद के घनकहे समूहहैं विकट कहे भयंकर वेष चिताभस्म कपाल माल उरमें शेषनाग लपेटे शीशपै सुर सरित गंगा जी सो सहजही में शुचिकहे पवित्रहैं शिव कहे कल्याण

रूप अकाम कहे काहूवस्तु की कामना नहीं अभिराम कहे आनंद के धामहैं काहेते आनंदमई श्री रामनाम में रुचिहै कंदर्प काम के दर्प अभिमान जो दुर्गम रहै ताको दमन कहे नाशकर्त्ता उमा के रमण हर कहे पाप दुख के हरता दिव्य गुणन के धामहैं त्रिपुर के अरि ह्वै कै त्रिपुर के मथन कहे नाशकर्त्ता हैं तीनिहैं लोचन ताते तीनि जो गुण रज सत तम ताको बेकार देखिकै पारभये त्रिदश जो देवता तिनमें वर कहे श्रेष्ठ ऐसे शिवकी जय होइ १४४॥

अर्धअंगअंगनानामयोगीशयोगपति । विषमअशन दिगवसननामविश्वेशविश्वगति ॥ करकपालशिरमाल व्यालविषभूतिविभूषण ॥ नामशुद्धअविरुद्धअमरअनव द्यअदूषण ॥ विकरालभूतवैतालप्रियभीमनामभवभयद मन । सबविधिसमर्थमहिमाअकथ तुलसिदाससंशयश मन १४५ ॥

अर्द्ध अंगमें तौ अंगना पार्वती हैं औ नाम योगीश योगिन के पतिहैं विषम भांग धतूरादि अशन कहे भोजन हैं दिगवसन दिगंबर हैं औ नाम है विश्वेश्वर विश्व को जिनकी गतिहै समयपर सहाय करत हाथमें कपाललिये गरेमें शिरन को माला अरु विष की श्यामता अंगमें सर्प अरु बिभूति यही भूषणहै नाम उच्चारणमें शुद्ध वा पवित्र अविरुद्ध वरणमैंचो वा शिवनाम लेनेमें विरोध नहीं वेद धर्मते अमर मृत्यु रहितहैं अनवद्य कामादि दोष रहित हैं अदूषण अवगुण रहित विशेषि करालभूत बैतालहैं प्रिय भव जो संसार ताके भयके दमन नाशकहैं जिनको भीम भयंकर नाम लोकहू परलोक सुखद सब प्रकार समर्थ है जिनकी महिमा अकथ है कोऊ कहि नहीं सकै शिव तुलसीदास के सब प्रकार की भय हरणहार हैं १४५॥

भूतनाथभयहरणभीमभयभवनभूमिधर । भानुमंतभ
गवंतभूमिभूषणभुजंगवर ॥ भव्यभाववल्लभभवेशभवभा
रविभंजन । भूरिभोगभैरवकुयोगगंजनजननरंजन ॥ भार
तीवदनविषअदनशिवशशिपतंगपावकनयन । कहतुलसि
दासकिनभजसिमनभद्रसदनमर्दनमयन १४६ ॥

जो सौभाविक भयावन ऐसे भूतनके तौ नाथहैं पै स-
ज्जनन के भय हर्ताहैं औ दुष्टन हेतु भीम कहे भयंकर जो
भयके भवनै हैं औ भूमि के धारण कर्ता हैं भानुमंत कहे
प्रताप गण हैं भगवंत कहे षट् ऐश्वर्य्य युक्त हैं यथा महा
रामायणे ॥ ऐश्वर्येनचधर्मेण यशसाचश्रियैवच ॥ वैराग्यमोक्ष
षट्कोणैः संजातोभगवान्हरिः ॥ विभूति अरु श्रेष्ठ भुजंग
साई भूषणहैं भव्य कहे मंगल की मूर्ति हैं भाव है वल्लभ
कही प्रिया जिनको भवेश भव संसार ताके ईशहैं भवभार
जो जन्म मरणादि के भंजनहारहैं भूरि कहे बड़ा है भोग
जिनको जाके भय करिकै रव कहे रोदन कीन्होहै पा-
र्वती कुयोग कहे राजद्वार विवाद व्यघ्रव्याघादि संकट के
गंजनहार हैं जनके रंजन कहे सुखदहैं विषको अदन कहे
भक्षण किहे ताहूपै सुखमें भारती है भाव सिद्ध वचन है
शिवकहे कल्याणरूप शशि वामनेत्र पतंग सूर्य दक्षिण नेत्र
शीश में पावक नेत्रहैं गोसाईंजी कहत हैं मन कामना-
एक कल्याण भवन शिवको क्यों नहीं भजतहै १४६ ॥

नांगोफिरैकहैमांगनोदेखिनखांगोकछू जनिमांगियेथो
रे । रँाकनिनाकपरीझिकरैतुलसीजगजोजुरेयाचकजोरे ।
नाकसवाँरतआयोहौनाकहिनाहिपिनाकिहिनेकुनिहोरे ।
विरंचि कहै गिरिजा सिखवो पतिरावरो दानिहै बारो
भोरो १४७ ॥

ब्रह्माजीकीउक्तिपार्वती प्रति कि शिवजी आपुतौ नांगे फिरत हैं अरु मांगनेवालेन को देखि कहत कि हमारे कछु खांग नहीं है थोड़ो जनि मांगियो भाव हमको नांगो देखि संदेह न किह्यो गोसांई जी कहत कि जग में याचक जहां तक जोरे जुरे तिन रांकनि कहे गरीबन पै रीझिनाकप इन्द्रकहे बनावत तिनके हेतु नाक कहे इन्द्र पुरी नई नई संवारतमें हौं नाकहि आया भावमेरे नथुन नमें दमभयोअरु पिनाकी जोशिव तिनकेनेकु निहोरेनहीं भावशिवको अतरकोपरवाहिनहीं यह बिरंचिकहतकिहे गिरिजा तुमसिखावत क्योंनहीं रावरो पति बावरो भोरो दानिहैबावरो याते कहेकि नीकीबुरी बातनहीं बिचारत यथाभस्मासुर को वरदानदैदियेपीछेवहीजीवको गाहक भयो भोरे याते कहे कि बुरी को भली थोरी को बहुत समुझत यथा गुणनिधि बिप्र मूर्त्ति पर चढ़ि ऊपर ते कछु पदार्थ उतारे ताको आत्मसमर्पण मानि मुक्ति दिये अरु वारि वाउर पाती पर रीझतहैं यह थोड़ेको बहुत मानना है १४७ ॥

बिषपावकब्यालकरालगरेशरणागततौ तिहुंतापनडाढ़े । भूतबैतालसखाभवनामदलैपलमेंभवकेभयगाढ़े । तुलसीशदरिद्रशिरोमणिसोंसुमिरे दुखदारिदहोहिंनठाढ़े । भौनमेंभांगधतूरोईआंगन नांगेकेआगहैंमांगनेबाढ़े १४८ ॥

आपु कैसे हैं जो नेचमें अग्नि धारे गरे में बिष अरु कराल सर्प धारण कीन्हें भाव समग्र सोज जरावन हारी है परंतु जो शरणागत आवत ताको ऐसे शीतल ह्वै रक्षा करत कि तीनिऊं तापै नहीं डाढ़े नहींजराइ सकत हैं जे सौभाविक भयावन हैं ऐसे भूत बैतालते तौ सखा हैं अरु

जिनको नामहू भव है परंतु गाढ़े कहे कठिन भवसागर के भय को हरत हैं तुलसीश जो शिव जी ते देखबे में तौ दरिद्र शिरोमणि से लागत भाव घरमें बिभूतिही है और कुछु नहीं है अरु जो कोऊ शिव जीको सुमिरत ताके पासदुख दरिद्र ठाढ़ नहीं होत डरतहै भौनमें भांग भरी आंगन में धतूर के वृक्ष लगे अरु वसन हीन नांगेहैं तिन के आगे मांगने बाढ़े कहे जब देखिये तब मांगनेवालन की भीरै भरी हैं १४८ ॥

शीशबसैबरदाबरदानि चढेउबरदाघरन्योबरदाहै । धामधतूरोबिभूतिकोकूरोनिवासतहांसबलैमरदाहै । ब्यालीकपालीहैरव्यालीचहूंदिशि भांगकेटाटिनकोपरदाहै । रंकशिरोमणि काकिणिभाकबिलोकत लोकपकोकरदा है १४९ ॥

बरदानि जो शिव जी तिनके शीश पर जो बसीहैं गंगा जी तेऊ बरदाता हैं जापर चढ़ हैं नंदी श्वर तेऊ बरदाता हैं घरणी जो पार्वती जी सोऊ वरदाता हैं धाम कहे घरमें धतूर के वृक्ष लगे औ बिभूति को ढेर लगो है बिशेषि निवास तहांईंहै जहां सब नाम मृतक लैकै मर्दित कीन्हें हैं अर्थात् चिता भूमि व्याली कपाली कहे सर्प मुण्डमाल व्याली कहे सौभाविक धारण किहे हैं धाम में चारिहू दिशि भांगही की टाटिन को परदा है आपु तौ ऐसे हैं परंतु रंक कहे दरिद्री शिरोमणिन को काकिणी भाक कहे बलिष्ट करते हैं कौन भांति जापै दयादृष्टि बिलोकते हैं ताको लोक पति करि देते हैं काकिणी यथा दीन दयाल औ रामलाल दौ में कौन घटणी कौन धनी है यथा अ० क० च० ट० त० प० य० शादि अष्ट वर्गमें दीन दयाल नाम को प्रथमाक्षर तवर्गमें है सो पंचम वर्ग है पंच को

दून दश भये रामलालयवर्ग में है सो सतवां वर्ग है सातवर्ग मिलाये दशसात सत्रह भये आठकोभाग दिये एक काकिणीबचीपुनः रामलालको सतवांवर्ग सातदुनी चौदाभये तामें दीनदयालके पांच मिलाये चौदहपांच उन्नीसभये आठ को भाग आठ दुनी सोरह तीनि काकिणी बचीं यह काकिणी बज़त है ताते रामलाल ऋणी है स्वार्थ देनेहार है क्योंकि दीनदयाल की एक काकिणी थोड़ी है ताते धनी है स्वार्थ पावन हार है थोड़ी काकिणी बली होत इत्यादि काकिणी जो निर्बलौ होइ तौ शिवजी की दया ते सबल होतकाकिणी प्रमाण मुहूर्त चिंतामणौ ॥पञ्चद्वयंक सुतेशदिग्मितमसौग्रामः शुभोनामभात् स्वंवर्गंद्विगुणंविधायपरवर्गाढ्यं गजैःशशिनं। काकिण्यस्त्रनयोश्चतद्विवरतो यस्याधिकाः सोर्धदोऽथद्वारंद्विजवैश्यशूद्र नृपराशीनांहितंपूर्वतः १४९॥

दानिजोचारिपदारथकोत्रिपुरारितिहूंपुरमेंशिरटीको। भोरोभलोभले भायकोभूखोभलोईकियो सुमिरेतुलसी को। ताबिनआशकोदासभयोकबहूंनमिट्योलघुलालच जीको। साधोकहाकरिसाधनतेजोपैराधोनहींपतिपारबतीको १५०॥

अर्थ धर्म काम मोक्षादि चारिउ पदार्थ केदानि जेते तीनिहूं लोक में हैं तिनमें टीको कहे शिरोमणि हैं त्रिपुरारि औ भलो भोरो है भाव थोरे में प्रसन्न होत पुनः भले भाव के भूखे हैं भाव जो अर्चा विधि न बनै औ भावते करै तहूं प्रसन्न होत जो तुलसीहू ऐसोको सुमिरेते भलो ई कियोहै ता शिवजीको सुमिरे बिना लोभ बश आश को दास भयो ताते लघु लालच कहे थोरेहू सुख के हेतु चाह नहीं मिटत तौ सब साधन करि कौन प्रयोजन

साध्यौ जोपै पार्बतीके पति को आराध्यौ कहे सेयो नहीं तौ सब साधन वृथा हैं १५० ॥

जातजरेसबलोकबिलोकिंत्रिलोचनसोबिषलोकिलियोहै । पानकियोबिषभूषणभोकरुणावरुणालयसांईहियोहै । मेरोईफोरिबेयोगकपारकिधौंककुकाहूलखाइकियोहै। काहेनकानकरौबिनतीतुलसीकलिकालबिहालकियोहै १५१ ॥

जो सिंधु मथे हलाहल निसरो ताके तेज ते सब लोक जरेजातरहैं ताको बिलोकिकहे देखिकै दयाबीरता करि सोई बिषको त्रिलोचन आपही लोकि लियो भावबिष तेज फैलने न पायो शीघही पान करि गयो सोई बिषकी श्यामता कंठ में भूषित भई ऐसेसमर्थ शंकर साईंको हियो करुणा रूप जल पूरित बरुण को आलय कहे समुद्र है परंतु मेरोई कपार फोरिबे योग्य है काहेते अभाग्यभरोहै किधौं मेरी खोटाई काहू ने आपुसों ककुलखाय दियो है जोतुलसीको कलिकालने कामादि लगाइ बिहाल कियो सो मेरी बिनती को काहे नहीं कान करत हौ भाव करुणा करि मेरी सहाय क्यों नहीं करतहौ १५१ ॥

खायोकालकूटभयोअजरअमरतनभवनमशानगथगाठरीगरदकी । डमरूकपालकरभूषणकरालव्यालबावरेबड़ेकीरीझबाहनबरदकी । तुलसीबिशालगोरेगातबिलसतभूतिमानोंहिमगिरिचारुचांदनीशरदकी । अर्थधर्मकाममोक्षबसतबिलोकनिमेंकाशीकरामातियोगीजागतमरदकी १५२ ॥

शिवजी ऐसे समर्थ हैं कि जो शीघही मृत्युदायक कालकूट विष ताको खाय गये सो विपरीत फल दियो कि जरा मरण रहित तन भयो औ रीति रहस्य कैसी है जो मशान में भवन कहे घर है बिभूति की गाठरी सोई गथ कहे द्रव्य है डमरू को बाजा कपालही पात्र कर में धारना कराल व्याल कहे भयंकर सर्पही जिनके भूषणहैं ऐसे बड़े बावरे हैं जो सब वाहन त्यागि एक बरदही वाहनपर रीझे हैं गोसाईं जी कहत कि बिशाल सुंदर गौर अंगपर बिभूति कैसी बिलसत मानों हिमाचल गिरिपरशरदऋतु की चांदनी फैलीहै अरु दानी कैसे हैं जिनकी बिलोकनि कहे दया दृष्टि में अर्थ धर्म काम मोक्ष चारिहू फल बसत हैं मरद कहे जिनको बचन सदा सांचा है ऐसे शिवयोगी की करामाति रूप काशी जागत कहे वेद पुराण में प्रकाशित है कि कोऊ जीव तन त्यागत ताको राम तारक मंत्र उपदेश ते मुक्त होत तौ अपर फल लौकिक है १५२॥

पिंगलजटाकलापमाथेपैपुनीतआपपावकनयनाप्रता पभूपरबरतहैं। लोयनबिशाललालसोहैबालचंद्रभाल कंठकालकूटव्यालभूषणधरतहैं। देतनअघातरीझिखात पातआंकहींकेभोरानाथयोगीजबओढरतहैं। सुंदरदिगम्बरबिभूतिगातभांगखातरूरेशृंगीपूरेकालकंटकहरतहैं १५३॥

पिंगल कहे श्वेत किंचित् अरुण मिश्रित अर्थात् भूरा जटा कलाप कहे समूह माथ पै पुनीत आप कहे जल गंगा जी बिराजमान पावक अग्नि में नयनको प्रताप भ्रू कहे भौंहन पर माथ में बरत है लोयन कहे नेत्र दोऊ बिशाल लाल वर्ण के शोभित भाल पर बाल कहे दुइज को चंद्रमा बिराजमान कालकूट विष की श्यामता कंठ में भल-

कत व्याल कहे सर्पन को भूषण अंग में धारण किहे आपतौ आक कहे मदार के पत्ता खाते हैं परंतु भोरानाथ योगी जब जापै रीझि कै औढरढरत हैं तब देत में अघात नहीं सुंदर स्वरूप दिगंबर अंगमें विभूति विराजमान सदा भाँगही अहार रूरे कहे भली भांति मृगश्रृंग को बजावत ऐसो असंगल वेष परंतु कृपाकरि पूरे कालकंटक कहे कुसमयके विघ्न अर्थात् क्रूर ग्रह दशा कुसाइति नष्टकर्म को उदय अल्प मृत्यु आदि स्वाभाविक हरत हैं १५३ ॥

देतसंपदासमेतश्रीनिकेतयाचकनिभवनविभूतिभांग वृषभवहनुहै । नामबामदेवदाहिनोसदाअसंगरंगअर्द्धंग अंगनाअनंगकोमहनुहै । तुलसीमहेशकोप्रभावभावहीसुगमअगमनिगमदूकोजानिबोगहनुहै । वेषतौभिखारिको भयंकररूपशंकरदयालदीनबंधुदानिदारिददहनुहै१५४।

यामें अद्भुत प्रताप है संपदा कहे द्रव्य भोजन वस्त्र राज स्त्री पुत्र पौत्रादि सर्वांग सुख सहित जन्म पर्यन्त अंतकाल में श्री निकेत कहे बैकुंठ अर्थात् मुक्ति तौ याचकन को देत हैं अरु धन नाती भवन में भाँग अरु विभूति साच है वाहन जाके बरद है नाम तो बामदेव है अरु रहत सदा सबके दाहिनेहैं मन तौ असंग रंगमें रंगा उदासीन रहत अरु अर्द्धांग में अंगना जो पार्वती को लिहे हैं अरु अनंग जो कामदेव ताको महनु कहे नाशकर्त्ता हैं गोसाईं जी कहत हैं कि ऐसो महेश को प्रभाव अगम है जो निगम कहे वेदहू को जानिबे को गहनु कहे कठिन है सो एक प्रेम भावही करिकै सुगम है रूप तौ शंकरजी को भयंकर है जो कपाल माल सर्प चिता भस्म भूषित अरु स्वभाव हीनन पर सदा दयालु हैं अरु वेष तो भिखारि कैसो है अरु दानि कैसे हैं जो दरिद्र को दहनु कहे नाश करता हैं १५४ ॥

चाहैनअनंगअरिएकौअंगमांगनेकोदेवोईपैजानियेसु-
भावसिद्धबानिसों । बारिबुंदचारित्रिपुरारिपरडारियेतौ
देतफलचारिलेतसेवासांचीमानिसों । तुलसीभरोसोनभ
वेशभोरानाथकोतौ कोटिककलेशकरोमरोछारछानिसों ।
दारिददमनदुखदोषदाहदावानल दुनीनदयालदूजोदा-
निशूलपाणिसों १५५ ॥

पूजाकेअंगयथा ॥ आसनंस्वागतंपाद्यमर्घमाचमनीयकं ।
मधुपर्काचमनंस्नानंवस्त्रंचभरणानिच १ ॥ सुगन्धंसुमनोधूपं
दीपंनैवेद्यवंदनं ॥ इति षोडशोपचार में एकौ अंगमांगन
सौं नहीं चाहत अनंग अरि जो शिवजी तिनको सहजही
में बानिकहे स्वभाव सिद्ध है कि देवोई जानिये भाव देवो-
ई भावत है कौन भांति जो बारि कहे जलके चारिहू बुन्द
चिपुरारि पर डारिये भाव कुभाव कैसहू ताको सांची
सेवा मानिकै चारिहू फल देत गोसाईं जी कहत हैं कि
भव जो संसार ताके ईश जो भोरानाथ हैं जे थोड़ी सेवामें
रीझि बज़त देत तिन को भरोसो न करे तौ कोटिन क-
लेश करि छार जो मारगकी धूरि ताको छानिकहे ढूंढ़ि
मरो पूरो प्रयोजन न होइगो जहां मेला लागत तहां
पीछे को कंगाल मारग की धूरि छानि ढूंढ़त कछु गिरो
परो द्रव्य पावत हैं तैसे अपर देव सेवा को फल है अरु
दरिद्र को दमन कहे नाशनहार औ दुःख जो तीनिउ
ताप दोष जो काम क्रोधादि बनरूप दाहिबे को दावा-
नलसम शूलपाणि सम दयालु दानी दुनियामें दूजोनहीं
है एक शंकरही हैं १५५ ॥

काहेकोअनेकदेवसेवतजागैमशान खोवतअपानशठ
होतहठिप्रेतरे । काहेकोकोटीउपाइकरतमरतधाय याच-

तनरेशदेशदेशकेअचेतरे । तुलसीप्रतीतिबिनुत्यागेतौप्र-
यागतनु धनहींकेहेतुदानदेतकुरुखेतरे । पातद्वैधतूरकेद्वै
भोरेकैभवेशसोसुरेशहीकीसंपदासुभायसोनलेतरे १५६॥

अनेकन देवतन को काहे को सेवत है भाव प्रथम तौ विघ्न करत कदाचि बिधिपूर्वक पूजा बनी तौ किंचित् वस्तु देतहैं अरु भूतन की सिद्धी हेतु मशान जागत सो अपान काहे अपनो शुद्ध स्वरूप काहेको खोवत जो हठ करिकै आपही प्रेत होतहै हेरे अचेत काहे को कोटिन उपाय करत धाय धाय मरत देश देशन के नरेशन को याचतफिर-तहै गोसाईंजी कहत हैं कि बिना प्रतीति जो प्रयागहू में तन त्यागे तौ काहभयो यद्यपि तीर्थराज सर्वफलदायक है सो बिश्वास वालेको है अरु धन पाइबे हेतु द्रव्य हीको दान कुरुक्षेत्र में काहेको देत हैं भाव द्रव्य दानहेतु काहे को ढूंढ़िये है पात धतूरेके दैकै भव संसारके ईशभोरा नाथ को भोरे कैकै अर्थात् बौराय कै तिनसों सुरेश की संपदा इंद्र पदवी सुभाय कहे सहजही सों काहे नाहीं लेत है भवनो थोड़ा परिश्रम किहे बड़ा कामहोय तौ बड़ो प-रिश्रम न करै १५६॥

संघटगयंदबाजिराजिभलेभलेभट धनधामनिकरकर
निहूनपूजैकय । बनिताबिनीतपूतपावनसोहावनओ बि-
नयविवेकविद्यासुभगशरीरवय । यहांऐसोसुखमरलोक
शिवलोकओक ताकोफलतुलसीसोसुनोसावधानहृवय ।
जानेबिनुजानेकैरिसानेकेलिकबहुंक शिवहिचढ़ायेहवैहै
बेलकेपतौवाद्वय १५७ ॥

गयंद जो हाथिन को संघट कहे भीर बाजी जो घोड़ा तिनकी राजी कहे पाँति बँधीहै औ भले भले भटकहे यो-

ह्वा औ धन समूह धाम कहे सुंदर घर इत्यादि निकर कहे समूह करणी को कोऊ नहीं पूजै काहेनहीं जानि पावत कि कहांते भईहै पुनः बनिता जो स्त्री विनीत कहे प्रिय-वचनी पुच पवित्र सुधर्मी सुहावन कहे मनको सुखद है आपु विनय कहे नम्रता युत विवेक सहित विद्या सुभग कहे निरुज शरीर इत्यादि सुख यहां कहे यहि लोक में देत औ परलोक में शिवलोक में ओक कहे स्थान बास पावतहै ताको फल सावधान ह्वैकै तुलसी सो सुनो जानि कै वा बिना जाने किधौं रिसाइकै वा खेलवार में इत्यादि काहू भाँतिते कबहूं शिवजीपै बेलकेहू पतौवा चढ़ाये हूँ है तातें यह ऐश्वर्य भयो है १५७ ॥

रतिसीरवनिसिंधुमेखलाअवनिपति अवनिपअनेक ठाढ़ेहाथजोरिहारिकै । संपदासमाजदेखिलाजसुरराज हूकेसुखसबबिधिबिधिदीन्हेंहैंसँवारिकै। यहांऐसोसुखसु रलोकसुरनाथपदताकोफलतुलसीसोकहैगोबिचारिकै । आकके पतौवाचारिफूलकेधतूरकेहूदीन्हेंहोइहैबारकपुरारि परडारिकै १५८ ॥

रति सम सुंदरि रवनि कहे स्त्री सिंधु है मेखला कहे घेरे तावत् पृथिवी को पति चक्रवर्ती जाके आगे अवनिप जो राजा अनेकन हारिकै हाथ जोरे ठाढ़ेहैं जाकी संपदा समाज को बिभव देखिकै सुरराज जो इंद्र तिनहूके लाज होत है काहे ते सब बिधि को सुख बिधिने सँवारि कै दीन्होहै ऐसो सुखतौ इहांइहि लोक में है अंतसमय सुर-लोक में सुरनाथ इंद्र पदवी को पावत ताको फल तुलसी बिचारि कै कहैगो सो सुनौ आक मदारके चारि पतौवा वा चारि फूल वा दुइ फूल धतूर के कबहूं एक बार त्रिपु-रारि परडारि दीन्हे हूँ है तातें यह ऐश्वर्यभयोहै १५८ ॥

देवसरिसेवौबामदेवगाउंरावरेही नामरामहीकेमांगि उदरभरतहौं। दीबेयोगतुलसीनलेतकाहूकोककुकलिखी नभलाईभालपोचनकरतहौं। येतेपरहूकोऊजोरावरेहोइ जोरकरैताकोजोरदेवदीनद्वारेगुदरतहौं। पाइकैउराहनो उराहनोनदीजेमोहिं कालिकालाकाशीनाथकहेनिवरत हौं १५६ ॥

एकसमय शिव उपासक पंडित गोसाईंजी की महिमा देखि सहि न सके तब अनेक उपद्रव करे जब एकौ न चलो तब हारिकै गोसाईं जीसों बिनती करि कह्यो कि हमको मांगन देउ यहकि तुमकाशीजी से चले जाउ तब यह कवित्त बनाय शिव मंदिर में लगाय चित्रकूटको चले गये जब वे लोग शिव मंदिरको गये तब पट बंद देखे भीतर ते बाणी भई कि तुमने भागवतापराध कियो है सब मरि जाउगे तब सब दौरि गोसाईं जी को लाये सो कहत कि हे बामदेव जी रावरे कहे आपके गाउं काशीको औ देवसरि श्रीगंगाजीको सेवन करतहौं अरु श्रीराम नाम लैकै मांगिकै पेट भरतहौं भावऔरकीआशा नहींहैजो तुलसी देबे योग्य नहीं हैं तौ मैं काहूको कछु लेतहूतौ नहीं हौं जो मेरे भाल कहे माथ में भलाई करनो नहीं लिखो है तौ काहू की पोच कहे बुराईभीनहीं करत हौं येतेहू पर बेप्रयोजन लोकोऊ रावरेको हूकै अर्थात् आपुको सेवकादि कोऊ मेरे ऊपर जोर करै ताको हाल दीन जनजो मैं हौं सो हे देव शंकर जी आपु के द्वार पर गुदरत कहे आपुसों जाहिर करतहौं काहेते मैं आपुको जनावत कि मैं श्रीरघुनाथ जीको किंकरहौं मेराहाल जानिकैकदाचि श्रीरघुनाथ जी आपुसों कहैं कि हमारे सेवक को संकट तुम्हारे सेवकन ते भयो तुम क्योंन सहाय भये ऐसा उराहनो श्रीरघुनाथ जी सों पाइ कै फिरि आपु मोको

उरहनो न दीजो कि तूने हमसों काहे नहीं कहा ताते काशीनाथ कालिकाला कहे कधी काल यह बात परे त हेतु हौं कहे मैं कहेहौं निवरत हौं अर्थात् कहिकै छुट्ट लेत हौं भाव अपने स्वामीसों अर्ज करौंगो तौ आपु पै ब दनामी आवैगी १५९ ॥

चेरोरामरायकोसुयशसुनितेरोहर पाइतरआइरह्यो सुरसरितीरहौं । बामदेवरामकोसुभावशीलजानियतना तानेहजानियतरघुबीरभीरहौं । अधिभूतवेदनबिषमहो तभूतनाथतुलसीबिकलपाहिपचतकुपीरहौं । मारियेतौ अनायासकाशीबासखासफल ज्याइयेतौकृपाकरिनिरुज शरीरहौं १६० ॥

हे हर मैं श्री रामराय को चेरो गुलामहौं सो काशी जीमें मुक्तिदायकहौं ऐसा सुयश वेद पुराण में सुनि आप के पायन तर शरणागत सुरसरि जा गंगा जी के तीर काशीजी में आइकै रह्यों आपुके भरोसे ते हे बामदेव श्री रघुनाथजी को सुभाव अरु शील आपु जानत हौ कि भक्तन के सदा सहायक हैं ऐसे स्वामीको मैं सेवक हौं यह नातो ताको नेह सोऊ आपु जानत हौ कि प्रभु भक्त वत्सल हैं ताते मेरे बने बिगरे की भीर कहे फिकिरि श्री रघुनाथही जीको है ऐसा जानिकै हे भूतनाथ भूतकहे अधि भूताग्रणिनतेअर्थात् भैरवादिकन करिकै वापंचभूतन करि कै वेदन कहे दुःख बिषम कहे कठिन होत तेहि कूपीर क- रिकै पचत कहे अमित बिकल ह्वै तुलसी जो मैंसो पाहि कहे आपुकी शरण हौं काहेते आपु भूतन के नाथ हौ तहां भूतन करिकै जो बाधा होइ सो आपुको रक्षा करिबेको चाही तातेयह आपुतेमांगतहौं किजो मारिये तौखास काशीबास में मृतक को जोफलजो श्री रामधाम

की प्राप्ती सो अनायास पावौं अरु जो जियाइये तौ कृपाकरि ऐसा कीजै जामें निरुज शरीर कहे रोगरहित देह रहै एकसमय काशी के कोतवाल भैरवजी देख्यो कि हमारी पुरी में यह आपना हुकुम चलावतहै ताहीईर्षा ते कोप करि बाहुपीर पैदा किये तब गोसाईंजी हनुमान् जी को स्मरण करे तुरंत हनुमान्जी भैरवको डाटि दिये पीड़ा मिटि गई ताही समय ये कवित्तन ते शिवजीसों प्रार्थना करत १६० ॥

जीबेकीनलालसादयालमहादेवमोहिं मालुमहैतोहिं मरिबेईकोरहतुहौं । कामरिपुरामकेगुलामनिकोकामतरु अवलंबजगदम्बसहितचहतुहौं । रोगभयोभूतसोकुसूत भयोतुलसीकोभूतनाथपाहिपदपंकजगहतुहौं । ज्याइये तौजानकीजीवनजननजानिजिय मारियेतौमांगीमीचुसुधि येकहतुहौं१६१ ॥

हे दयाल महादेवजी मोहिं जीबे की लालसा नहीं है यह बात तुमको मालूम है कि तुलसी मरिबेही को काशीजीमें रहतहै काहे ते काशीजी में मरे सौभाविक मुक्ति पावोंगे दूसरे कलिप्रेरित बिघ्नकर्त्ता काम ताके आपु रिपु हैं तौ इहां काम क्यों बिघ्न करैगो पुनः जे श्री रामके गुलाम हैं तिनको आपु कल्पवृक्ष हौ भाव सब फलदायक हौ याते जगदंब जो श्री पार्बती जी सहित आपुको अवलंब कहे भरोसा चाहतहौं ताहू पर भैरवादि कोप किये तेहि प्रेरित भूत बाधाते मेरे रोग भये तौ आपुकी पुरीको बास तुलसीको कुसूत कहे अरभयो सूत भयो जाको गाहक कोऊनहीं भावआपने स्वामीकीपुरी छांड़ि आपुकीपुरीमें बसे आपुहीके सेवक दुखदेते हैं तौ अब आपने स्वामीसों कौनमुहलाइ दादिकरौं ताते जिन

ते मोको बाधा है तिन भूतन के आपु नाथ हौ याते पाहि कहे शरण हूं आपुही के पद पंकज गहत हौं कि जो जियाइये तौ श्री जानकी जीवन को जन जानि कै मोको जियाइये भाव निर्बिघ्न राखिये अरु जो मारिये तौ मीचु जो मौत सो मुहं मांगी पावौं यह बात मैं सुधिये कहैं सहजही कहत हौं यामें कुछु दुर्घट नहीं १६१॥

भूतभवभवतिपिशाचदूतप्रेत प्रियआपनोसमाजशिव आपुनीकेजानिये। नानाबेषबाहनबिभूषणबसनबास खानपानबलि पूजाविधिकोबखानिये। रामकेगुलामनि कीरीतिप्रीतिसूधीसबसबसोंसनेहसबहीकोसनमानिये। तुलसीकीसुधरैसुधारेभूत नाथहीकेमेरेमायबापगुरुशंकर भवानिये १६२॥

हे भव महादेवजी हे भवति पार्वतीजी आप दोऊजने को भूत पिशाच प्रेतही दूत प्रिय हैं तेहि आपनी समाज को हाल हे शिवजी आप नीकी भांति जानतहौ कि नाना कहे अनेक वेष यथा कपाली दिगंबर जंगमादि जिनके अनेक वाहन खरशूकर श्वान मृगालादि अनेक भूषण मुंड माल सर्प विभूति अनेक भांति वसन कषाय आरद्र बाघंबरादि वास चिता भूमि खान कहे भोजन भांग धतूर मांसादि पान सुरा रुधिरादि जीव बलिदानादि पूजा की विधिको बखान करैइत्यादि सब समाजको हाल प्रसिद्ध है शिव संहिता में शिवजी आपही कहे शिवा प्रति यथा शिवउवाच॥ मद्भक्ताअपिवामोरु तमउद्रिक्तचेतसः॥ अधोऽधोगतिमायांति निंद्याज्ञानमयीसुने॥ कामक्रोधभयो द्वेगं हिंसामिथ्यादिकर्मणः॥ मदिरामांससर्वाशीरामवैसुख्यकारणम्॥ तामसीत्वंतुशक्तिर्मे सर्वदामदिराशना॥ मांसमैथुनहिंसादि विहाराजनमोहिनी॥ तथैवतवभक्ता-

च मांसमैथुनमद्यपाः ॥ मिथ्यामोहवशामूढा मानिनःपशु हिंसकाः ॥ शौचाचारविहीनाश्च भूतप्रेतपिशाचकाः ॥ वेतालाराक्षसायक्षाःक्रूरासिंदूरचिन्हिताः ॥ शूद्राश्चांडाल गौडाश्च भेदभिल्लाश्चपुष्कशाः ॥ कुविंदाश्चर्मकाराश्चये चान्येहीनजातयः ॥ तेषांत्वंपरमादेवी तामसीनांतमःप्रिया ॥ स्वभावएषतेगौरि दुर्निवार्योमयापिच ॥ इत्यादि स्वभाव वाले शिव पार्वतीके प्रिय सेवकहैं अरु राम के जे गुलाम हैं अर्थात् राम भक्त तिनकी रीति प्रीति सबसूधी है यथा ॥ कोमलचितदीननपरदाया । मनक्रमवचममभक्त अमाया ॥ प्रमाण महारामायणे शिववाक्यं ॥ शांतासमान मनसश्चसुशीलयुक्तास्तोषश्चमाशुणदयामजुबुद्धियुक्ताः॥ विज्ञानज्ञानविरतिः परमार्थवेत्ता निर्धामकोऽभयमनःसच रामभक्तः ॥ ऐसी रीति हरिभक्तन की सीधी ताते सबसों सनेह राखत अरु सब को सन्मान करत भाव यह कि हमारी रीति रहस्य सूधी अरु हे शिवजी आपके सेवकन की रीति रहस्य टेढ़ी तौ स्वाभाविक बैर भयो तौ मेरो निर्बाह कैसेहोइगो याते आपसों अर्जकरतहौं कि आप भूतन के नाथ हौ ताते आपही के निबाहे तुलसी की सुधरैगी काहेते मेरे बाप अरु गुरु आपही शंकरजी हौ अरु माता पार्वतीजी हैं ताते आप भूतन को हटकि देहौ तौ मेरे ऊपर विघ्न न करैंगे तौ मेरो निर्बाह है १६२ ॥

गौरीनाथभोरानाथभवतभवानीनाथ विश्वनाथपुरफिरिआनकलिकालकी । शंकरसेनरगिरिजासीनारिकाशीवासीवेदकहीसहीशशिशेखरकृपालकी । छमुखगणेशतेमहेशतेपियारेलोगविकलविलोकियतनगरीविहालकी । पुरीसुरवेलिकेलिकाटतकिरातकलिनिठुरनिहारियेउघारिडीठिभालकी १६३ ॥

गौरीनाथ कहे सर्वोपरि गुरु हौ भोरानाथ कहे अति दानी हौ भवानी नाथ कहे अरिमर्दन हौ भवत कहे भव के अंत कर्त्ता ऐसे विश्वनाथ जगकेरचक तिनकी खास पुरी काशीजी में कलिकाल की दुहाई फिरी भाव प्रचंड अटल भयो कैसी काशीपुरी है जहांके बासी नर शंकर से कहे पुरुषसब शंकररूपहैं औ नारीगिरिजासी कहेपार्वती रूप हैं ऐसी बाणी वेद कहत तापर शशिशेखर कृपाल जो महादेव तिनकी सही कहे मोहरी दस्तखत हैं ता काशी के बासी महेश को षट्मुख गणेश ते अधिक पियारे हैं ते लोगन को विकल बिलोकियतहै काहेते नगरी काशीकी कलिकाल ने अधर्म प्रबलकरि पुरबासिनको बिहालकरि दीन्ही कौन भांति सब फलदायक कल्प लता रूप काशी पुरी को किरात रूप कलिकाल निर्दई काटतहै भाव धर्म कर्म नाशकिहेदेतहै तापैक्रोधकरि भालकी आंखिउघारि अग्नि में दृष्टि सों निहारिये जामें भस्म ह्वै जाय १६३॥

ठाकुरमहेशठकुराइनिउमासीजहांलोकवेदहूबिदितम हिमाठहरकी।भटरुद्रगणपूतगणपतिसेनापतिकलिकाल कीकुचालकाहूतौनहरकी । बसीबिश्वनाथकीबिषादबड़ो बाराणसीबझियेनऐसीगतिशंकरशहरकी । कैसेकहैतुल-सीतृषासुरकेबरदानि बानिजानिसुधातजिपियनिजहर की१६४॥

महेश ऐसे जहां के ठाकुर उमा पार्बती ऐसी जहांकी ठकुराइनि जेहि ठहर कहे ठांवकी महिमा लोक वेदहू में बिदित है कि काशीजी में कोऊ जीव मरत ताकी मुक्ति होत औ प्रलयकारक बीरभद्र ऐसे भट जहां रुद्र के गण हैं सेनापति षडानन अरु गणेश ऐसे ऐसे सो काशी में कलिकाल ने कुचालचलाई ताको काहू तौ न हरकी कहे

मने न करी तातें विश्वनाथहूकी वाराणसी में बड़ो विषाद आनि बसो यह अनुचित है कि शंकर ऐसे समर्थ के शहरकी ऐसी गति न बूझिये न चाहिये तामें मान मूर्खता करत कि ऐसो हाल क्यों न होइ परंतु बड़े की बात कहना अनुचित है ताको तुलसी कैसे कहै कि सुधा तजि जहर पीवे की बानि कहे स्वभावही शंकर को जानि परत है कि दृषासुर जो भस्मासुर ताके वरदानी हैं भाव बिना विचारें वरदान दै पीछे आपही को भागने को परो तौ कलिकालको सन्मानकरि पुरीको बिहाल कराइबोकुछ आश्चर्य की बात नहीं है यह कहिबो मानमर्षता है १६४॥

लोकवेदहूबिदितबाराणसीकीबड़ाईबासीनरनारिईश अंबिकास्वरूपहै। कालनाथकोतवालदंडकारिदंडपाणि सभासदगणपसेअमितअनूपहै। तहांऊंकुचालिकलिकाल कीकुरीतिकैधौंजानतनमूढ़इहांभूतनाथभूपहै। फलैफूलैफै लैखलसोदैं साधुपलपल बातीदीपमालिकाठठाइयतसूप है १६५॥

बाराणसी काशीजी की बड़ाई लोक वेद हू में बिदित सब जानतहैं किजहां स्वाभाविक जीवनकोमुक्तिदेनहारी है अरु जहांके बासीनरते ईश कहे शिवरूप हैं औनारीते अंबिकाकहे पार्वतीरूपहैं औ कालनाथ जो भैरवसे जहांके कोतवाल हैं ते अनीति करनेवालेन को दंड करिबे हेतु पाणि जो हाथतामें दंडलीन्हे हैं अरु सदसभा कहे न्याय करनेवाले गणपति सरीखेअनेकन अनूप हैं जिनकी समता को दूसरो नहींहै तहांऊं काशीजी में कलिकालकी चलाई कुचाल कहे जुवा चोरी ठगी परनारी वेश्यादि रत असत्वार्ता हिंसामें प्रीति इत्यादि सौभाविक सब करतहैं औ कुरीति कहे वेद लोक मर्याद त्यागे यथा दे-

वता साधु गुरुतीर्थ सत्कर्मनिरादर मातापिता त्यागादि कलियुग निश्शंककरि रहो है कैधौं मूढ़ यह जानते नहीं हैं कि यहां के भूप भूतनाथ महादेव हैं तिनको प्रभाव नहीं जानत काहेते ऐसी अनीति चलाये हैं कि खल जे हैं कुमार्गी तेफैलत कहे बढ़त फूलतफलत कहे जो मनोरथ करत सो सफल होत अरु साधुजे हैं सुमार्गी ते पल पल प्रति सीदत कहे दुखितहोत सो यह मसलाठहरो कि दीपमालिका की रातिको घृत तैल तौ खाइ दियाबाती ठेठावा जाइ सूप कुमार्गता करै खल दुख पावै साधु १६५॥

पंचकोशपुण्यकोषस्वारथपरारथको जानिआपआपने सुपासबासदियोहै। नीचनरनारिनसँभारिसकैआदरल-हतफलकादरविचारिजोनकियोहै। बारीवाराणसीबिनु कहेचक्रचक्रपाणि मानिहितहानिसोमुरारिमनभियोहै। रोषमेंभरोसोएकआशुतोषकहिजात विकलविलोकिलोक कालकूटपियोहै १६६॥

काशीपुरीमें कलिकाल कुचाल चलाई शिवजी क्यों न हटके यह संदेह पूर्व कवित्त में कियेरहे ताको समाधान करत कि हे शिवजी आप की खोरि नहीं है यह लोगन के कर्मन के फलहैं काहेते असीवरुण पर्य्यंत सुरसरि तट पंचकोशांतर काशीक्षेत्र पुण्यको कोषकहे खजानाहै ताते स्वारथ जो लोक सुख परारथ परमारथ जो परलोक सुख सोइहां सौभाविक सिद्धिहोइगो ऐसा सुपास आपजानि लोगन को इहां बासदिये आपने ऐसा आप को आदर ताको इहांके नरनारि नीच सँभारि न सके कि शंकरऐसे दयाल हैं कि हम ऐसे तुच्छ जीवन को इहां बासदिये जाते सब बात हमको प्राप्त भई यह विचार तजि जाति विद्या महत्व में अपनपौ मानि शुद्ध धर्म में कादर बिना

विचार अभिमान करै ताको फललहत कहे पावतहैं तहां कर्म फल पाइबो सहीमाना तहां सबल को अरु मिचको काम बिगारिबे में भय तौ चाहिये काहेते सबलके दंडको शोच होत मिचके गिल्ला को संकोच होत ताको दृष्टांत देखावत कि देखो जा समय काशीराज मिथ्या वासुदेव बनि द्वारका को चढ़ि गयो ताके मारिबे हेतु श्रीकृष्ण सुदर्शन को आज्ञा दीन्हें सो सब सेना भस्मकरि पीछे काशीपुरीको भी भस्मकरिदियो सो कहतकि चक्रपाणि जो भगवान् तिनकी आज्ञा बिना चक्रने वाराणसी को बारी कहे जराइदई तामें कछु भगवान् की खोरि नहीं रहै ताहूपै भगवान् बिचारेकि हमारे हितकार शंकरकी हानिभईयह बिचारिकै इतनेबड़े मुरारितेऊ हितसंकोच ते डरे तहां कलिकाल भूतरूप सो भूतनाथकी पुरीमें बिघ्न करत क्योंनहीं डरतहै ताते सजाय देबे योग्य है अरु हे शिवजी जो पुरबासिन के पापन करि आपु क्रोधितहैं ता में एक भरोसाहै किआपु आशुतोष शीघ्रही प्रसन्न होन वाले कहावतहौ काहेते लोक को बिकल बिलोकि कै कालकूट बिषको पानकरि पचाइ डारे ताते लोक सुखी भये तैसे पुरबासिन के अपराध करिजो क्रोधहै ताको प-चाय लोगन को सुखी कीजै जो कलियुग बिघ्न करै तौ सजाइ पावै १६६॥

रचतबिरंचिहरिपालतहरतहरतेरेहीप्रसादजगअ-गजगपालिके। तोहिंमेंबिकासबिश्व तोहिंमेंबिलाससब तोहिंमेंसमातमातुभूमिधरबालिके। दीजैअवलंबजगद-म्बनबिलंबकीजे करुणातरंगिनिकृपातरंगमालिके। रो-षमहामारोपरितोषमहतारीदुनि देखियेदुखारीमुनिमान समरालिके १६७॥

काहू समय महामारी परी ताके निवारिबेको अधिकारीजानि पार्वतीजी को आदिशक्ति मानि स्तुति करत किभूमिधर हिमाचल गिरिकी बालिके हेपार्वतीजी मातु अग जग जो स्थावर जंगम मयजो जगत है ताके पालन हारी हौ काहेतेब्रह्मा रचत उपजावत हरि पालन करत हर संहार करत सो आपही के प्रसाद ते भाव सबमें जो शक्ति है सो आपही को रूपहै औ विश्वजो संसार सोतुम हीं में विकास कहे उपजत तुमहीं में विलास कहे पालन होत तुमहीं में समात कहे लयहोत भाव जगको आधार त्रैगुणात्मक माया आपुही को रूपहै ताते हे जगदम्ब मातु जगको अवलंब दीजै रक्षा करिबे में बिलंब न कीजै काहेते करुणा कही जो पर दुख देखि कै आपु दुखी ह्वै वाको दुख हरिबे की इच्छा करैसो करुणा तरंगिनि कहे करुणा जल पूरित नदीहौ अरु क्षमा कही निर्हेतु रक्षा करै कि सबके रक्षक हमहीं हैं ऐसी क्षमा रूप तरंगनकी आपु मालाहौभाव सदा क्षमा उठत है तेतुम वर्तमानहौ तहां महा मारी रोष किहे जगको खाये जात अरु जग की महतारी ह्वै आपुके परितोष कहे संतोष बना है हे मुनिमानसमरालिके दुनी जो दुनिया ताको दया दृष्टि ते देखिये तौसब महा दुखारीहैं तातेरक्षा कीजिये १६७॥

निपटबसेरेअघअवगुणघनेरे नरनारिऊअनेरेजगदंब चेरीचेरेहैं। दारिददुखारीदेखिभूसुरभिखारीभीरु लोभ मोहकामकोहकलिमलघेरेहैं। लोकरीतिराखिराम साखीबामदेवजानि जनकीबिनतिमानिमातुकहिमेरेहैं। महामारीमहेशानिमहिमाकिखानिमोद मंगलकीराशिदासकाशीबासीतेरेहैं १६८॥

यद्यपि पुरके बसैरेनर नारीऊ अनेरे कहे अनीतिमेंरत हैंताते अघजोपाप अरु अवगुणघनेरे कही बहुतहैं तथापि

हे जगदंब पुरबासी आपुके चेरी चेरेहैं हे देवि सबलोग दरिद्रकलिकै दुखारीहैं तै भूसुर ब्राह्मण अरु भिखारिनको देखिकै भीरु कहे डरत कि कुछु मांगै न भावधर्मते विमुखहै तातेकाम क्रोधलोभमोह कलिमलजो पापइत्यादिसबमेरे हैं तिनकी रक्षा करनो आपु को उचित है देखिये श्री रघुनाथजी लोकरीति राखे अर्थात् आपने पुरबासिन को ऐसे पाले कि जन्म भरिसुखी राखे यथा ॥ दैहिकदैविक भौतिकतापा । रामराजनहिंकाहुव्यापा ॥ पुनः अंतकाल मरे धाम को साथै लैगये यहि बात के साखी बामदेव शिव जी हैं अस जानिये हे महेशानि आपु महिमा की खानि हौ अर्थात् अघमन को उद्धार करत हौ अरु मोद जो मानसी आनंद है मंगल जो लोक उत्सव ताकी राशिहौ तौ काशी बासी तौ तेरे दासहैं ताते जनकी बिनतीमानि हे मातु महामारी सों कहिदीजै कि काशी बासी लोग मेरे दास हैं इनको न सतावो १९८ ॥

लोगनकोपापकैधौंसिद्धसुरशापकैधौंकालकेप्रतापका श्रीतिहूंतापतईहै । ऊंचेनीचेबीचकेधनिकरंकराजारायहठ निबजायकरिडीठिपीठिदईहै । देवतानिहोरेमहामारिन्ह सोंकरजोरेभोरानाथजानिभोरेआपनीसीठईहै । करुणा निधानहनुमानबीरबलवानयशराशि जहांतहांतेंहीलूटि लईहै १९९ ॥

पुरबासी लोगन को पाप उदय है कैधौं सिद्धन की व देवतन की शाप भई है कैधौं कलिकाल के प्रताप ते काशी पुरी के बासी दैहिक दैविक भौतिकादि तीनिउं तापन करि तई कहे तप्त भये हैं काहे ते ऊंचे जे ब्राह्मणादि नीचे जे शूद्रादि बीच के खत्री बैश्यादि धनिक साहूकारादि के गरीब राजा मंडलेश्वरराय छोटे राजा इत्यादि हठ

करि बजाय कहे खुलिकै जहां दृष्टि चाहो तहां पीठिदई भाव दानादि धर्म ते बिमुख भये ता अधर्म बल पाइ अरु भोरानाथ को भोरे कहे बौरहे जानिकै महामारी आपनीसी आपनी चाही बातठईकहे ठानी हैभाव प्रचंडहूं आपनो प्रताप फैलाये ताके निवारणहेतु देवनसों निहोरा किये कोऊ रक्षा न करि सक्यो अरु महामारिन सों कर जोरे सोऊ क्षमा न भई ताते हे करुणा निधान बीर बलवान् श्रीहनुमान्जी जहां दुर्घट काम काहूको बनावो न बनो तहां यश की राशि तैंहीं लूटिलई है भाव सिंधु नांघिबो सजीवनि आनिबो आदि तैसी काशी की रक्षा करि यहां भी यश लूटिलीजै एक समय काशीजीमें महा मारी परी आधा शहरमरिगयोसब गोसाईंजीसोंपुकारे तब गोसाईंजी पार्वती शिवादिकी बिनती करेजब काहूने सहाय न कियो तब हनुमानजी सों स्तुति करे तुरंत बाधा मिटि गई १६९॥

शंकरशहरसरनारिनरवारिचरबिकलश्रौमहामारिम-
हामाजाभईहै । उछरतउतरातहहरातमरिजातभभरि
भगतजलथलमीचुमईहै । देवनदयालमहिपालनकृपाल
चितवाराणसीबाढ़तअनीतिनितनईहैं। पाहिरघुराजपाहि
कपिराजरामदूतरामहूकीबिगरीतैंहींसुधारिलईहै१७०॥

आषाढ़ में प्रथम पानी बर्षे भूमि को बिकार लै तालमें गये ताके फेना में घाम लागे ते जहर तुल्य ह्वै जात ताको माजाकहत ताके स्पर्शते जलचर व्याकुलह्वै मरि जातसो कहत कि शंकर शहर काशी सोई सरकहे तड़ागहै तहां महामारी माजाभई तामें पुरवासी नरनारि बारिकहे जल ताके चर मीनादि समबिकल भभरि घबरायकै भागत उछरत उतरात हहरि कहे हाय हाय करि मरि

जात हैं काहेते जलहू थल मृत्युमई ह्वै गई वा थल जो भूमि सोई भूमि जलहै सो मृत्युमई ह्वै गईहै काहेते वाराणसी कहे काशी में अनीति नित नई बढ़त जात है ताहीते देवता भी दयाल नहींहोत औ महिपाल जो राजा तेऊ कृपाल चित्तनहीं नित दंड दायक हैं ताते हे रघुराज पाहिकहे आपुकी शरणहौं हे कपिराज श्रीराम दूत श्रीहनुमान्जी आपुकी शरणहौं काहेते जहाँ श्रीरघुनाथहूजी को काम बिगरो तहां तुमहीं सुधारिलई भाव श्रीजानकीजीकी खबरिलाये सजीवनिलाये इत्यादि १७०॥

एकतौकरालकलिकालशूलमूलतामें कोढ़मेंकीखाजु सीशनीचरीहैमीनकी। वेदधर्मदूरगयेभूपचोरभूपभयेसाधुसिद्धमानजनबियेपापपीनकी । दूबरेकोदूसरोनद्वार रामदयाधाम रावरोईगतिबलबिभवबिहीनकी। लागैगी पैलाजवाबिराजमानविरदहिमहाराजआजुजोनदेतदादि दीनकी १७१ ॥

एक तौ शूल कहे दुःख को मूल कलिकालही कराल है ताहूमें कोढ़ मेंकीसी खाजु मीन राशिपै शनीचरी कहे शनीचरकी दशा मीन राशि पर जबहोत तब महाउपद्रव होतयथाजातकाभरणे। भवेद्शायांननुभानुसूनोर्मीनोपपातस्यचमानवानां। नानापुरग्रामधनांगनाभ्यः सुखंतथोत्साहबिहीनाताच॥ अथवा मीनराशिपै शनीचर आयो है तहां जब कन्या मिथुन धन मीन इन राशिन पै शनिश्चर आवततबमहा उपद्रव राजनको नाश रुधिरते भूमि पूरित यह मयूर चिचमें नारदजी कावचन है यथा॥ मैथुन स्त्रीधनुर्मीना राशौमंदोयदाभवेत् । तदाभूपाविनश्यंति पृथ्वीशोणितपूरिता॥ तहांमीनपै शनीचर कहिये ते गणित करि यह शूचितहोत कि सोरहसै पैंतिस प्रारंभते छत्तिस

सैंतिस कुछु दिनतक शनीचर मीनराशिपर रहाहै इतनहीं संवतन को यह ग्रंथबनाहै मानस रामायण के पीछे प्रथम यहै ग्रंथ बनाये हैं सोकहत कि वेदको जो धर्महै सत्यशौच तप दानादि ते सब लोक चालते दूरिगये अरु चोर जे हैं असत्य अपावनता हिंसादि तिनको राजा जो अधर्म है सोई राजा भयो भाव अधर्म को प्रचार भयो ताते साधुजे साधक जनहैं अरुसिद्ध मानजनके उरमें पापपीन कहे पुष्ट होबे को बिये कहे बीज होत भयो भाव अधर्म पाप को बीजहै तौ सुकृति करि दूबरे लोगन को दूसरो द्वारनहीं है हे श्रीरघुनाथजी दया धाम योगादि बल अरु तपादि बिभव करिकै हीननको रावरेही गति है ताते हे महाराज जो आजु दीननको दादिनही देतेहौ तौ यह जो बिराज मान आपुकी बिरदहै ताको निश्चय करिकै लाजलागैगी भाव बिरद बर्णन करत लोग लजाइँगे यातेदीन को दादिदीजै १७१॥

रामनाममातुपितुस्वामिसमरथहितु आशरामनाम कोभरोसोरामनामको। प्रेमरामनामहींसोंनेमरामनाम हीको जानोनमरमपददाहिनोनवामको। स्वारथसकल परमारथकोरामनाम रामनामहीनतुलसीनकाहूकामको। रामकीशपथ सर्वसमेरेरामनाम कामधेनुकामतरुमोसे क्षीणछामको १७२॥

मेरे श्रीराम नामहीं माता पिताहैं श्रीराम नाम ही समर्थस्वामीअौ हितकारहैंसब मनोरथपूर्ण होनेकी आश श्रीराम नामही कीहै सबसों रक्षा करिबे को भरोसा श्रीराम नामही कोहै प्रेमप्रीति श्रीराम नामही में श्री राम नामही जपिबे को नेमहै दाहिन बाम कहे आस्ती क नास्तीक मारग में पग कहे चलिबे को मर्म कुछु नहीं

जानतहौं स्वारथ सकल भांतिको लोकमें औ परमारथ कहे परलोक को श्रीराम नामहीहै गोसाईंजी कहत कि जो श्रीराम नाम करिकै हीनहैं सो काहू कामको नहीं है याते सर्बस मेरे श्री राम नामही है श्रीरघुनाथ जी की शपथ खाइकै यह बात कहतहौं कैसो है श्रीराम नामजो मोसेचीरु कहेदूबरेनको छाम कहेहलकेनीचन कोकामधेनु कल्प वृच्छ समान है १७२ ॥

मारगमारिमहीसुरमारि कुमारगकोटिककैधनलीयो। शंकरकोपसोपापकोदाम परीक्षितजाहिगोजारिकैहीयो। काशीमेंकंटकजेतेभये तेगेपाइअघाइकैआपनोकीयो। आजुकि काल्हि परों किनरों जड़जाहिंगे चाटिदे वारिको दीयो१७३ ॥

जेकुमार्गी जनहैं ते मारग में राहगीरन को मारि औ ब्राह्मणन को मारि और कोटिन भाँति कुमारग करिकै जे धनलीन्हे इत्यादि पापकेहीन्हेंदामजो है धनसो शंकर के कोपकरिकैपरीक्षित कहे प्रसिद्ध उन कुमार्गिन को हियो जरायकैसबधनजायगोभावराज दंड चोरदंड अग्निदंडइत्यादिते हृदय तप्त सहित धनगयो काहेते जेते कंटक बिघ्न करता काशीजीमेंभये ते आपने कीन्हे जोपाप ताकोफल दुखअघायपायकै गयेकहे नाशभये ताहीभांति बर्तमान में कुमार्गी हैं ते आजु वा काल्हि व परौं व नरौं भाव चारिही दिनमें देवारीक सोदिया चाटिकैजरिजाहिंगे यथा पावसमें मशा डंशादिउपद्रवीजीववाढ़ेहैं तिन को वादा देवारी तकहै जहां देवारीको दियाचाटे तहां हिंसकी प्रबलतासे नाशभये यहां पापउदय होनादेवारी को दीप है शंकर का कोप हिंसहै १७३ ॥

कुंकुमअंगसुरंगजितोमुख चंद्रसोंचंद्रसोंहोड़परीहै। बोलतबोलसमृद्धिचुवौअवलोकतशोचविषादहरीहै। गौ-

रीकोगंगबिहंगिनिवेष किमंजुलमूरतिमोदभरीहै। पेखि सप्रेमपयानसमयसबशोचबिमोचनक्षेमकरीहै १७४ ॥

कबहूं याचा समय क्षेमकरी चीलह देखि परीहै ताकी प्रशंसा करत हैं कि कुंकुम रोरी व केशरि व कुंकुम पीतरंग सुगंधित एक औषधी होतसो कहत कि क्षेमकरीने आपने अंगके रंगते कुंकुमके सुन्दर रंगको जीतिलियोअरु मुखचंद्रतेअरु प्रसिद्धचन्द्रमाते होड़कहेबादपड़ो भावहम सुभगहैंअरु मधुरबोलके बोलतहीसमृद्धिजोसमूह धनसो चूवत कहे बर्षतहै अरु अवलोकत कहे दर्शन माचते मनको शोच अरुबिषाद कहे दुखसों सब हरिलेतहै तातें मंजुल कहे सुन्दर मूरति मोद कहे आनन्द भरी किधौं बिहंगिनि कहेपक्षिनि बेषकिये श्रीगंगाजीहैंकिधौं गौरी कहे पार्बती जीहैं काहेते पयानसमय सहित प्रेमपेखिकहे देखि कै चलिये तो सब प्रकार को जो शोच है ताको बिमोचन कहे छोड़ावन हारी क्षेमकरी है १७४॥

मंगलकीराशिपरमारथकीखानिजानि बिरचिबनाई बिधिकेशवबसाईहै। प्रलयहूकालराखीशूलपाणि शूल परमीचुबशनीचसोऊचहतखसाईहै। छाँड़िक्षितिपालजो परीक्षितभयेकृपाल भलोकियोखलकोनिकाईसोनशाई है। पाहिहनुमानकरुणानिधानराम पाहिकाशीकामधेनुकलिकुहतकसाईहै १७५ ॥

मंगलजोलोक उत्सव ताकी राशि ढेरीहै औ परमार्थ जो परलोक मुक्ति ताकी खानिकहे उत्पत्ति की भूमि है ऐसा जानि ब्रह्माने बिशेषि रचिकै बनाई पुरी प्रसिद्ध करी ताको केशव भगवान् ने बसाव पालन कीन्ही ताको प्रलयहू कालमें शूलपाणि शंकर जी ने त्रिशूल पर राखी

भाव रक्षा कीन्ही भाव चिदेश पालित पुरीको नीच कलिकाल मृत्यु वशते खसाई चाहत भाव काशीजी को गिरावा चाहत सुधर्महीन करो चाहत तातेदंडदेवेयोग्य हैक्योंकि नीच डाटबिना नहींमानतहै देखिये क्षितिपाल परीक्षित ने कलिकालको मारततेछांड़िदियो कृपालहै खल कहे दुष्टको भलोकियो तेहि निकाई को कलिकाल ने नशाइ दई भाव ऐसा प्रबंध बाँधि दियो कि ऋषिशाप ते मृत्युवश भये ऐसा कलिकाल कसाई सम काशीरूप कामधेनु को बध करत ताते कुहत कहे कहरतहै ताको हे श्रीरघुनाथजी करुणा निधान हे श्रीहनुमानजी पाहिकहे आपुकी शरण हैं रक्षा कीजिये १७५ ॥

बिरचीबिरंचिकीबसतिबिश्वनाथकीजोप्राणहूतेप्यारीपुरीकेशवकृपालकी । ज्योतिरूपलिंगमईअगणितलिंगमईमोक्षबितरनिबिदरनिजगजालकी। देवीदेवदेवसरिसिद्धिमुनिवरबासलोपतिविलोकतकुलिपिभोड़ेभालकी । हाहाकरैतुलसीदयानिधानरामऐसी काशीकीकदर्थना करालकलिकालकी १७६ ॥

बिरंचि की बिरची कहे बनाई बिश्वनाथ महादेवकी पुरी बसीहै वा बिश्वनाथ को बास स्थानहै औ केशव जो भगवान् कृपालहैं तिनको प्राणहू अधिक प्यारीहै पुनःपंच कोशांतर्गत जो क्षेत्रहै सो सूक्ष्म रूपते ज्योति लिंग मई है स्थूलरूप ते विश्वेश्वरादि अनेकन लिंग मई है भाव सब भूमि लिंगन सों पूर्णहै अरु मोक्ष बितरनि कहे मुक्ति देन हारी है औ जगजाल जो मोहादि जगत प्रपंच ताकी बिदरनि कहे नाश करणहारी है जहां अनेकन देवी अनेकन देवता देवसरि श्रीगंगाजी सिद्ध मुनि ऐसे बर कहे श्रेष्ठन को बासहै जाके बिलोकत कहे दर्शनमात्र ते भोड़े

जे मैले जनन के भालमें कुलिपि कहे कुभाग्यकी पांतिके अक्षरनको लोप करत भावकुभाग्य मिटायसुभाग्य लिखि देत ऐसी काशीपुरीकी कदर्थना कहे दुर्दशा करालकलि-काल ने कीन्ही है हे दयानिधान श्रीरघुनाथ जी तुलसी हाहा कहे विनती करतहै कि काशीजी की रक्षा कीजि ये १७६॥

आश्रमवरणकलिविवस विकलभयेनिजनिज मर्याद मोटरीसिडारदी। शंकरसरोषमहामारिहीतेजानियतसा हिवससेर्कदुनीदिनदिनदारदी। नारिनरआरतपुकारत सुनैनकोऊकाहूवेवतनिमिलिमोटीमूठीमारदी। तुलसीस भीतपालसुमिरकृपालरामसमय सुकरुणासराहिसनका रदी १७७॥

आश्रम जो ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास वर्ण जो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र ते सब कलियुग के विवश का-मादि की प्रबलताते विकलहै आपनी आपनी जो लोक वेद मर्यादे दाता की मोटरी शीश कैसो भार लोग सब डारिदेते भये भाव आपने धर्म कर्म की श्रद्धा रहित भये ऐसा जानि परत कि लोगनको कुमारग चालते शंकरजी सरोष हैं काहेते जानियत है कि महामारी प्रचंड परी ताते जो साहब शंकरहू सरोष भये तौ दुनी कहे दुनिया दिन दिन प्रति दारदी कहे दरद बंदी काहेन होइ नर नारी सब आरत कहे दुखितहै पुकारकरत ताको कोऊ नहींसुनत कि लोगन को दुखमिटावै कासमुझि परत कि कोऊ देवतन मिलिकै मोटी मूठीकहे कराल जादूमारि दीन्हीहै जबकोऊ सहायक न भयो तब सभीतन को पा-लनेवाले जो श्री रघुनाथजी तिनको तुलसी सुमिरे तब कृ-पाल श्री रघुनाथ जी समय विचारिनि कि अब कोऊ

सहायक नहींहै तब आपनी करुणाकी सराहना करिकै भाव गाढ़े समय को सहायक हमारी करुणैहै ऐसा कहि करुणा को सनक्यारि दीन्ही भाव करुणाकरि सबके क्लेश हरे यहि कवित्त को अभिप्राय यहहै कि श्री रघुनाथ जीके समान करुणानिधान दूसरो नहीं है १७७ कवित्त ॥ मेदुराभ्रभात्मश्यामपीतचैलविदुद्दाभ मूर्म्मिरत्न क्रीटकर्णिकारकेसभालहे। शर्दपूर्णचन्द्रमास्यवंकम्बावुजच्छ ग्रीव वृषभांशपानिपानशायकोरखल्दहे। गूढ़यंचुन्याय तोरनाभिचैतदुर्द्धरेखरोमराजिमुक्तदाम भानुजाप्रियावहे मध्यलपजानुजंघकोमलांघ्र पारसिंधुरूपकोशलेशबैजनाथतं नमामहे १ पूर्वलखनऊवंकोजीलेग्राममानपुरपितुकोधाम। अवधजन्मभूपासबासगुरु करुणासिंधुफकीरेराम॥ उनइस सैअड़तिसशुभसंवत भाद्रशुक्लपूर्णवगुरुवार कवितरत्नदीपका यथामतिगुरुकरुणासोंभईतयार २॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपद शरणागत बैजनाथविरचिताकवित्तावली रत्नदीपिकासमाप्ता॥

———o———



| नाम किताब | नाम किताब | नाम किताब | नाम किताब |
|---|---|---|---|
| ब्रह्मोत्तरखण्ड | ब्रजबिलासछोटा | ब्रह्मसार | दोहावली रत्नावली |
| भविष्योत्तरपुराण | कृष्णप्रिया | शिवसिंहसरोज | गोकर्णमाहात्म्य |
| बाराह पुराण | विजयमुक्तावली | भक्तमाल | श्रीगोपालसहस्र |
| स्कंद पुराण | अनेकार्थ | इन्द्रसभा | नाम |
| बाल्मीकीयरामायण | छन्दोर्णवपिंगल | विक्रमबिलास | कथासत्यनारायण |
| शुक्रनीति | रसराज | बैताल पच्चीसी | सटीक |
| रसदृष्टिवरसचंद्रोदय | सत्सई मूल | सिंहासन बत्तीसी | हनूनाटक |
| सुदामाचरित्र | सत्सई सटीक | पद्मावती खण्ड | हनुमान बाहुक |
| कृष्णगीतावली | सभाबिलास | शुकबहत्तरी | जनकपच्चीसी |
| श्रीअनुरागरस | तुलसीशब्दार्थप्र | बकावली सुमन | हस्तिरसगुणनिर्ण |
| सोदागरलीला | भजनावली | चहारदुरवेश | र्गुणापदावली |
| रासलीला | प्रेमरत्न | क़िस्साहातमताई | बनयात्रा |
| नाटक | युगुलबिलास | अपूर्व्व कथा | कायस्थवर्णनि- |
| प्रबोधचंद्रोदय | चित्रचंद्रिका | क़िस्सागुलसनोवर | र्णय |
| रामाभिषेक | बारहमासाबलदेवप्र | सहस्ररजनीचरित्र | बिहारवृन्दावन |
| आनंदरघुनंदन | पीयूषलहरी | राविन्सनक्रूसोइतिह | समरबिहारवृन्दा |
| भ्रमजालनाटक | मनोहरलहरी | सीताहरण | बन |
| वेदान्त | गंगालहरी | सतीबिलास | कल्पभाष्य |
| योगवाशिष्ठ | यमुनालहरी | क़िस्सामर्दऔरत | लक्ष्मीसरस्वती |
| आनंदाऽमृतवर्षिणी | जगद्बिनोद | संगीतप्रह्लाद | संवाद |
| सांख्यतत्वकौमुदी | शृंगारबत्तीसी | मुतफ़र्क़ात | उपदेशचन्द्रिका |
| काव्य | राग | शनिश्चर की कथा | मंगलविनोद |
| सूरसागर | रागप्रकाश | ज्ञानमाला | विजयचन्द्रिका |
| कृष्णसागर | लावनी | कथाश्रीगंगाजी | सिद्धान्तसंग्रह |
| विश्रामसागर | क़िस्सावगैरह | अवधयात्रा | रामविनयशतक |
| प्रेमसागर | नानार्थनामसंग्रह | भरतरीगीत | नवीनसंग्रह |
| ब्रजबिलासबड़ा | वली | ज्ञानलीलावनाग | रामचन्द्रिका |

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|---|
| **दरसी** | दूलाजुल गुर्ब्बा | कायस्थधर्म्मनिरू | यान्न वल्क्यस्मृति |
| अक्षरावली | **ज्योतिषभाषा** | परा | सन्ध्यापद्धति |
| स्वयम्बोध | जातकचन्द्रिका | तथा छोटा | ब्रतार्क |
| ज्ञानचालीसी | जातकालंकार | मथुरा सभा | भगवद्गीताटीका |
| दोहावली | दैवज्ञाभरण | **ज्योतिष** | हरिवंशलाल |
| बालबोध | ज्ञानरत्नोदय | मुहूर्त्तगणापति | भगवद्गीताटीका |
| विद्यार्थीकीप्रथम | रमलसार | मुहूर्त्तचक्रदीपिका | आनन्दगिरि |
| पुस्तक | रमलनौरत्न | मुहूर्त्तचिन्तामणि | गीतगोविंद |
| किताबजंत्री | इन्द्रजाल | सटीक | कथासत्यनारा- |
| गणितकामधेनु | **संस्कृतकीपुस्तकें** | मुहूर्त्तदीपक | यण |
| लीलावती | लीलावतीका | बृहज्जातकस- | परमार्थसार |
| पटवारियोंकीपुस्त | क्षेत्रव्यवहार | जातकालंकार | शार्ङ्गधरसंहिता |
| क ४ भाग | लघुकौमुदी | जातकाभरण | पाराशरीसटीक |
| अद्भुतरामायण | सिद्धान्तचन्द्रिका | होरामकरंद | शीघ्रबोधसटीक |
| स्वप्नप्रकाश | भाषातत्वप्रकाश | मुहूर्त्तमार्त्तण्डस- | लघुजातक |
| सुंदरविलास | पंचमहायज्ञ | टीक | षटपंचाशिका |
| **वैद्यकभाषा** | निर्णयसिन्धु | **संस्कृतउर्दूटीका** | सामुद्रिक |
| निघण्ट | कर्म्मविपाक | विष्णुसहस्रनाम | गरुड़पुराण |
| अमरविनोद | संग्रहशिरोमणि | मनुस्मृति | रामविवाहोत्सव |
| वैद्यजीवन | भगवद्गीतापंच | विष्णुहारीत | जोपुस्तकेंछप |
| औषधिसंग्रहक- | रत्न | महिम्नस्तोत्र | रही हैं उनके |
| ल्पवल्ली | दुर्गापाठमूल | ब्रतार्क | नामनीचे लि- |
| अमृतसागरबड़ा | दुर्गापाठसटीक | याज्ञवल्क्यस्मृति | खे हैं |
| अमृतसागरछोटा | विष्णुभागवत | **संस्कृतभाषादी-** | मदनपारिजात |
| वैद्यमनोत्सव | कथायमद्वितीया | अपरोक्षानुभव | मार्कण्डेयपुराण |
| दिललगन | अपराधभंजनस्तो | अमरकोषतीनों | भा-उर्दूटीकासहित |
| रसायनप्रकाश | कायस्थकुलभास्कर | काराड | |

